द लास्ट व्हाइट हंटर: एक कॉलोनियल

शिकारी की यादें

डोनाल्ड एंडरसन और

जोशुआ मैथ्यू

[redacted]:

[redacted]

[redacted]

[redacted]

पहली बार 2018 में प्रकाशित
ISBN: 978-93-85509-12-4
कॉपीराइट © जोशुआ मैथ्यू, 2018
कवर डिज़ाइन: जोशुआ मैथ्यू
सर्वाधिकार सुरक्षित
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व लिखित सहमति के बिना इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है। साथ ही, बाद के खरीदार पर भी ऐसी ही शर्त लागू होगी। ऊपर उल्लिखित कॉपीराइट अधिकारों को सीमित किए बिना, इस प्रकाशन का कोई भी भाग कॉपीराइट स्वामी और पुस्तक के उपरोक्त प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

मेरी पत्नी रिया और मेरे बेटों मैथ्यू और जोसेफ के लिए।

□□□□□□□□□□□□
- □□.□□.□. □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□□
- □□□□□□
- □□□□□□□□ □□□□ □□□□-□□□□□
- □□□□□ □□□□□□□
- □□□□□□
□□□□□□ □□ □□□□
□□□□ □□ □□□□□
- □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ - □□□□ 1
- □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ - □□□□ 2
- □□□□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□□□□
□□□□□□□□: □□□□□□ □□□□

स्वीकृतियाँ
मैं धन्यवाद देना चाहूंगा:
- मेरी माँ को मेरी पढ़ने की आदत को प्रोत्साहित करने के लिए, और मेरे पिता को मुझे केनेथ एंडरसन की पुस्तकों से परिचित कराने के लिए धन्यवाद।
- मेरी चाची मरीना, जिनका ज़िक्र मैं इस किताब के पहले संस्करण में करना भूल गया था।
- नवीन सत्यानंद का धन्यवाद जिन्होंने किताब लिखते समय डोनाल्ड का ख्याल रखा।
ऑस्ट्रेलिया में डॉन की बहन जून और उसके बच्चे।
डॉन के दोस्तों - डैरिल रॉस, सुधीर क्रिस्टोफर, जिमी जॉब, मेरु साल, नोएल पीकॉक, नादेर मिर्जा, 'पूची' क्रिस्टोफर, मार्क डेविडर, सुरेश राज, उधंक राज, सुनीता धैर्यम, विक्टर और जेम्स डिसूजा, गॉर्डन थॉम्पसन, मारिया विंदा और लिंकन को वर्षों से उनका सहारा बनने के लिए धन्यवाद।
- Those who gave their time and money to help Don : Gauri Lankesh, Philip Wollen, K.M Srinivas Murthy, Ashok Tendolkar, Kakarla Jayaraman, Prashant Sethi, Sherry Khan, Ajit St John, Harsha, Dheeraj, Raghu, Siddharth Reddy, Mrs. Marie Ross and many more
- डॉ. केनेथ डी'क्रूज़, डॉन के आखिरी डॉक्टर
- नायर, लॉर्ड और रिचमंड रोड बैपटिस्ट चर्च के उन सभी लड़कों का धन्यवाद जिन्होंने डॉन के अंतिम दिनों में उनके जीवन को आरामदायक बनाने में अपना योगदान दिया।
- रस्किन बॉन्ड, डॉ. उल्लास कारंथ, जेरेमी वेड और टी.एन.ए. पेरुमल को उनके योगदान के लिए धन्यवाद
- इंडस सोर्स बुक्स की सोनावी देसाई को इस पुस्तक पर भरोसा रखने के लिए धन्यवाद।
- विल्मा राजीव को पांडुलिपि की खामियों को दूर करने के लिए धन्यवाद।
- अनु कुरियन, मेरी पहली संपादक
- लक्ष्मीनारायण और जोसेफ जिन्होंने डॉन की कहानियों को रिकॉर्ड करने में मदद की।
- पुस्तक के निर्माण पर मार्गदर्शन के लिए थियोडोर भास्करन, महेश रंगराजन और डॉ. दिव्यबानूसिंह चावड़ा

ह्यूग और कोलीन गैंटज़र, रोमुलस व्हिटेकर, माइकल लुडग्रोव और कीर्ति रामचंद्र को उनकी अविश्वसनीय उदारता के लिए धन्यवाद।
- इतिहासकार और पत्रकार एस. मुथिया और एंग्लोस इन द विंड के हैरी मैक्लुर को पुस्तक के प्रकाशन से बहुत पहले ही इसके प्रचार-प्रसार के लिए धन्यवाद। हैदराबाद में मेरे शोध में मदद करने के लिए वर्गीज जैकब और सुनीता को धन्यवाद।
- मेरी मदद करने के लिए अपने रास्ते से बाहर जाने के लिए - रोजर बिन्नी, जी शहीद, रज़ा काज़मी, अलॉयसियस पी. फर्नांडीज, आदित्य सोंधी, जेम्स चैंपियन, एंड्रयू पूट्स, 'बर्ड' सुरेश, 'रैग्स' राघवन, भानुप्रकाश, लावण्या कुकरेती, अखिला विजयकुमार, मिशेल वाधवानी, शिनी एंटनी, पैट्रिक माइकल, संध्या चंद्रशेखर, डॉन कैसवेल, सुसान रॉबर्टसन, बार्नी बर्लिंगर, इयान बूर, रॉडनी गैलिफ़, प्रणय गुप्ते, डिएगो गुइरो, कोरल एज और फेय हिंज, स्टेनली कार्वाल्हो, जेनिस पायने, लेन बोसिंगर, रयान लोबो, विनोद कंतमनेनी, आनंद तीर्थ पायति, केरी एडवर्ड्स, पीएम सुकुमार, ओलिवर गुनासीलन और कई अन्य
- जॉन हेलस्टोन स्कॉट, क्लाइव वैन ब्यूर्ले और नटराजन पेरुमल को दुर्लभ तस्वीरें साझा करने के लिए धन्यवाद।
और हां, गूगल का भी शुक्रिया, जिसने मेरे प्रयास को बेहद आसान बना दिया।

प्रस्तावना
मेरा जन्म 1932 में हुआ था, डॉन से दो साल पहले।
और उनका बैकग्राउंड बिल्कुल अलग था। वे मशहूर शिकारी और लेखक केनेथ एंडरसन के बेटे थे और बैंगलोर कैंटोनमेंट के अंदर, कस्तूरभा रोड पर, कब्बन पार्क पुलिस स्टेशन के पास रहते थे, जबकि मैं बैंगलोर में एक पारंपरिक भारतीय परिवेश में पला-बढ़ा। बचपन से ही हम दोनों को शिकार का बहुत शौक था — उन्हें अपने पिता के साथ शिकार का प्रत्यक्ष अनुभव मिला, जबकि मुझे किताबों से पढ़कर ही संतोष करना पड़ा। इसी से मेरे मन में प्रकृति और वन्यजीवों के प्रति प्रेम जागा। मेरे पास बंदूक खरीदने के पैसे नहीं थे, लेकिन जंगल के रोमांच ने मुझे इतना मोहित कर लिया था कि मैं वहां जाने का कोई मौका नहीं छोड़ता था। हालांकि, जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मुझे एहसास हुआ कि बंदूक खरीदना इतना मुश्किल नहीं है और कुछ समय के लिए मैंने भी खूब शिकार किया और मैसूर स्टेट राइफल एसोसिएशन का सदस्य भी रहा। उस समय बैंगलोर में कई गिरोह थे और मुझे कुछ मौकों पर डॉन के साथ शिकार करने का सौभाग्य मिला। मैं उनकी कुशलता से चकित रह गया, न केवल एक बेहतरीन निशानेबाज के रूप में, बल्कि जंगल के तौर-तरीकों में भी। जंगलों में संकेतों और पैटर्न को समझने की उनकी क्षमता बेजोड़ थी, जो उन्होंने अपने पिता के साथ बिताए वर्षों में विकसित की थी।
हालांकि, डॉन के विपरीत, मुझे जल्द ही एहसास हुआ कि शिकार से मुझे जबरदस्त एड्रेनालाईन रश तो मिलता था, लेकिन जल्द ही मुझे पछतावा और अफसोस भी होने लगता था। इसका चरम बिंदु बैनरघट्टा के बिशप कॉटन स्कूल में शिक्षक ओ.सी. एडवर्ड्स से मेरी आकस्मिक मुलाकात थी। उन दिनों बैनरघट्टा एक घना जंगल था जिसमें भरपूर शिकारगाह थे और जब मैं उनसे मिला, तो मेरे एक हाथ में बंदूक और दूसरे हाथ में एक पक्षी था जिसे मैंने गोली मारी थी - जाहिर है, मेरी पहली छाप अच्छी नहीं रही! मैंने श्री एडवर्ड्स और उनकी फोटोग्राफी के बारे में सुना था, लेकिन उस दिन तक मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। मैं उनसे कई बार मिला, और उन्होंने मेरे मन में यह विश्वास जगाया कि फोटोग्राफी शिकार से कहीं अधिक श्रेष्ठ शौक है। उन्होंने मुझे जानवरों के वैज्ञानिक नाम और व्यवहार भी सिखाए और यह दिलचस्प बात है कि डॉन भी बिशप कॉटन स्कूल में उनका छात्र था और उसने भी वही प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

हम दोनों प्रकृतिवादी थे, लेकिन डॉन और मैंने अलग-अलग रास्ते चुने - मैंने कैमरा चुना जबकि बंदूक उनका पसंदीदा हथियार बनी रही। हमारी कुछ मुलाकातें हुईं और मुझे जल्द ही एहसास हुआ कि एक अच्छा शिकारी या वन्यजीव फोटोग्राफर बनने के लिए, आपको अपने विषय के वातावरण, मौसम, दिन के समय और निश्चित रूप से, उसके व्यवहार और उसे प्रभावित करने वाले कारकों को समझना होगा। यहां तक कि उपकरणों के मामले में भी बहुत सी समानताएं हैं - स्थिर हाथ, अपर्चर के माध्यम से निशाना लगाना, सांसों को स्थिर रखना और ट्रिगर दबाने का सही समय जानना। डॉन इन सबमें माहिर थे और राइफल के साथ मेरे अनुभव ने कैमरे की ओर मेरा बदलाव बहुत आसान बना दिया। उस समय, वन्यजीव जैसी कोई अवधारणा नहीं थी; जीवों को "बड़े शिकार" या "छोटे शिकार" में वर्गीकृत किया जाता था और डोनाल्ड एंडरसन एक आदर्श बड़े शिकार शिकारी थे। अपने खाकी कपड़ों, पीछे की ओर कंघी किए बालों और सिगरेट के साथ, वह हमेशा मुझे पूर्वी अफ्रीका के उन श्वेत शिकारियों की याद दिलाते थे जिनके बारे में मैंने पढ़ा था। यह दिखावा नहीं था; उन्हें अक्सर बैंगलोर में अपनी मोटरसाइकिल पर एक मृत पैंथर के साथ देखा जाता था और पुरुष और महिलाएं दोनों ही उनकी समान रूप से प्रशंसा करते थे।
अतीत का विश्लेषण करने पर हमेशा कुछ न कुछ कमियां नजर आती हैं; आज ज्यादातर लोग ब्रिटिश राज के शिकारियों के कार्यों की निंदा करते हैं, लेकिन यह भूलना आसान है कि उस समय यही सामान्य बात थी और समाज का अभिन्न अंग था। समय के साथ वन जीवों के प्रति हमारी अवधारणा और समझ बेहतर हुई है, लेकिन यह बदलाव अचानक नहीं हुआ। केनेथ और डोनाल्ड एंडरसन जैसे लोग जब जंगलों में जाते थे तो सिर्फ जानवरों का शिकार ही नहीं करते थे; वे जानवरों का अवलोकन करते थे और जानकारी का एक स्रोत थे जिससे लोगों को लाभ हुआ। दुनिया में हर तरह के लोग हैं, और डॉन एंडरसन एक अद्वितीय व्यक्ति हैं जो इतिहास में अपना स्थान पाने के हकदार हैं।
—टी.एन.ए. पेरुमल
(भारतीय वन्यजीव फोटोग्राफी में एक अग्रणी)

बाईं ओर सुंदर राज और दाईं ओर टी.एन.ए. पेरुमल।

परिचय
यह उन लोगों और स्थानों की कहानी है जो बहुत पहले दफन हो चुके हैं।
समय के बीतने के साथ-साथ यादें भी जुड़ती जाती हैं। ये उस दौर की यादें और किस्से हैं जब ज़िंदगी में कोई जल्दबाजी नहीं थी, जब पल दुगने लंबे लगते थे और लोग शायद उतने नहीं होते थे। आज़ादी और अनंत संभावनाओं का दौर, मासूमियत और सच्चाई का दौर, और फिर भी अज्ञानता और अय्याशी का दौर। जब मैं अपने रंगीन जीवन की कुछ घटनाओं को अपने दोस्त को सुनाने के लिए अतीत से याद करता हूँ, तो अक्सर मेरी याददाश्त साथ नहीं देती। अगर मुझे पता होता कि अब हालात पहले जैसे नहीं रहेंगे, तो शायद मैं उन पलों को और भी संजो कर रखता, लेकिन यही तो ज़िंदगी है।
मेरे पिता, जो बंदूक और कलम दोनों में समान रूप से कुशल थे, उनके विपरीत, मेरी कुशलता केवल बंदूक में ही रही है। इसीलिए जब भी मेरे मित्रों और शुभचिंतकों ने मुझे अपनी यादों को लिखित रूप में संजोने का सुझाव दिया, मैंने हमेशा इस विचार को नकार दिया। अपने बचपन में, कहानीकार बनने के मेरे प्रयास विफल रहे, क्योंकि पन्ने पर लिखे मेरे शब्द मुझे निडरता से घूरते हुए मुझे याद दिलाते थे कि मैं कितना खराब लेखक हूँ। मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि मैं अपने लेखन के माध्यम से पाठक को भारतीय जंगल के रहस्य और जादू से परिचित नहीं करा सकता, और मैंने फिर कभी ऐसा करने का प्रयास नहीं किया। अब तक। मेरे मित्र ने मुझे विश्वास दिलाया है कि मेरी नाजुक यादों के टुकड़ों को एक साथ बांधने से कुछ लोगों को पढ़ने में रुचि होगी, इसलिए मैंने उसकी बात मान ली है। मैं भीतर से जानता हूँ कि मेरे पास जीने के लिए ज्यादा समय नहीं बचा है, इसलिए मैं हर पूर्णिमा की रात को लाखों टिमटिमाते तारों से घिरे आकाश में आनंद लेने की कोशिश करता हूँ। आज मैं नीलगिरी में मोयार नदी के किनारे बैठा हूँ और चट्टानों पर पानी की लहरों की आवाज़ सुन रहा हूँ। मुझे उन लोगों की बात समझ नहीं आती जो कहते हैं कि वे शहरी जीवन के बिना नहीं रह सकते, जबकि यहाँ, स्वर्ग जैसी इस जगह पर, देखने और निहारने के लिए लाखों चीज़ें हैं जो बेहद मनमोहक हैं।
सूरज डूबने लगता है, जंगल शांत हो जाता है, और मैं समझ जाता हूँ कि अंधेरा होने से पहले मुझे अपने घर, जो एक मील दूर है, चले जाना चाहिए। मैं धीरे से उठता हूँ और कुछ सौ गज चलता हूँ, तभी बाईं ओर की पहाड़ी से एक हल्की सी आवाज़ आती है। एक सांभर! जी हाँ, कोई बाघ या तेंदुआ घूम रहा है। मैं कल्पना

लंबा जीऊंगा कि पश्चाताप कर सकूं। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। मैंने अपने सभी करीबी दोस्तों के अंत्येष्टि में भाग लिया या ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड जैसी जगहों पर उनके निधन की खबर सुनी, और हर बार मुझे लगा कि अगला नंबर मेरा ही होगा। खैर, मैं मरा नहीं; मैं बस बूढ़ा हो गया। हालांकि मैं एक पढ़ा-लिखा इंसान हूं और भगवान या कर्म में मेरा लगभग कोई विश्वास नहीं है, फिर भी मैंने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि कोई चाहता था कि मैं इतना लंबा जीऊं, ताकि मुझे मेरे कर्मों की याद दिलाए और शायद उन जिंदगियों का बदला ले जो मैंने ली थीं। मेरे माता-पिता तीस साल पहले गुजर गए थे, और मेरी बहन आजादी के तुरंत बाद ऑस्ट्रेलिया चली गई थी, इसलिए इतने सालों से मेरा कोई वास्तविक परिवार नहीं रहा है। हालांकि मुझे हमेशा दोस्तों और समान विचारधारा वाले लोगों की संगति अच्छी लगती रही है, लेकिन अंत में मैं अकेला हूँ। और मैं आखिरी हूँ। मैं एंडरसन परिवार का आखिरी पुरुष वारिस हूँ। मैं संभवतः ब्रिटिश भारत से आया आखिरी जीवित स्कॉट हूँ जिसने स्वतंत्रता के बाद यहीं रहने का फैसला किया। और मैं उन श्वेत शिकारियों में से आखिरी हूँ जिनके लिए भारत के जंगलों ने अकल्पनीय रोमांच और उत्साह प्रदान किया है।
डोनाल्ड मैल्कम स्टुअर्ट एंडरसन

अध्याय एक

बैंगलोर में पली-बढ़ी
नई शुरुआत अक्सर आशावाद के साथ होती है।
और खुशनुमा माहौल। रविवार, 18 फरवरी 1934 भी इसका अपवाद नहीं था। हल्की बारिश भी माहौल को फीका नहीं कर पाई, क्योंकि एंडरसन परिवार में एक उत्तराधिकारी का जन्म हुआ था। हालांकि उस समय परिवार छावनी क्षेत्र में रहता था, फिर भी हम देश में चल रहे राजनीतिक उथल-पुथल से कुछ हद तक बचे हुए थे। "आज़ादी" और "स्वतंत्रता" स्थानीय लोगों द्वारा दबी आवाज़ में बोले जाने वाले शब्द थे, जिन्हें गंभीरता से नहीं लिया जाता था। हाँ, एक निश्चित व्यवस्था और अनुशासन था। शांति और खुशी थी। और इन सब का सबसे अच्छा उदाहरण वह सौ साल पुराना घर था जिसमें मेरा जन्म हुआ था।
बैंगलोर के सिडनी रोड नंबर 3 पर स्थित "प्रोस्पेक्ट हाउस" बारह एकड़ ज़मीन पर बना एक भव्य लाल बंगला था, जो पेड़ों से लदा हुआ था। रानी के फूल, रेन ट्री, खूबसूरत कॉर्क, ट्रम्पेट और कोरल ट्री, बकाइन जैकारांडा, पीली कैसिया, चमकीले नारंगी स्पैथोडिया और लाल गुलमोहर के पेड़ बगीचे की शोभा बढ़ाते थे, जबकि आम, कटहल, अमरूद, चीकू, एवोकैडो, मीठा नींबू, सीताफल, नींबू और अनार के पेड़ मौसम के अनुसार फल देते थे। हालांकि यह अनोखा बगीचा मेरे माता-पिता की शादी से पहले से मौजूद था, लेकिन मेरे पिताजी ने इसमें अपनी खास पहचान बनाई और जंगल की सैर से इकट्ठा किए गए जंगली ऑर्किड, बोरम, मोहुआ और कैक्टस की विभिन्न प्रजातियाँ लगाईं। वे लालबाग के बागवानी विशेषज्ञ को भी पौधे मुहैया कराते थे, जिनसे उनकी गहरी दोस्ती थी। प्रॉस्पेक्ट हाउस के परिसर में बंदरों और गिलहरियों जैसे देशी जीव-जंतुओं के अलावा, मेरे पिताजी ने स्तनधारियों, पक्षियों और सरीसृपों का एक चिड़ियाघर बना रखा था, जिससे पिछवाड़े में एक तरह का जंगल सा बन गया था। मानो इतना ही काफी न हो, तोते, मैना, बारबेट, उल्लू और अन्य पक्षियों के झुंड अपने मधुर गीत से वातावरण को भर देते थे।
जिस घर में दूसरी मंजिल नहीं थी, उसे देखकर सबसे पहले यही लगता था कि वह कितना ऊंचा था। बेशक, उसमें विशाल अटारी थी, लेकिन फिर भी लकड़ी की मोटी दोहरी परत वाली छत हमारे ऊपर तक फैली हुई थी, और सभी कमरों में ऊपर की ओर छज्जे वाली खिड़कियां थीं, जो उस समय वास्तुकला का मानक थीं। घर के दोनों

ओर तीन-तीन बड़े शयनकक्ष और दो-दो स्नानघर थे, और घर के चारों ओर एक विशाल बरामदा बना हुआ था। बैठक कक्ष में दीवारों पर जानवरों के सिर की मूर्तियां, सेना की ढालें, रोज़वुड के फ्रेम में पारिवारिक तस्वीरें, शानदार विक्टोरियन फर्नीचर और एक कोने में एक भव्य चिमनी थी। भोजन कक्ष के बीचोंबीच एक लंबी महोगनी की मेज थी और मेज के ठीक ऊपर एक तिरछी, बड़ी चतुराई से बनाई गई रोशनदान थी। इसकी बनावट ऐसी थी कि सुबह मेज पर हल्की रोशनी पड़ती थी, जबकि दोपहर तक वह तेज धूप से सुरक्षित रहती थी। इस कमरे में कई कांच की अलमारियां थीं जो महंगे बर्तनों से भरी हुई थीं और इस कमरे में खेलना सख्त मना था। बिल्कुल पीछे की तरफ दो बड़े पेंट्री थे, जो मेरी बहन जून और मेरे लिए सबसे दिलचस्प कमरे थे, क्योंकि यह तार की जाली से बने मांस के तिजोरियों और ताले लगे लकड़ी के अलमारियों से भरा हुआ था जिनमें जैम, जेली, अचार, बिस्कुट के डिब्बे, मिठाई के डिब्बे और अनगिनत पाक संबंधी संभावनाएं मौजूद थीं।

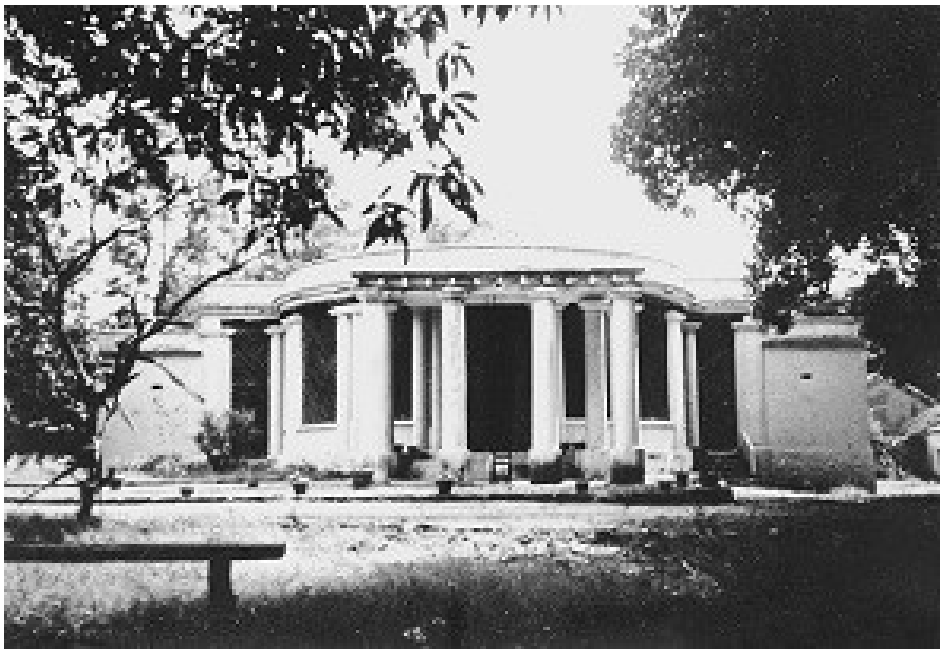

प्रॉस्पेक्ट हाउस

रसोई घर के पीछे एक अलग इमारत थी, जिसकी पहचान लकड़ी की आग से निकलने वाले नीले-भूरे धुएं की लगातार धारा से होती थी; गैस बर्नर आने में अभी कई दशक बाकी थे। रसोई से खाना पेंट्री में लाया जाता था, और ठंड के महीनों में, एक छोटा सा कोना था जहाँ भोजन को खाने के कमरे में ले जाने से पहले गर्म

कोयलों पर गर्म रखा जाता था। भारत के अन्य हिस्सों के विपरीत, जहाँ परिवार, विशेषकर महिलाएं और बच्चे, मैदानी इलाकों की गर्मी से बचने के लिए गर्मियों में पहाड़ों पर भेज दिए जाते थे, बैंगलोर में पूरे साल मौसम सुहाना रहता था। हम पूरे साल स्वेटर और रजाई ओढ़ते थे और हमारे पास कभी पंखे या फ्रिज नहीं थे। कई वर्षों तक, माँ, पिताजी और मैं घर के एक तरफ के तीन कमरों में से दो का इस्तेमाल करते थे, जबकि मेरे दादा-दादी और जून दूसरी तरफ के कमरों का इस्तेमाल करते थे। शयनकक्ष इतने बड़े थे कि कमरे के बीच में मच्छरदानी से ढके बड़े चारपाई वाले बिस्तरों के अलावा, अलमारियाँ, ड्रेसिंग टेबल, दराजों वाली पेटियाँ और हाथी के आकार के अनोखे फुटस्टूल भी थे। विशाल स्नानघरों में दो दरवाजे थे - एक अंदर से खुलता था और दूसरा बाहर की ओर। नौकर बाहर की दीवारों पर लगे छोटे-छोटे कुंडों में पानी भरते थे, जिससे अंदर रखे बड़े-बड़े पीतल के बर्तन भर जाते थे। इन बर्तनों के नीचे आग जलती रहती थी, जिससे जरूरत पड़ने पर हमें गरमागरम पानी मिलता था। हालांकि, स्नानघर इतने बड़े थे कि इतनी गर्मी होने के बावजूद भी सबसे दूर के कोने में कड़ाके की ठंड लगती थी। मुझे और मेरे दादाजी को विशेष सुविधाएँ मिली हुई थीं, क्योंकि हमारे पास अपना-अपना कमरा था, जबकि जून हमारी दादी के साथ एक कमरा साझा करती थी। ज़ाहिर है, इसका मतलब यह था कि बाकी सभी कमरे हमारे लिए खोजबीन और खेलने-कूदने की जगह थे। अटारी, जो पुरानी और बेहद धूल भरी चीजों से भरी थी, आमतौर पर हमारे लिए वर्जित थी, क्योंकि मेरी दादी को डर था कि उसमें सांप और मकड़ियां रहती हैं। फिर भी, जून और मैं अक्सर वहाँ बहुत समय बिताते थे, इस उम्मीद में कि हमें कोई छिपा हुआ खजाना या कम से कम उसका नक्शा मिल जाएगा। मुख्य भवन के अलावा, परिसर में कुछ छोटी-छोटी झोपड़ियाँ थीं जिनका उपयोग भंडारण के लिए या नौकरों के रहने के लिए किया जाता था, और एक बड़ा गैराज था जो कारों से भरा रहता था। मेरे दादाजी सेना में थे, इसलिए मैं बचपन से ही बहुत सारी कारें देखता था और ड्राइवरों से बातें करने में समय बिताता था, अक्सर उनसे मुझे गाड़ी चलाने देने की विनती करता था।
हमारे पास घरेलू काम करने वाली कई नौकरानियाँ थीं, और वे सभी तमिल थीं। 1831 में, जब मैसूर राज्य की राजधानी मैसूर शहर से बैंगलोर स्थानांतरित की गई, तब तक दो अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्र पहले से ही मौजूद थे। बैंगलोर छावनी उनमें से एक थी, जिसकी स्थापना 1806 में हुई थी, और एक समय में यह

तेरह वर्ग मील से अधिक क्षेत्र में फैली हुई थी, शायद दक्षिण भारत की सबसे बड़ी ब्रिटिश छावनी। हमारा घर उस दिशा में छावनी के अंतिम गढ़, कब्बन पार्क के किनारे पर स्थित था। इसके आगे पेट्टाह था, दूसरा क्षेत्र, जहाँ स्थानीय कन्नड़ भाषी आबादी रहती थी, लेकिन किसी कारणवश, कन्नड़ भाषी लोगों को घरेलू कामगार के रूप में रखना वहाँ प्रचलित नहीं था। इस अलगाव के परिणामस्वरूप,
मैं बचपन से ही तमिल बोलती आ रही थी। मेरा मानना है कि तमिल सहायकों की यह परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही थी, क्योंकि मेरे दादा और पिताजी दोनों ही तमिल जानते थे; वास्तव में, मेरे पिताजी तो तमिल पढ़ भी सकते थे, जबकि मेरे दादाजी सेना में होने के कारण हिंदुस्तानी और तेलुगु भी जानते थे। यह बहुत अजीब बात थी और शायद इसकी ज़रूरत भी नहीं थी, लेकिन हम बड़े होते समय कन्नड़ नहीं बोलते थे। खैर, शायद पूरी तरह से नहीं, क्योंकि मैंने रोज़मर्रा के कामों के लिए ज़रूरी कुछ अपशब्द सीख लिए थे। हालाँकि हमारा परिवार छोटा था, लेकिन एक बड़ा घर और हमारे पालतू जानवरों की देखभाल के लिए घर को व्यवस्थित रखने के लिए कई लोगों की ज़रूरत पड़ती थी। मेरे दो सबसे प्रिय व्यक्ति कनिकम और कैथरीन आया (दाई) थे। कनिकम की एकमात्र ज़िम्मेदारी हमारे कुत्तों की देखभाल करना थी। किसी भी समय, मेरे पिताजी जिन जंगली जानवरों की देखभाल करते थे, उनके अलावा हमारे पास हर नस्ल, आकार और प्रकार के कम से कम दस या बारह कुत्ते होते थे। कनिकम अपने काम को बहुत गंभीरता से लेता था, क्योंकि कुत्ते उसके लिए सब कुछ थे, और इसका मतलब था कि किसी भी अन्य काम को करने के लिए किसी की भी विनती, आदेश या धमकी को नजरअंदाज करना।

जून और माली के साथ

मेरी आया कैथरीन भी कुछ इसी तरह की थीं, क्योंकि उनकी दुनिया मेरे इर्द-गिर्द घूमती थी। हालाँकि उन्हें जून और मेरी देखभाल के लिए रखा गया था, लेकिन मैं उनका लाडला था। उन दिनों औपनिवेशिक बच्चों का पहला रिश्ता अपने माता-पिता से नहीं, बल्कि अपनी आया से होता था, और एंडरसन बच्चों की पहली आया कैथरीन थीं। वह कद में छोटी, सांवली थीं और जाहिर तौर पर उनकी शिक्षा बहुत कम हुई थी। वह हमसे बहुत प्यार करती थीं, और अगर मैं बढ़ा-चढ़ाकर कहूँ तो कहूँगी कि माँ से ज़्यादा उन्होंने ही हमारे शुरुआती सालों में हमारा पालन-पोषण किया। "डोनाल्ड बाबा" उनका पसंदीदा नाम था, और हम दोनों एक-दूसरे से कभी अलग नहीं होते थे। मैं उनके साथ सोने की ज़िद करता था और सोने से पहले उनकी बगल में दो उंगलियाँ रखने की आदत डाल ली थी। हमारी आया की स्वच्छता के बारे में तो भगवान ही जानते थे, लेकिन इस आदत से मुझे सबसे गहरी नींद आती थी। न टैल्कम पाउडर, न डियोड्रेंट, न ही बगल साफ करने का चलन, और नहाने की बात करें तो हफ्ते में एक बार काफी था, इसलिए इसमें कोई हैरानी की बात नहीं थी कि मैं बेसुध हो जाता था। अपनी कम उम्र के बावजूद, मैं बगल चुनने में बहुत सावधानी बरतता था; मैं हमेशा सही बगल चुनता था, जो अधिक शक्तिशाली होती थी - नींद बस कुछ ही मिनटों की दूरी पर थी।
मैंने लगभग चार साल की उम्र में अपनी स्कूली शिक्षा शुरू की। उस समय अलग से नर्सरी स्कूल नहीं थे, और घर पर भी मेरे उज्ज्वल भविष्य की शुरुआत को लेकर

कोई खास जल्दबाजी नहीं थी। मेरा पहला स्कूल बिशप कॉटन गर्ल्स स्कूल था, जहाँ मेरी बहन जून पढ़ती थी। उस समय, सभी छोटे लड़के बिशप कॉटन गर्ल्स स्कूल में पहली कक्षा तक पढ़ते थे और फिर लड़कों के स्कूल में चले जाते थे, जो अलग परिसर में था। चूंकि मैं अपनी प्यारी आया के बिना स्कूल जाने से मना कर देता था, इसलिए मेरे माता-पिता ने उनसे अनुरोध किया कि उन्हें मेरे साथ कक्षा में रहने की अनुमति दी जाए। स्कूल ने इसे एक सामान्य अनुरोध समझा और मान लिया। उस समय दुनिया बहुत सरल थी। तो, उस साल, मेरी किंडरगार्टन कक्षा में लगभग पंद्रह बच्चे और एक बहुत उत्साहित आया थीं। हम दोनों ने पूरे साल एक ही डेस्क और बेंच साझा की। मैं उस समय ज्यादा बातूनी बच्चा नहीं था, इसलिए दिन भर में मैंने क्या सीखा, इस बारे में मेरी माँ के सवालों का जवाब ज्यादातर कैथरीन ही देती थीं। कहने की जरूरत नहीं है, उन्होंने पहले साल में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया, जबकि मैं बुरी तरह फेल हो गया और मुझे निचली कक्षा दोबारा पढ़नी पड़ी। दुर्भाग्य से, उन्हें उच्च स्तरीय किंडरगार्टन पाठ्यक्रम में अपनी प्रतिभा साबित करने का मौका नहीं दिया गया और उन्हें पूर्णकालिक घरेलू कर्तव्यों में ही लगा दिया गया।
एक बार मुझे अपनी आया के बिना स्कूल जाना पड़ा, क्योंकि वह बीमार थीं, और चॉकलेट और खिलौनों के लालच से ही मेरा हठी इरादा बदला। हालांकि, स्कूल पहुँचने के बाद, मैंने ज़ोर-ज़ोर से ज़िद की कि मैं उन्हें वापस लाने के लिए ये सारे लालच छोड़ने को तैयार हूँ, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। मैं एक कक्षा से दूसरी कक्षा तक जून को पुकारते हुए भागी, वही अकेली थी जो मेरी परेशानी समझ सकती थी, और मेरे पीछे स्कूल के कई होशियार बच्चे थे। सौभाग्य से, जून की कक्षा ज़्यादा दूर नहीं थी, और मैं उसे आसानी से ढूंढने में कामयाब हो गई। फिर मैं उसके पैरों पर कूद पड़ी, उसकी टांगें पकड़ लीं और अपनी जान बचाने के लिए कसकर पकड़ लिया। स्कूल के लोगों को मेरी उस उम्र में भी ताकत का अंदाज़ा हो गया, क्योंकि मुझे छुड़ाने के लिए कम से कम तीन लोगों को लगना पड़ा, जबकि मैं चिल्ला रही थी, लात मार रही थी, घूंसे मार रही थी और जो भी इंसान जैसा दिखता था उसे काट रही थी। बेचारी कैथरीन आया मेरी इस हरकत से बहुत परेशान थीं, और अपनी बीमारी के बावजूद, वह अगले दिन मेरे साथ स्कूल गईं और सब कुछ सामान्य हो गया।
जैसे-जैसे जून और मैं थोड़ी बड़ी होती गईं, हमें एक-एक टट्टू उपहार में मिला; जून का टट्टू जूडी था, जबकि मेरे टट्टू का नाम नेल्सन था। हम उन्हें

कभी खुद नहीं चलाते थे, बल्कि हमारे साथ दो छोटे लड़के होते थे जो उनकी देखभाल करते थे, लगाम पकड़ते थे और उन्हें रास्ता दिखाते थे, जबकि हम स्कूल पहुँचते ही ऊपर बैठकर बेहद खुश दिखते थे। मुझे यकीन है कि यह मेरे पिताजी का विचार था, और हमारे कई दोस्त हमें प्रशंसा की नज़रों से देखते थे। जैसे- जैसे हम बड़े होते गए, हमें रैले साइकिलें मिलीं, जो उस समय एक लोकप्रिय ब्रांड था, और उस समय मोटरगाड़ियाँ न के बराबर थीं, इसलिए स्कूल जाने में कोई खतरा नहीं था। इन साइकिलों की एक अनूठी विशेषता यह थी कि चेन तेल से भरे धातु के आवरण में चलती थी, जिससे साइकिल चलाना बहुत आसान हो जाता था। वयस्कों को साइकिल चलाने के लिए लाइसेंस की आवश्यकता होती थी, और यदि कोई शाम ढलने के बाद साइकिल चला रहा होता था, तो उसे आगे एक छोटा सा केरोसिन का लैंप रखना पड़ता था; डायनेमो अभी कई साल दूर थे। जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, लड़कों में एक चलन सा बन गया था कि वे साइकिल के पहियों के बीच में एक प्लास्टिक का कार्ड लगा देते थे ताकि जब हम तेज़ी से पैडल मारें तो उससे मोटरसाइकिल जैसी आवाज़ आए, या कम से कम हमें ऐसा ही लगता था! यह हमारा पसंदीदा परिवहन का साधन बन गया, जहाँ भी हम जाना चाहते थे, यहाँ तक कि पैंतीस मील दूर स्थित देवराबेट्टा तक भी, जो उन दिनों के हिसाब से भी कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी।
कभी-कभी हम अपने कुछ घरेलू सहायकों को जंगल में ले जाते थे, और कुछ समय तक कैथरीन का जाना तय था। कई यात्राओं पर जाने के बाद, वह खुद को एक अनुभवी समझने लगी थी, और दोराई (मालिक) की तरह, और भी रोमांच के लिए तैयार। घर लौटकर, वह अपनी कहानियों को अपने साथियों को बढ़ा-चढ़ाकर सुनाती, जो आश्चर्य से सुनते थे। यह सिलसिला कुछ समय तक चलता रहा, जब तक कि हम मुत्तूर नामक स्थान पर नहीं गए। कैथरीन की आया, जून और मैं शिविर में रुके रहे, जबकि मम्मी और पापा घूमने गए थे। सूरज डूबने लगा और बढ़ती हुई परछाइयों को देखकर हम बेचैन होने लगे। हमारी कल्पनाएँ चरम पर थीं, और अचानक जून ने कुछ देखा और चिल्लाई "पुली, पुली" (बाघ, बाघ)! वह डरी नहीं थी, बस स्पष्ट बात की ओर इशारा कर रही थी। मैं तो उत्साहित था, लेकिन हमारी बेचारी आया ने ऐसे प्रतिक्रिया दी जैसे उन्हें गोली लग गई हो, और पीठ के बल गिर पड़ीं, जैसे उन्हें कुल्हाड़ी से मारा गया हो, और हम सब ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे। हमारी आया के साथ अगली घटना बिल्कुल भी मज़ेदार नहीं थी। हम फिर से मुत्तूर गए थे, और इस बार पापा अकेले ही घूमने निकल गए, जबकि मम्मी, जून, कैथरीन आया और

मैं कैंप में ही रुक गए। उनके लौटने का लंबे समय तक इंतज़ार करने के बाद, हमने तय किया कि अब बहुत हो गया और हम उन्हें ढूंढने निकलेंगे, अपने जंगल के हुनर का इस्तेमाल करते हुए। मम्मी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं देती थीं, और थोड़ी देर बाद हमें एहसास हुआ कि हमारी टॉर्च में बैटरी नहीं है। तब हमें लगा कि समझदारी ही बहादुरी का सबसे बड़ा हिस्सा है और हमने कैंप लौटने का फैसला किया। कैथरीन आया ने आगे चलने की ज़िम्मेदारी ली, क्योंकि उन्हें पहले से इस काम का अनुभव था। हम रास्ता भटक गए, और मंद अंधेरे में, जानवरों के रास्ते पर चलने के बजाय, हम भटक गए। अचानक, हमारे समूह की मुखिया चीखने लगी कि उसे एक मिनीस्पुरम (बुरी आत्मा) ने पकड़ लिया है, जो उसका गला घोंट रही है और उसका खून पीने की कोशिश कर रही है। हम सब अपनी जान की चिंता में वहीं जम गए। इसी बीच हमारी आया किसी तरह अपने उत्पीड़क - एक कांटेदार झाड़ी - से बच निकलने में कामयाब हो गई, लेकिन इस दौरान उसके चेहरे और हाथों पर बुरी तरह खरोंचें आ गईं। अगले हमले के डर से वह फिर से चीखने लगी और सीधे हमारी तरफ दौड़ी। सबसे बुरे की आशंका से हम सब मिलकर चिल्लाने लगे, क्योंकि हमें लग रहा था कि हमारा अंत निकट है। सौभाग्य से, हमारा शिविर एक नदी के पास था, और पास में रहने वाली पुजारी जनजाति की एक महिला ने हमारी चीखें सुनीं और हमारी मदद के लिए आ गई। वैसे तो कोई वास्तविक खतरा नहीं था, लेकिन पुजारी महिला को यह पता नहीं था। उसे बस इतना पता था कि कुछ लोग मुसीबत में हैं, और घोर अंधेरे में, केवल एक हंसिया लेकर, उसने हमें ढूंढ निकाला और शिविर तक वापस पहुंचने में हमारी मदद की। इन घटनाओं के बाद कैथरीन आया की अन्य नौकरों को सुनाई जाने वाली मनमोहक कहानियाँ बंद हो गईं, क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि शायद अब हम उसके पुराने नाटक के लिए उसे चिढ़ाएंगे।

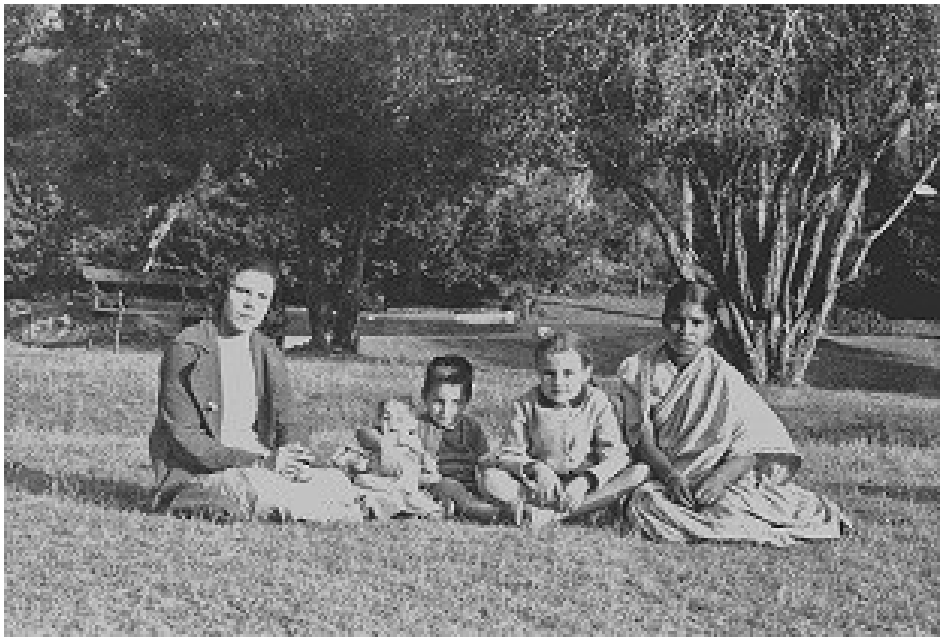

माँ, मैं, जून और कैथरीन आया - बॉटनिकल गार्डन, ऊटी

एंडरसन परिवार की महिलाएं, जून और मेरी माँ, हमारे बचपन में जंगल की यात्राओं का अभिन्न हिस्सा थीं। जून ने अस्थमा की वजह से यात्रा सीमित होने के बावजूद, कठिन परिस्थितियों में जीना सीख लिया था। हमारे ज़माने में इनहेलर नहीं होते थे, और मेरे माता-पिता नहीं चाहते थे कि शहर से दूर रहने पर उसे अस्थमा का दौरा पड़ जाए। इसलिए, उसे ठंडी जगहों पर जाने की अनुमति नहीं थी और उसे दादी के साथ घर पर ही रहना पड़ता था। उन दिनों की भरपाई के लिए, पिताजी कभी-कभी हमारे बगीचे में टेंट लगा देते थे, जो बहुत मज़ेदार होता था। हम अपने टेंट में ढेर सारा खाना, गर्म कंबल और टॉर्च भर लेते थे और पूरी रात वहीं बिताते थे। हम घर से सौ गज से भी कम दूरी पर होते थे, लेकिन ऐसा लगता था जैसे हम जंगल में हों, जिससे जून बहुत खुश होती थी। जून और मैं अपने पिताजी के लाड़-प्यार से पले-बढ़े थे। कंजूस के रूप में उनकी बदनामी के बावजूद, हमारे शुरुआती वर्षों में वे बहुत ही उदार पिता थे और मुझे अपनी खुशकिस्मती का एहसास तब हुआ जब मैं वयस्क हो गई। मैं बहुत ही शरारती बच्ची थी, और मेरा मतलब इसे बचकाना या प्यारा कहने से नहीं है। पिताजी शारीरिक दंड में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन मेरी माँ स्पष्ट रूप से बच्चे को छड़ी, कोट हैंगर, चम्मच या जो भी उनके हाथ लगता था, उससे मारने में कोई कसर नहीं छोड़ती थीं। मुझे याद है, एक बार जब मैं लगभग पाँच साल की थी, मैं बहुत शरारती हो गई थी और रंगे हाथों पकड़ी गई थी। मेरी माँ के पास

आस-पास कोई हथियार नहीं था, इसलिए उन्होंने सोचा कि उनकी चप्पल ही मुझे मारने के लिए काफी है। मुझे पता था कि इससे मुझे सच में चोट नहीं लगेगी, लेकिन वह बहुत गुस्से में दिख रही थीं और हालात मेरे पक्ष में नहीं लग रहे थे, इसलिए मैंने भागने का फैसला किया। मैं पिछले गेट से निकलकर कब्बन पार्क की ओर दौड़ पड़ी। कुछ दूर तक वो एक पैर में चप्पल पहने दौड़ी, जबकि दूसरा पैर नंगा था। इससे उसकी चाल थोड़ी अटपटी हो गई और मुझे बेकाबू होकर हंसी आ गई। जैसा कि ज्यादातर बच्चे जानते हैं, गुस्से में भरी मां पर हंसने का नतीजा कभी अच्छा नहीं होता, इसलिए उसने और लोगों को बुलाया और एक हास्यास्पद दृश्य बन गया। मां मेरा पीछा कर रही थी, उसके पीछे कैथरीन आया मुझे बख्शने की गुहार लगा रही थी, और उसके पीछे माली और रसोइया दौड़ रहे थे, जिन्हें शायद कुछ खाली समय मिल गया था और वे भी इस लड़ाई में शामिल हो गए। मेरी नजर के कोने से जून दिख रही थी, जो इस हंगामे को देख रही थी और इतनी जोर से हंस रही थी कि उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे और वो घुटनों के बल बैठ गई थी। क्यूबॉन पार्क में टहल रहे तटस्थ लोगों के लिए यह एक हास्यास्पद दृश्य रहा होगा, और यह आने वाले कई सालों तक चर्चा का विषय बना रहा। मेरा यह सिद्धांत धराशायी हो गया कि मैं किसी से भी तेज दौड़ सकता हूं, मुझे पकड़ लिया गया और घसीटकर घर वापस लाया गया और इतनी बुरी तरह पीटा गया कि मेरी बेचारी आया को मुझसे ज्यादा दर्द हुआ।
चार साल के उम्र के अंतर के बावजूद, जून और मैं बचपन में बहुत लड़ते थे। मुझे पढ़ाई से नफरत थी, क्योंकि मैं पढ़ाई में बिल्कुल भी अच्छी नहीं थी। दूसरी तरफ, जून हर काम में माहिर थी। पढ़ाई, खेल, संगीत, कला - वह हर क्षेत्र में उत्कृष्ट थी। वह प्यारी और दयालु भी थी और सभी उसे प्यार करते थे। इन सभी कारणों से मैं उससे नफरत करती थी और उसे धमकाकर अपना होमवर्क और घर के दूसरे काम करवाती थी। अगर वह मना कर देती, तो मैं उसका हाथ मरोड़ती और मारती थी। हालांकि वह मजबूत थी, मैं उससे ज्यादा मजबूत थी और उसे काफी चोट पहुँचाती थी। उसने कभी मेरी शिकायत नहीं की और बस चली जाती और हमारी दादी के साथ समय बिताती, जो उसे बहुत प्यार करती थीं।
मुझे कारण याद नहीं है, लेकिन एक समय जून अपनी दादी के कमरे से निकलकर मेरे कमरे में आ गई। पहले तो मैंने इसका विरोध किया, लेकिन आखिरकार मुझे यह अनचाहा दखल स्वीकार करना पड़ा। जून भूतों से बहुत डरती थी और हमारे घर में पितृसत्तात्मक माहौल इतना था कि उसके मन में ये विचार बैठ गए थे। लेकिन

सिर्फ हमारे पिता ही नहीं, जो हर संभव तरीके से हमें यह यकीन दिलाने की कोशिश करते थे कि हमारे बीच भूत हैं, नौकर भी उनसे कहीं आगे थे। वे भूतों और ऐसी आत्माओं की कहानियां सुनाते थे जिन्हें छोटे बच्चों का मांस खाना बहुत पसंद था। कभी-कभी जून अपना गद्दा और कंबल मेरे बिस्तर के नीचे खींचकर सो जाती थी। कई साल बाद उसने अपने इस व्यवहार का कारण बताते हुए कहा कि पलंग पर लेटा बच्चा सबसे पहले उन आत्माओं की नजर में आ जाता था जो सबसे आसान शिकार की तलाश में रहती थीं और उसे खा जाती थीं। एक बार पेट भर जाने पर वे फिर कभी बिस्तर के नीचे और शिकार ढूंढने के बारे में नहीं सोचती थीं! कभी-कभी उसका डर इतना बढ़ जाता था कि आधी रात को जब उसे बाथरूम जाना होता था, तो वह मुझे जगाकर अपने साथ खींच ले जाती थी। मैं उसके जितना डरा हुआ तो नहीं था, लेकिन अपने आरामदायक बिस्तर से उठकर गर्म पानी की बोतल को पीछे छोड़ने में बहुत आनाकानी करता था। तब वह मुझे जेब खर्च या मिठाई देकर बहलाती थी। बाथरूम पहुँचने पर वह मुझसे या तो बात करवाती थी या फिर ज़ोर-ज़ोर से गाने को कहती थी, ताकि उसे यकीन हो जाए कि जब वह अपना काम कर रही थी, तब मैं कहीं फँसा नहीं था।
मेरे पिताजी जीवन भर तंत्र-मंत्र में मग्न रहे और हमने इस शौक के प्रति उनकी बढ़ती हुई लगन को देखा। प्रॉस्पेक्ट हाउस में उनका एक कमरा था जो उनके शोध के लिए समर्पित था। जब से हमें याद है, यह कमरा अंधेरा और डरावनी चीजों से भरा हुआ था, और इसमें एक अजीब सी गंध भी आती थी। अगर हम अकेले होते, तो हम हर कीमत पर इससे बचते थे। हालांकि मैं जून से ज्यादा बहादुर थी, फिर भी मैं अकेले अंदर जाने की हिम्मत नहीं करती थी। यह कमरा हमारे बेडरूम और बाथरूम के बीच में था, जिससे हमारे लिए मुश्किलें और बढ़ जाती थीं। रात में बाथरूम जाना हमारे लिए एक डरावना अनुभव था और हम तभी जाते थे जब कोई बहुत जरूरी काम होता था। तब भी यह बेहद डरावना होता था - उन दिनों रोशनी जलाने का तो सवाल ही नहीं उठता था, इसलिए हम मोमबत्ती जलाकर दबे पांव उस डरावने कमरे से गुजरते थे। यह एक बड़ी चुनौती थी, कमरे की तरफ सीधे न देखने की कोशिश करना, फिर भी टिमटिमाती रोशनी में नाचती परछाइयों पर घबराहट भरी नजरें गड़ाए रखना, और अंत में अपनी मंजिल तक पहुंचने तक खुद को संभाले रखना। हम अपने माता-पिता के सामने कभी यह स्वीकार नहीं करते थे कि हम डरे हुए हैं, लेकिन एक दिन, कमजोरी के क्षण में, जून ने अपने डर का इज़हार कर दिया। अगली सुबह, पिताजी ने हमें अपने तंत्र-मंत्र वाले कमरे

में बुलाया ताकि यह साबित कर सकें कि डरने की कोई बात नहीं है। बेशक, उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि "भूत जैसी कोई चीज़ नहीं होती" - ये शब्द कहना उनके स्वभाव के विरुद्ध होता, लेकिन वे हमें यकीन दिलाना चाहते थे कि हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। बहुत समझाने के बाद, जून और मुझे एक छोटी मेज पर रखे क्रिस्टल बॉल के सामने दो कुर्सियों पर अगल-बगल बैठाया गया। मेज के दूसरी तरफ पिताजी बैठे थे और हमें अलौकिक दुनिया में प्रवेश करा रहे थे। मुझे याद है कि मैं क्रिस्टल बॉल को घूर रही थी, और डर के मारे, मुझे उसमें एक हिलती हुई आकृति दिखाई दी। एक पल भी बर्बाद किए बिना, मैं चीख पड़ी और उस कमरे से बाहर भागी, डाइनिंग रूम से गुज़रते हुए सामने के दरवाजे से बाहर निकल गई। जून भी चीखती हुई मेरे पीछे भागी। बाल-बाल बची, लेकिन मुझे याद है कि पिताजी हम सबसे पहले बगीचे में पहुँच गए थे! घबराहट शांत होने पर हमने एक-दूसरे से पूछा कि दूसरा क्यों भागा। जून ने बताया कि उसने वास्तव में कुछ नहीं देखा था, लेकिन वह इसलिए भागी क्योंकि मैंने देखा था। पिताजी ने शरमाते हुए स्वीकार किया कि हमें भागते देख वे भी भाग गए थे। चूंकि क्रिस्टल बॉल में मैंने ही कुछ देखा था, इसलिए मैंने जो देखा उसका वर्णन करना शुरू कर दिया। दिन का समय था, और प्रेत के बारे में सारी जानकारी सुनने के बाद, हिम्मत जुटाकर हम तीनों फिर से क्रिस्टल बॉल को देखने के लिए कमरे में वापस गए। तब हमें पता चला कि मैंने जो देखा था वह क्रिस्टल बॉल के माध्यम से केवल एक लिपटा हुआ फ़ारसी कालीन था! विडंबना यह थी कि मेरे पिताजी, जिन्होंने इतने वर्षों तक भूत देखने की कोशिश की थी, सच्चाई का क्षण आने पर सबसे तेज़ भागे! इससे क्रिस्टल बॉल में भूत का रहस्य तो सुलझ गया, लेकिन उस कमरे का डर आने वाले कई वर्षों तक बना रहा।
पिताजी के पास मौजूद एक और हथियार था प्लानशेट। प्लानशेट लकड़ी का एक चपटा टुकड़ा होता है जिसमें पेंसिल या पेन रखने का उपकरण लगा होता है। पिताजी जैसे लोग मानते थे कि आत्माओं की उपस्थिति या उनकी ऊर्जा प्लानशेट को हिलाती है, और हम शौकिया तौर पर उन लोगों से संपर्क करने की कोशिश करते थे जो गुजर चुके थे। हम हमेशा इस बात से अचंभित रहते थे कि अक्षर कैसे प्रकट होते थे, और उन्हें समझने का काम हममें से हर एक पर छोड़ दिया जाता था, हालांकि हम पिताजी की व्याख्या को ही अंतिम मानते थे। कभी-कभी आत्माएं लिखित शब्दों से अपनी बात नहीं कहती थीं, बल्कि केवल थपथपाकर सवालों के जवाब देती थीं। एक बार थपथपाने का मतलब 'हाँ' होता था, जबकि दो बार थपथपाने

का मतलब 'नहीं'। उन वर्षों में इसने हमारा ध्यान तो खींचा, लेकिन बड़े होने पर हमारी रुचि खत्म हो गई। पिताजी ने ओइजा बोर्ड का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया और श्रीमती लाज़ार के घर पर होने वाले उन सत्रों में भाग लेने लगे जो आम थे। वह अजीब भाषा में बात करती थीं और इस दुनिया में अधूरे काम रह गए मृत लोगों से संपर्क करने के लिए काफी मशहूर थीं। उनकी बहुत मांग थी, खासकर एंग्लो-इंडियन लोगों के बीच। पुराने जमाने में भूतों के लिए जगह होती थी, लेकिन आज की आबादी को देखते हुए, मुझे संदेह है कि लोगों के पास भूतों के लिए समय है, जबकि भूतों के पास शायद रहने के लिए कोई जगह ही नहीं बची है! पिताजी हमेशा नई चीजों और विचारों में रुचि रखते थे, और उन्होंने हममें भी जिज्ञासा की भावना जगाई। आज के विपरीत, मेरे माता-पिता हमारे प्रति अत्यधिक सुरक्षात्मक नहीं थे, और पिताजी हमें छोटे वयस्कों की तरह मानते थे, हमें चीजों को आजमाने, जिम्मेदारी लेने और अपनी गलतियों से सीखने की आजादी देते थे। वे हमारे रोमांच को बढ़ाने के लिए परिस्थितियाँ भी बनाते थे, जैसे हमें "बम्बल-बम्बल एल्व्स गुफा" दिखाने ले जाना। बैनरघट्टा रोड पर यात्रा करते समय यह गुफा हमारे लिए एक नियमित पड़ाव थी। हम दसवें मील के पत्थर पर रुकते और दो फर्लांग चलकर सड़क के बाईं ओर स्थित इस रहस्यमयी जगह पर पहुँचते। गुफा का प्रवेश द्वार सड़क से दूर होने के कारण, आमतौर पर कोई इस जगह को देख भी नहीं पाता था। इसके पास से गुजरना पड़ता था, और फिर प्रवेश द्वार तक पहुँचने के लिए नीचे उतरना पड़ता था। अंदर एक मंदिर था और गुफा सैकड़ों चमगादड़ों का घर थी। गुफाएँ बहुत गहरी नहीं थीं, लेकिन किसी तरह सूरज की रोशनी कभी भी सीधे अंदर नहीं पड़ती थी, इसलिए यह वास्तव में जितनी बड़ी थी, उससे कहीं अधिक बड़ी दिखाई देती थी। हम चमगादड़ों को परेशान न करने के लिए सावधानी से टॉर्च जलाते और चारों ओर देखते। मुझे पक्का नहीं पता कि हम क्या खोज रहे थे, लेकिन पिताजी हमेशा हमें यकीन दिलाते थे कि यह एक जादुई गुफा है। जहाँ तक नाम "बम्बलबम्बल एल्व्स गुफा" की बात है... कौन जाने, लेकिन रहस्य का एक हिस्सा नाम ही था, और उन्होंने मुझे बताया कि बचपन में उनके पिता उन्हें यहाँ लाए थे; तो ज़ाहिर है यह प्राचीन थी। बेशक, जादू को बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी अच्छी तरह से बनाई गई योजनाएँ उजागर न हों, वे हमें बताते थे कि गुफा और उसके निवासी की असली शक्तियाँ शाम ढलते ही बढ़ जाती हैं। और चूंकि यह आमतौर पर किसी आउटिंग के बाद बैंगलोर लौटते समय एक पड़ाव होता था, इसका

मतलब था कि हम सूर्यास्त के बाद वहाँ से गुजरेंगे। हमेशा उत्सुक होने के बावजूद, वापसी में उन्हें रुकने के लिए कहने की हिम्मत नहीं होती थी। जून मेरा हाथ चुटकी काटती और उस जगह की ओर इशारा करती, लेकिन हम दोनों में से किसी में भी उन्हें रुकने के लिए कहने की हिम्मत नहीं होती थी। हमारे रोंगटे खड़े हो जाते, लेकिन हम एक शब्द भी नहीं बोलते। आगे की सीटों पर बैठे दोनों लोग हमारी गाड़ी के गुजरते समय अपनी हंसी दबा रहे होंगे। बन्नेरघट्टा के अलावा, हम थिप्पगोंडनहल्ली, हेसरघट्टा और मगदी जैसी जगहों पर पिकनिक मनाने जाते थे। हम अक्सर अपने जैसे बच्चों वाले कुछ परिवारों के साथ जाते थे। इन जगहों पर घने जंगल थे जिनमें पैंथर, भालू, जंगली सूअर, जंगली मुर्गे, मोर और तीतर जैसे जानवर पाए जाते थे, इसलिए शिकार करना हमेशा संभव रहता था। अगर हम मछली पकड़ने के अवसर वाली जगहों पर जाते, तो सेडन परिवार हमेशा हमारे साथ आता था। "टाइनी" सेडन एक बेहतरीन मछुआरा था और उसका परिवार हमारा करीबी दोस्त था। ये ज्यादातर एक दिन की यात्राएँ होती थीं, जबकि लंबी छुट्टियों के लिए हम कोडाइकनाल, पांडिचेरी और नीलगिरी जैसी जगहों पर जाते थे।

एंडरसन और सेडन परिवार। जून और मैं, दोनों बिल्कुल विपरीत छोर पर।

मेरे पिताजी के सिटी रेलवे स्टेशन के पीछे रेलवे कॉलोनी में भी कई दोस्त थे। हम अक्सर वहाँ जाया करते थे, और जून और मुझे स्टीम इंजन देखने का मौका

मिलता था, जबकि पिताजी अपने दोस्तों से बातें करते थे। ये हमारे लिए बहुत ही रोमांचक पल होते थे, क्योंकि हम इंजनों में चढ़ जाते थे और उनमें से कोई एक हमें पूरे इंजन की सैर करवाता था। हालाँकि स्टीम इंजन बहुत अधिक धुएँ और गंदगी से जुड़े होते हैं, लेकिन ये इंजन हर बार चलने के बाद एकदम साफ होते थे, क्योंकि ट्रेनों का संचालन करने वाले लोग अपने काम के प्रति बेहद समर्पित थे। एंग्लो-इंडियन, जो व्यावहारिक रूप से भारतीय रेलवे चलाते थे, अपने काम करने के तरीके पर गर्व करते थे, और मैंने वही समर्पण टेलीग्राफ विभाग में भी देखा, जहाँ मेरे पिताजी काम करते थे।
मुझे अपनी पहली बंदूक मिलने से पहले, इस तरह की चीज़ों में रुचि रखने वाले ज़्यादातर लड़कों की तरह, गुलेल मेरा पसंदीदा हथियार था। इसके लिए बस एक पुराने टायर के पुर्जे, एक काँटेदार टहनी और कंकड़ से लेकर धूप में सुखाई गई मिट्टी की गोलियाँ और मटर तक, कई तरह के गोला-बारूद की ज़रूरत होती थी, जिनकी कभी कमी नहीं होती थी। अगर मैं स्कूल में नहीं होता, तो मैं अपने दोस्तों के साथ क्यूबॉन पार्क में होता, जहाँ मैं पेड़ों पर चढ़ जाता, जिन्हें मैं विशाल जहाज़ समझता था, जिन पर हम समुद्री डाकू होते थे, या हम विशाल लॉन पर काउबॉय और इंडियंस का खेल खेलते थे, जो बाद में अमेरिकी प्रेयरी बन गए। नकली तलवारों और खंजरों के विपरीत, गुलेल एक असली हथियार था और इसमें कोई नाटक नहीं था। हमने कभी एक-दूसरे पर गोली नहीं चलाई, लेकिन एक हथियार का एहसास, चाहे वह कितना भी छोटा और मामूली क्यों न हो, बहुत रोमांचक था। मेरा दोस्त सिडनी डी'सिल्वा और मैं बैनरघट्टा रोड पर फलों के बागों पर छापा मारने और स्टैनली बगआउट या खून चूसने वालों का शिकार करने जाया करते थे। स्टैनली बगआउट? हम उन्हें यही नाम देते थे, हालांकि मुझे नहीं पता कि यह नाम कैसे पड़ा। वे खून चूसने वाले जीव नहीं थे, बल्कि आम छिपकलियाँ थीं और इन कारनामों के कारण हमने उनकी आबादी को काफी नुकसान पहुँचाया था। हम अपने साइकिलों पर अपना लंच और गुलेल लेकर निकलते थे और पूरा दिन छायादार पेड़ों में बिताते थे, पेड़ों पर चढ़ते थे, तालाबों में तैरते और मछली पकड़ते थे, और हाँ, इन सरीसृपों का शिकार भी करते थे। जो तुरंत मर जाते थे वे खुशकिस्मत थे, जबकि बदकिस्मत तड़पते रहते थे, क्योंकि हम उन्हें वहीं छोड़ देते थे। हमें ज़रा भी पछतावा नहीं होता था, और यह एक बेहद क्रूर खेल था जिसमें हम लिप्त रहते थे। हमें इस तरह के मजे के लिए सप्ताहांत का इंतजार नहीं करना पड़ता था। हम अक्सर स्कूल से बंक मारते थे,

और हमारे लिए सबसे नज़दीकी अड्डा बाल्डविन गर्ल्स स्कूल के पीछे कीचड़ का तालाब था, जहाँ हम मछली पकड़ते थे और बोतलों में नमूने इकट्ठा करते थे। आज वो तालाब वहाँ नहीं है, और उसकी जगह "दिव्याश्री चैम्बर्स" बन गया है, हालाँकि जिन पेड़ों पर मैं घंटों बिताता था, उनमें से कुछ अभी भी मौजूद हैं। हमारे संग्रह का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा तितली पकड़ने वाले जाल थे, और हम घंटों भृंग, तितलियाँ और अन्य कीड़े पकड़ते रहते थे। हम सभी के पास अपना-अपना संग्रह होता था, जिसमें हम इन कीड़ों को कांच के बक्सों में सजाकर रखते थे, कुछ को प्लास्टिक या कॉर्क पर विशेष पिनों से लगाते थे या बस प्लास्टिक के एक छोटे टुकड़े पर चिपका देते थे। ये हमारे लिए अनमोल वस्तुएँ बन जाती थीं और अक्सर स्कूल में लेन-देन या शर्त लगाने में इनका इस्तेमाल होता था। पिताजी के साथ जंगलों की यात्राओं ने मुझे शहर में रहने वाले अपने सहपाठियों से कहीं अधिक लाभ दिया, और मैं अक्सर कुछ बहुत ही अनोखे कीड़े लेकर लौटता था। मेरी यादों में एक खास कीड़ा है जिसे मखमली बूटची कहते हैं, जो हमें अक्सर बरसात के मौसम में सेगुर क्षेत्र में देखने को मिलता था। यह पैरों वाली एक छोटी मखमली गेंद जैसा दिखता था। ऊटी जाते समय मुझे ऐसे सैकड़ों कीड़े मिलते थे, लेकिन अब वे उन जंगलों से गायब हो गए हैं। सिडनी की मेरी हर यात्रा की याद टॉफी सेबों से जुड़ी होती है। मूल रूप से अमेरिकी ये सेब युद्ध के दौरान बैंगलोर के लड़कों में बेहद लोकप्रिय थे और हम इन्हें दर्जन भर खाते थे। एक डंडी पर लगे और गुड़ से ढके इस पूरे सेब को काटने से हमें इसकी सख्त बाहरी परत और अंदर का कुरकुरा, लेकिन नरम फल दोनों का स्वाद मिलता था। सोडा कांच की बोतल में मिलता था, जिसमें गैस को रोकने के लिए एक कंचा लगा होता था, और हम अक्सर बोतलें तोड़कर उसमें से कांच की गेंदें निकालते थे, जिन्हें हम अपने संग्रह में शामिल करते थे। स्कूल से लौटने पर मेरिंग्यू और आइस्ड टी केक शाम के नाश्ते में मिलते थे। मुझे खास तौर पर ब्लैंकमांज याद है, जो पांच अलग-अलग स्वादों में आता था। मेरे पिताजी को मीठा बहुत पसंद था, हालांकि नारियल का स्वाद परिवार में थोड़ा अजीब था, फिर भी हमारे परिवार में सभी को यह पसंद था। कारमेल कस्टर्ड, ब्रेड पुडिंग और ड्राई फ्रूट पुडिंग जैसे आम व्यंजन भी होते थे। और हां, जेली और आइसक्रीम तो होती ही थी, जो ज्यादातर घर पर हाथ से चलने वाली आइसक्रीम मशीन में बनाई जाती थी। यह एक पारिवारिक मामला था, और हम सभी मिलकर बर्फ और सेंधा नमक पर आइसक्रीम को मथकर सबसे स्वादिष्ट आइसक्रीम

बनाते थे, जिसे तुरंत खा लिया जाता था। गर्मियों के अधिकांश दिन लेकव्यू में दो मिल्कशेक के साथ समाप्त होते थे, जिनकी कीमत लगभग आधा आना प्रति मिल्कशेक होती थी। उन दिनों जेब खर्च का कोई चलन नहीं था, और पिताजी की कंजूसी ने हालात और भी मुश्किल बना दिए थे। हालांकि, माँ हमें जेब खर्च के लिए पैसे देती थीं, आमतौर पर हर महीने कुछ आने। दूसरे विश्व युद्ध के बाद, हम एक रुपये में पच्चीस रोटियाँ खरीद सकते थे, और यह मज़ेदार बात है कि आज, सत्तर साल बाद, एक रोटी पच्चीस रुपये में मिलती है! एक रुपये और आठ आने में, हम चारों शहर के किसी अच्छे रेस्तरां में बढ़िया भोजन कर सकते थे। मेरी उम्र के किसी व्यक्ति के लिए, पैसा कभी रुपये में नहीं होता था—केवल पाई, पैसे और आने में होता था। एक रुपया सोलह आने के बराबर होता था, एक आना चार पैसे के बराबर होता था, और एक पैसा तीन पाई के बराबर होता था। हम जितना भी पैसा बचा पाते या आसानी से "उधार" ले पाते, उसका ज़्यादातर हिस्सा छोटी दुकानों से खाने-पीने और छोटी-मोटी चीज़ों पर खर्च कर देते थे। लेकिन सबसे मज़ेदार जगहें स्पेंसर एंड कंपनी और नीलगिरिस थीं, जो उस समय के दो ही डिपार्टमेंटल स्टोर थे। हालांकि, हम ज़्यादातर रसेल मार्केट के कसाई, सब्ज़ीवाले और मछलीवाले पर निर्भर रहते थे। प्लास्टिक की थैलियाँ न होने के कारण हम जो भी खरीदते थे, उसे कपड़े के थैलों में रखते थे या पुराने अख़बारों में लपेटकर लाते थे। रोटी, अंडे और दूध दुकानों से नहीं खरीदते थे, बल्कि घर पर ही मंगवाते थे। आज के विपरीत, नाई भी घर आता था, और जून और मैं बगीचे में ही बाल कटवाते थे। हमें गर्दन के पीछे के बाल काटने वाली कैंची से नफ़रत थी! मैं अक्सर बाहर ही रहती थी और अक्सर चोटें और खरोंचें लग जाती थीं, लेकिन जब तक कोई गंभीर बात न हो, मैं कभी डॉक्टर के पास नहीं जाती थी। आमतौर पर, एक चम्मच अरंडी का तेल हमारी सारी बीमारियों को ठीक कर देता था। कपड़े कभी खरीदे नहीं जाते थे, बल्कि दर्जी से सिलवाए जाते थे। हम नए कपड़े बहुत कम खरीदते थे और पुराने कपड़ों को सिंगर सिलाई मशीन पर कई बार सिलने और मरम्मत करने के बाद ही फेंकते थे, जब तक कि वे पूरी तरह से फट न जाएं। कपड़े और जूते एक साइज़ बड़े खरीदे जाते थे, क्योंकि वे ज़्यादा चलते थे! जो जूते तंग हो जाते थे, उनके आगे का हिस्सा काटकर सैंडल की तरह इस्तेमाल किया जाता था! मुझे पढ़ाई से नफ़रत थी, लेकिन खेल बहुत पसंद थे, इसलिए स्कूल में देर तक रुकना मुझे अच्छा लगता था। मैंने लगभग सभी खेलों

में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जिसमें क्रिकेट भी शामिल था, जहाँ मैंने विकेटकीपर के रूप में राज्य स्कूल टीम का प्रतिनिधित्व किया।
मुझे पढ़ाई से इतनी नफरत थी कि मैं अक्सर स्कूल न जाने के लिए बड़े-बड़े बहाने बना लेती थी। पापा और मैं आमतौर पर गुरुवार शाम को स्कूल जाते थे और सोमवार तड़के लौट आते थे। फिर पूरे दिन स्कूल जाना, खेलकूद के लिए रुकना और फिर पैदल घर वापस आना, ये सोचकर मुझे हैरानी होती है कि मैं रास्ते में बेहोश कैसे नहीं हो गई!

मेरे पास इससे भी ज़रूरी काम हैं।

अपने पिता की तरह, मुझे भी सभी जीवित प्राणियों से बेहद लगाव था और बचपन में मेरे पास कई पालतू जानवर थे। हालाँकि उन्हें पालतू जानवर नहीं कहा जा सकता, लेकिन मेरी एक खास हरकत थी स्कूल में बिच्छू ले जाना। मैं स्कूल के बड़े लड़कों के बीच भी हीरो बन गया था, जब मैं अपने बैग से एक विशाल, काले और काँटेदार बिच्छू को निकालता था। हालाँकि मैं हमेशा सावधान रहता था कि उसके पंजों से मुझे चोट न लगे, लेकिन उसकी पूंछ हमेशा सबसे खतरनाक होती थी, और देखने वाले डर के मारे मुझे देखते रहते थे जब मैं उसकी पूंछ से रूसी रूलेट खेलता था, मानो वह मुझे डंक मारने की कोशिश कर रही हो। कुछ बातें मेरे पक्ष में थीं। पहली थी अज्ञानता। बड़े काले बिच्छू, हालाँकि दर्दनाक निशान छोड़ सकते हैं, लेकिन इंसानों के लिए लगभग जानलेवा नहीं होते।

हालाँकि, उसकी भयानक शक्ल उसे दोगुना खतरनाक या मुझे दोगुना बहादुर बना देती थी। दूसरा फायदा जो मुझे मिलता था, वह था थोड़ी-बहुत चालाकी। घर के कुछ चोकरों की बदौलत, तब तक मैं न केवल बकवास करने में माहिर हो चुका था, बल्कि बिच्छू के डंक को घिसकर छोटा करने में भी, जिससे वह जीव लगभग हानिरहित हो जाता था। बिच्छू का डंक निकालना उसे मारने के बराबर था, और मरे हुए बिच्छू को ले जाना, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, किसी भी तरह से सम्मान की बात नहीं थी। इसलिए, कई कोशिशों और दर्दनाक गलतियों के बाद, मैंने अपने कई स्व-घोषित पीएचडी में से एक हासिल कर ली - वह पीएचडी जो लगभग एक साल बाद ही अपना व्यावहारिक उपयोग खो देती है!
जब मैं बड़ा हो रहा था, तब संगठित सट्टेबाजी के नाम पर हम बटेरों की लड़ाई ही देखते थे, और इसमें भी मैं माहिर था। इसमें जीतने की संभावना का कोई नियम नहीं था: बस एक साधारण सी शर्त होती थी - जो बटेर आखिर तक खड़ी रहती, उसका मुकाबला उस बटेर से होता था जो हार जाती। यह खेल देखने में बिल्कुल भी अच्छा नहीं था, लेकिन मैं इसमें बहुत अच्छा हो गया था। बटेर अपने झगड़ालू स्वभाव के लिए बदनाम हैं और अक्सर उन्हें अलग रखा जाता है, खासकर नर बटेरों को। मैं उन्हें घर पर पालता था, और मेरे पिताजी, मेरी इस शरारती योजना से अनजान, हमेशा सोचते थे कि कुछ बटेर कैसे गायब हो जाती थीं। मुझे उनके खाने- पीने का इंतजाम करने में बहुत गर्व होता था, जिसमें रसेल मार्केट से खरीदे गए मांस के अंदरूनी हिस्से भी शामिल होते थे, जिन्हें हम अपने बड़े पालतू जानवरों को खिलाने के लिए लाते थे। एक जोड़ी बटेर की कीमत लगभग चार आना होती थी, और मैं रसेल मार्केट की एक दुकान से उन्हें चुनने में काफी समय बिताता था। प्रशिक्षण के हिस्से के रूप में, मैं बटेर को एक दर्पण के सामने रखता था, जहाँ वह लगातार अपनी परछाई पर हमला करती रहती थी। मुझे लगता था कि इससे बटेर अखाड़े के लिए तैयार हो जाती थीं और उन्हें अच्छा अभ्यास मिल जाता था। तैयार होते ही, ये पंख वाले पहलवान स्कूल के मैदान के एक सुनसान हिस्से में बेरोकटोक लड़ाई में जुट जाते थे, जबकि कुछ लड़के स्कूल के कर्मचारियों पर नज़र रखने के लिए तैनात रहते थे, जो इस तरह की किसी भी चीज़ पर सख्त पाबंदी लगाते थे। पैसों का लेन-देन बहुत कम होता था और हम आमतौर पर गुलेल, कंचे और कॉमिक किताबें जैसी छोटी-मोटी चीज़ों पर दांव लगाते थे। बटेर मेरे पालतू जानवरों में से एक थे, लेकिन वे सही मायने में पालतू नहीं थे, क्योंकि वे न तो शांत थे और न ही स्नेहशील। मुझे ज़्यादातर स्तनधारी

जीव पसंद थे, और पक्षी भी ठीक-ठाक थे, लेकिन बस यहीं तक। मुझे साँपों से नफ़रत थी - मेरे पिताजी के विपरीत। उन्हें साँपों से एक अजीब सा लगाव था और जब से मुझे याद है, हमारे घर में हमेशा साँप रहे हैं - ज़हरीले साँप जैसे कोबरा और रसेल वाइपर, साथ ही अजगर और धमन (चूहे के साँप) जैसे गैर-ज़हरीले साँप भी। हालाँकि, साँप ही हमारे घर के इकलौते जीव नहीं थे। जानवरों की संख्या तो छोड़ ही दीजिए, प्रजातियों की विविधता भी विस्मयकारी थी। सियार, पैंगोलिन, नेवला, बंदर, मालाबार जायंट समेत गिलहरी, खरगोश, भौंकने वाला हिरण, डोरा नाम की एक सांभर मादा हिरण, चूहा हिरण, स्लिम लोरिस, विशाल कछुए और, ज़ाहिर है, किसी भी समय लगभग एक दर्जन कुत्ते और बिल्लियाँ मौजूद रहती थीं। घरेलू मुर्गे, मोरों का एक जोड़ा, हंस, टर्की, तोते, मैना और एक गुस्सैल गिद्ध पक्षी जगत का प्रतिनिधित्व करते थे। पीछे मुड़कर देखने पर, इनमें से कुछ पक्षियों को छोटे पिंजरों में रखना मेरे लिए क्रूरता के कृत्यों की सूची में सबसे ऊपर आता है; एक फुट गुणा एक फुट के चौकोर पिंजरे में जीवन भर रहना उन पक्षियों के लिए भयानक रहा होगा, और काश मैंने ऐसा न किया होता।
यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ज़्यादातर लोग हमारे घर को चिड़ियाघर का ही एक हिस्सा मानते थे, लेकिन इसकी असलियत एक दिन तब सामने आई जब मेरे दोस्त मेरवान की साज़िश का पर्दाफ़ाश हुआ। चूंकि हमने घर का एक हिस्सा किराए पर दे रखा था, इसलिए यह मान लिया जाता था कि घर के अंदर दिखने वाला कोई भी व्यक्ति किसी किराएदार से मिलने आया है। हमारे यहाँ कई मेहमान आते थे, ज़्यादातर बच्चे या युवा, और किसी से कोई सवाल नहीं किया जाता था या किसी पर शक नहीं किया जाता था। लेकिन एक दिन, मेरी माँ ने गुस्से में उठती हुई आवाज़ें सुनीं; कोई पैसे वापस माँग रहा था। उत्सुकतावश, वह घर के उस हिस्से की ओर गईं जहाँ गरमागरम बहस हो रही थी।
"अरे बाप रे! आपने कहा था कि यहाँ बाघ हैं, इसीलिए तो मैंने इतने पैसे दिए। मैं यहाँ कुछ घटिया सियार और साँप देखने नहीं आया था।"
राज खुल गया और मेरवान ने कबूल किया कि वह लंबे समय से लोगों को घर पर बने चिड़ियाघर के निर्देशित दौरे के टिकट बेच रहा था! हमारे पालतू जानवरों में, जैकी नाम का लकड़बग्घा मेरे पिताजी का पसंदीदा था और वह क्यूबॉन पार्क के पास एक सूखी खाई से घिरे एक बड़े द्वीप पर रहता था। वह बहुत ही शांत स्वभाव का था, लेकिन एक बार हमें एक भयानक घटना का सामना करना पड़ा।

हमारे किरायेदारों में से एक, गिल्बर्ट ब्रिग्स नाम का एक छोटा लड़का, उन दिनों के लोकप्रिय हुला-हूप से खेल रहा था। हुला-हूप जैकी के पास गिर गया और वह उसे उठाने गया। इसी बीच लकड़बग्घे ने उसे पकड़ लिया और खेल में शामिल होना चाहता था, उसे छोड़ने को तैयार नहीं था। रस्साकशी में गिली गिर गया। हालांकि जैकी आमतौर पर बहुत शांत स्वभाव का था, लेकिन गिली के गिरने पर वह डर गया और लड़के पर हमला करके उसे काट लिया। यह एक विवादित मुद्दा बन गया और सवाल उठने लगे कि क्या ऐसे पालतू जानवरों को घरों में रखना चाहिए। हालांकि हम मामले को दबाने में कामयाब रहे, लेकिन नगरपालिका को घटना की जानकारी मिल गई और हमारे पास जैकी को पिताजी के व्हाइटफील्ड स्थित घर ले जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। कुछ अनोखे पालतू जानवरों में पैंथर के बच्चे भी शामिल थे जिन्हें मैं कई बार घर लाया था। हम उनमें से किसी को भी "स्पॉटी" के अलावा किसी और नाम से नहीं पुकारते थे और जब वे छोटे थे तो बहुत चंचल होते थे, लेकिन बड़े होते-होते उन्हें संभालना बेहद मुश्किल हो जाता था, वे अक्सर मेहमानों का पीछा करते और खूनी चीखों के साथ उन पर कूद पड़ते थे। हम कभी सबक नहीं सीख पाए और जो पहले प्यारे पालतू जानवर लगते थे, वे खतरनाक जानवर बन जाते थे और हमें उन्हें मैसूर और मद्रास के चिड़ियाघरों में देना पड़ता था।

□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□

□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□-□□□□ □□□ □□□□□ □□, □□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□, □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□, □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□, □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□, □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□, □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□ □□ □□□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□, □□□□-□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□, □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□, □□□□ □□

अपनी दो टांगों वाली रखैल मानता था। दुख की बात है कि उसे भी किसी और को देना पड़ा।

मस्ती करते हुए। जैको के साथ

हमारे पास कई कुत्ते थे, लेकिन वे सभी बहुत बिगड़े हुए थे और घर की रखवाली करने में बिल्कुल नाकाम थे। अगर कोई पालतू जानवर घर की रखवाली करता था, तो वह इवान नाम का एक लाल सिर वाला हंस था। हम उसे अपने एक शिकार अभियान से चूजे के रूप में लाए थे और वह परिवार का एक गुस्सैल और हद से ज़्यादा सुरक्षात्मक सदस्य बनकर बड़ा हुआ। दो अन्य सामान्य हंसों के साथ मिलकर, वे एक खूंखार, शोर मचाने वाली तिकड़ी बन गए थे जो बिना किसी उकसावे के लोगों पर हमला कर देते थे। हमारे पास कई अजीबोगरीब पालतू जानवर थे, और हालांकि वे ज़्यादा रोमांच प्रदान करते थे, वे वास्तव में जंगली जानवर थे, और हमेशा ऐसी घटनाएं होती रहती थीं जिनसे लोगों की जान को खतरा होता था। पीछे मुड़कर देखने पर, लोगों के लिए खतरे के अलावा, अब मुझे एहसास होता है कि उन्हें जंगलों में उनके प्राकृतिक आवास से लाना कितना क्रूर था और उन्हें पालतू जानवर के रूप में रखना तो और भी ज़्यादा क्रूर था।
शहर में अंग्रेज़ या एंग्लो-इंडियन बच्चों के लिए बिशप कॉटन एक लोकप्रिय स्कूल था। 1930 के दशक में क्लेरेंस और जोसेफ्स अन्य दो स्कूल थे। यह

विडंबना ही है कि कैथोलिक बनाम प्रोटेस्टेंट का विवाद स्कूलों तक भी पहुँच गया, क्योंकि हमारा सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी सेंट जोसेफ्स कैथोलिक था, जबकि मेरा स्कूल, बिशप कॉटन, प्रोटेस्टेंट था। मेरा स्कूल एक भव्य संस्थान था जिसकी स्थापना 1865 में कलकत्ता के एक बिशप ने की थी, जो भारत में शिक्षा प्रदान करना चाहते थे। छात्र तीन सदनों - पेटिग्रेव, पोप और पैकेनहैम वॉल्श - में से किसी एक में पढ़ते थे, प्रत्येक सदन का नाम स्कूल के एक प्रभावशाली व्यक्ति के नाम पर रखा गया था। मेरे स्कूल में पढ़ने के दौरान, प्रिंसिपल कैनन एल्फिक थे, जिन्हें कई लोग स्कूल का अब तक का सबसे अच्छा प्रिंसिपल मानते हैं। स्कूल में कई ब्लॉक थे, जिनमें से प्रत्येक छात्रों के एक समूह या किसी गतिविधि के लिए था, और एक चैपल और एक कैंटीन भी थी। प्रत्येक कक्षा में दो खंड थे और उनमें देश भर से विभिन्न पृष्ठभूमियों और धर्मों के छात्र पढ़ते थे, लेकिन उनमें से प्रमुख यूरोपीय और एंग्लो-इंडियन थे, साथ ही कुछ पारसी, कूर्गी और मलयाली भी थे। स्कूली शिक्षा के दौरान केवल तीन बार परीक्षाएं आयोजित की जाती थीं— बैंगलोर मिडिल स्कूल, जूनियर कैम्ब्रिज और सीनियर कैम्ब्रिज। मिडिल स्कूल एक भारतीय परीक्षा थी जो सातवीं कक्षा में देनी होती थी, जबकि जूनियर कैम्ब्रिज एक अंग्रेजी परीक्षा थी, जो भारत में आयोजित की जाती थी। नौवीं कक्षा में सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा होती थी जो भारतीय और अंग्रेजी दोनों प्रणालियों में समान थी। इसलिए मैं सीनियर कैम्ब्रिज फेलो हूं, या आज के समकक्ष, लगभग नौवीं कक्षा उत्तीर्ण, जिस पर गर्व करने लायक कुछ नहीं है। हमारे अधिकांश विषय पादरी पढ़ाते थे, जिन्होंने अपना पूरा जीवन सेवा में व्यतीत किया। वे तीस या चालीस वर्षों तक विद्यालय और चर्च की सेवा के लिए समर्पित थे, और अंततः इसी देश में दफनाए जाने के लिए प्रतिबद्ध थे। हालांकि विकल्प सीमित थे, और नौकरी बदलने की अवधारणा अज्ञात थी, इन पुरुषों ने अपना पूरा जीवन इस संस्था को समर्पित कर दिया। स्पष्ट रूप से, वे एक अलग ही नस्ल के थे, शायद अपनी तरह के आखिरी लोग। लगभग बिना परिवार और इंग्लैंड लौटने की कोई उम्मीद न होने के कारण, उन लोगों का जीवन बहुत कठिन रहा होगा। अपनी निराशाजनक परिस्थितियों के बावजूद, उनमें से अधिकांश निष्पक्ष थे और शिक्षा प्रणाली के प्रति उनका समर्पण अटूट था। कारावास सबसे आम सजा थी, और छोटे-मोटे अपराधों के लिए कोई भी शिक्षक इसे दे सकता था। स्कूल में रुककर अंतहीन पन्ने लिखना बेशक कोई सुखद अनुभव नहीं था,

इसे आश्चर्यजनक रूप से अच्छी तरह से लिया, या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा। थोड़ी देर बाद वह गाड़ी चलाकर चली गई। मुझे आगे आने वाली घटनाओं का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था, और इस कहानी का बाकी हिस्सा एक किंवदंती बन गया। वह स्कूल के स्टाफ क्वार्टर तक गाड़ी चलाकर गई, मॉस के कमरे का रास्ता पूछा और एक धूप भरे शनिवार की दोपहर को अपने पीछे बोर्डिंग छात्रों की एक पंक्ति के साथ गंभीर चेहरे के साथ आगे बढ़ गई।
“श्रीमान मॉस?”
यह पुष्टि थी, प्रश्न नहीं, लेकिन कमरे में मौजूद व्यक्ति को इसका एहसास नहीं हुआ। अंदर से कुंडी हटाई गई, और मेरी माँ ने अपने पैर अंदर डाले, मॉस को एक तरफ धकेला और दरवाजा बंद कर दिया। मुझे लगता है कि यह उनका हैंडबैग था, शायद कुछ और था, लेकिन लड़कों ने चीखें साफ सुनीं, क्योंकि मेरी माँ ने मॉस पर एंडरसन के कठोर प्रहारों की बौछार कर दी, साथ ही एक भारी वस्तु से भी वार किया। हालाँकि कमरा काफी बड़ा था, हमले की गति और उसकी शारीरिक अक्षमता के कारण उसके पास खुद का बचाव करने का बहुत कम मौका था। मेरी माँ, जो लाल चेहरे और पसीने से तरबतर होकर बाहर आईं, को देखकर अंदर पीड़ित की हालत का अंदाजा लगाना मुश्किल था। मॉस अगले कुछ दिनों तक हमें पढ़ाने नहीं आया, और उसके बाद उसने लड़कों को परेशान करना बंद कर दिया। मैंने तो यह भी सुना है कि उसने पढ़ाना छोड़ दिया और पादरी बन गया। अगर वह कभी सफल हुआ, तो श्रीमती ब्लॉसम एंडरसन इस परिवर्तन के लिए विशेष प्रशंसा की पात्र हैं। मुझे अक्सर बेंत से मार पड़ती थी, ज्यादातर लड़ाई-झगड़े के लिए, और मुक्केबाजी में मेरी बेफिक्री ने मुझे स्कूल के आखिरी साल में गंभीर मुसीबत में डाल दिया। मैं सेप्पिंग्स रोड पर साइकिल चला रहा था जब मैंने देखा कि एक छोटी सी भीड़ किसी को धक्का दे रही है। यह देखकर मैं दंग रह गया कि मेरा दोस्त रॉनी बटफॉय उनका निशाना था। वह आगे चलकर एक मशहूर जॉकी बना और 1950 के दशक में रेसकोर्स जाने वाला हर कोई उसके बारे में जरूर जानता होगा। खैर, मुझे एक पल के लिए भी यह ख्याल नहीं आया कि यह स्कूल की सीमा से बाहर की बात है और यहाँ लोग ईमानदारी से नहीं लड़ते। इसके अलावा, मुझे खुद पर बहुत ज्यादा भरोसा था कि मैं एक बेहतरीन बॉक्सर हूँ। मैं धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़ा और भीड़ को समझाने की कोशिश की। मुझे लगता है कि भीड़ को शांत करने के मामले में मेरी उर्दू काफी अच्छी नहीं थी, क्योंकि अगले ही पल किसी ने मुझे ठोकर मार दी और मैं गिर गया। स्वाभाविक प्रवृत्ति, और यह

मैंने स्कूल में सीखा था, हमला करने की थी। मेरी मुट्ठी किसी के चेहरे पर लगी और उसके बाद तो वहाँ अफरा-तफरी मच गई। यह कोई खास मुकाबला नहीं था - एक उपद्रवी गिरोह का दो स्कूली लड़कों से मुकाबला - लेकिन वे आक्रामक थे और संख्या में हमारी कमजोरी बेमानी लग रही थी। शैक्षणिक दृष्टि से, हम दोनों का कोई मुकाबला नहीं था; बटफॉय दुबला-पतला था, और मैं अपनी उम्र के हिसाब से लंबा और दुबला-पतला था, जिससे मेरा शरीर आसान निशाना बन गया। जब मुक्के और लात बरसने लगे, तो मैंने टीम के लिए कई चोटें खाईं... बल्कि उनमें से ज़्यादातर। जब मुझे लगा कि मैं स्थिति पर नियंत्रण खो रहा हूँ, तभी किसी ने मुझे स्टार्टिंग हैंडल से ज़ोरदार धक्का दिया और झगड़ा खत्म हो गया। जो लोग इस उपकरण से परिचित नहीं हैं, उनके लिए बता दूं कि स्टार्टिंग हैंडल एक ऐसी वस्तु है जिसका इस्तेमाल पुराने ज़माने की कारों को स्टार्ट करने के लिए किया जाता था। मैं बेहोश हो गया और जब होश आया, तो कोई मुझसे पूछ रहा था कि क्या मैं पीछे बैठ सकता हूँ। मैंने हाँ में सिर हिलाया, और मुझे विक्टोरिया अस्पताल तक का धुंधला सा सफर याद है, मेरे चेहरे और शरीर से खून बह रहा था। मुझे एक उदास दिखने वाला बूढ़ा आदमी याद है, जिसने बिना ज़्यादा सवाल पूछे, मेरे बगल में बैठ गया और मेरा सिर मुंडने लगा। मुझे लगता है कि वह उन लोगों में से एक था जो या तो सब कुछ करते हैं या कुछ नहीं, क्योंकि उसने मेरे सारे बाल मुंडवा दिए, जो आसान काम नहीं था क्योंकि मेरा बहुत खून बह रहा था। बिना किसी बेहोशी के, मुझे पंद्रह टांके लगाए गए - इतना घटिया काम कि बोरिस कार्लॉफ भी मुझ पर तरस खा जाते! यह एक चमत्कार ही था क्योंकि मेरी खोपड़ी फट गई थी, और डॉक्टरों ने इसे पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया और मेरे सिर पर बने सजावटी पैचवर्क पर ध्यान केंद्रित किया। आज भी, उस घटना के कारण मेरी खोपड़ी के बीचोंबीच एक उभार है। हालाँकि लड़ाई-झगड़े को बुरा माना जाता था, लेकिन स्वीकार्य समाधान यह था कि हम दो सभ्य अंग्रेज़ स्कूली लड़कों की तरह व्यवहार करें और खेल के मास्टर को अपनी परेशानी बताएं। फिर वह हमें मुक्केबाजी के अखाड़े में मामला सुलझाने देते। घंटी बजने तक, हम एक-दूसरे पर बेतहाशा वार करते, और अंत में हमारी बाहें थक जातीं, ठुड्डी झुक जाती और हम लगभग एक-दूसरे को गले लगाकर थक जाते। घंटी बजते ही हमारा समय समाप्त हो जाता, और हमें हाथ मिलाकर चले जाना पड़ता। खेल के मास्टर द्वारा रेफरी की भूमिका केवल यह सुनिश्चित करना था कि लड़ाई निष्पक्ष हो; उनसे विजेता घोषित करने की अपेक्षा नहीं की जाती थी।

हालांकि, रिंग के बाहर मौजूद दोनों मुक्केबाज और उनके समर्थक मन ही मन जानते थे कि असल में कौन जीता है। ऐसे मौकों पर स्कूल में "लड़ो!" का नारा लगता था, और इन आपसी रंजिश वाले मुकाबलों को देखने के लिए बॉक्सिंग रिंग के चारों ओर दर्शक जमा हो जाते थे। हालांकि यह मुद्दों को सुलझाने का स्वीकृत तरीका था, लेकिन लड़के तो लड़के ही होते हैं और अक्सर, मामले रिंग के बाहर भी सुलझ जाते थे। हालांकि, बदमाशी को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाता था। यह अंग्रेजी व्यवहार प्रणाली के अनुरूप नहीं था, और अगर ऐसे मामले दर्ज किए जाते थे तो सजा बहुत कड़ी होती थी।
मुझे बॉक्सिंग में महारत हासिल करना बहुत आसान था, और मेरे शारीरिक गठन ने मुझे रिंग में एक अलग ही फायदा दिया। आज के समय में बॉक्सिंग में, प्रतिद्वंद्वी समान वजन के होते थे, उम्र या कद के नहीं, इसलिए मैं अपने से काफी बड़े लड़कों के साथ बॉक्सिंग करता था। मेरे बॉक्सिंग मास्टर का नाम इयान मेडन था, जो थोड़ा अजीब था, लेकिन वे बहुत सख्त थे और उन्होंने मुझे अपने कद और पहुंच का फायदा उठाना सिखाया। हालांकि मैं क्रिकेट, फुटबॉल और हॉकी में काफी अच्छा था, लेकिन स्कूल के दिनों में बॉक्सिंग मेरा सबसे पसंदीदा खेल था। यह तथ्य कि बैंगलोर को शीर्ष बॉक्सिंग शहरों में से एक माना जाता था, आज बहुत से लोगों को पता नहीं है। इसका मुख्य कारण द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यहां तैनात सैनिक थे, जो उन मैचों को देखने के लिए ओपेरा थिएटर और हॉलीवुड सिटी स्टेडियम में सैकड़ों की संख्या में आते थे। स्कूलों में इस खेल को बढ़ावा दिया जाता था, और मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि मुझमें इसके लिए प्रतिभा है। अधिकांश स्कूलों की तरह, पूरा साल अपने हाउस के लिए अंक इकट्ठा करने पर आधारित होता था। बॉक्सिंग में, रिंग में प्रवेश करने पर एक अंक मिलता था, और जीत हासिल करने पर जाहिर तौर पर और अंक मिलते थे। मुझे अक्सर मेरे वरिष्ठों द्वारा "पेट्टीग्रेव हाउस के सम्मान" के लिए भाग लेने के लिए धमकाया जाता था, और अगर मैं केवल एक अंक से अधिक अंक प्राप्त कर लेता था तो वे बहुत खुश होते थे।

बिशप कॉटन बॉयज़ क्रिकेट टीम – 1950

हमारे स्कूलों में मुक्केबाजी के अंतर-विद्यालयीय मुकाबले भी होते थे और बिशप कॉटन, जर्मेन और बाल्डविन तीन स्कूल इनमें भाग लेते थे। यह खेल तब तक बहुत लोकप्रिय रहा जब तक एक मैच के बाद एक छात्र की मौत नहीं हो गई और फिर इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यह एक बहुत ही क्रूर खेल है और मेरे माता- पिता को मेरी इस खेल के प्रति दीवानगी कभी समझ नहीं आई, लेकिन उन्हें कोई खास आपत्ति भी नहीं थी। उस समय कोई भी सिर पर पहनने वाली कोई चीज नहीं होती थी और जिस दिन कोई रिंग में उतरता था, उसका अंत खून से लथपथ नाक, चोटिल गाल और कटे होंठों के साथ होता था, जिसे मेरी माँ नापसंदगी और थोड़ी चिंता के साथ देखती थीं, लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हो गया कि यही मेरी पहचान है। दूसरी ओर, पिताजी इसे केवल शरीर को मजबूत बनाने का एक तरीका मानते थे और उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। मैं अपने पड़ोसियों, वोलेंस द्वारा चलाए जा रहे जिम में प्रशिक्षण लेता था। मैं हर हफ्ते बैंगलोर के कुछ बेहतरीन मुक्केबाजों के साथ अभ्यास करता था। मेरा हीरो गनबोट जैक था, एक अमेरिकी, वेल्टरवेट मुक्केबाज, जो बैंगलोर में बस गया था। वह बार में होने वाली लड़ाइयों के लिए मशहूर था, शायद अपने रंग के कारण उसे ताने मारे जाते थे। हालांकि, वे एक सच्चे सज्जन व्यक्ति थे, और मुझे वोलन जिम में उनके साथ

रिंग में समय बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय एंग्लो-इंडियनों के बीच सुआरेस बंधुओं का काफी नाम था, और वे मेरी उम्र के लड़कों के लिए नायक थे।
मेरे जीवन में भोजन की अहम भूमिका रही है। बचपन में घर का खाना भारतीय, तमिल, ब्रिटिश, गोवा और फ्रांसीसी व्यंजनों का मिला-जुला रूप होता था, जबकि स्कूल का खाना उतना लज़ीज़ नहीं होता था। शुरुआती दिनों में मैं स्कूल में सैंडविच जैसे स्नैक्स ले जाया करता था, जिनमें भुना हुआ मांस, अंडे, मुरब्बा और अंगूर व अमरूद की जेली जैसी चीज़ें भरी होती थीं। कई साल बाद, एक छोटी बहन दोपहर के भोजन की घंटी बजने से पहले गरमागरम खाना लाती और मेरे खाने के बाद उसे वापस घर ले जाती। जब मैं सीनियर क्लास में पहुंचा, तो मैं टिफिन में लंच ले जाने लगा या कैंटीन में खाता था। डे स्कॉलर्स को बोर्डर्स के साथ खाने की इजाज़त नहीं थी, वे अपने डाइनिंग हॉल में चले जाते थे, जबकि हम अपनी कक्षाओं में खाते थे। टकशॉप एक आम खाने की जगह थी, और अक्सर डे स्कॉलर्स उदारता या मजबूरी में, अपने रिश्ते के हिसाब से, बोर्डर्स को अपना घर का बना खाना दे देते थे। एक सिस्टम कॉन्सेप्ट जो मुझे खास तौर पर पसंद आया, वह था तीसरा विकल्प - इनमें से कोई नहीं। मेरे दोस्त, मेरवान चमारबागवाला, बेहद अमीर थे। घर से मिलने वाले खाने के अलावा, उनका "टकी" नाम के एक दुकानदार से एक समझौता था, जिसके तहत वे रॉनी फिलिप्स और डॉन एंडरसन को "जो भी चाहिए होता था" देते थे। यह सुविधा उन सालों में कई गुना बढ़ गई जब मैं स्कूल का प्रीफेक्ट था। मेरवान के पिता हर महीने इन खातों का भुगतान करते थे, साथ ही बैंगलोर की कई अन्य जगहों का भी, जहाँ उनके बेटे को असीमित उधार मिलता था। यह दुकान स्कूल के लड़कों के लिए बहुत आकर्षण का केंद्र थी। इसमें तरह-तरह के स्वादिष्ट केक और मिठाइयाँ मिलती थीं, जैसे टॉफी एप्पल, मैकरून, फ्लैपजैक, लेमन टार्ट, कई तरह के केक और आइसक्रीम, और बुल्स आई, बार्ली शुगर, लिकोरिस स्टिक्स, ट्रैफिक लाइट्स, बॉन-बॉन्स और व्हॉपर्स जैसी मिठाइयाँ, जो आज बैंगलोर से गायब हो चुकी हैं। मिठाइयों के अलावा, सॉसेज रोल, पॉटेड मीट/रोस्ट बीफ सैंडविच, करी पफ और चिकन नूडल सूप जैसे स्नैक्स भी बहुत लोकप्रिय थे। चूंकि मेरवान एक बेहद अमीर परिवार से था, इसलिए वह ऐसा दोस्त था जिसे हॉस्टल में रहने वाले ज़्यादातर छात्र पाने की दिली इच्छा रखते थे। इसकी एक वजह यह भी थी कि वह दिन में पढ़ने वाला छात्र था और हर दिन दोपहर के भोजन के लिए पाँच सितारा

□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□, □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□, □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□! □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□, □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□, □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□

□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□

मुझे पढ़ाई से नफरत थी और स्कूल में पढ़ाए जाने वाले किसी भी विषय में मैं अच्छा नहीं था, सिवाय धर्मग्रंथ के, अजीब बात है। हमारे स्कूल में उर्दू, लैटिन और फ्रेंच भाषाएँ पढ़ाई जाती थीं। हिंदी नहीं पढ़ाई जाती थी; लैटिन को एक पुराना विषय माना जाता था और फ्रेंच को कमज़ोर बच्चों का विषय। इससे मेरे पास ज़्यादा विकल्प नहीं बचे और इसलिए मैं उर्दू में धाराप्रवाह हो गया - खैर, जितना मेरे जैसा कोई हो सकता था। मुझे हमेशा खुली हवा पसंद थी, और स्कूल में इसका मतलब खेल था। सिर्फ़ मैं ही नहीं, बल्कि स्कूल के सभी लड़के हर खेल खेलते थे क्योंकि यही चलन था और मैं उनमें से ज़्यादातर में अच्छा था। मैंने स्कूल के लिए हॉकी और फ़ुटबॉल खेला, और स्कूल की क्रिकेट टीम के लिए मैसूर राज्य का प्रतिनिधित्व किया। हालाँकि उस समय क्रिकेट का एकमात्र प्रारूप टेस्ट क्रिकेट था, हमारे पास खेल का अपना छोटा प्रारूप था
- हालाँकि इसे कभी "वन-डे" क्रिकेट नहीं कहा गया। मेरी विकेटकीपिंग की कुशलता और आक्रामक शैली ने मुझे मेरे खेल प्रशिक्षकों की नज़रों में अच्छा बनाए रखा, हालाँकि मुझे हॉकी और क्रिकेट दोनों में अपनी आक्रामकता और "बेहद आक्रामक बल्लेबाजी" पर नियंत्रण रखने की लगातार चेतावनी दी जाती थी! यकीन करना मुश्किल है, लेकिन उन दिनों क्रिकेट की गेंद सबसे दूर फेंकने की प्रतियोगिता भी होती थी। क्रिकेट मेरा पसंदीदा आउटडोर खेल था, क्योंकि इससे मुझे दोस्तों के साथ धूप में काफी समय बिताने का मौका मिलता था, और मैं सचमुच एक ऐसी गतिविधि में बंध जाता था जो मुझे पढ़ाई या होमवर्क जैसी चीजों से मुक्त कर देती थी। जैसा कि अब भी होता है, हम क्रिकेट चटाइयों पर खेलते थे जिन्हें जमीन पर खूंटियों से गाड़ा जाता था ताकि गेंद अच्छी उछाल दे सके। मुझे याद है कि एक बार जब मैं इसी सतह पर खेल रहा था, मैंने गेंदबाज की गेंद को लेग साइड की तरफ फ्लिक किया और पहला रन लिया। दूसरा रन पूरा करने और थ्रो को हराने की पूरी कोशिश में, मैंने अपना बल्ला जमीन में गाड़ दिया। दुर्भाग्य से, वह एक खूंटी से टकरा गया और बल्ले का हैंडल मेरे कमर के निचले हिस्से में जा लगा। उन दिनों पेट की सुरक्षा के लिए कोई उपकरण नहीं थे और मैं दर्द से कराह उठा और जमीन पर गिर पड़ा। मुझे उसके बाद ज्यादा कुछ याद नहीं है, लेकिन जब मुझे होश आया, तो मैं अस्पताल में था और स्कूल की मैट्रन हुगवाफे की निगरानी में था। एक मजबूत कद-काठी वाली जर्मन महिला के लिए यह एक उपयुक्त नाम है, जो शायद अपने खाली समय में बेंच प्रेस करती होगी।

“अपने कपड़े उतारो, नौजवान,” आदेश आया। मैंने विनम्रतापूर्वक अपने कपड़े उतार दिए। “अपनी अंडरवियर उतारो,” वह गरज उठी। “लेट जाओ।”
वह चोट की गंभीरता का अंदाजा लगाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन मैं चौदह साल का था, और मैं खुद को रोक नहीं पाया... एक पल में ही मुझे उत्तेजना हो गई! “इसे यहाँ से हटाओ,” वह दहाड़ते हुए बोली, और मैं अपने कपड़े हाथों में लेकर कमरे से बाहर भाग गया!
मौसम चाहे जैसा भी हो, हमारे विद्यालय में खेलों में भाग लेना अनिवार्य था। जून से अगस्त के महीनों में, जब अक्सर बारिश होती थी, तब भी खेल के समय अगर मैदान गीला होता था, तो सभी लड़कों को विद्यालय से कब्बन पार्क तक दौड़ाया जाता था और वापस लाया जाता था, जो एक अनोखा और असाधारण दृश्य होता था। दूरी बहुत कम थी, लेकिन सौ स्कूली लड़कों को मूसलाधार बारिश में ग्रांट्स रोड से होते हुए कब्बन पार्क तक वर्दी में दौड़ते देखना एक अद्भुत नजारा होता था। उस समय यातायात लगभग न के बराबर होता था, और वापस आते-आते हम पूरी तरह भीग चुके होते थे और कड़ाके की ठंड लग रही होती थी। फिर भी, हमें खुद को सुखाना पड़ता था और अगले पाठ के लिए तैयार होना पड़ता था। साल के समय के अनुसार, विद्यालय में खेलों के अलग-अलग सीजन होते थे। यह केवल क्रिकेट, फुटबॉल और हॉकी जैसे खेलों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि अनौपचारिक खेलों तक भी फैला हुआ था। कंचे, पतंगबाजी, लट्टू घुमाना और कई अन्य खेलों के सीजन होते थे, और एक स्कूली छात्र के रूप में इन सभी को गंभीरता से लिया जाता था क्योंकि हर जीत प्रतिद्वंद्वी के सामान पर अधिकार दिलाती थी। मैं पढ़ाई से जुड़ी किसी भी चीज़ पर समय न बिताने के बहाने ढूंढता था, और इसलिए मैं इन खेलों में भी उतनी ही लगन से भाग लेता था जितनी कि अन्य पेशेवर खेलों में। यह बहुत दुख की बात है कि ये खेल आज के स्कूलों से पूरी तरह गायब हो गए हैं।
मेरे पिताजी को वन्यजीवों में रुचि तो थी, लेकिन इस शौक के प्रति उनका कोई वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं था। यही कारण था कि पक्षी जगत से मेरा परिचय प्रसिद्ध फोटोग्राफर ओ.सी. एडवर्ड्स से हुआ, जिन्होंने मुझे स्कूल में गणित और अंग्रेजी पढ़ाया था। वे एक सच्चे सज्जन और अपने द्वारा खींची जाने वाली तस्वीरों के प्रति अत्यंत सजग थे, यह गुण मैंने अपने शिकार के दिनों में नहीं सीखा था। उनकी फोटोग्राफी कक्षा में शामिल होने का मेरा एकमात्र कारण यह था कि यदि कोई समूह का हिस्सा होता, तो उसे हेसरगट्टा, बैनरघट्टा

और देवरायंदुर्गा जैसी जगहों पर जंगलों में कुछ समय बिताने के लिए ले जाया जाता था, और यह मुझे बहुत पसंद आया।
घर पर, मुझे खास तवज्जो सिर्फ मेरे जन्मदिन पर ही मिलती थी। जन्मदिन की पार्टी का कोई चलन नहीं था, बस कुछ दोस्तों का घर आना और साथ में अच्छा समय बिताना होता था। स्कूल के दिनों में जन्मदिन का केक ज़रूरी होता था, और जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गई, घर पर होने वाले ये उत्सव थोड़े बेतुके लगने लगे, और धीरे-धीरे बंद हो गए। रिबन केक, जो मेरे कई जन्मदिनों पर बनता था, एक खास चीज़ थी। यह तीन या चार परतों वाला केक होता था, हर परत अलग रंग की होती थी। उस समय यह कितना अनोखा लगता था! बिरयानी भी जन्मदिन पर ज़रूरी होती थी, जिसमें मेवे, किशमिश और तले हुए प्याज डाले जाते थे। रसेल मार्केट में मीट मार्केट के सामने स्थित "स्वामीज़" उस समय के एंग्लो-इंडियन परिवारों का पसंदीदा ठिकाना था, जहाँ से वे खास तौर पर जन्मदिन, क्रिसमस, ईस्टर या किसी भी अन्य उत्सव के लिए मसाले खरीदते थे। इन उत्सवों में न तो संगीत होता था और न ही नाच-गाना, बस मेरे दोस्त और, ज़ाहिर है, मेरे मम्मी- पापा ही कभी-कभार आते थे। मुझे पिताजी से एक पारंपरिक हाथ मिलाना मिला, स्नेह के उन दुर्लभ संकेतों में से एक; उस समय गले लगाना मर्दाना नहीं माना जाता था, और चुंबन के विचार मात्र से ही हम दोनों शर्मिंदा हो जाते! मुझे पता है कि मैं कृतघ्न लग रहा हूँ, लेकिन जन्मदिन पर भी, क्रिसमस और अन्य उत्सवों की तो बात ही छोड़िए, मैं खुशी-खुशी घर का सारा ध्यान और मौज-मस्ती छोड़कर जंगलों में जाने का मौका चाहता था - बाहर घूमने की मेरी इतनी तीव्र इच्छा थी। मुझे लगता है कि बंदूकों के प्रति मेरा आकर्षण उन फिल्मों से भी प्रभावित था जो मैंने बचपन में देखी थीं। हालाँकि मैं केवल छह या सात साल का था, द्वितीय विश्व युद्ध का मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। हर कोई उसी के बारे में बात करता था, और मैं बहुत ही संवेदनशील उम्र में था। हम अक्सर सिनेमाघरों में युद्ध वृत्तचित्र देखने जाते थे, जो आमतौर पर इस बारे में होते थे कि कैसे ब्रिटिश या अमेरिकी सैनिक जर्मन या जापानी गढ़ों पर हमला कर रहे हैं। हालाँकि ये रोचक थे, लेकिन हॉलीवुड की उन फिल्मों के सामने कुछ भी नहीं थे जो मुझे रोमांचित करती थीं। बटांन और दे डाइड विद देयर बूट्स ऑन मेरी पसंदीदा फिल्मों में से दो थीं और जनरल कस्टर शायद मेरे बचपन के सबसे बड़े हीरो थे। जब मैं अपने पिताजी के साथ जंगलों में जाता था, तो मैं कल्पना करता था कि मैं कस्टर और डैनियल बून का मिलाजुला रूप हूँ! इन

फिल्मों का मुझ पर इतना गहरा प्रभाव था कि युद्ध के आखिरी दिनों में मेरा दोस्त सिडनी और मैं साइकिल से बेलंदूर झील तक जाते थे और दूर से सीप्लेन देखते थे, उस नजारे से मंत्रमुग्ध हो जाते थे और पूरी तरह से आश्वस्त हो जाते थे कि आसपास जर्मन जासूस हैं! पता नहीं क्यों, मेरी दादी, माँ और जून के विपरीत, पिताजी को फिल्मों का उतना शौक नहीं था, लेकिन वे अक्सर शर्ली टेंपल की फिल्में देखते थे, जिन्हें मैं समय की पूरी बर्बादी मानता था। उन दिनों ग्लोब, इंपीरियल, बीआरवी टॉकीज और प्लाजा सिनेमाघर हुआ करते थे, जबकि रेक्स और गैलेक्सी बाद में आए। ग्लोब का एक समय में बड़ा ही अनोखा नाम था - क्रिस्टल पिक्चर पैलेस, और बाद में इसे लिबर्टी थिएटर के नाम से जाना जाने लगा। सबसे महंगे टिकट आधा आना के होते थे, और ये तभी मिलते थे जब माँ हमारे साथ आती थीं और हम महंगी सीटें खरीदते थे, वरना वे और भी सस्ते होते थे। बीआरवी थिएटर के सामने क्रिकेट का मैदान था, जहाँ मैं अपने दोस्तों के साथ खेला करता था। बैंगलोर में मेले भी यहीं लगते थे। यहाँ बॉक्सिंग रिंग, रेसिंग कारें, विशाल झूले, एक छोटा चिड़ियाघर और ढेर सारा खाना होता था, जो मनोरंजन का एक बड़ा साधन हुआ करता था। हम जितनी देर तक चाहते, उतनी देर तक रुकते थे और किसी को कोई चिंता नहीं होती थी। बॉवरिंग क्लब में होने वाले सार्वजनिक नृत्य युवाओं और बुजुर्गों, दोनों के बीच बहुत लोकप्रिय थे, और किशोर लड़कों के लिए तो ये रोमांच और घबराहट दोनों का स्रोत थे। बीआरवी और न्यू ओपेरा, जो सिनेमाघरों के रूप में प्रसिद्ध थे, उनमें भी उन दिनों नृत्य कार्यक्रम होते थे। साल में एक बार स्कूल में सामाजिक समारोह भी होते थे, और यही एकमात्र समय था जब बिशप कॉटन के लड़के बिशप कॉटन की लड़कियों से औपचारिक रूप से मिल पाते थे। यह एक बड़े हॉल में लाइव संगीत के साथ आयोजित नृत्य कार्यक्रम था, और कई लड़के इस बड़े आयोजन का बेसब्री से इंतजार करते थे। ट्वर्किंग अभी आधी सदी दूर थी, इसलिए फॉक्सट्रॉट उन दिनों का लोकप्रिय नृत्य था। कुछ सीधे-सादे लड़कों को छोड़कर, ज़्यादातर लड़के, खासकर हॉस्टल में रहने वाले, पड़ोसी स्कूलों की लड़कियों से मिलने के लिए दीवार फांदकर भाग जाते थे। अगर हम ऐसी हरकतों में पकड़े जाते, तो निलंबन और बेंत से पिटाई आम सज़ा होती थी। इसलिए, लड़कों और लड़कियों के लिए एक-दूसरे के करीब आने का सुविधाजनक सामाजिक आयोजन दुर्लभ और अनमोल होता था। हालांकि, डांट या सामाजिक मिलन के वादे से स्कूल के समय में लड़कियों से मिलने के लिए क्लास बंक करने की हमारी आदत कभी नहीं बदली। मेरे दो दोस्त

सिडनी डी'सिल्वा और रॉनी फिलिप्स बिना किसी पछतावे के बार-बार ऐसा करते थे। रॉनी तो खास तौर पर लापरवाह था और उसे प्रिंसिपल के दफ्तर में बेंत से पिटाई के लिए हर महीने पास मिलने का विशेषाधिकार प्राप्त था। यह कहना मुश्किल था कि उसे किस बात पर ज़्यादा गर्व था, अपने हाथों के निशानों पर या अपनी गर्दन पर बने लव बाइट्स पर! लड़कियों के साथ बाहर जाना एक नियमित दिनचर्या बन गई थी, जिसमें प्लाज़ा थिएटर में ऊपर वाले प्राइवेट बॉक्स में दोपहर का शो देखना भी शामिल था। वो टिकट महंगे थे, लेकिन एकांत जगह और मौज-मस्ती के भरपूर मौके के लिए यही कीमत चुकानी पड़ती थी। जैसे-जैसे मेरी स्कूल की पढ़ाई खत्म हो रही थी, लड़कियों के साथ मेलजोल लोकप्रिय हो गया, और वे लड़कियां लगभग हमेशा कॉटन, सेक्रेड हार्ट या बाल्डविन से होती थीं। मुझे खुद भी इस बात का एहसास नहीं था कि मैंने कितनी महिलाओं के साथ डेट की थी, जब तक मेरी बहन जून ऑस्ट्रेलिया नहीं चली गई और उससे मिलने वाली कई महिलाएं कहती थीं,
“ओह, आप जून हैं, डॉन एंडरसन की बहन? मैं तो कभी उनकी प्रेमिका हुआ करती थी!”
शायद आपको लगे कि मैं अपनी बड़ाई कर रहा हूँ, लेकिन मुझे लड़कियों को डेट पर ले जाने के लिए ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। हर उम्र की लड़कियाँ मुझे डेट पर जाने के लिए पूछती थीं; सच तो यह है कि अगर मैं किसी लड़की के पास जाकर उसे डेट पर जाने के लिए पूछता, तो वह इसे बहुत बड़ी बात समझती थी। यह बात और भी ज़्यादा मायने रखती थी क्योंकि इसका मतलब यह होता था कि मैं, डॉन एंडरसन, डेट का खर्च उठाऊँगा, जो उन दिनों में बिल्कुल अनोखी बात थी! पिताजी बहुत कंजूस थे, इसलिए इन मौकों के लिए पैसे हमेशा माँ ही देती थीं। खर्च की बात करें तो, बस एक फिल्म और एक खाना ही काफी होता था। अगर आइसक्रीम खानी होती, तो लेकव्यू ही होती; डेट पर कोशी रेस्टोरेंट जाना मुमकिन नहीं था। 1940 और 1950 के दशक में इतना कुछ करने को था कि पढ़ाई में समय बर्बाद करने का तो सवाल ही नहीं उठता था। हर बार जब भी कोई गंभीर परीक्षा होती, मैं जैसे-तैसे पास हो जाता था, और मेरे माता-पिता इससे खुश थे। ट्यूशन का तो कोई नामोनिशान ही नहीं था, और खाली समय को पढ़ाई में लगाने का कोई विचार ही नहीं था। वहाँ हर तरह की क्षमताओं वाले छात्र थे - बुद्धिमान, मेहनती, और निश्चित रूप से मेरे जैसे, जो न तो बुद्धिमान थे और न ही मेहनती। शुरू में ही मेरे माता-पिता को एहसास हो गया था कि मैं

पारंपरिक अर्थों में कोई बड़ी उपलब्धि हासिल नहीं कर पाऊँगा, इसलिए उन्होंने मुझसे बहुत कम उम्मीदें रखीं। मुझे नहीं पता कि यह कम उम्मीदें थीं या वे सचमुच मानते थे कि मैं एक दिन अपनी राह खोज लूँगा, लेकिन मुझे अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने की पर्याप्त स्वतंत्रता दी गई थी। जब तक मैंने सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा पास की, तब तक मैंने अकादमिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल कर ली थी। मेरी साधारण शैक्षणिक क्षमता ही मुझे आगे पढ़ने से रोकने के लिए काफी थी। 1950 में मैंने जो आखिरी स्कूल फीस दी थी, वह दो रुपये और आठ आना थी! यह बहुत कम थी और हालाँकि हम काफी संपन्न थे, मुझे अपने पिताजी द्वारा शिक्षा जैसी तुच्छ चीजों पर अधिक पैसा खर्च करने का विचार बिल्कुल पसंद नहीं था। इसके बजाय, मैंने उन्हें उन चीजों पर खर्च करने के लिए प्रोत्साहित किया जो मैं वास्तव में चाहता था, न कि स्कूल जैसी फिजूलखर्ची पर। सभी आदर्शवादियों की तरह, मैंने फैसला किया कि मैं अपनी कमाई वह काम करके करूँगा जिसका मुझे आनंद आता है। बेशक, हेमिंग्वे को पढ़कर मेरा सबसे बड़ा सपना भारत में एक श्वेत शिकारी बनने का था, लेकिन मुझे खुद को याद दिलाना पड़ा कि यह सपना कितना व्यर्थ था। मैं नौकरियों के लिए आवेदन करने में बहुत सावधानी बरतता था, यह सुनिश्चित करते हुए कि मेरी पूछताछ केवल उन्हीं जगहों तक पहुंचे जहां काफी खाली समय मिलने का वादा किया गया हो। स्वाभाविक रूप से, ऐसे बहुत कम मौके आए जहां मैं आवेदन कर सका और इसके बजाय, मैंने महीनों जंगलों में घूमने और अपने दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करने में बिताए।

अध्याय दो

मेरा परिवार
सदियों से अभ्यस्त रहने के बाद
एक निश्चित जीवनशैली के चलते, अगस्त 1947 ने भारत में रहने वाले अंग्रेजों के जीवन में गहरा बदलाव ला दिया। उनके सामने सबसे बड़ी दुविधा यह थी कि उन्हें भारत में ही रहना था या इंग्लैंड या ऑस्ट्रेलिया में जाकर बसना था, जो उस समय लोकप्रिय गंतव्य थे। 1962 के राष्ट्रमंडल आप्रवासी अधिनियम तक, सभी राष्ट्रमंडल नागरिक बिना किसी प्रतिबंध के ब्रिटेन में प्रवेश कर सकते थे और रह सकते थे, जो कई योग्य परिवारों के लिए एक आकर्षक विकल्प था। अंग्रेजों के पास वापस लौटने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, लेकिन भारत में रहने वाले एंग्लो-इंडियनों के लिए यह इतना आसान नहीं था। "एंग्लो-इंडियन" शब्द का प्रयोग वर्षों से व्यापक रूप से होता रहा है और आरंभ में यह ब्रिटिश मूल के निवासियों के लिए इस्तेमाल किया जाता था। कुछ समय बाद, इसकी परिभाषा उन यूरोपीय लोगों के लिए भी विस्तारित हो गई जो शुद्ध वंश के होने के बावजूद भारत में ही बसे रहे। अंततः, इसका प्रयोग ब्रिटिश और भारतीय माता-पिता की संतानों के लिए किया जाने लगा। इन दोनों समूहों के कई लोग भारत में ही बस गए, स्थानीय भारतीयों से विवाह किया और कुछ शहरों में एक विशिष्ट सामाजिक वर्ग का निर्माण किया। इस प्रकार, विभिन्न प्रकार के एंग्लो-इंडियन अस्तित्व में आए, और शुद्ध वंश वाले हमेशा मिश्रित वंश वालों से दूरी बनाए रखते थे, जबकि मिश्रित वंश वालों को न तो ब्रिटिश और न ही भारतीयों से स्वीकृति प्राप्त करने में कठिनाई होती थी। भारत में, द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व के समय में, डाक और तार विभाग, भारतीय रेलवे और पुलिस में मूल निवासी यूरोपीय और एंग्लो-इंडियन दोनों का वर्चस्व बना रहा, जिन्हें अंग्रेजों द्वारा इन क्षेत्रों में तरजीही रोजगार दिया गया था, इस विश्वास के साथ कि वे अपनी मामूली "श्रेष्ठ" वंश या केवल अपनी शिक्षा और अंग्रेजी भाषा पर पकड़ के कारण इन पदों को संभालने में सक्षम थे।
एंग्लो-इंडियनों का देश छोड़ने या वहीं रहने का फैसला इस बात की कसौटी थी कि उनका चुनाव दिल से हुआ या दिमाग से। जिन लोगों ने वहीं रहने का फैसला किया, उनका निर्णय एक अकाट्य तथ्य पर आधारित था—भारत ही उनका घर था।

स्वतंत्र भारत के किसी शहर में रहना एक दोराई (गरीब) को एक खास जीवनशैली का आश्वासन देता था, जिसमें आया, माली और छोकरे होते थे, और बैंगलोर में एक परिवार के लिए वह सम्मान था जो ब्रिटिश शासन समाप्त होने के बाद भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ था। गोरी चमड़ी आज भी एक खास आदर का भाव जगाती थी, और इसे छोड़कर किसी दूसरे देश में बसना मुश्किल था जहाँ कोई अपने पड़ोसी की तरह आम इंसान बन जाता। बैंगलोर में, पार्टियाँ और मौज-मस्ती के साथ सामाजिक व्यवस्था के शिखर पर होने का आनंद लिया जा सकता था, और अगर उन्हें शिकार में रुचि थी, जैसा कि आबादी का एक वर्ग था, तो जंगल किसी भी दिशा में चार घंटे से भी कम दूरी पर थे। इसलिए, अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर चुनाव किए जाते थे। यह अजीब बात है कि मुझे हमेशा एंग्लो-इंडियन समझा जाता था, जबकि मुझमें भारतीय खून का एक कतरा भी नहीं है। मेरे पिता स्कॉटिश थे, जबकि मेरी माँ बर्गर-ऑस्ट्रेलियाई मूल की थीं। चूंकि एंग्लो-इंडियन शब्द का प्रयोग आमतौर पर उन सभी लोगों के लिए किया जाता था जिनकी रक्तरेखा विशुद्ध रूप से भारतीय नहीं थी, इसलिए मैं इस समुदाय का सदस्य बन गया।
सन् 1707 में स्कॉटलैंड और इंग्लैंड के विलय से ग्रेट ब्रिटेन का गठन हुआ, जिससे भारत में स्कॉटिश आप्रवासन के द्वार खुल गए। समझौते के तहत, स्कॉटलैंड के धनी परिवारों को ईस्ट इंडिया कंपनी में प्रवेश मिला और धीरे- धीरे उन्होंने संगठन में कई पदों पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। स्कॉट्स ने नई भूमि की ओर रुख किया, या तो दुनिया देखने की साहसिक आकांक्षा से, या बेहतर अवसरों के साथ अपना भविष्य संवारने की मजबूरी से। वे भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों में फैली अन्य उपनिवेशों में आए, विभिन्न व्यवसायों और पेशों का प्रतिनिधित्व करते हुए। वे व्यापारी, मिशनरी, बागान मालिक, सैनिक के रूप में आए और निश्चित रूप से, वे सभी अपने आप में खोजकर्ता थे। मेरा परिवार - एंडरसन, ऐसा ही एक परिवार था जो एक नई दुनिया, प्रसिद्धि, धन और शायद रोमांच की तलाश में भारत आया था। संयोग से, एंडरसन उपनाम स्कॉटलैंड में काफी आम है, जो देश के संरक्षक संत सेंट एंड्रयू से लिया गया है। मेरे पिता के समय में, माना जाता है कि मेरा परिवार कम से कम चार पीढ़ियों से भारत में था। पहले सदस्य ईस्ट इंडिया कंपनी के हिस्से के रूप में ग्लासगो से आए थे। पहचाने गए सबसे शुरुआती सदस्यों में जॉन एंडरसन एस्क्वायर शामिल हैं। और उनकी पत्नी मैरी, जिनके अवशेष मद्रास के फोर्ट सेंट जॉर्ज स्थित सेंट मैरी चर्च में दफन हैं। उनके दो जुड़वां बेटे थे,

जिनमें से एक थॉमस कार्नेगी एंडरसन थे, जिन्होंने हैरियट लुईसा एथरिज से शादी की थी। वे कलकत्ता में रहते थे और बाद में हैदराबाद राज्य में बस गए। उनके चार बच्चे थे - डगलस, मेबल, फोर्ब्स और एल्सपेथ। एल्सपेथ ने थियोफिलस नेविल हियरसे से शादी की, जो प्रसिद्ध जॉन बेनेट हियरसे के पोते थे, जिन्होंने 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। डगलस स्टीवर्ट एंडरसन (1873-1938), मेरे दादा, सबसे बड़े थे। उनका जन्म कलकत्ता में हुआ था, लेकिन वे तत्कालीन हैदराबाद राज्य के बोलारम में पले-बढ़े। हालांकि यह एक रेलवे कॉलोनी के रूप में जाना जाता था, लेकिन उस समय यह ब्रिटिश सेना का सैन्य अड्डा भी था। डगलस ने ब्रिटिश भारतीय सेना में सेवा की और इंडिया एक्सपेडिशनरी फोर्स ई के हिस्से के रूप में कुछ वर्षों के लिए मिस्र के इस्माइलिया में तैनात रहे। वे सैन्य लेखा विभाग में थे, और बैंगलोर में तैनाती के दौरान उनकी मुलाकात मेरी दादी लूसी से हुई। शादी के बाद वे बोलारम वापस चले गए, जहां मेरे पिताजी का जन्म हुआ था।
बैंगलोर में, डगलस को शहर के विभिन्न शिकारगाहों, जैसे उल्सूर, मडीवाला और हेब्बल में बत्तख का शिकार करना बहुत पसंद था, और सप्ताहांत में सेना के अपने दोस्तों के साथ वहाँ जाना आम बात थी। कद में छोटे और गठीले शरीर वाले डगलस अपनी हिरण शिकारी टोपी और बड़े जूते पहनकर अपने कुत्तों और कई नौकरों के साथ शिकार पर जाते थे। हालाँकि मुझे उनके साथ जाने की अनुमति नहीं थी, मुझे याद है कि वे अक्सर दो बत्तखों से भरी हुई शिकार की गठरी लेकर लौटते थे। मैं उनके लौटने का बेसब्री से इंतज़ार करता था ताकि उनकी शिकार की गठरी ले सकूँ, उन्हें निकालकर रसोइए को दे सकूँ और उनकी गठरी साफ़ कर सकूँ। मेरी भूमिका ज़्यादा नहीं थी, लेकिन वे रात्रिभोज हमेशा यादगार होते थे। उनके पास स्कॉटिश संगमरमर की एक बेंच भी थी, जिसे "डगलस की कुर्सी" कहा जाता था, क्योंकि उस पर किसी और को बैठने की अनुमति नहीं थी। यह हमारे बगीचे में एक वर्षा वृक्ष के नीचे रखी थी, और उन्हें सुबह-शाम वहाँ बैठकर चाय की चुस्की लेते हुए अखबार पढ़ना बहुत पसंद था, जबकि उनका पालतू बुलडॉग, बोनी, उनके पैरों के पास लेटा रहता था। उनकी मृत्यु के बाद, उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार, संगमरमर की कुर्सी का उपयोग उनकी समाधि बनाने के लिए किया गया था, लेकिन वर्षों बाद वह चोरी हो गई।

डगलस और लूसी एंडरसन

डगलस एंडरसन की मुलाकात लूसी एन टेलर से बैंगलोर में एक सामाजिक समारोह में हुई और उन्होंने लगभग तुरंत बाद ही 1908 में बैंगलोर के सेंट मार्क चर्च में शादी कर ली। लूसी, मेरी दादी, जॉर्ज अब्राहम बेली और कैमिला पेनेलोप टेलर की बेटी थीं। जब वह मात्र अठारह महीने की थीं, तब हैजा महामारी के दौरान उनकी माँ का निधन हो गया। उनके पिता, जो मद्रास में आयरिश रेजिमेंट का हिस्सा थे, कुछ समय बाद ही बेलफास्ट चले गए और अपनी बेटी को अपनी दो चाचियों, श्रीमती बोवर और श्रीमती बेट्स की देखभाल में छोड़ गए, जिनके अपने कोई बच्चे नहीं थे और उन्होंने उसे खूब लाड़-प्यार दिया। बाद में, उनके पिता ने पुनर्विवाह किया और अपनी बेटी को बुलवाया, लेकिन वह वापस नहीं जाना चाहती थी, और उसकी स्नेही चाचियों ने भी उसे जाने नहीं दिया। इस प्रकार, उनके पिता ने लूसी की जिम्मेदारी छोड़ दी और उनकी चाचियों को सौंप दी, जो बेहद संपन्न थीं और उन्होंने लूसी को हर संभव सुख-सुविधा प्रदान की, और उन्हें सुलेख, कविता, चित्रकला, गायन और पियानो बजाने जैसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। वह अपनी देर से हुई शादी का श्रेय

अपनी स्नेही चाचियों द्वारा दी गई स्वतंत्रता को देती हैं (जब उनकी शादी डगलस से हुई तब उनकी उम्र तीस से अधिक थी और वे एक कुंवारी थीं)। एक अजीब संयोग से, जब उनकी चाचियों, श्रीमती बोवर और श्रीमती बेट्स की मृत्यु हुई, तो उनकी मृत्यु के कारण लगभग एक जैसे थे। दोनों प्रॉस्पेक्ट हाउस के एक ही दरवाजे की सीढ़ी पर ठोकर खाकर गिर पड़ीं और एक साल के भीतर ही उनकी कूल्हे की हड्डी टूट गई। उन दिनों कूल्हे के प्रतिस्थापन की सर्जरी उपलब्ध नहीं थी, और दोनों बिस्तर पर पड़े रहने के बाद निमोनिया से मर गईं। उनकी मृत्यु के बाद, घर मेरी दादी के अधिकार में आ गया, और उनके पति ने मौजूदा ढांचे का विस्तार किया। प्रॉस्पेक्ट हाउस का निर्माण लूसी के दादा, जॉन टेलर ने करवाया था, जो सत्ताईस वर्षों तक मैसूर आयोग के प्रबंधक रहे थे। उनकी सेवाओं के लिए, उन्हें मैसूर राज्य के ब्रिटिश आयुक्त सर मार्क कुब्बन द्वारा कुब्बन पार्क से सटी हुई भूमि दी गई थी, जो राजधानी को मैसूर से बैंगलोर स्थानांतरित करने के लिए भी जिम्मेदार थे। सिडनी रोड पर स्थित जॉन टेलर का घर सौ से अधिक वर्षों तक एक ऐतिहासिक स्थल रहा, जिसने 1980 के दशक के मध्य में ध्वस्त होने से पहले कई पीढ़ियों के जन्म और मृत्यु को देखा।

स्विमवियर में नवीनतम। लूसी एंडरसन और उनकी सहेलियाँ - एनोर, 1908

[illegible]

[illegible], **1931**

[illegible]

पोती की कलाओं में रुचि को प्रोत्साहित करने में लगाती थीं। वह एक प्रशिक्षित गायिका थीं और चाहती थीं कि जून भी यह हुनर सीखे। दुर्भाग्य से, जून को ज्यादातर नृत्य में रुचि थी, लेकिन एक अच्छी पोती की तरह वह अपनी दादी की हर इच्छा पूरी कर देती थी। हालांकि उनके पास ड्राइवर था, मेरी दादी खुद ड्राइव करना पसंद करती थीं, अपनी 7 एचपी बेबी ऑस्टिन कार में, मुख्य रूप से बोरिंग इंस्टीट्यूट तक, जहां जून रूसी शिक्षिका मिस शैकल से बैले सीखती थी। मुझे कार में बैठने की अनुमति केवल तभी मिलती थी जब हम लिबर्टी थिएटर में साथ फिल्में देखने जाते थे। मेरी दादी को तितलियों का बहुत शौक था, यही एक शौक मैंने उनसे सीखा। कभी-कभार मुझे दादी और जून के साथ क्यूबॉन पार्क जाने की अनुमति मिल जाती थी। हम अपने कुत्तों और तितली पकड़ने वाले जालों के साथ जाते थे और बड़े पेड़ों की छाँव में घास पर बैठकर एक अनोखा पिकनिक मनाते थे, जबकि वे दूर क्रिकेट मैच देखते थे। आज के विपरीत, उस समय क्यूबॉन पार्क व्यायाम करने की जगह नहीं थी, बल्कि पिकनिक और आउटडोर पार्टियों का अड्डा हुआ करता था। रविवार की दोपहर को, कई अंग्रेज़ परिवार क्यूबॉन पार्क में कुछ घंटे बिताते थे, बस नज़ारे का आनंद लेते हुए, मौज-मस्ती करते हुए और खेल खेलते हुए। दुर्भाग्य से, यह वह जगह भी थी जहाँ लोग आत्महत्या करते थे, और बड़ों द्वारा सुरक्षित रखे जाने के बावजूद, जून और मैंने अपने घर की सीमा के ठीक बाहर भयानक दृश्य देखे। विशेष अवसरों पर दादी हमें लालबाग ले जाती थीं, जहाँ ग्लास हाउस के पास एक रेस्तरां हुआ करता था जो पारंपरिक भारतीय भोजन परोसता था। अपने अंग्रेज़ वंश के बावजूद, उन्हें डोसा और जलेबी जैसे स्थानीय भोजन बहुत पसंद थे, और उनका मानना था कि यह सबसे अच्छा भोजन परोसने वाली जगह थी।
मेरे परिवार के कई सदस्य होसुर रोड स्थित प्रोटेस्टेंट कब्रिस्तान में दफन हैं, जिनमें मेरे दादा-दादी और माता-पिता भी शामिल हैं। पुराना प्रोटेस्टेंट कब्रिस्तान बहुत अच्छी तरह से रखा जाता था, लेकिन वर्षों से मैंने सुंदर कब्रों के पत्थर चोरी होते, कब्रें हटाई जाती और उसकी देखभाल के प्रति घोर उदासीनता देखी है। मेरे पिता की कब्र पर सुंदर पत्थर लगे थे जो उन जंगली झरनों से लाए गए थे जहाँ वे जाया करते थे, और एक दिन मैंने देखा कि उन्हें उखाड़ दिया गया था जिससे वहाँ भद्दे छेद हो गए थे। मेरी दादी की कब्र गेट के काफी करीब थी, और वहाँ से भी संगमरमर का एक अनमोल टुकड़ा चोरी हो गया।

मेरी माता, ब्लॉसम हायसिंथ मिनेट फ्लेमिंग, का जन्म सीलोन (श्रीलंका) में हुआ था। उनकी माता, मिलिसेंट टूसेंट, सीलोन के प्रसिद्ध टूसेंट परिवार से थीं और एक बर्गर थीं, जबकि उनके पिता क्लिफोर्ड फ्लेमिंग एक सच्चे ऑस्ट्रेलियाई थे। उनका जन्म न्यू साउथ वेल्स के तारे के पास एक छोटे से कस्बे में हुआ था। क्लिफोर्ड के पिता ने ब्रिटेन की सेना में डॉक्टर के रूप में कई देशों में और बाद में अंडमान के पोर्ट ब्लेयर स्थित जेल (सेलुलर जेल) में सेवा की। सीलोन की निकटता के कारण परिवार अक्सर छुट्टियां बिताने सीलोन जाता था, और वहीं क्लिफोर्ड की मुलाकात मिलिसेंट से हुई और उन्होंने उनसे विवाह किया। जब ब्लॉसम लगभग दस वर्ष की थीं, तब क्लिफोर्ड और मिलिसेंट भारत आ गए। उनके आठ बच्चे थे: रीटा, जेमी, जिल, जिनी, कर्ली, ब्लॉसम, टॉमी और सन्नी बॉय, जिनकी किशोरावस्था में उल्सूर झील में तैरते समय डूबने से मृत्यु हो गई थी। ब्लॉसम सचमुच परिवार की काली भेड़ थी, क्योंकि उसके सभी भाई-बहन गोरे, सुनहरे बालों और नीली आँखों वाले थे, जबकि वह सांवली थी। मेरी माँ बहुत सख्त मिजाज की थीं और उनका गुस्सा भी बहुत तेज था। वह एक कुशल निशानेबाज भी थीं, जिनके नाम कई पैंथर और जंगली सूअर के शिकार दर्ज थे।
मेरे माता-पिता की शादी 1929 में हुई थी, जब वे दोनों महज उन्नीस साल के थे। एंडरसन परिवार के लिए यह काफी सनसनीखेज घटना थी क्योंकि वे भागकर शादी कर ली थी और हनीमून के लिए पांडिचेरी गए थे, जहाँ माँ का परिवार रहता था। मेरे पिता हमेशा कंजूस माने जाते थे, लेकिन जीवन में एक बार उन्होंने कंजूसी की, वो भी तब जब वे मेरी माँ से प्रेम कर रहे थे। इस छोटे से दौर में एक मजेदार घटना घटी। वे रिचर्ड्स टाउन से प्रॉस्पेक्ट हाउस वापस जा रहे थे और मेरी माँ की बातें उनके कानों में गूंज रही थीं कि उन्हें साइकिल चलाना कितना रोमांटिक लगता था। तभी पिताजी, जो उस समय मेरी माँ पर पूरी तरह मोहित थे, ने सड़क पर किसी से सौदा कर लिया और अपने पिता की फोर्ड कार के बदले एक साइकिल ले ली!

□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□

1942 □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ 100 □□□□□ □□□□□ □□□ □□, □□ □□□-□□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□, □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ 250 □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□, □□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ 30 □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□, □□ □□□□□□□□□ □□, □□ □□□□ □□ 220 □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□, □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□, □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□

के बावजूद, यह काफ़ी बड़ा था। इसमें नौकरों के लिए एक अलग कमरा था और ज़ाहिर है, प्रॉस्पेक्ट हाउस से लाए गए कुछ जानवरों के लिए भी जगह थी। तब तक मेरे दादाजी का देहांत हो चुका था और मेरी दादी जून के साथ पामग्रोव रोड पर एक छोटी सी कुटिया में रहती थीं। वो बहुत मुश्किल समय था और ज़्यादातर संपन्न परिवारों के लिए अपनी जीवनशैली में कटौती करना कठिन था, जबकि गरीब परिवारों के लिए तो गुज़ारा करना भी मुश्किल था। जिनके पास पैसे थे, वे साइकिल का इस्तेमाल करते थे, जबकि निचले तबके के लोग आने-जाने के लिए "विक्टोरिया" या ग़री (घोड़े से खींची जाने वाली गाड़ी) का इस्तेमाल करते थे और सिर्फ़ अमीर परिवारों के पास ही कारें थीं। पेट्रोल राशन पर मिलता था और हमारे जैसे ज़्यादातर परिवारों ने खपत कम कर दी थी। मेरे पिताजी काम पर जाने के लिए मोटरसाइकिल चलाने लगे और चूंकि टेलीग्राफ़ कार्यालय में उनका समय मेरे स्कूल के समय से मेल नहीं खाता था, इसलिए मेरे पास हर दिन बारह मील पैदल चलने के अलावा कोई चारा नहीं था। मैंने आठ साल की उम्र से ऐसा करना शुरू कर दिया था। स्कूल दोपहर 3:30 बजे तक खत्म हो जाता था। और फिर मैं शाम 5:00 बजे तक खेलों का इंतज़ार करता था, जो उन दिनों अनिवार्य था। खेल मौसम के अनुसार होता था और यह शाम 6:30 बजे तक चलता था। उसके बाद मुझे अपना बैग और खेल का सामान ढोते हुए ऑस्टिन टाउन, विवेक नगर और वापस उसी रास्ते से पैदल घर जाना पड़ता था, जहाँ ठीक से रोशनी भी नहीं होती थी। रास्ते में कई जगह रुकने के कारण मुझे दो घंटे से ज़्यादा समय लग जाता था। मुझे यकीन है कि आज के समय में कोई भी आठ साल का बच्चा ऐसा नहीं कर सकता, भले ही उन्हें इसकी अनुमति मिल जाए, क्योंकि वे थकान से चूर हो जाएँगे। कहने की ज़रूरत नहीं है कि इससे मुझे होमवर्क के लिए बिल्कुल भी समय नहीं मिलता था, और जब भी मैं पढ़ाई में कमज़ोर प्रदर्शन के कारण स्कूल में डांट खाता था, तो अक्सर यही बहाना बनाता था। अब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे गर्व होता है कि मैंने इतनी दूर तक पैदल चलकर सब कुछ सहा, कभी शिकायत नहीं की, लेकिन उस समय मुझे इतनी समझ नहीं थी। हालाँकि, मेरा मन प्रॉस्पेक्ट हाउस की यादों से भरा रहता था, जो एक दूर के सपने जैसा लगता था। कुछ समय के लिए हमने अंजनप्पा नाम के एक बैलगाड़ी चालक की सेवा ली, जो मुझे मेरे स्कूल के रास्ते में एक जगह तक छोड़ देता था। दुर्भाग्य से, यह ज़्यादा दिन नहीं चला और उसे कहीं और नौकरी मिल गई। किस्मत ने उसका साथ तब दिया जब उसने मांस का कारोबार शुरू किया। जल्द ही जॉनसन मार्केट में उसकी अपनी दुकान खुल गई

और बाद में उसने एम.जी. रोड पर एक दुकान खोली जो बाद में मशहूर 'हैम शॉप' बन गई। जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, उसने एम.जी. रोड वाली दुकान पर आना बंद कर दिया, लेकिन जब भी वह वहाँ होता, और अगर मैं कभी वहाँ आ जाता, तो वह दुकान में मौजूद सभी ग्राहकों को गर्व से बताता, "मैं उस दोराही के लिए बैलगाड़ी चालक हुआ करता था!"
युद्ध 1945 में समाप्त हो गया, लेकिन प्रॉस्पेक्ट हाउस को वापस पाना मुश्किल साबित हुआ, क्योंकि प्रक्रिया सैन्य लालफीताशाही में उलझी हुई थी। इसलिए हम लैंगफोर्ड टाउन में कॉर्नवेल रोड पर एक किराए के मकान में रहे और अंततः 1949 में हमें उसका कब्ज़ा वापस मिल गया। मैं लगभग चालीस वर्षों तक प्रॉस्पेक्ट हाउस में रहा, और 1985 में जब हमें इसे बेचना पड़ा तो मेरा दिल टूट गया। शायद मुझे जून से ज़्यादा इस नुकसान का एहसास हुआ क्योंकि उसकी शादी 1951 में हो गई और वह इंग्लैंड चली गई। उसके जाने के बाद, उस विशाल घर में केवल माँ, पिताजी और मैं ही रह गए, इसलिए पिताजी ने फैसला किया कि वे इसके कुछ हिस्सों को छोटे परिवारों को किराए पर दे देंगे। किसी भी समय, हमारे पास लगभग छह से आठ किराएदार होते थे। मुझे याद हैं पोकॉक परिवार, पीटर परिवार, ब्रिग्स परिवार, कॉलिन बोन और उनकी पत्नी, सन्नी लियोनार्ड और उनकी माँ, एलिस परिवार और जॉकी बटफॉय, आदि। हालाँकि इन परिवारों के वहाँ रहने का समय अक्सर एक-दूसरे से मिलता-जुलता था, लेकिन इन सभी परिवारों ने मेरे जीवन में एक भूमिका निभाई। ब्रिग्स परिवार शायद वह परिवार था जिसके मैं सबसे करीब था। वे स्कॉटिश मूल के एंग्लो-इंडियन थे और इसीलिए मेरे पिताजी उन्हें विशेष सम्मान देते थे। बूढ़े ब्रिग्स और पिताजी का आपस में बहुत अच्छा रिश्ता था। उनके सात बच्चे थे - तीन लड़के - डोनाल्ड, गिल्बर्ट और चिप्पी - और चार बेटियाँ - मार्गरेट, शर्ली, कैरोल और एलिसिया। मैंने गिल्बर्ट (गिली) को शिकार करना और चिप्पी को मछली पकड़ना सिखाया, और वे मुझे बहुत मानते थे। वास्तव में, लोग उन्हें मेरा बायाँ और दायाँ हाथ कहते थे, क्योंकि वे हमेशा रोमांच और मुश्किल परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार रहते थे। चिप्पी, जो बहुत साहसी था, संगम में इतना सहज महसूस करता था, जहाँ मैं उसे मछली पकड़ने ले जाया करता था, कि वह मेकेदातु की घाटी में निडर होकर तैरता था। हमने 1960 के दशक की शुरुआत में संपत्ति का एक हिस्सा एक सज्जन को पट्टे पर दिया, जिन्होंने एक पेट्रोल पंप शुरू किया, जो आज भी मौजूद है। ज़्यादातर किराएदार बहुत अच्छे लोग थे,

लेकिन 1970 के दशक की शुरुआत से हालात बदल गए और रोज़ाना किराए, रखरखाव और दूसरे झगड़ों का सिलसिला शुरू हो गया। उस समय का कानून किराए के मकान में रहने वालों के पक्ष में था, और कुछ किराएदारों ने हमें बहुत परेशान किया। सबसे बुरा हाल एक मलयाली परिवार का था, जिन्हें मुझे मकान खाली करवाने के लिए मोटी रकम चुकानी पड़ी। किराएदारों के साथ हुए उस पूरे वाकये और उन्होंने मुझे और मेरे परिवार को जिस तरह से तकलीफ दी, उसकी एक कड़वी और गहरी याद रह गई, जिसका असर आने वाले समय में कई लोगों पर पड़ेगा। 1987 में व्हाइटफील्ड में माँ के निधन के बाद, मैं किराएदारों से लड़ते-लड़ते थक गया था, और अपनी हताशा और गुस्से में मैंने कुछ गलत लोगों की बात मान ली, जिन्होंने मुझसे मकान सात लाख में खरीद लिया। जब मैंने उसे बेचने की कोशिश की, तब मुझे एहसास हुआ कि मामला कितना पेचीदा था। चूंकि यह जमीन एक अंग्रेज ने दूसरे अंग्रेज को उपहार में दी थी, इसलिए मुझे इसकी बिक्री से प्राप्त राशि रखने की अनुमति नहीं थी, या कम से कम मुझे यही बताया गया था, और मेरे पास इसे साबित करने के लिए कोई कागजात भी नहीं थे। इसलिए, मुझे केवल दो इमारतों की बिक्री से प्राप्त राशि ही रखने की अनुमति थी, जो संपत्ति के मूल्य का एक छोटा सा हिस्सा थी। मेरे पिताजी हमेशा अपने पसंदीदा जंगलों से सटी जमीन खरीदते थे, लेकिन उन्होंने बेंगलुरु शहर में शायद ही कभी निवेश किया हो। हालांकि, 1961 और 1962 के दौरान, उन्होंने प्रकाशक जॉर्ज एलन एंड अनविन से प्राप्त रॉयल्टी से दो घर खरीदे, क्योंकि उनकी किताबें अंतरराष्ट्रीय बेस्टसेलर बन गई थीं। व्हाइटफील्ड में "बिजौ कॉटेज" पहला घर था, और बाद में उन्होंने बैनरघट्टा में साढ़े पांच एकड़ जमीन खरीदी। वे व्हाइटफील्ड में रहते थे, लेकिन सप्ताहांत में अपनी मॉरिस माइनर कार से बैनरघट्टा वाली संपत्ति पर जाया करते थे, यह कार केवल उन्हीं यात्राओं के लिए थी। इस दौरान, उनके और माँ के बीच सुलह न होने वाले मतभेद पैदा हो गए, और वे प्रॉस्पेक्ट हाउस छोड़कर व्हाइटफील्ड चले गए, जहाँ वे मार्गरेट नाम की एक एंग्लो-इंडियन महिला के साथ रहने लगे। यह बताना मुश्किल है कि ये मतभेद किस बात के थे, लेकिन वे एक-दूसरे से दूर हो गए थे। माँ हम दोनों में ज़्यादा मज़बूत थीं, और उनका पालन-पोषण एक बड़े परिवार में हुआ था जहाँ संवेदनशीलता और धैर्य को गर्व करने लायक गुण नहीं माना जाता था। माँ जैसी बीच की संतानें जुझारू और परिस्थितियों के अनुसार ढलने वाली होती हैं, और बचपन में कभी भी व्यक्तिगत ध्यान न मिलने के साथ-साथ उनके ऑस्ट्रेलियाई

खून की मज़बूती ने उन्हें एक ऐसी शख्सियत बना दिया था जिससे कोई भी आसानी से प्रभावित हो सकता था। दूसरी ओर, मेरे पिताजी का पालन-पोषण विक्टोरियन युग में हुआ था और इकलौते बच्चे होने के कारण वे पूरी तरह से बिगड़े हुए थे, और उन्हें जीवन भर भरपूर ध्यान मिला। अधिकांश विवाहित जोड़ों की तरह, उनके बीच भी असहमति होती थी, और हम अक्सर तीसरे विश्व युद्ध के पूर्वाभास देखते थे, हालाँकि अंततः समझदारी हावी हो जाती थी और सब कुछ सामान्य हो जाता था। हालांकि, उम्र बढ़ने के साथ-साथ वे झगड़ों से तंग आ गए और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि शायद अलग रहना ही सबके हित में होगा। वे 1962 में "बिजौ कॉटेज" में रहने चले गए, जो उनके बचपन के घर की तुलना में काफी छोटा था, क्योंकि उसका कुल क्षेत्रफल एक एकड़ से भी कम था। हालांकि, उस जगह पर प्राकृतिक हरियाली थी, जो उन्हें बहुत पसंद आई। 1960 के दशक की शुरुआत में व्हाइटफील्ड एक सुनसान इलाका था और बेंगलुरु के बाकी व्यस्त और व्यावसायिक हिस्सों से कटा हुआ, किसी दूसरे शहर जैसा था। यह एंग्लो-इंडियन लोगों से भरा हुआ था, जिन्होंने शहर की भागदौड़ भरी जिंदगी से दूर रहने का फैसला किया था। यह कहना मुश्किल था कि यह सिर्फ आलस था या पिताजी की कोई योजना, लेकिन वह जमीन खरपतवारों और झाड़ियों से भरी हुई थी जो हर तरह के सांपों का स्वागत करती हुई प्रतीत होती थी। दरअसल, जमीन का वह छोटा सा टुकड़ा इतना मशहूर था कि शहर के सपेरों के पास जब सांप खत्म हो जाते थे, तो वे वहां आते थे। उन्होंने 1957 में लगभग घर खरीद ही लिया था, लेकिन किसी कारणवश उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। 1961 में भी घर बिका नहीं था और आखिरकार उन्होंने उसे विलियम सल्धाना नाम के एक सज्जन से 5,000 रुपये में खरीद लिया, जिनके पास ही बगल की ज़मीन भी थी। सल्धाना उस ज़मीन को पट्टे पर देना चाहते थे, लेकिन पिताजी ने उन्हें बेचने के लिए मना लिया, हालांकि उन्होंने बगल का आम का बाग नहीं खरीदा जो बिक्री के लिए था। यहीं पर उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताए; बीमारी के कारण वे एकांत में रहते थे। सामने एक बड़ा बरामदा था और उसके पीछे दो बड़े शयनकक्ष थे। बरामदा और कमरे मेरी और उनकी उपलब्धियों से भरे हुए थे, और उनमें फिल्म 'हैरी ब्लैक एंड द टाइगर' के पोस्टर भी लगे हुए थे। वहाँ एक बाहरी शौचालय था, और ज़ाहिर है, बहुत सारे पिंजरे थे जो उनके पालतू जानवरों से भरे हुए थे, जिनमें अजगर, एक पतला लोरिस, लकड़बग्घे, सियार, हंस, एक इगुआना और यहाँ तक कि एक छोटा मगरमच्छ भी शामिल था। वे दुनिया भर में मशहूर हो गए थे और

लगभग हर दूसरे दिन कोई न कोई उनसे बात करने, उनकी कहानियाँ सुनने और अपनी किताबों पर हस्ताक्षर करवाने के लिए आता रहता था। हालाँकि, कैंसर का पता चलने के बाद, वे मिलने-जुलने वाले लोगों के बारे में बहुत चुनिंदा हो गए और केवल स्वामियों (धार्मिक लोगों) या उन लोगों के साथ समय बिताना चाहते थे जो उनकी बीमारी में उनकी मदद कर सकते थे, और आम लोगों से दूर रहते थे। बैनरघट्टा की संपत्ति का कोई नाम नहीं था, लेकिन वह जंगल की सीमा के ठीक किनारे पर स्थित थी। पिताजी के पड़ोसी सुंदर राज थे, जिनका वहाँ हमारे द्वारा अपनी संपत्ति खरीदने से पहले ही एक घर था। मैसूर राज्य के एक तमिलियन और हमारे पुराने पारिवारिक मित्र सुंदर राज की एम.जी. रोड पर गन क्राफ्ट नाम की एक दुकान थी। डेक्कन हेराल्ड कार्यालय के बगल वाली सड़क पर स्थित यह एक ऐसी दुकान थी जिसके बारे में बैंगलोर और कोयंबटूर जैसे स्थानों में रहने वाला हर शिकारी, चाहे वह अभ्यास करने वाला हो या बनने की इच्छा रखने वाला हो, जानता था।

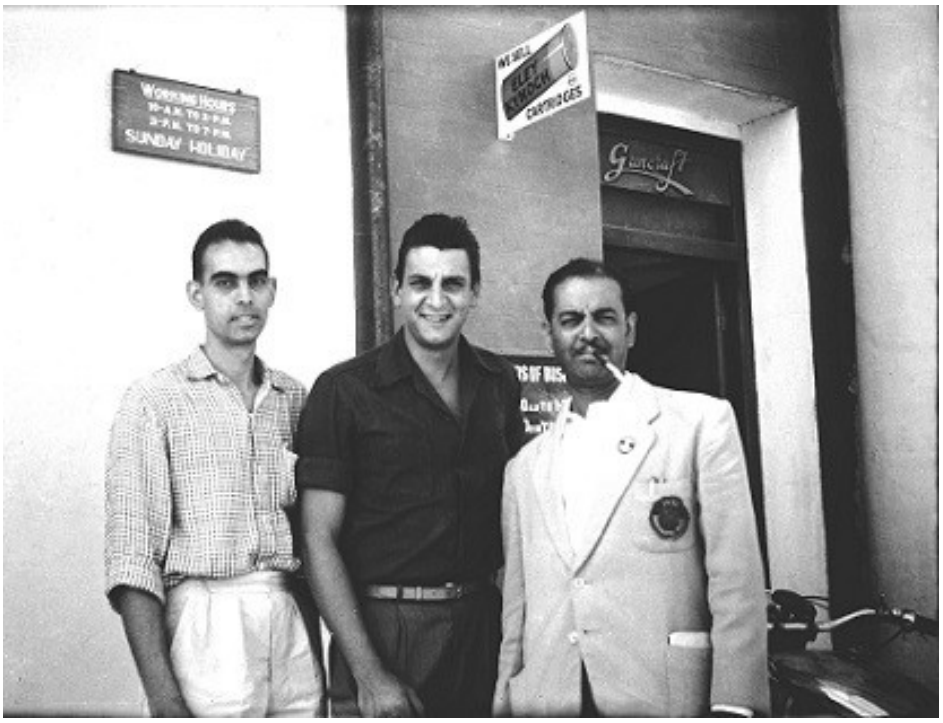

गनक्राफ्ट के बाहर बाईं ओर ओवेन वेल्स और दाईं ओर सुंदर राज के साथ।

बंदूक बनाना एक कला है। कुछ मिलीमीटर के अंतर को समझने के लिए विशेषज्ञ होना ज़रूरी है और सुंदर राज इस कला में माहिर थे। मेरे पिताजी और मेरे पास जितनी भी बंदूकें थीं, उन सबकी मरम्मत और मरम्मत उन्होंने ही की थी, स्कोप

लगाने से लेकर गोला-बारूद लाने तक, सब कुछ। हालांकि शिकार में उनका कौशल कुछ खास नहीं था, फिर भी पास के घने जंगलों में मेरे साथ जंगली सूअर का शिकार करने जाना उन्हें बहुत पसंद था। उन्हें मछली पकड़ने का भी शौक था और इस मामले में उनकी किस्मत भी अच्छी थी, एक बार तो उन्होंने संगम में 45 पाउंड की महसीर मछली भी पकड़ी थी। वे मुझसे कुछ साल बड़े थे और उनके बेटे सुरेश, उदांक और रवि मुझे अपना आदर्श मानते थे। मैं उन्हें जंगल में छोटी- छोटी यात्राओं पर ले जाया करता था। उस समय बैनरघट्टा राष्ट्रीय उद्यान नहीं था, और मेरे सारे रोमांच घर से थोड़ी ही दूर, बेटों के साथ होते थे। हालांकि मैंने उन्हें कभी बंदूक नहीं चलाने दी, फिर भी वे मेरे साथ आने और मेरे द्वारा मारे गए पक्षी को उठाने में बहुत खुश होते थे और उन्हें बहुत गर्व महसूस होता था। हालांकि मुझे वह घटना ठीक से याद नहीं है, लेकिन उधंक अक्सर एक खास कहानी सुनाता है, जो शायद उसकी यादों में इतनी गहराई से बसी है कि जब भी कोई उससे मिलता है, उसे उसे दोबारा सुनाना पड़ता है। बताया जाता है कि मैं उधंक और उसके भाइयों के साथ चल रहा था, तभी अचानक सामने की एक झाड़ी से तीन तीतर तीन अलग-अलग दिशाओं में उड़ गए। मैंने अपनी 12 बोर की बंदूक से दो तीतरों को मार गिराया, एक-एक बैरल से, फिर बंदूक में तीतर भरकर तीसरे को भी मार दिया, यह सब दस सेकंड से भी कम समय में हुआ, और यह कहानी लोककथा का हिस्सा बन गई! जब मैं वहां रहता था, तो बाजार से मांस खरीदने का तो सवाल ही नहीं उठता था; मुर्गी की जगह जंगली मुर्गे और गोमांस की जगह जंगली सूअर खाए जाते थे। मुझे याद नहीं कि यह कैसे लोकप्रिय हुआ, लेकिन 1950 के दशक की शुरुआत से ही सुंदर राज बैनरगट्टा में अपनी जमीन का कुछ हिस्सा परिवारों को किराए पर देते थे ताकि वे आकर वहां डेरा डाल सकें। वे अपनी चार एकड़ जमीन पर सपोटा, आम, नारियल, अमरूद और अन्य फल उगाते थे। वह एक अद्भुत जगह थी जहाँ से एक छोटी नदी बहती थी और हम अपने कुछ किरायेदारों, विशेष रूप से ब्रिग्स परिवार के साथ अक्सर वहाँ जाया करते थे।

सुंदर राज के फार्म में एंडरसन और ब्रिग्स परिवार।

उन्होंने अपनी ज़मीन की देखभाल के लिए गुंटकल के लोगों को काम पर रखा था, लेकिन समय के साथ वे उनकी नज़रों से गिर गए और अंततः उन्होंने बगल की एक ज़मीन और ढलान पर उनकी ज़मीन के ऊपर एक और ज़मीन खरीद ली, जो उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं आया। उन्होंने उन ज़मीनों को उनसे खरीदने की कोशिश की, लेकिन वे अपनी बात पर अड़े रहे और अपना रुख नहीं बदला। बात तब और बिगड़ गई जब मेरे पिताजी, जो उन ज़मीनों से बहुत लगाव रखते थे, ने कैरोल परिवार को, जो उन ज़मीनों में से एक था, बड़ी रकम देकर बगल वाली ज़मीन खरीद ली। सुंदर राज बहुत नाराज़ हो गए और उन्होंने मेरे पिताजी पर पीठ पीछे काम करने और उनकी मेहमाननवाज़ी का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया। तब से सुंदर राज और मेरे पिताजी के बीच कई मुद्दों पर छोटे-मोटे झगड़े होते रहे। ज़्यादातर झगड़ों की वजह वह नाला था जो दोनों की ज़मीनों पर बहता था। सुंदर राज इस बात से परेशान रहते थे कि कभी-कभी नाले से उनकी ज़मीन में बाढ़ आ जाती थी, जबकि मेरे पिताजी यह कहकर उनकी शिकायतों को अनसुना कर देते थे कि प्रकृति का अपना नियम होता है। बेशक, सुंदर राज तब यह दिखाता कि पानी को और ऊपर की ओर मोड़कर इसे कैसे बदला जा सकता है, और मेरे पिताजी उसे कानूनी नोटिस भेजते। दरअसल, मेरे पिताजी "औपचारिक तरीके" से काम करने के लिए मशहूर थे,

वे अक्सर अदालती समन और आधिकारिक नोटिस भेजते थे, और दर्जनों मामलों में उलझे हुए थे, जिनमें उनका काफी समय और ऊर्जा खर्च होती थी। एक समय ऐसा आया जब सुंदर राज अपने घर पर आने वाले दस्तावेजों की बाढ़ से तंग आ गया, और एक दिन बिना किसी उकसावे या चेतावनी के, उसने अपने पिता पर गोली चला दी, जो उसकी संपत्ति पर थे, लेकिन उससे कुछ दूरी पर। उसका इरादा निश्चित रूप से उन्हें मारने का नहीं था, और मेरे पिताजी भी यह जानते थे, लेकिन घटना की शर्मिंदगी और सदमे ने उन्हें एक और औपचारिक शिकायत लिखने के लिए मजबूर कर दिया। सुंदर राज के अनुसार, और मैं यहाँ उनके शब्दों को अपने शब्दों में कह रहा हूँ, पिताजी के पत्र में यही लिखा था।
“5 दिसंबर 1960 को सुबह 11:00 बजे, बैनरघट्टा निवासी श्री सुंदर राज ने अपनी.22 राइफल को अपने दाहिने कंधे पर रखकर मुझ पर एक गोली चलाई, जबकि मैं उनसे चालीस फीट की दूरी पर खड़ा था। लगभग 10 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही पश्चिमी हवा के कारण गोली मेरे पास खड़े एक पपीते के पेड़ से टकराई। यदि हवा की दिशा बदल जाती तो गोली अपना रास्ता बदलकर मेरी छाती में जा लगती। इसे हत्या का प्रयास मानते हुए, मैं इस जघन्य अपराध की रिपोर्ट करना चाहता हूं और श्री सुंदर राज के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गुहार लगाता हूं।” वकील से नोटिस मिलने पर सुंदर राज हमारे घर आया और उसने मेरे पिताजी से बात की।
श्रीमान एंडरसन, और मैं आपको श्रीमान एंडरसन इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि आप मुझसे उम्र में बड़े हैं; दूसरों के लिए - आप बस एक कमीने हैं। मैंने अभी- अभी आपका वह लंबा और दिलचस्प उपन्यास पढ़ा है जिसमें आपने बताया है कि हवा की दिशा ने आपकी जान कैसे बचाई। मैं आपको एक बात बता दूँ। मैंने पूरी ज़िंदगी बंदूकों के साथ काम किया है, मैं गोली के प्रक्षेप पथ को आपसे कहीं बेहतर समझता हूँ। अगर मैं आपके बाएं अंडकोष पर निशाना लगाना चाहता, तो लगा देता, ध्यान रहे, खास तौर पर आपके बाएं अंडकोष पर, इसलिए कृपया पश्चिमी हवाओं और पपीते के पेड़ों के बारे में पत्र लिखना बंद करें, आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं।
उस दिन उसने निश्चित रूप से युद्ध जीत लिया था।
मेरे पिताजी से उनके अक्सर मतभेद रहते थे, फिर भी वे मुझे बहुत प्यार करते थे और मेरी माँ के साथ उनकी गहरी दोस्ती थी। वे कृषि के प्रति बहुत उत्साही थे और बीज और पौधे लगाने की अपनी विधि को निखारने में घंटों बिताते थे। एक

बार, उन्होंने और मैंने अपने खेतों में आम के पेड़ लगाने की एक परियोजना शुरू करने का फैसला किया और लालबाग से एक साथ पौधे खरीदे। उन्हें मुझसे यह फायदा था कि वे बैनरघट्टा में रहते थे और उनके पास एक उत्तम योजना को लागू करने के लिए भरपूर समय था। वे मेरे घर भी आए और मुझे सब कुछ समझाया।
“आपको दो फुट चौकोर और दो फुट गहरा गड्ढा खोदना होगा और चौबीस घंटे तक उसमें हवा भरनी होगी। उसके बाद आपको लाल मिट्टी और खाद को एक निश्चित अनुपात में मिलाना होगा।”
मेरे पास इन सब के लिए समय नहीं था, मैं वहाँ सिर्फ़ सप्ताहांत बिताता था, और वह मेरा मज़ाक उड़ाते हुए कहते थे कि मैं पौधे लगाने से पहले मुर्गी की तरह ज़मीन खुरच रहा हूँ और मेरे पेड़ कभी नहीं उगेंगे। किस्मत से, मेरे ज़्यादातर पेड़ उग गए जबकि उनके नहीं उगे, और यह बात उन्हें बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। हमारे लगाए हुए कुछ आम के पेड़ आज भी मौजूद हैं और उनकी ज़मीन से देखे जा सकते हैं, जो आज उनके बेटे सुरेश की है। एंडरसन फ़ार्म ठीक उसी जगह पर हुआ करता था जहाँ अब बैनरघट्टा तितली पार्क है। हमारी ज़मीन पर एक ऊँची जगह पर एक बड़ी चट्टान थी, और अगर कोई उस चट्टान पर खड़ा होता, तो सामने पूरा जंगल एक मनोरम दृश्य के रूप में दिखाई देता था। यह मेरे पिताजी की ज़मीन पर सबसे पसंदीदा जगह हुआ करती थी। हर शाम वह इस चट्टान पर बैठकर प्रार्थना करते थे। जवानी में वह ज़्यादा धार्मिक नहीं थे, लेकिन उम्र बढ़ने के साथ-साथ उनका विश्वास मज़बूत होता गया। मुझे नहीं पता कि वे ईसाई प्रार्थनाएँ थीं या नहीं, बल्कि ईश्वर के साथ एकांत में बिताया गया समय था। उनकी मनोदशा हमारी लिखी इस कविता में स्पष्ट रूप से झलकती है, जिसका शीर्षक है
"पत्थर का गिरजाघर"।
क्या आप ऊपर किसी ईश्वर में विश्वास करते हैं?
फिर मेरे पत्थर के गिरजाघर में आओ
क्योंकि वहीं मुझे पता चलता है कि वह प्रेम है।
और मैं केवल उसी से बात करता हूँ।
मेरा पत्थर का गिरजाघर एक अद्भुत स्थान है।
इसकी नींव जमीन है
इसकी छत के लिए, मेरे पास स्वर्ग का गुंबद है और उसकी दीवारें, आसपास की पहाड़ियाँ।

आप जब चाहें तब आ सकते हैं।
आपको जरूर सांत्वना मिलेगी;
दरवाजा हमेशा खुला रहता है, दिन-रात।
और आपको मन की शांति मिलेगी।
उगता सूरज बस मैदानों को छूता है।
जैसे ही यह पूर्व की पहाड़ियों के ऊपर से झाँकता है गुलाबी, नीले और बैंगनी रंगों में
जो पश्चिम के कोहरे में विलीन हो जाते हैं।
यह मेरे छोटे से पत्थर के गिरजाघर पर गिरता है।
और इसे पूरी तरह से सोने में बदल देता है
एक अधिक शुद्ध, अधिक समृद्ध, अधिक सुंदर सिंहासन किसी भी प्राचीन राजा से अधिक।
आप दिन भर बैठकर अपनी निगाहें घुमा सकते हैं। पहाड़ियों के बीच एक घाटी में नीचे
मीलों तक, एक भूलभुलैया में खोया हुआ
चट्टानों, पेड़ों और झरनों के बारे में।
और आपको डूबते हुए गोले को देखना चाहिए
पश्चिम की ओर पहाड़ी के पीछे छिप जाओ
एक गहरे लाल, सिंदूरी, नारंगी रंग के धब्बे में
किसी भी चित्रकार का ब्रश इससे बेहतर नहीं हो सकता।
पास ही में जंगल स्थित है
रहस्यमय, शांत और स्थिर
लेकिन अब आप बीते हुए समय के बारे में ज्यादा नहीं सोचते। जैसे-जैसे आपकी आत्मा तृप्त होती जाती है।
एकांत और आनंदमय विश्राम का
हृदय, मन और आत्मा से
आप सर्वश्रेष्ठ की कीमत सीखते हैं।
यहीं से आप अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं।

.

यह सब आप देख सकते हैं, जान सकते हैं और ले सकते हैं।
मेरे इस छोटे से गिरजाघर में

न तो धन और न ही वास्तुकार ऐसा कर सकते थे
मेरे लिए एक बेहतर जगह।
इसकी सीट महज एक पत्थर का टुकड़ा है।
लेकिन यह रंग, जाति या धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करता।
यह ध्वनि वन पक्षियों के चहचहाने की है।
जरूरतमंदों का स्वागत करने के लिए।
आप जब चाहें यहां आ सकते हैं।
आपको अवश्य ही आशीर्वाद मिलेगा
शायद किसी बीमार शरीर को ठीक करना
या फिर आराम या मन की शांति।
सूर्यास्त के समय आप मुझे वहाँ पाएंगे।
मैं अपने पत्थर के गिरजाघर में बैठा हूँ
और मुझे यह बताने के लिए किसी पुजारी की आवश्यकता नहीं है कि कहाँ ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन की खोज में।
इसके लिए जहाँ वह ज़ोर से बोलता है
और वह मुझे अपने प्यार के बारे में बताता है
मैं बादलों में वह संदेश पढ़ सकता हूँ।
और ऊपर चांद और तारे।
वह मुझसे पूछता है कि मैंने उसके लिए क्या किया है
लेकिन मैं शर्म से अपना सिर झुका लेता हूँ।
क्योंकि मैंने कभी उनके बारे में सोचने की जहमत ही नहीं उठाई।
स्वार्थ और पाप ने मेरे नाम का कलंक लगा दिया है!
हालाँकि मैंने उन्हें कई बार निराश किया है
और मैंने उसे जितना हो सके उतना दुख पहुँचाया।
उसने मुझे कभी निराश नहीं किया।
और मुझे पता है कि वह ऐसा कभी नहीं करेगा।
ये ऊपर वाले के विचार हैं।
वह तब आता है जब मैं इस पत्थर पर बैठता हूँ
उसके प्यार के अजूबे में खोया हुआ
मैं अकेले में अपनी तुच्छता का ध्यान कर रहा हूँ।
इसीलिए मैं अपने पत्थर के गिरजाघर को बहुत महत्व देता हूँ।

चाहे वह गरीब और साधारण ही क्यों न हो
क्योंकि यहीं पर मेरी ईश्वर से आमने-सामने मुलाकात होती है।
और मुझे वह सांत्वना मिले जो वह मुझे देता है।
उनके निधन के बाद, मैंने उनकी पसंदीदा जगह के पास एक चिड़िया के लिए पानी का कुंड बनाया, और वहाँ आने वाले पक्षियों को देखकर मुझे कुछ सुकून मिलता था। संपत्ति बेचने के बाद भी वह कुंड कई वर्षों तक वहीं रहा, लेकिन सरकार ने उस जगह को अपने कब्जे में ले लिया और वहाँ तितली पार्क बना दिया, जिससे वह जगह हमेशा के लिए बदल गई। ज़मीन ढलान वाली और उपजाऊ नहीं थी, लेकिन वह उस जंगल के किनारे पर थी जो मद्रास राज्य तक फैला हुआ था। वह जगह बेहद खूबसूरत थी और जानवरों से भरी हुई थी जो अक्सर हमारी ज़मीन पर आते रहते थे। पिताजी कभी भी शिकार के लिए जानवरों को नहीं मारते थे, और 1960 के दशक के मध्य तक उन्होंने बंदूक रखना छोड़ दिया था। घर से थोड़ी दूर पैदल चलने पर एक ऐसा जंगल आ जाता था जो तीतर, बगुले, बंदर, जंगली सूअर, हिरण, कभी-कभार दिखने वाले पैंथर या भालू और, ज़ाहिर है, हाथियों के अंतहीन झुंडों से भरा हुआ था। जब मैं बिन्नी फैक्ट्री में काम करता था, तो सुबह पाँच बजे घर से निकलता था और मेरे सहकर्मी मेरी बात पर यकीन नहीं कर पाते थे जब मैं कहता था, "आज सुबह काम पर जाते समय मैंने बीस हाथियों का झुंड देखा।" यह ऐसी बात थी जिसे उनमें से कोई भी दोहरा नहीं सकता था या कल्पना भी नहीं कर सकता था। यह 1960 के दशक का बैनरघट्टा था - जंगली, और व्हाइटफील्ड के विपरीत, ऐसी जगह जहाँ बहुत से लोग रहना पसंद नहीं करते थे। वास्तव में, हाथी आज भी सुंदर राज की संपत्ति पर फलदार पेड़ों से फल खाने के लिए नियमित रूप से आते हैं। हमारा घर न तो अच्छी हालत में था और न ही बहुत आरामदायक, लेकिन यह व्यावहारिक था, और मैं पर्दों और मैचिंग कुशनों का शौकीन नहीं था। इसमें टाइल की छत, मिट्टी और ईंट की दीवारें और लाल ऑक्साइड का फर्श था। प्रॉस्पेक्ट हाउस की तुलना में यह साधारण था, जिसमें केवल दो 10 x 12 फुट के बेडरूम, एक 12 x 15 फुट का लिविंग/डाइनिंग रूम और एक बाथरूम था। मेरे पिताजी इतने कंजूस थे कि हमारे घर में लकड़ी का फर्नीचर लगभग न के बराबर था, लेकिन मितव्ययिता का नया ही मतलब समझ में आया जब उन्होंने निर्माण कार्य के बाद बचे हुए सीमेंट से सोफे बनवाने का फैसला किया। हमने बस उन सीमेंट के सोफों पर तकिए लगा दिए और वे उतने ही आरामदायक हो गए जितने हो सकते थे, या कम से कम वे ऐसा कहते थे। एक बार सुंदर राज घर पर मेरा काफी देर

तक इंतजार कर रहा था (उन कुछ दुर्लभ मौकों में से एक जब मैंने किसी को इंतजार करवाया था), लेकिन मैं अभी-अभी काम से घर लौटी थी, और यह अचानक लिया गया फैसला था। जब हम वापस घर में दाखिल हुए, तो सड़न की तेज बदबू आ रही थी। हमने बदबू का पता लगाया तो पाया कि एक सड़ा हुआ सांप तकिए और सीमेंट की कुर्सी के बीच रेंग रहा था और सुंदर राज ने गलती से उसे कुचल दिया था। पड़ोस में सांपों के लिए एक और आकर्षण यह था कि एंडरसन के घर में कबूतरों का एक बड़ा पिंजरा था, इसलिए हमारे घर में सांपों का दिखना आम बात थी। घर में कोई कीमती सामान न होने के बावजूद, उसे तालों और कुंडी से सुरक्षित रखा गया था, और यहाँ तक कि रोशनदान को भी कांटेदार तार से मजबूत किया गया था, जो पड़ोसियों के लिए हंसी का विषय था। मेरे पिताजी के देहांत के बाद, मैं 1975 से 1986 तक सप्ताहांत में उस जगह पर जाता रहा, और उस दौरान मैंने एरिक कोलमैन नाम के एक एंग्लो-इंडियन युवक और हमारे छोकरे, थंगावेलु जूनियर को उस जगह की देखभाल के लिए रखा। जब वे होश में होते थे, तो वे मेहनती होते थे, और हम तीनों ने पूरी संपत्ति के चारों ओर बाड़ लगाई, और अपनी संपत्ति से मुख्य सड़क तक एक कच्ची सड़क बनाई; जो आज भी मौजूद है, हालांकि इसमें काफी सुधार किया गया है। हालांकि, आमतौर पर दोनों रखवाले नशे में धुत रहते थे और अपनी मनमर्जी करते थे, और शराब पीकर बेहाल होना उनका पसंदीदा शौक था। लगभग हर दिन वे सुबह बैनरघट्टा गाँव जाते, दिन भर शराब पीते, कहीं छांव में लेट जाते और यही प्रक्रिया दोहराते। कभी-कभार, जब उन्हें घर वापस आने की ज़रूरत महसूस होती, तो वे लड़खड़ाते हुए वापस आने की कोशिश करते, अक्सर रास्ते में हाथियों के होने की खबर सुनकर। फिर शुरू होता यह झंझट, जिसमें वे मेरे घर के पीछे वाली छोटी पहाड़ी पर चढ़ जाते और मुझे बुलाते, और उनकी नशे की हालत को देखते हुए, यह एक सराहनीय कारनामा था कि वे मेरा ध्यान खींचने में कामयाब हो गए। तब मैं अपनी मोटरसाइकिल पर आता, कुछ पटाखे जलाता और हाथियों को भगा देता। फिर आता वह हिस्सा, जिसमें हम तीनों बिना स्ट्रीट लाइट वाली कच्ची सड़क पर मेरी मोटरसाइकिल से घर वापस आने की कोशिश करते, जबकि वे दोनों बदमाश अपनी माँ की कब्र की कसम खाकर कहते कि उन्होंने उस दिन शराब का एक घूँट भी नहीं पिया था! यह महज़ किस्मत की बात थी कि इन मौज-मस्ती भरी यात्राओं के दौरान हम पर कभी हाथियों का हमला नहीं हुआ, क्योंकि बैनरघट्टा ऐसी घटनाओं के लिए कुख्यात था। दरअसल, खेत बेचने के तुरंत बाद, मेरी ही ज़मीन पर एक हाथी ने किसी को मार डाला। मैंने इसे ₹100 में बेचा।

मैंने एक पारसी व्यक्ति को 10,000 रुपये दिए, जिसने मशरूम उगाने का एक फलता-फूलता व्यवसाय शुरू किया। फिर उसने इसे सरकार को बेच दिया, जो 1980 के दशक की शुरुआत में बैनरघट्टा राष्ट्रीय उद्यान स्थापित करने के लिए वहां विभिन्न मालिकों से जमीन खरीद रही थी, और मुझे सरकार से अधिग्रहण का नोटिस मिला। मुझे हमेशा से अधिकारियों से निपटने में बहुत डर लगता था, खासकर इसलिए कि मेरे पास ब्रिटिश पासपोर्ट था, और मुझे यह निराधार आशंका थी कि एक दिन मुझे इंग्लैंड निर्वासित कर दिया जाएगा। अगर ऐसा हुआ तो मैं क्या करूँगा? मैं वहां किसी को नहीं जानता था और मुझे यकीन था कि मैं इंग्लैंड में कुछ दिनों से ज्यादा जीवित नहीं रह पाऊंगा। इसलिए, मैंने इस बड़े रहस्य को अपने दिल में छिपाए रखा और केवल मेरे कुछ करीबी दोस्तों को ही इसके बारे में पता था। मैं बहुत सावधान था और हर पांच साल में अपना भारतीय वीजा और हर दस साल में अपना पासपोर्ट नवीनीकृत करवाता था। इसका मतलब था विधान सौधा में गृह मंत्रालय से निपटना, और उन समयों में मैं हमेशा घबराया रहता था।
मैं 1987 में व्हाइटफील्ड के घर से ईजीपुरा में रहने आ गया। व्हाइटफील्ड 1960 के दशक से काफी बदल चुका था, जब मेरे पिताजी वहां रहने आए थे, हालांकि इसे अब भी पिछड़ा इलाका ही माना जाता था। एंग्लो-इंडियन समुदाय की आबादी कम हो गई थी, और अक्सर शाम ढलने के बाद वहां असामाजिक तत्व दिखाई देते थे। हालांकि इन सब बातों से मुझे कभी कोई परेशानी नहीं हुई, फिर भी मैं व्हाइटफील्ड छोड़कर ईजीपुरा में मुख्य सड़क से थोड़ी दूर एक छोटी सी जगह पर रहने चला गया, जिसमें एक छोटा सा घर और एक अलग कमरा था। व्हाइटफील्ड हाउस, जहां मेरे पिताजी रहते थे, बिक चुका था और उसकी जगह एक नई इमारत बन गई थी। 1,000 रुपये के किराए पर, घर, एक बड़ा सा बगीचा और नौकरों के लिए एक अलग कमरा मिलना अच्छा सौदा था। थंगावेलु जूनियर, जो प्रॉस्पेक्ट हाउस में पले- बढ़े थे, उन्होंने बिजू कॉटेज में और फिर वापस यहां वाले घर में मेरी सेवा की थी। अब तक उनका परिवार बड़ा हो चुका था—उनकी पत्नी ट्रेसा और उनके बच्चे—और वे सभी उस अलग कमरे में रहते थे। अपने पिता की तरह, थंगावेलु जूनियर भी पूरी तरह वफादार था, लेकिन उसने शराब पीना शुरू कर दिया था और अब उस पर काम करने के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता था। उसके बेटे सांबो, बिम्बो, दुद्दू और कुमार अब बड़े हो गए थे, लेकिन अपने पिता की तरह वे भी कम उम्र से ही शराब पीने लगे थे। जैसे-जैसे लड़के बड़े होते गए, वे बहुत

उपद्रव करने लगे और अक्सर पैसे की मांग करते हुए हंगामा खड़ा करते थे। उनकी कृतघ्नता और बदतमीजी चौंकाने वाली थी, और उनकी माँ की मृत्यु के बाद, मैंने उन्हें बड़ी रकम देकर उनसे हमेशा के लिए संबंध तोड़ लिए।
जून
मेरी बहन जून का जन्म जून 1930 में हुआ था और उसका नाम मार्गरेट जून ब्लॉसम लूसी एंडरसन रखा गया था, कितना प्यारा नाम था! उसने बिशप कॉटन गर्ल्स स्कूल में पढ़ाई की और 1947 में इंडियन हाई स्कूल और मैट्रिकुलेशन परीक्षा और सीनियर कैम्ब्रिज ओवरसीज परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद स्नातक की उपाधि प्राप्त की, दोनों में उसे प्रथम श्रेणी मिली थी। वह बहुत बुद्धिमान थी, यह गुण उसे हमारे पिताजी से विरासत में मिला था, जबकि मुझे केवल मेरी माँ का विद्रोही स्वभाव विरासत में मिला था। जून की प्रतिभा केवल पढ़ाई तक ही सीमित नहीं थी, वह मैसूर राज्य हॉकी टीम की सदस्य थी और राज्य स्तरीय शॉट पुटर भी थी। वह बहुत प्यारी बच्ची थी, हमेशा विचारशील और मददगार थी और स्वाभाविक ही था कि वह सबकी चहेती थी। उसकी सबसे बड़ी प्रशंसक हमारी दादी थीं, और उन दोनों के बीच एक बहुत ही खास रिश्ता था। मैं केवल खेल-कूद में रुचि रखती थी, जबकि जून को किताबों और चित्रकला में रुचि थी, जिसे उसकी दादी प्रोत्साहित करती थीं। वे दोनों बरामदे में बैठती थीं, जहाँ मेरी दादी दशकों पहले उसी घर में एक बच्ची के रूप में सीखे गए कौशल को मुझे सिखाने का प्रयास करती थीं। लेकिन जून का पहला प्यार नृत्य था, और किसी तरह यह मेरी दादी की कुशलता से परे था। जब भी मुझे मौका मिलता, मैं चुपके से उन दोनों के पीछे जाकर शेर की तरह जून पर झपट पड़ता, जिससे वहाँ की शांति भंग हो जाती। मैं या तो उसे मारता या उसकी कोई गुड़िया छीन लेता, और इन्हीं पलों में मुझे शक होता कि मेरी दादी उतनी बूढ़ी नहीं हैं जितना वह बताती हैं, क्योंकि पलक झपकते ही वह जून और मेरे बीच खड़ी हो जातीं। “चले जाओ तुम घिनौने लड़के, मेरे बच्चे को अकेला छोड़ दो” ये आवाज़ें मेरे कानों में गूंजती रहतीं, जब मैं वहां से भाग निकलता, और फिर अपनी अगली घिनौनी योजना बनाता। जून की शादी के बाद, वह वेलिंगटन के कुन्नूर में अपनी सास लौरा के साथ रहने चली गई, और जब वह वापस लौटी, तो उसने देखा कि मैंने उसकी साइकिल चुरा ली है। “तुमने इसे खो दिया है,” मैंने कहा।
एक बात से दूसरी बात निकली और देखते ही देखते, हमारी दादी की हैरानी के बीच, हम दोनों के बीच एक तरह की लड़ाई शुरू हो गई जो हमारे घर के सामने सड़क

पर फैल गई। मेरी बेचारी दादी घबराकर चिल्ला रही थीं, "भगवान के लिए, तुम मेरी बच्ची को नहीं मार सकते! वह शादीशुदा है!"
जब जून लगभग दस साल की थी, तब विक्टोरिया अस्पताल में उसके टॉन्सिल का ऑपरेशन होना था। वह बहुत डर गई और चीखने लगी। हमेशा की तरह, उसकी दादी ने उसे संभालते हुए कहा, "उसे परेशान मत करो, उसे अस्थमा का दौरा पड़ जाएगा।" तो सब शांत हो गए, और फिर मेरी माँ ने कहा, “डॉन को देखो, ये हमेशा अंगूठा चूसता रहता है, चलो इसके टॉन्सिल निकाल देते हैं” और देखते ही देखते मेरे टॉन्सिल निकाल दिए गए! मैं घर वापस आया तो बहुत बीमार महसूस कर रहा था, जबकि जून खूब हँस रही थी। बेशक, बदला लेने के ख्याल ने मुझे उम्मीद से कहीं ज्यादा जल्दी ठीक कर दिया और फिर मैंने उसे खूब पीटा, लेकिन वो हमेशा कहती है कि मुझे उसका शुक्रगुजार होना चाहिए, क्योंकि उसके बाद मुझे कभी गले में खराश नहीं हुई।

खुशी के दिन – जून और मैं

बचपन में हमारी पसंदीदा जगह साउथ परेड पर स्थित लेकव्यू नाम की मिल्क बार थी, जहाँ मिल्कशेक दो आने में मिलता था। एक दिन लेकव्यू से लौटते समय हमें एक पेड़ पर बैठी ब्राह्मणी चील दिखाई दी। यह मेरे छठे जन्मदिन के ठीक बाद की बात थी, और मैं बहुत ही उत्साहित था। बिना सोचे समझे मैंने अपनी डेज़ी एयर राइफल से उस पर गोली चला दी और वह ज़मीन पर गिर पड़ी, घायल तो थी लेकिन

मरी नहीं थी, क्योंकि वह फड़फड़ा रही थी। एक और गोली बचाने के लिए, मैंने एक और गोली ले ली।
मैंने पत्थर से उसके सिर पर बार-बार वार किया जब तक कि वह हिलना बंद नहीं कर दिया। वापस आते समय जून लगातार रोती रही और मुझे बहुत बुरा लगा जब उसने पिताजी को सब कुछ बता दिया। वह मेरी इस क्रूरता से बहुत दुखी थे और मुझे सबक सिखाने के लिए दृढ़ थे। उनके पुलिस उप-निरीक्षक मर्विन डिसूजा से अच्छे संबंध थे, जिनका कार्यालय हमारे घर से सटी इमारत में था। मुझे डिसूजा के सामने पेश किया गया और पिताजी ने घोषणा की, "मेरे बेटे ने एक भयानक अपराध किया है, और उसे सजा मिलनी चाहिए।"
पुलिसवाले ने अपना फर्ज निभाया और मुझे खुद एक गंदी कोठरी में ले जाकर बंद कर दिया। उनकी हैरानी की बात यह थी कि मुझे ज़रा भी परवाह नहीं थी और मैंने उस मौके का फायदा उठाकर कोठरी में रखे गंदे, बदबूदार और कीड़े लगे कंबलों पर सो लिया। और जैसा कि उन्हें उस दिन पता चला, मुझे "भाड़ में जाओ तुम सब" कहना बहुत अच्छा लगता था। कुछ घंटों बाद मुझे बाहर निकाला गया और सख्ती से मना किया गया कि मैं दोबारा ऐसा कुछ न करूं। किसी भी आम छह साल के बच्चे की तरह, मैंने इस मामले में कोई वादा नहीं किया और घर पहुंचते ही गायब हो गया, लेकिन मैंने जून को बगीचे में पकड़ लिया और उसे धमकाया। "तुम एक छुपी हुई हो, मैं तुम्हें सबक सिखाऊंगा।" मेरी दादी के पास ज़मीन पर एक छोटा सा ग्रीनहाउस था, जिस पर उन्हें बहुत गर्व था। दरअसल, बागवानी का यह शौक मेरे माता-पिता को भी मिला, जिन्होंने सालों बाद ग्रीनहाउस की देखभाल की। जून को वहां समय बिताना बहुत पसंद था, इसलिए मैं अपनी एयर राइफल लेकर ग्रीनहाउस में छिप गया। जब जून अंदर आई, तो मैंने धीरे से बंदूक अपने कंधे पर रख ली।
“दिल पर निशाना लगाओ”, मैंने खुद से कहा और धीरे से ट्रिगर दबा दिया। सौभाग्य से, निशानेबाजी की वो कला जो मुझे आगे चलकर मशहूर करेगी, अभी शुरुआती दौर में थी और गोली निशाने से चूक गई। जून आलू की बोरी की तरह गिर पड़ी, लेकिन फिर उठी और भागी, और आखिरकार बरामदे पर गिर पड़ी। जांच करने पर पता चला कि उसे कंधे पर गोली लगी थी। वह निशान तब से बना हुआ है, और वह आज भी उसे गर्व से दिखाती है। जहाँ तक उस अपराधी की बात है, मुझे वापस जेल भेज दिया गया, और हालात और भी बदतर हो गए जब मेरी एयर गन मुझसे ले ली गई ताकि मैं ज़िम्मेदार बनना सीख सकूँ। दुर्भाग्य से, घर में ऐसी बहुत कम जगहें

□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□,
□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□
□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□, □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□
□□□□□□□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□, □□□□
□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□
□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□

□□□□ □□ □□□

□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□, □□□□□□□ □□□ □□□□□
□□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□
□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□, □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□
□□ □□□ □□□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□,
□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□
□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□-□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□, □□
□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□
□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□□
□□□□ □□ □□□□ 15 □□ 11 □□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ 35 □□□ □□ □□□□ □□□□□□
□□ □□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□
□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□

वन्यजीवों को देखते थे। खाना आमतौर पर घर से ही लाते थे, क्योंकि गाँव गेस्ट हाउस से काफ़ी दूर था, और हम समय बर्बाद नहीं करना चाहते थे। हम विंदालू लाते और उसे रोटी के साथ खाते, और मिठाई में आमतौर पर गाढ़ा दूध होता था। हालांकि पिताजी ने हमें चेतावनी दी थी कि गाढ़ा दूध पीने से हमें डिहाइड्रेशन हो सकता है, लेकिन हमने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया और एक दिन में दो-तीन डिब्बे खत्म कर देते थे! लंबी सैर के बाद, हम अपने घर लौट आते, रात को सोते और फिर अगली सुबह वापस घर आ जाते। यात्राओं के दौरान गाढ़ा दूध तो एक खास तोहफा होता था, लेकिन आइसक्रीम तो हम शहर में ही खाते थे। दो विकल्प थे, एम.जी. रोड पर लेकव्यू, या फिर वो आइसक्रीमवाला जो छावनी क्षेत्र में एक छोटी सी गाड़ी लेकर घूमता था, जिसमें एक खास घंटी लगी होती थी। घंटी बजते ही हम तुरंत अपनी अलमारियों की ओर दौड़ पड़ते और पैसे निकालते। एक बार जब मैं लगभग ग्यारह या बारह साल का था, तो वही जानी-पहचानी घंटी बजी और हम दोनों अपने गुल्लक खोलने के लिए दौड़ पड़े। जून को एहसास हुआ कि उसके पास पैसे नहीं हैं, और उसने बहुत ही विनम्रता से मुझसे पूछा कि क्या मैं उसे कुछ पैसे उधार दे सकता हूँ। मैं बहुत ही रूखा था और मैंने मना कर दिया। उसने मेरे बाल खींचे और प्रॉस्पेक्ट हाउस में हमारी फिर से कुश्ती छिड़ गई। बेशक, हमारी दादी ने आकर हमें अलग किया और हम दोनों की बातें ध्यान से सुनने के बाद, उन्हें लगा कि जून ने जो किया वह बिल्कुल सही था। उन्होंने न केवल उसे आइसक्रीम के पैसे दिए, बल्कि मेरे द्वारा पहुँचाए गए दुख के लिए कुछ और पैसे भी दिए! मेरी बहन को इस तरह का खुला पक्षपात प्राप्त था!
कुछ लोग स्वभाव से ही कमजोरों का साथ देते हैं, और मेरी आया कैथरीन भी उनमें से एक थीं। जहाँ सब मानते थे कि जून कभी कोई गलती नहीं कर सकती, वहीं मेरी आया मुझे संत समझती थीं और मेरे कार्यों का पुरजोर बचाव करती थीं। वह जून पर दिखावा करने का आरोप लगाती थीं और माँ से कहती थीं कि अगर हर कोई मुझ पर हमेशा गलतियाँ करने का आरोप लगाता रहेगा तो मैं बड़ी होकर लोगों से नफरत करने लगूँगी। हालाँकि, मेरी दादी, जो न्यायाधीश और सज़ा देने वाली भी थीं, मेरी वकील थीं, इसलिए आया कैथरीन की भावुक अपीलों से भी मुझे दी गई सज़ा कम नहीं हुई।
जून को मुसीबत में डालने वाले कुछ मौकों में से एक बिल्कुल अचानक हुआ था। उसके इस आश्वासन पर कि वह मुझे ज़्यादा ज़ोर से नहीं धकेलेगी, मैं बगीचे के

झूले पर बैठने के लिए राज़ी हो गई। मुझे झूले की आदत नहीं थी, और मैंने तुरंत उसे रुकने के लिए कहा। मेरी आवाज़ में डर देखकर, जून मुझे और ऊपर धकेलने लगी, और मुझे लगता है कि अपने जीवन में पहली बार उसे मुझे अपनी दया पर रखने और मेरी चीखें सुनने का आनंद मिला। लेकिन फिर मैं कूद गई, और हालाँकि मैं ज़्यादा ऊँचाई से नहीं गिरी थी, फिर भी मैं लुढ़क गई। जून अपने किए पर इतनी डर गई कि वह रोने लगी, जबकि मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाई और उस पर मुझे जान से मारने की कोशिश करने का आरोप लगाया। हत्या के इस नाकाम प्रयास के लिए माँ ने जून को (सिर्फ़) तीन थप्पड़ मारे, और इससे मेरी दादी बहुत दुखी हुईं, जबकि मुझे तरह-तरह के इनाम मिले। हालाँकि मैं शारीरिक रूप से उससे ज़्यादा मज़बूत थी, फिर भी वह कभी-कभी बहुत निर्दयी हो जाती थी। एक समय था जब हम दोनों अपने टट्टू मिलने से पहले स्कूल पैदल जाते थे। वह मुझसे उम्र में बड़ी थी और मैं गिड़गिड़ाते हुए उससे धीरे चलने को कहती ताकि मैं उसके साथ चल सकूँ। लेकिन वह कहती, "नहीं, तुम बहुत बदसूरत हो," और आगे बढ़ती रहती। मैं उसके पीछे-पीछे सिसकते, अंगूठा चूसते और नाक पोंछते हुए जाती। मैं हमेशा किसी न किसी मुसीबत में फँस जाती थी, और मुझे सहज रूप से पता था कि किसी को गुस्सा दिलाने के लिए क्या करना चाहिए।
मेरी माँ का एक छोटा भाई था जिसका नाम सन्नी बॉय था, जो बहुत छोटी उम्र में डूब गया था और तब से मेरी माँ को पानी से बहुत डर लगता था। एक दिन, माँ से डांट खाने के बाद, मैंने ऐलान किया कि मैं क्यूबॉन पार्क में बांस के द्वीप के पास डूबकर आत्महत्या कर लूँगा। मेरी बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, लेकिन फिर मैं घर में इधर-उधर दौड़ते हुए कहने लगा कि कोई मुझसे प्यार नहीं करता और मैं अपनी जान देकर सबको आसान बना दूँगा। स्वाभाविक रूप से इससे सब लोग चिंतित हो गए, खासकर माँ, लेकिन तब तक मैं चालाकी से गायब हो चुका था और कहीं नहीं मिला। शाम ढल चुकी थी और लोग टॉर्च लेकर मुझे ढूंढने लगे, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ और वे मुझे ढूंढ नहीं पाए। मेरे पिताजी पास के पुलिस स्टेशन गए और एक कांस्टेबल से मदद मांगी। लगभग नौ बजे, जून गैरेज के पास से बेचैनी से गुजर रही थी, तभी मेरी नज़र उस पर पड़ी और मैं अपनी हंसी नहीं रोक पाया। उसने अंदर देखा और मुझे कुछ बक्सों के पीछे बड़े आराम से बैठा पाया। वह मेरे द्वारा इतने सारे लोगों को नाराज़ करने से इतनी क्रोधित थी कि उसने जो भी चीज़ हाथ लगी, एक खाली पेंट का डिब्बा, उसे उठाया और मुझ पर बेतहाशा वार किया। वह मेरे सिर पर लगा, जिससे खून बहने लगा और मैं ज़ोर-

ज़ोर से चीखने लगी। स्वाभाविक रूप से सारा दोष उसी पर आ गया और सब भूल गए कि मैंने उन्हें कितनी परेशानी दी थी। सबको असहज करने वाली बात कैथरीन आया की लगातार की गई बातें थीं।
मैंने तुमसे कहा था! एक दिन इस लड़के के साथ कुछ न कुछ बुरा होने वाला है, क्योंकि इस घर में उसे ज़रा भी प्यार और स्नेह नहीं मिलता!
जून को बाहर घूमना बहुत पसंद था और जब भी संभव होता, वह हमारे साथ आती थी। लेकिन उम्र बढ़ने के साथ ऐसा कम ही हो पाता था क्योंकि उसे अस्थमा के दौरे पड़ने लगे थे, जो बैंगलोर की हवा में मौजूद पराग कणों के कारण और भी बढ़ जाते थे।

ऊटी डाकघर में

चार साल की उम्र में उसने स्कूल जाना शुरू किया, लेकिन उसे अस्थमा का गंभीर दौरा पड़ा और वह कई महीनों तक बिस्तर पर पड़ी रही। हालांकि, वह इतनी होशियार थी कि उसने स्कूल वापस जाकर पढ़ाई शुरू कर दी, मानो उसने एक भी दिन स्कूल छोड़ा ही न हो, और इसके लिए हमारी दादी को बहुत श्रेय जाता है। उसने फ्रेंच, अंग्रेजी और गणित में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। वह नर्स बनना चाहती थी और सोलह साल की उम्र में ही उसने लेडी कर्ज़न अस्पताल में आवेदन कर दिया था। हालांकि उसके अंक बहुत अच्छे थे, लेकिन अस्पताल को लगा कि वह

अभी बहुत छोटी है, और उसे अगले साल फिर आने के लिए कहा गया। मेरे पिताजी नहीं चाहते थे कि वह नर्स बने क्योंकि उन्हें उसके अस्थमा के दौरों की चिंता थी। परीक्षा के कुछ हफ्तों बाद एक डांस पार्टी में उसकी मुलाकात अपने भावी पति जैक से हुई, जो ब्रिटिश भारतीय सेना में एक अधिकारी कैडेट के रूप में प्रशिक्षण ले रहा था। हालांकि भविष्य में होने वाली घटनाओं के संकेत पहले से ही मिल रहे थे, लेकिन कोई भी यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि आगे चलकर उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल जाएगी।
उनके पति जैक विवियन जोन्स का जन्म 16 नवंबर 1927 को गोल्डन रॉक, त्रिचिनोपोली में लौरा कैरोलिन गर्ट्रूड नेटो और हैरी जोन्स के घर हुआ था। जैक ने माउंट अबू के एक स्कूल से सीनियर कैम्ब्रिज की पढ़ाई पूरी की और बाद में लाहौर के सैन्य विश्वविद्यालय में दाखिला लिया, जहाँ उस समय हैरी तैनात थे। उनके माता-पिता दोनों ही सेना से जुड़े थे, इसलिए जैक का ब्रिटिश भारतीय सेना में भर्ती होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। उनकी तैनाती बैंगलोर में हुई, जहाँ उनकी मुलाकात जून से हुई। अप्रैल 1947 में उनकी सगाई हुई और जुलाई तक जैक को कमीशन मिल गया और उनकी तैनाती लाहौर में हो गई। भारत को आजादी मिलने के दिन वे उसी शहर में थे। उनकी रेजिमेंट को भारत वापस बुलाया गया, लेकिन हालात इतने खतरनाक थे कि उन्हें रात होने तक इंतजार करना पड़ा। अंधेरे में ट्रक लाहौर से रवाना हुए और लाहौर से दिल्ली तक के तीन सौ मील का सफर तीन हजार मील जैसा लगा, और उन्हें पता था कि मौत हर पल उनके सामने है। जून की शादी सत्रह साल की उम्र में हुई थी। उनकी शादी 1948 में होनी थी, लेकिन उस समय इतनी उथल-पुथल मची हुई थी कि सेना ने सभी की अनिश्चितकालीन अवकाश रद्द कर दिए थे। यही कारण और साथ ही उनका जैक से गहरा प्रेम संबंध, शादी के लिए पर्याप्त प्रेरक थे और संयोगवश उन्होंने 27 दिसंबर 1947 को बैंगलोर के सेंट पैट्रिक रोमन कैथोलिक चर्च में शादी कर ली। संयोग से यह वही चर्च था जहाँ जैक के माता-पिता की भी शादी हुई थी।

जैक जोन्स और जून एंडरसन – 1947

उत्तर में हो रहे रक्तपात से सुरक्षित रहने के लिए वे कुछ समय के लिए नीलगिरी के वेलिंगटन चले गए। फिर जैक की तैनाती ताजमहल से आठ मील दूर फतेहगढ़ में हुई, जिसे जून "धरती पर नरक" कहती है। महान भारतीय विद्रोह के दौरान फतेहगढ़ एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान था और अंग्रेजों का वहाँ एक बड़ा किला था। 1857 में, भारतीय सैनिकों ने किले के निवासियों के खिलाफ विद्रोह कर दिया और हालाँकि अंग्रेजों ने किले और चर्च में शरण ली, उन्हें बाहर घसीटकर बेरहमी से मार डाला गया और उनके शव चर्च के कुएँ में फेंक दिए गए। भूत-प्रेतों की कहानियों में पली-बढ़ी जून वहाँ रहने के दौरान लगातार परेशान रहती थी। वह पहले कभी उत्तर के लोगों के साथ नहीं रही थी और उन्हें बेहद आक्रामक और असभ्य पाती थी। पुरुष अक्सर उसे गंदी नज़रों से देखते थे या महिलाओं से बेहद अपमानजनक तरीके से बात करते थे। तुलनात्मक रूप से

बैंगलोर एक बहुत ही सुरक्षित शहर था, और उसके एकांत जीवन का प्रमाण यह था कि उसने पहले कभी किसी सिख को नहीं देखा था। हालांकि जैक के दूर रहने के कारण वह छावनी क्षेत्र में ही रहती थी, फिर भी ज्यादातर समय अकेली और दुखी रहती थी। आखिरकार उन्हें एक छोटा सा घर मिला, जिसमें सिर्फ एक कमरा और एक बाथरूम था। घर की छप्पर वाली छत बिच्छुओं से भरी थी और बगीचे में सांप थे। वहां पंखे या फ्रिज नहीं थे और बैंगलोर के विपरीत, वहां असहनीय गर्मी थी। वे एक ऐसी सड़क पर रहते थे जो नदी की ओर जाती थी, और हर दिन वह शवों को दाह संस्कार के लिए ले जाते हुए देखती थी। सालों बाद उसने मुझे बताया कि अब पीछे मुड़कर देखने पर यह मूर्खतापूर्ण लगता है, लेकिन वह उन जुलूसों से बहुत डरती थी। वे जोर-जोर से मंत्रोच्चार करते थे, जबकि जून, पर्दों के पीछे दुबककर, चुपके से शवों को देखती थी, और इससे वह और भी डर जाती थी। वह अक्सर आधी रात को चीखते हुए जाग जाती थी, क्योंकि उसके सपनों में शव जीवित हो उठते थे और मंत्रोच्चार करते थे! हालांकि उसकी शादी हो चुकी थी, फिर भी वह सिर्फ अठारह साल की थी और अभी भी बच्ची थी। जब जून अपने पहले बेटे डोनाल्ड के साथ गर्भवती हुई, तो उसे सौभाग्य से एक अस्पताल में इलाज मिल गया। राज्य सरकार ने आधिकारिक तौर पर वहाँ के मिशनरी अस्पतालों को बंद करने का आदेश दिया था, इस संदेह पर कि ये अस्पताल स्थानीय आबादी को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के लिए जिम्मेदार थे। परिणामस्वरूप, मिशनरी डॉक्टरों द्वारा इलाज किए जाने की तुलना में लोगों को मरने देना स्वीकार्य समझा गया, कहीं ऐसा न हो कि वे अपने मरीजों को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दें। सौभाग्य से, जून पहले से ही ईसाई थी, इसलिए उसे शायद कम जोखिम वाली मरीज माना गया और डॉक्टरों को उसका इलाज करने की अनुमति दी गई। उसने अपने बेटे डोनाल्ड को जन्म दिया, जिसका नाम मेरे नाम पर रखा गया। सेना छुट्टी देने के मामले में बहुत सख्त थी, और जैक को अपने पहले बेटे के जन्म पर केवल एक दिन की छुट्टी मिली थी।
डॉन लगभग आठ महीने का था, जब उनकी पोस्टिंग पंजाब के अंबाला में हुई। उनके साथ एक मुस्लिम रसोइया भी जाना चाहता था, लेकिन अन्य अधिकारियों ने कहा कि अंबाला के सिख उसे मार डालेंगे, इसलिए उन्हें उसकी जगह एक हिंदू रसोइया, बाबू लाल को ले जाना पड़ा। अंबाला सिखों का गढ़ था, और जून उन्हें कृपाण (चाकू) या तलवारें सीने पर बांधे देखकर बहुत डरती थी। तब तक वह अपने दूसरे बेटे की उम्मीद कर रही थी, और उन्हें जो क्वार्टर दिए गए थे, वे जंगल में

थे। जब जैक मोर्चे पर लड़ रहा था, तब डॉन को पेचिश हो गई और वह लगभग मर ही गया था। जब उसने अपने दूसरे बेटे, क्रिस्टोफर को जन्म दिया, तब वह एक बहुत बीमार बच्चे के साथ अकेली थी।
वहां के स्थानीय अस्पताल में भर्ती होने के बाद उन्हें इन सब चीजों को संभालने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा।
1947 के विभाजन के दौरान लगभग बारह मिलियन लोग विस्थापित हुए और दस लाख लोगों ने अपनी जान गंवाई। अधिकांश अत्याचार पंजाब और बंगाल प्रांतों में हुए, और पंजाब में तैनात जैक ने मानव जाति द्वारा किए गए कुछ सबसे भयावह कृत्यों को अपनी आँखों से देखा। लोगों को जिंदा जलाया गया, घरों में लूटपाट और आगजनी आम बात थी, महिलाओं और बच्चों को उनके घरों से घसीटकर बलात्कार और यातना दी जाती थी। महिलाओं द्वारा सामूहिक आत्महत्या के मामले आम थे, आमतौर पर आत्मदाह या कुओं में कूदकर। जो बच गए, उनके शरीर पर अक्सर उस धर्म के चिन्ह अंकित होते थे जिसने हिंसा को प्रेरित किया था। यह निहत्थों के खिलाफ युद्ध था, जिसमें दोनों पक्ष एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में थे और जैक इसे और सहन नहीं कर सका। उसने मृतकों से भरी ट्रेनें मवेशियों की तरह ढेर होते देखी थीं, उसने सड़कों पर लावारिस पड़े शिशुओं को पीट-पीटकर मारते देखा था, शवों को काटकर कुओं में फेंकते देखा था, और यह किसी भी समझदार व्यक्ति के लिए असहनीय था। उसने फैसला किया कि वह नहीं चाहता कि उसका परिवार ऐसी भूमि में पले-बढ़े जहां इस पैमाने पर हिंसा होती हो, और उसने अवसर मिलते ही वहां से भागने का मन बना लिया।
सन् 1950 के आसपास, जैक को ब्रिटिश उच्चायुक्त का एक पत्र मिला जिसमें उन्हें ब्रिटिश नागरिकता की पेशकश की गई थी, क्योंकि वे विदेश में सेवारत एक ब्रिटिश सैनिक के पुत्र के रूप में पंजीकृत थे। भारत में बड़ी संख्या में ब्रिटिश नागरिक स्वतंत्रता के बाद वापस लौटना चाहते थे, और जो लोग सशस्त्र बलों के माध्यम से महारानी की सेवा करते थे, उनके पास बेहतर अवसर थे। जैक के लिए, जिन्होंने विभाजन के दौरान सबसे भयावह दृश्य देखे थे, इस प्रस्ताव को स्वीकार करना आसान था। वास्तव में, अंबाला में अपनी अगली पोस्टिंग के चार-पांच महीने बाद, उनके कमांडिंग ऑफिसर ने जैक को उनके कागजात सौंप दिए और उन्हें सम्मानपूर्वक सेना से मुक्त कर दिया। उन्हें बताया गया कि उन्हें सेवाकाल के लिए ग्रेच्युटी और तीन महीने का वेतन दिया जाएगा। लेकिन यह झूठ था, जैसा कि उन्हें बैंगलोर पहुँचने पर पता चला, और

उन्हें मुआवजे के रूप में एक भी रुपया नहीं मिला। वे वास्तव में आर्थिक तंगी में थे और दो छोटे बच्चों का होना स्थिति को और भी जटिल बना रहा था। क्रिस को अंबाला से बैंगलोर वापस आते समय मलेरिया हो गया और डॉन भी अभी तक पूरी तरह से ठीक नहीं हुए थे। भविष्य इतना अंधकारमय लग रहा था कि वे इंग्लैंड जाने के अपने विचार पर पुनर्विचार कर रहे थे। कम से कम भारत में उनके परिवार वाले तो थे जो उनकी देखभाल कर सकते थे। उन्होंने कुछ पैसे उधार लिए और जैक ब्रिटिश उच्चायुक्त से मिलने मद्रास गए। उच्चायुक्त एक दयालु सज्जन थे जिन्होंने धैर्यपूर्वक जैक की बात सुनी कि वह सब कुछ छोड़कर क्यों जाना चाहते हैं, और फिर उन्होंने इंग्लैंड के लिए उनकी टिकटें बुक कर दीं और उन्हें पैसे भी उधार दिए। यह उनके लिए बहुत बड़ी मदद थी, लेकिन फिर भी उन्हें पिताजी सहित कई लोगों से और भी बहुत कुछ उधार लेना पड़ा। इस पैसे का इस्तेमाल इंग्लैंड की यात्रा के लिए आवश्यक सामान खरीदने और वहाँ पहुँचने पर कुछ बचत करने के लिए किया गया। जिस जहाज पर उनकी बुकिंग हुई थी, उसके इंजन में खराबी आ गई, और उन्हें एक बहुत छोटे जहाज पर भेजा गया - एक ऐसा जहाज जिसका इस्तेमाल जापान के खिलाफ युद्ध में सैनिकों को ले जाने के लिए किया गया था और निश्चित रूप से इस यात्रा के बाद वह कबाड़खाने में जाने वाला था। उनमें से कोई भी पहले कभी जहाज पर नहीं गया था और वे बुरी तरह बीमार पड़ गए। जहाज दो भयंकर तूफानों की चपेट में आ गया, और दोनों बार वह पलटने के बहुत करीब आ गया। जहाज पर सवार अधिकांश लोग बीमार पड़ गए, लेकिन केवल समुद्री बीमारी के कारण नहीं। जहाज़ में सवार लोगों की आवाज़ें गूंज रही थीं, वह लगातार चरमरा रहा था और कराह रहा था, लेकिन जहाज़ पर केवल जून के दो लड़के ही थे जो इन सब से अप्रभावित लग रहे थे। वे बेहद उत्साहित थे और इस रोमांच को अपने लिए एक बड़ा सौभाग्य मान रहे थे। तीन भयानक हफ़्तों के बाद, वे इंग्लैंड पहुँचे। यह उनके लिए एक बड़ा झटका था! इंग्लैंड धूसर और नीरस था, और लोग बेहद अमित्र थे। किसी को किसी की परवाह नहीं थी। हर जगह बम के गड्ढे थे, रहने के लिए कोई अच्छी जगह नहीं थी, और हर चीज़ राशन पर मिलती थी: यह एक बुरे सपने जैसा था। हर दिन वे सोचते थे कि क्या इंग्लैंड आना उनका सही फैसला था। हालांकि, यह एक ऐसा निर्णय था जिसे बदला नहीं जा सकता था और धीरे-धीरे उन्होंने खुद को यकीन दिला लिया कि हालात सुधरेंगे। अपने दिल में वे जानते थे कि चाहे उन्हें जीवन भर कठिनाइयों का सामना करना पड़े, वे यह सुनिश्चित करेंगे कि उनके बच्चे

सुखमय जीवन जिएं और यही एक विचार था जो उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा। सौभाग्य से, जैक के माता-पिता, जो तब तक इंग्लैंड चले गए थे, ने उन्हें अपने घर में पनाह दी और अर्ल्स कोर्ट स्थित एक पुराने विक्टोरियन घर के तहखाने में एक कमरा दे दिया। यह एक कमरा, स्नानघर और रसोईघर एक साल तक उनका घर रहा। इस प्रकार जून बैंगलोर के आलीशान बंगले से निकलकर एक छोटे से एक बेडरूम वाले घर में रहने लगीं, जिसे वह पंद्रह कदम से भी कम दूरी में पार कर सकती थीं। वह वहीं रहीं और अपने बच्चों की देखभाल करती रहीं, जबकि जैक ने एक स्थानीय कारखाने में नौकरी कर ली। जीवन बेहद कठिन था और वह अक्सर सोचती थीं कि उन्होंने ऐसा क्या किया था कि उन्हें इस तरह की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। धीरे-धीरे सरकार को एहसास हुआ कि भारत से आने वाले प्रवासियों की बढ़ती संख्या को आवास की आवश्यकता है और उसने इसके लिए उपग्रह नगरों का निर्माण शुरू कर दिया। उनमें से एक था बेसिलडन न्यू टाउन और वे 6 बीली वेस्ट में एक छोटे से तीन बेडरूम वाले टेरेस हाउस में रहने चले गए। उसमें फर्श नहीं था और उनके पास नाममात्र का फर्नीचर भी नहीं था, लेकिन लंदन के उस चूहे के बिल के बाद वह स्वर्ग जैसा था और तब तक जून की तीसरी संतान, एक बेटी, जैकी का जन्म हो चुका था। उन्हें जल्द ही एहसास हुआ कि जिस इलाके में वे रह रहे थे वह एक खतरनाक इलाका बनता जा रहा था, और उन्होंने फिर से कहीं और जाने का फैसला किया।
इसी समय के आसपास, पिताजी ने अपनी पहली किताब 'नाइन मैन ईटर्स एंड वन रोग' पूरी कर ली थी और उन्होंने पांडुलिपि प्रकाशकों, जॉर्ज एलन एंड अनविन को भेजने के लिए तैयार कर दी थी। प्रकाशक किताब की विषयवस्तु से बेहद खुश हुए और यह उनकी अब तक की सबसे अधिक कमाई करने वाली किताबों में से एक बन गई। पिताजी ने अपनी पहली रॉयल्टी का एक बड़ा हिस्सा जून को दे दिया और उन्होंने उस रकम को जमा करके एसेक्स में एक तीन बेडरूम का बंगला खरीद लिया। जून वहाँ तीन साल रहीं, लेकिन तब तक जैक और जून दोनों ही इंग्लैंड के मौसम और लोगों से ऊब चुके थे। ऑस्ट्रेलिया कई लोगों के लिए "स्वर्गीय भूमि" था और हर कोई वहाँ जाने की बात करता था। जैक और जून ने दुनिया के दूसरे छोर पर जाकर बसने के लिए आवेदन किया, हालाँकि वे इस बारे में गंभीर नहीं थे। इसके अलावा, उस समय ऑस्ट्रेलिया में "श्वेत ऑस्ट्रेलिया" नीति लागू थी और वे प्रवेश की अनुमति देने के मामले में बहुत सख्त थे। यह श्वेत-केंद्रित नस्लवादी नीतियों की एक श्रृंखला थी जो केवल यूरोपीय देशों से

1980 के दशक के मध्य तक उन्होंने आना बिल्कुल बंद कर दिया था। मुझे लगता है कि उनकी सबसे बड़ी निराशा यह थी कि कोई भी अतीत को संजोकर या उसका सम्मान नहीं करता था, और हमारे पैतृक घर की बिक्री उनके लिए आखिरी झटका साबित हुई। उन्हें एहसास हो गया था कि हमारे माता-पिता के देहांत के बाद उनके पास आगे देखने के लिए कुछ नहीं बचा था। उनके बच्चों को भारत की कोई याद नहीं थी, क्योंकि उनका पालन-पोषण इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया में हुआ था और जिस देश में वह पली-बढ़ी थीं, उससे उनका कोई संबंध नहीं था। उन्हें अभी भी जंगल बहुत पसंद थे, और वह हमेशा मुझसे कहती थीं कि मैं उन्हें कुछ दिनों के लिए यात्राओं पर साथ ले जाऊं, ताकि वह मुझे खुश और अपने रंग में देख सकें। स्वाभाविक रूप से, जैक को भी साथ आना पड़ता था, और एक यात्रा ने मुझे यह एहसास दिलाया कि वह इस तरह की चीजों के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं थे। 1970 के दशक के अंत में, वे घूमने आए थे और अपने साथ एक फिल्म कैमरा लाए थे, जिससे मैं बहुत उत्साहित हो गई थी। हम नीलगिरी में गाड़ी चला रहे थे और तस्वीरें लेने के लिए रुके ही थे कि हाथियों का एक झुंड हमारा पीछा करने लगा। वैसे तो कोई खास खतरा नहीं था और मैं हंस रहा था, लेकिन अचानक गाड़ी रुक गई और पर्यटकों के लिए हालात थोड़े डरावने हो गए। मेरे पास अब बंदूक नहीं थी, और हालांकि मुझे अंदर से पता था कि हाथी हमला नहीं करेगा, फिर भी मैं थोड़ा चिंतित था। मेरे साथी तो डर के मारे चीख रहे थे, यहां तक कि जून भी। जैसा कि उम्मीद थी, हाथी आखिरी मिनट में रास्ता बदल गया और मैंने कैमरा लिया और झुंड की बेहतर तस्वीरें लेने के लिए जंगल में चला गया। मैं करीब दस मिनट तक वहीं रहा और जब लौटा तो मैंने जून को एक जेरी कैन के साथ जैक का पिछवाड़ा धोते हुए देखा। हालांकि मैंने इसे कैमरे में कैद कर लिया, लेकिन मैंने ज्यादा कुछ नहीं कहा। अगले कुछ मिनटों तक गाड़ी में अजीब सी खामोशी छाई रही, फिर हमारे ड्राइवर ने टूटी-फूटी अंग्रेजी में जैक को दिलासा दिया।
“चिंता मत कीजिए सर! यह बिल्कुल स्वाभाविक है, और हाथियों को करीब से देखने पर बहुत से लोगों की ऐसी ही प्रतिक्रिया होती है।”
“अरे सच में?” जैक ने थोड़ा बेहतर महसूस करते हुए कहा, “क्या आपके साथ पहले भी ऐसे यात्रियों के साथ ऐसा हुआ है जिन्हें इस तरह का अनुभव हुआ हो?”
“ओह नहीं, महोदय, मैं अन्य यात्रियों के बारे में बात नहीं कर रहा था। मैं अपने बारे में बात कर रहा था!”

मैंने जून को कितना भी तंग किया और उसे कितना भी दुख पहुँचाया हो, फिर भी वह मुझसे प्यार करती है और सालों से मेरा साथ देती आ रही है। वह एक बेहद स्नेहशील बहन रही है, और मैंने कभी ऐसा कुछ अच्छा नहीं किया जिसके लिए मैं उसके इस स्नेह की हकदार होती। न सिर्फ हमारे बचपन के शुरुआती दिनों में, जब शायद सभी भाई-बहन एक-दूसरे को दुख पहुँचाते थे, बल्कि जब मैं इतनी बड़ी हो गई कि बातें समझ सकूँ, तब भी मैंने बेहद स्वार्थी होना चुना और सिर्फ वही किया जो मुझे भाता था। इन सबके बावजूद, उसने मुझे ऑस्ट्रेलिया जाने के लिए मना लिया और मेरे किराए का भुगतान करने, मेरी मदद करने और मेरा ख्याल रखने का वादा किया, लेकिन तब तक मैं अपनी आदतों में पक्की हो चुकी थी और जिस जीवनशैली की मुझे आदत हो गई थी, उसे छोड़ने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी।

अध्याय तीन

मेरे दोस्तों
एयर मार्शल मैल्कम “मैली” वोलन, जो बांग्लादेश को आज़ाद कराने के 1971 के युद्ध में अपनी भूमिका के लिए सबसे ज़्यादा जाने जाते हैं, मुझसे छह साल बड़े थे। वे स्कूल में मेरे सीनियर थे और मैं हमेशा उनका आदर करता था, जबकि उनके छोटे भाई विलियम या “विली” मेरी उम्र के करीब थे, ज़्यादा हंसमुख और सहज स्वभाव के थे। मैली सेना के मुक्केबाज़ी चैंपियन और एचएएल के चेयरमैन होने के साथ-साथ कई अन्य महत्वपूर्ण पदों पर भी रहे। हालांकि, सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाली बात यह थी कि वे एक उच्च सम्मानित लड़ाकू पायलट थे। उन्हें वीर चक्र और परम विशिष्ट सेवा पदक के अलावा स्वॉर्ड ऑफ ऑनर, फ्लाइंग ट्रॉफी और राष्ट्रपति पट्टिका से सम्मानित किया गया था। वे कभी भी अपनी बड़ाई करने वाले नहीं थे, लेकिन हम उनसे पाकिस्तान के खिलाफ लड़े गए युद्धों की कहानियां सुनने के लिए बहुत उत्सुक रहते थे। जब हम कॉर्नवाल रोड पर रहते थे, तब वोलन परिवार हमारा पड़ोसी भी था और इसी दौरान विली और मैं करीब आ गए, क्योंकि वे अपने घर पर मुक्केबाज़ी शिविर आयोजित करते थे। उनके पास एक बहुत बड़ा गैराज था जिसे एक तरह के बॉक्सिंग हॉल में बदल दिया गया था, जिसमें एक रिंग भी थी। हालाँकि मैं छोटा था, फिर भी मुझे मैली के कई दोस्तों के साथ मुक्केबाजी करने का मौका मिला। क्योंकि मैंने इसके लिए स्वेच्छा से भाग लिया था, इसलिए रिंग में उतरते ही मुझे कोई कसर नहीं छोड़ी गई। मुझे इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि इससे मुझे मजबूत बनने और आत्मरक्षा करना सीखने में मदद मिली, साथ ही जब मैं जंगलों में नहीं जा पाता था, तब अपनी ऊर्जा को किसी शारीरिक गतिविधि में लगाने का भी मौका मिला।
विली मुझसे उम्र में बड़ा था, लेकिन हमारी अच्छी बनती थी और हमने जंगलों में कई यादगार कारनामे किए। उसकी पत्नी विंसम को यह बात पसंद नहीं थी कि वह सप्ताहांत में उसके साथ समय बिताने के बजाय मेरे साथ शिकार पर जाना पसंद करता था। आग में घी डालने का काम इस बात ने किया कि हम ऐसे जानवरों का शिकार कर रहे थे जिन्हें वह पूरी तरह से अस्वीकार्य मानती थी। विली ऐसा व्यक्ति था जिस पर मुसीबत में हमेशा भरोसा किया जा सकता था। मुझे एक घटना याद है जब हम रामनगरम के पास शिकार पर गए थे और उस दिन जल्दी ही अंधेरा हो

गया था। मैंने अपनी राइफल से तीन बार गोली चलाई थी, तीनों बार निशाना चूक गया था, और मुझे पता था कि आज का दिन भी कुछ ऐसा ही होने वाला है। जल्द ही, आसमान में काले बादल छा गए और हम जल्दी वापस लौटने लगे क्योंकि हम बारिश में भीगना नहीं चाहते थे। अचानक, बिना किसी चेतावनी के, बिजली कड़की और लगभग तुरंत ही मैंने एक सुस्त भालू को हमारी तरफ दौड़ते हुए देखा। ढलते सूरज की रोशनी में वह हमें देख नहीं पाया होगा, लेकिन वह भागने की कोशिश कर रहा था और सीधे हमारी तरफ आ रहा था। मैंने गोली चलाई लेकिन भालू को बिल्कुल भी नहीं लगी। औसत का नियम अपना असर दिखा रहा था और मुझे पता था कि मेरी किस्मत मेरा साथ छोड़ने वाली है। मेरी दूसरी गोली भालू को लगी, लेकिन उसे रोकने के बजाय, ऐसा लगा जैसे उसे और ज़्यादा ताकत मिल गई हो। वह गुस्से में दहाड़ रहा था, घबराया हुआ था और निशाना ढूंढ रहा था। बहुत देर हो चुकी थी, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास और कारतूस नहीं थे; चैंबर खाली था, और मेरी जेब में भी नहीं थे! मेरे पास कुल छह कारतूस हो सकते थे, लेकिन मेरा हमेशा से मानना था कि पाँच कारतूस रखने से किस्मत अच्छी रहती है, और ऐसा लग रहा था कि मेरा यह सिद्धांत अब गलत साबित होने वाला है। यह सब कुछ ही सेकंड में हुआ और भालू लगभग कुछ ही गज दूर था, अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर दर्द और गुस्से से दहाड़ रहा था। मैं विली के बारे में सब कुछ भूल गया था, तभी मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। बिल्कुल शांत, विली, जिसके पास खुद को बचाने के लिए कुछ भी नहीं था, ने मेरे बंदूक के थैले से एक कारतूस निकालकर मुझे देते हुए कहा, "ये लो।" जब मैंने अपनी आखिरी गोली चलाई, तो भालू लगभग मेरे बिल्कुल करीब था, लेकिन उसी समय वह चारों पैरों पर गिर पड़ा और लुढ़क गया, मेरे खड़े होने की जगह से कुछ ही इंच की दूरी पर। मैं विली की बहादुरी और धैर्य देखकर दंग रह गया। कोई और होता तो वहां से भाग जाता, लेकिन वह मेरे बगल में खड़ा रहा और मुझे निश्चित रूप से हमले या उससे भी बदतर स्थिति से बचा लिया!

□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□

□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□, □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□, □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□, □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□ □□□ □□, □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□, □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□, □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□, □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□, □□□□ □□ □□ □□□-□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □ □□□ □□, □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□, □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□

बड़ा सा पत्थर उठाया और बेतहाशा फेंक दिया। हैरानी की बात है कि उसका निशाना एकदम सटीक लगा और वह जानवर बेहोश हो गया! यह बहुत ही अजीब था, लेकिन हमारी आँखों के सामने हुआ। उसके बाद हम हमेशा उसे चिढ़ाते थे कि अगर उसकी 'बंदूक' काम नहीं करती, तो उसके पास काम निपटाने के दूसरे तरीके तो हैं ही! मानो या न मानो, विली और एक खरगोश के साथ एक और घटना हुई थी! एक बार विली, मेरवान और मैं नीलगिरी में घाट मार्ग पर गाड़ी चला रहे थे और थोड़ी देर के लिए रुके। जैसे ही मैंने गाड़ी स्टार्ट की और हेडलाइट्स जलाईं, मुझे सड़क के ठीक बीच में एक खरगोश दिखाई दिया। वह दूसरी तरफ मुँह करके खड़ा था और उसे हमारी मौजूदगी का एहसास नहीं हुआ था। अचानक, आसमान से एक सींगदार उल्लू झपट्टा मारकर नीचे आया और उसे बेहोश कर दिया। मुझे लगा कि यह एक अच्छी किस्मत थी, क्योंकि इसका मतलब था कि बिना एक भी गोली खर्च किए हमें अगले भोजन के लिए मांस मिल जाएगा! तो, विली कार से बाहर निकला, ताली बजाई, और पक्षी चुपचाप अंधेरे में गायब हो गया। उसने उस जीव के बेजान शरीर को उठाया और कार के बूट में रख दिया। वह जो कुछ हुआ था उससे बहुत उत्साहित था और उसने हमें अपने गंतव्य पर पहुँचने पर बनाने के लिए कई व्यंजनों के बारे में बताया था। जब हम अपने गंतव्य पर पहुँचे, तो उसने बूट खोला, और उसे आश्चर्य हुआ कि खरगोश पूरी तरह से जीवित बाहर कूद गया और अंधेरे में भाग गया!
एक बार हम विली, मेरवान और मेरे पिताजी के साथ मेरवान की कार में होगेनिकल जा रहे थे, तभी रेडिएटर लीक हो गया। हम आस-पास किसी भी गैरेज से मीलों दूर थे और बुरी तरह फंस गए थे। तभी पिताजी को एक विचार आया कि हम इसे अंडे से ठीक कर सकते हैं! मैंने इसके बारे में पहले कभी नहीं सुना था, लेकिन चूंकि हमारे पास कोई बेहतर उपाय नहीं था, इसलिए हमने इसे आजमाने का फैसला किया। सिद्धांत यह है कि अगर आप एक कच्चा अंडा (केवल सफेदी) रेडिएटर में डालते हैं, तो वह अंदर पक जाएगा और लीक को बंद कर देगा। हमें आश्चर्य हुआ कि यह वास्तव में काम कर गया, और हम कुछ दूर तक जाने में कामयाब भी हो गए, लेकिन फिर वही समस्या दोबारा आ गई। हमारे पास पीने के पानी का उपयोग करने और किसी तरह होगेनिकल पहुंचने की उम्मीद करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, जहां हम रेडिएटर ठीक करवा सकें। फिर पानी खत्म हो गया और हम सचमुच फंस गए। फिर से, पिताजी को एक विचार आया। उन्होंने सुझाव दिया कि पानी का सबसे निकटतम स्रोत हमारे शरीर में है, और इसलिए इसका उपयोग करना ही उचित था। रेडिएटर

में पेशाब करने के उसके सुझाव पर सभी को बहुत हंसी आई, लेकिन हमने महसूस किया कि परिस्थितियों को देखते हुए यह एक तर्कसंगत सुझाव था। इसलिए, पिताजी, मेरवान और मैंने पेशाब किया, लेकिन जब विली की बारी आई, तो उसने मना कर दिया।
"तुम बदमाशो, किसी भी हालत में तुम मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर पाओगे," उसने घोषणा की और चला गया।
हम उसकी परेशानी पर हँसे और उसके पीछे चिल्लाकर बोले, "अगर तुम पेशाब नहीं करोगे, तो किसी और से अपना हिस्सा पूरा करवाने की जिम्मेदारी तुम्हारी है।"
विली ने जवाब दिया कि वह दूसरा विकल्प चुनेगा। कुछ ही देर में, एक बैलगाड़ी हमारे पास से गुजरी, और उसमें बैठे लोगों ने अपने जीवन का सबसे विचित्र अनुरोध सुना।
“महोदय, क्या आप पेशाब कर सकते हैं!” …विली वोलन की बोलचाल की भाषा में। यह मोरारजी देसाई द्वारा एक विशेष अवधारणा को लोकप्रिय बनाने से कई साल पहले की बात है, इसलिए बेचारे विली को बहुत ही अभद्र भाषा का सामना करना पड़ा, जबकि हम सब वहाँ बैठकर खूब हँसे। हालाँकि हम पड़ोसी होने के नाते बचपन से एक-दूसरे को जानते थे, लेकिन हम दोनों बिन्नी की दुकान में सहकर्मी भी थे। वह मुझसे कहीं अधिक बुद्धिमान था, लेकिन एक क्लर्क की नौकरी में फंसा हुआ था जो उसकी बौद्धिक क्षमताओं के साथ न्याय नहीं करती थी। उसे हेब्बल स्थित कपड़ा कारखाने में प्रबंधक के पद पर पदोन्नति मिली, जो उसकी योग्यता से कहीं बाद में हुई। प्रवास के बाद, वह हर दो साल में बैंगलोर आता था और हम जंगल घूमने जाते थे, और जब वापस जाने का समय होता था तो वह बहुत उदास हो जाता था। विली उन लोगों में से एक था जो अनिच्छा से ऑस्ट्रेलिया में आकर बसा, क्योंकि उसका दिल यहीं बसता था।
सॉनी लियोनार्ड एक शरारती लड़का था, फिर भी मेरा बहुत अच्छा दोस्त था और पिताजी ने अपनी किताबों में उसके बारे में लिखा है। वह बहुत अनाड़ी था, लेकिन साथ ही बहुत प्यारा भी था, इसलिए चाहे वह कितनी भी मुसीबतें क्यों न खड़ी कर ले, उसे अक्सर माफ़ कर दिया जाता था क्योंकि वह जानबूझकर नहीं करता था। उसकी माँ और वह प्रॉस्पेक्ट हाउस में हमारे किराएदार थे और मैं उसे अपनी कई यात्राओं पर साथ ले जाता था, हालाँकि बहुत सावधानी बरतता था। वह ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था और ट्रक ड्राइवर के रूप में अपना जीवन यापन

समय बिताया, और वापस भागा। और हाँ, मुझे ये सवाल सुनाई दिए, "क्या तुम्हें नीलगिरी की गंध आ रही है?" जब एक ही तरह के तीन-चार सवाल पूछे गए, तो मेरे पिताजी ने वही सवाल पूछ लिया जो सबके मन में था। "अरे, इस घर में आखिरी बार यूकेलिप्टस की खुशबू कब आई थी..." अगर प्रॉस्पेक्ट हाउस में अभिनय के लिए कभी कोई पुरस्कार होता, तो उस दिन के उनके प्रदर्शन के लिए मेरे पिताजी इसके हकदार थे।
मुझे बताया गया कि वह बीच वाक्य में ही रुक गया और इशारा करते हुए हांफते हुए बोला, "हे भगवान, यह तो छोटा सन्नी है!" इशारा मिलते ही, मैंने खिड़कियों से झांकते हुए लोगों को देखा और अपनी सबसे तेज़ कराह के साथ बात को खत्म कर दिया। इसका मनचाहा परिणाम निकला, क्योंकि चारों ओर अफरा-तफरी मच गई और एक पल के लिए तो थंगावेलु भी मानो नाटक भूल गया था, क्योंकि मैं उसे बाकी सब लोगों से भी ज़्यादा ज़ोर से दया की भीख मांगते हुए सुन सकता था!
मुझे याद है, मैं अपने पिताजी और सन्नी के साथ गुलहट्टी गया था, हमारी एकदम नई सेकंड-हैंड स्टडबेकर कार में। पिताजी गाड़ी चला रहे थे और मैं सामान रखने वाली गाड़ी के ऊपर टॉर्च लेकर बैठा था। सन्नी और मैं बारी-बारी से कार की छत पर बैठकर शिकार देखने में एक-दूसरे से आगे निकलने की कोशिश कर रहे थे। जब वह ऊपर होता, तो मैं अपनी राइफल पकड़े रहता, लेकिन जब हमने जगह बदली, तो उसे सख्त हिदायत दी गई कि वह राइफल को हाथ न लगाए, क्योंकि मुझे पता था कि वह चीजों से छेड़छाड़ करता रहता है और उसके पीछे हमेशा मुसीबत लगी रहती है। अचानक कार एक छोटे से गड्ढे से गुजरी और अगले ही पल एक धमाका हुआ। पिताजी ने ब्रेक लगाया और मैं लगभग कार से गिर ही गया। मैं सदमे और गुस्से में खुद को संभाल पाया। सन्नी उसी जानी-पहचानी दोषी नज़र से कार से बाहर कूदा। मुझे पता था कि उसने ज़रूर कोई गोलमाल (शरारत) की है। तभी मैंने छत में एक बड़ा सा खून से सना छेद देखा, जो मेरे नितंबों से कुछ ही इंच दूर था! एक काउबॉय की तरह उसने न केवल राइफल लोड की, बल्कि उसे कार की छत की ओर तान दिया और जब कार गड्ढे से गुजरी तो उसकी उंगली ट्रिगर पर थी। शायद अन्य घटनाएं इतनी जानलेवा नहीं थीं, लेकिन सन्नी के साथ रहते हुए कभी भी ज्यादा सावधानी बरतनी जरूरी थी। मैं अक्सर अपनी यात्राओं पर सन्नी को अपने साथ ले जाता था, अपनी समझ के विरुद्ध जाकर, और हर बार अपने इस फैसले पर पछताता था।

हमारे समूह में एक अनोखी शख्सियत थे फादर फ्रीमैन, जो मैसूर के फिलोमेना कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल थे। कैथोलिक पादरी और शिक्षा बोर्ड के सदस्य, उनका शिकार करने का शौक तब तक खत्म हो चुका था जब हम दोस्त बने। ईसाई धर्म के प्रति दृढ़ आस्था रखने के बावजूद, शिकार करना हमेशा से उनकी कमजोरी रही थी और हम उन्हें इस बात पर खूब चिढ़ाते थे कि उन्होंने अपनी शिक्षा पद्धति के कुछ हिस्सों को उनके शौक के हिसाब से बदल दिया था। जब वे हमारे समूह में शामिल हुए तब उनकी उम्र 81 वर्ष थी और वे हमेशा युवा दिखते थे। हमारी यात्राओं में उन्होंने अपना पूरा योगदान दिया, कभी भी अपनी उम्र के कारण किसी विशेष रियायत की मांग नहीं की। वे सेंट मार्था अस्पताल के रिटायरमेंट क्वार्टर में रहते थे और मेरी मुलाकात उनसे मेरे दोस्त जीन एडवर्ड्स के माध्यम से हुई थी। वे हम युवाओं के साथ हर पल का आनंद लेने के लिए दृढ़ थे, बुढ़ापे की बाधाओं की उन्हें कोई परवाह नहीं थी! वह एक कुशल शिकारी के रूप में जाने जाते थे, जिन्होंने सोलह बाघों का शिकार किया था। हालांकि वे दिन अब बीत चुके थे, लेकिन जंगलों के प्रति उनका प्रेम आज भी उतना ही प्रबल था। हमारे इस विविध समूह में उन्हें अपने जैसे ही साथी मिले, जिनका आनंद लेने का तरीका शहर से दूर था। वे मृदुभाषी थे और हमसे, जो उनसे लगभग तीस साल छोटे थे, कहीं अधिक उत्साही थे। जब भी हम शिकार पर जाते, वे हमेशा बंदूक उठाने की ज़िद करते थे। हालांकि हमारे समूह में शामिल होने के बाद उन्होंने ज़्यादा शिकार नहीं किया, लेकिन अपनी मृत्यु तक वे दृढ़ता के प्रतीक बने रहे। जीवन के प्रति उनके विचार हमसे थोड़े अलग थे और वे हमारे समूह में एक नया दृष्टिकोण लेकर आए, जिसकी हम हमेशा सराहना करते थे।
फिर थे "टाइनी" सेडन, जो 6 फीट 7 इंच लंबे होने के बावजूद दिखने में बिल्कुल भी छोटे नहीं थे। लेकिन किसी तरह यह नाम पड़ गया और हालांकि वे मेरे पिताजी से थोड़े ही छोटे थे, उम्र बढ़ने के साथ-साथ वे हमारे ग्रुप के साथ आना पसंद करते थे। वे एक शानदार मछुआरे, महासीर मछली पकड़ने में माहिर और एक शौकिया शिकारी थे। मैं उनके शिकार के दौरों पर कभी उनके साथ नहीं गया, क्योंकि वे जानवरों को अपनी कार से ही गोली मारते थे, जो मुझे बिलकुल पसंद नहीं था। उनके पास एक खूबसूरत चांदी की A1 फोर्ड कार थी, और जो भी उनके साथ जाता था, उसे शिकार करते समय स्पॉटलाइट जलाने की ज़िम्मेदारी उठानी पड़ती थी। मैंने उनके लिए कई बार टॉर्च पकड़ी है, और छोटी उम्र में भी, उनके शिकार करने के तरीके के लिए मुझे उनसे नफरत ही होती थी। बाकी सभी

मामलों में वे एक बेहतरीन इंसान थे। वे कभी शराब नहीं पीते थे, न ही सिगरेट पीते थे, लेकिन हमेशा हंसमुख और मिलनसार रहते थे, खासकर उनके कद को लेकर हमारे द्वारा किए जाने वाले कई मज़ाकों को देखते हुए। टाइनी को काम के सिलसिले में अक्सर शिमोगा और भद्रावती जाना पड़ता था और स्वाभाविक रूप से वही जगहें हमारी पिकनिक की जगह बन गईं। उन दिनों सड़कें जंगली जानवरों से भरी रहती थीं, और हम हर सुबह और शाम कार से बाहर जाते और खाने के लिए जंगली मुर्गे या चिड़िया का शिकार करते थे। बेशक, अगर कभी हमें सांभर जैसा कोई जानवर मिल जाता, तो हम अपना हिस्सा ले लेते और बाकी बचा हुआ हिस्सा वन विश्राम गृह के रसोइए को दे देते, जो उसे पास के गाँव के लोगों को बेच देता था।
टिनी के एक अच्छे दोस्त थे "बाबा" कारियाप्पा, जो सेना में थे। उन्हें लगता था कि उनका पेशा उन्हें स्वाभाविक रूप से एक आउटडोर व्यक्ति, शिकारी और मछुआरा बनने के योग्य बनाता है, लेकिन सच्चाई इससे कोसों दूर थी। वे जंगली सूअर और बत्तख के शिकार के लिए साथ आते थे, लेकिन कभी सफल नहीं हुए। वे मछली पकड़ने के लिए हमारे साथ संगम जाते थे, लेकिन हमेशा खाली हाथ लौटते थे। खाने में उनका योगदान न होने के बावजूद, जब शिकार को बाँटने की बात आती थी तो उनका उत्साह ज़रा भी कम नहीं होता था। ज़्यादातर मामलों में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, खासकर बत्तख के शिकार में, जहाँ नियम था कि शिकार को सभी प्रतिभागियों में बराबर बाँटा जाए, चाहे किसी ने कितने भी पक्षी मारे हों। अगर कोई सबसे ज़्यादा शिकार करता था, तो उसे घर ले जाने के लिए सिर्फ़ गर्व ही मिलता था। बाबा के मामले में, कभी-कभी उन्हें बराबर हिस्सा पाते देखना थोड़ा मुश्किल होता था, जबकि उन्होंने कुछ भी योगदान नहीं दिया था! हालाँकि, उन्हें अच्छा खाना बहुत पसंद था और जिस प्यार से वे बताते थे कि सूअर या मुर्गे को कैसे पकाया जाएगा, उससे हम अपनी थोड़ी-बहुत झुंझलाहट भूल जाते थे।

□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□

□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□-□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□, □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□

सबसे महत्वपूर्ण यात्रा याद है जिसने उन्हें मेरे साथ आने के लिए प्रेरित किया। मैंने अपने दोस्तों को बताया था कि मैं रामनगरम में पैंथर का शिकार करने जा रहा हूँ, लेकिन किसी न किसी काम में सब व्यस्त हो गए। जीन, जो पहले कभी ऐसे किसी कार्यक्रम में नहीं गया था, उसने भी आने की पेशकश की। बैंगलोर से निकलने में देरी हो गई और हम अपनी मंज़िल पर मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा देर से पहुँचे। जैसे ही हम पहाड़ी की तलहटी के पास पहुँचे, हमने देखा कि एक पैंथर पहले से ही बाहर था और डूबते सूरज की हल्की गर्मी का आनंद ले रहा था। मैंने जीन से कहा कि वह एक चट्टानी जगह पर चला जाए जहाँ से उसे पैंथर साफ़ दिखाई दे, जबकि मैं पैंथर का पीछा करने के अजीबोगरीब प्रयास में पहाड़ी पर चढ़ने लगा। मुझे बीच-बीच में रुककर जीन से रास्ता पूछना पड़ता था, और अपने वादे के मुताबिक, उसने कभी भी जानवर से अपनी नज़र नहीं हटाई और हमेशा मुझे बताता रहा कि मुझे आगे किस दिशा में जाना है। एक पल मुझे एहसास हुआ कि मैं शायद काफी करीब पहुँच गया हूँ, इसलिए मैं घुटनों के बल रेंगते हुए एक छोटे से खुले मैदान में पहुँचा, साँस लेने के लिए रुका, निशाना साधा और फिर पैंथर पर गोली चला दी। पैंथर को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उसका पीछा उसी तरह किया जा रहा है जैसे वह अपने शिकार का करता है। वह वहीं गिरकर मर गया। मुझे खुद पर बहुत गर्व हुआ, क्योंकि मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया था, लेकिन जीन, जो यह सब अपनी आँखों से देख रहा था, बहुत रोमांचित था। वह बार-बार हमारे सभी दोस्तों से दोहरा रहा था, "यह किसी फिल्म को देखने जैसा था!"
फेफड़ों के कैंसर से उनकी मृत्यु हो गई और उनकी मृत्यु ने मुझे स्तब्ध कर दिया। उन्होंने रेडियोथेरेपी शुरू की और अपने दूसरे सत्र से पहले उन्होंने मुझसे कहा, "डॉन, मुझे इस बारे में कुछ बुरा आभास हो रहा है," और फिर वे कभी वापस नहीं आए।
मैं और मेरे दोस्त वुड स्ट्रीट के सामने क्राउन कैफे में अक्सर मिलते थे, जहाँ हम घंटों बिताते थे। सालों बीतने के साथ-साथ मेरे दोस्तों का दायरा बदलता रहा और कुछ दोस्त आते-जाते रहते थे, लेकिन क्राउन कैफे में दोस्तों के साथ बिताई गई शामें उस समय की मेरी बेफिक्री भरी जिंदगी की मिसाल थीं। हम कबाब और बिरयानी खाते थे और अपनी कारों में या कैफे में ही बैठकर बीयर पीते थे। उस समय हम दोस्तों की पसंदीदा ड्रिंक व्हिस्की थी, लेकिन हमें उसे विदेश से मंगवाना पड़ता था क्योंकि वह भारत में नहीं बनती थी। मैं

ज्यादा शराब नहीं पीता था, लेकिन सिगरेट खूब पीता था और चारमीनार मेरी पसंदीदा सिगरेट थी। उन सिगरेटों में फिल्टर नहीं होते थे और यह चमत्कार ही है कि हममें से किसी को कोई गंभीर बीमारी नहीं हुई। कभी-कभी हम क्राउन कैफे से बैंडस्टैंड तक पैदल जाते थे, जहाँ हम ज्यादातर एंग्लो-इंडियन संगीतकारों का संगीत सुनते थे और लाइव संगीत के लिए 3 एसेस हमारी पसंदीदा जगह थी।
हालांकि मुझे शिकार के अपने दौरों जितना आनंद इसमें नहीं आता था, फिर भी मुझे अपने दोस्तों, चाहे वो पुरुष हों या महिलाएँ, के साथ समय बिताना अच्छा लगता था। हम कभी-कभी खूब शोर-शराबा करते थे, लेकिन कोई हमें परेशान नहीं करता था, क्योंकि बैंगलोर एक ऐसी जगह थी जहाँ हर कोई बहुत सहज था और जानता था कि हमारा इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का नहीं है। हालाँकि मैंने कभी बिलियर्ड्स नहीं खेला, फिर भी मैं अक्सर एमजी रोड पर टॉम के बिलियर्ड्स पार्लर जाया करता था। कॉलेज और स्कूल के बहुत से लड़के वहाँ आते थे, और मुझे धीरे-धीरे एहसास हुआ कि मैं उस जगह जाने के लिए बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। मेरे दोस्तों की एक और पसंदीदा जगह मेट्रो थी, जो ब्रिगेड रोड-एमजी रोड जंक्शन पर उस जगह पर थी जहाँ आज कावेरी एम्पोरियम है। इसे एक रेस्तरां और बार होना चाहिए था, लेकिन असल में यह एक वेश्यालय था जहाँ छावनी क्षेत्र के बहुत से पुरुष आते थे।
सिडनी डी'सिल्वा मेरे स्कूल के अधिकांश समय में एक तरह से मेरा सबसे अच्छा दोस्त था। वह एक हंसमुख और मिलनसार व्यक्ति था। उसकी कोई बुरी आदतें या बुरी आदतें नहीं थीं, लेकिन वह हमेशा मेरे साथ मेरे कई कारनामों में शामिल होने के लिए तैयार रहता था। वह सेंट मार्क्स रोड पर मेस्क्वाइट एंड कंपनी नामक एक कार्यालय के सामने एक छोटे से घर में रहता था, जो आज के कोशी रेस्तरां के बहुत करीब था। चूंकि वह प्रॉस्पेक्ट हाउस के पास रहता था, इसलिए हम हर दिन एक-दूसरे के घर पर समय बिताते थे। मुझे याद है कि जब हम दस या ग्यारह साल के थे, तब एक-दूसरे के घर पैदल जाना बहुत आम बात थी और यह नौ बजे से पहले होना जरूरी था। बैंगलोर भारत का पहला शहर था जहाँ बिजली पहुँची थी और युद्ध के दौरान, रात ठीक 9:00 बजे बत्तियाँ बंद कर दी जाती थीं, और यह दिनचर्या इतनी नियमित थी कि लोग इस पर अपनी घड़ी या टाइमर सेट कर सकते थे। हमारे माता-पिता हम पर भरोसा करते थे और उससे भी ज्यादा, उन दिनों में लोगों पर भरोसा करते थे। घर लौटते समय रास्ते में दिखने वाले

अद्भुत नज़ारे मेरी यादों में इतने गहरे बसे हुए हैं कि जब भी मैं उनके बारे में सोचता हूँ, मेरे चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। मैं धुंधली रोशनी वाले, लेकिन बेहद खुशनुमा घरों के पास से गुज़रता था, जहाँ परिवार रेडियो के आसपास इकट्ठा होकर बीबीसी को अपने एक्को रेडियो पर या ग्रामोफोन पर रिकॉर्ड सुनते थे। घर बड़े-बड़े बगीचों से घिरे होते थे, जिनकी परछाइयाँ मनमोहक लगती थीं, और शांत सड़कों पर हमारे कदमों की गूँज सुनाई देती थी, जब हम जल्दी-जल्दी चलते थे... कोई नहीं जानता था कि पेड़ों के नीचे कौन से भूत छिपे होंगे, जो छोटे लड़कों का इंतज़ार कर रहे होंगे!
सिडनी के घर के बगल में एक लड़की का घर था जिसने सिडनी का ध्यान खींचा और सच कहूँ तो मैं भी उस पर मोहित हो गया था। वह एक अंग्रेज़ लड़की थी, बेहद सुडौल, और उसकी छोटी फ्रॉक और लंबी टांगें हमें कल्पनाओं में खो जाने का मौका देती थीं। वह अपनी दादी के साथ रहती थी जिनकी देखने और सुनने की शक्ति अक्सर संदिग्ध रहती थी। इसलिए, वह अपने प्रेमी को चुपके से अंदर ले आती थी, और हम हमेशा उत्सुक रहते थे कि उसके कमरे में आने के बाद क्या होता है। यौन संबंध और स्त्री शरीर के बारे में हमारा ज्ञान कुछ पुरानी फटी हुई पत्रिकाओं या उन बड़े लड़कों तक ही सीमित था जिन्होंने वास्तव में ऐसा होते हुए देखकर अपनी श्रेष्ठता साबित की थी। उन दिनों ज्यादातर घरों में ऊंचे कमरे और खुलने वाली रोशनदान होते थे। यह समझने के लिए ज्यादा कल्पना या विचार की जरूरत नहीं थी कि यही वह जगह थी जिसका इस्तेमाल हम वयस्क दुनिया में प्रवेश करने के लिए कर सकते थे। लेकिन यह आसान नहीं था। हमें अपनी योजना को तब अंजाम देना था जब वह उस लड़के को बुलाती थी, और जब सिडनी और मैं दोनों उसके घर पर होते थे। इसका मतलब था कि हमें दीवार फांदनी थी, घर के बगल वाले विशाल पेड़ पर चढ़ना था, एक शाखा से नीचे उतरकर वर्जित काम करना था, और साथ ही यह सुनिश्चित करना था कि हम पकड़े न जाएँ, न केवल घर के लोगों द्वारा बल्कि आस-पड़ोस के घरों के लोगों द्वारा भी। आज के विपरीत, उन दिनों अधिकांश महिलाएँ गृहिणी होती थीं, और इस बात की पूरी संभावना थी कि कोई हमें देख लेगा। और अगर कोई दो चौदह वर्षीय लड़कों को किसी ऐसे घर की छत पर देख लेता, जिससे उनका कोई वास्ता नहीं था, तो आमतौर पर इसका मतलब होता था कि वे कुछ गड़बड़ करने वाले हैं। इसलिए, कई बार "इतने करीब आकर भी इतने दूर" के मौकों के बाद, हवा हमारे पक्ष में पलट गई। सिडनी की माँ रिश्तेदारों से मिलने गई हुई थीं, इसलिए हमने धैर्यपूर्वक इंतज़ार किया,

छोड़कर सिडनी और मैंने टहलने का फैसला किया। हम कुछ घंटों तक बिना कुछ देखे चलते रहे और लंबे रास्ते से वन विश्राम गृह लौट रहे थे। सूरज डूब रहा था तभी हमें आगे से ज़ोरदार दहाड़ें सुनाई दीं। चारों ओर अफरा-तफरी मच गई - मवेशी इधर-उधर भाग रहे थे और लोग उनका पीछा कर रहे थे। ढलती रोशनी में इतनी धूल थी कि समझ पाना मुश्किल था कि क्या हो रहा है। जब हालात सामान्य हुए, तब हमें समझ आया कि कुछ देर पहले एक बाघ ने एक गाय को मार डाला था, लेकिन बाकी झुंड के उसे भगा ले जाने के कारण वह उसे ले नहीं जा सका। हम बहुत उत्साहित थे। एक बाघ, और वह भी! इससे बड़ा इनाम क्या हो सकता है? यह सन् 1948 की बात है और इन इलाकों में बाघों का होना आम बात थी। मचान बांधने का समय नहीं था, और चरवाहा और उसके साथी भी मचान बांधने के इच्छुक नहीं थे। अंधेरा हो चुका था, कौन जानता था कि बाघ कब लौटेगा? उनमें से कोई भी गांव जाकर वहां से कोई बंदूक लेकर वापस नहीं आना चाहता था। हमने उनसे वादा किया कि बाघ के लौटते ही हम जागकर उसका शिकार करके उनकी हार का बदला लेंगे। सिर्फ अपने चाकुओं से हमने कुछ डालियाँ काटीं और एक बेहद साधारण सा छुपने का स्थान बनाया। रात को सोने के लिए लेटते समय हमारी धड़कनें तेज़ हो रही थीं। हमारे पास खाना, पानी या कंबल नहीं थे, क्योंकि हमने जागने की योजना नहीं बनाई थी। हमने जैक को भी नहीं बताया था कि हम जागेंगे। चौदह साल के हमारे दिमाग में ये सारी चिंताएँ नहीं थीं, क्योंकि हम अपने पहले बाघ का शिकार करने की संभावना को लेकर उत्साहित थे। मैं कभी भी पूरी रात जाग नहीं सकता, और वह दिन भी इसका अपवाद नहीं था। मैंने थोड़ी देर के लिए आँखें बंद कर लीं, बाघ की खाल उतारने और ग्रामीणों की प्रशंसा पाने का सपना देख रहा था। मैं एकदम से चौंककर जाग गया। मुझे महसूस हुआ कि कुछ गड़बड़ है, और मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या हुआ है। सिडनी भी छिपने की जगह से ध्यान से बाहर देख रहा था। थोड़ी दूरी पर मुझे एक हल्की सी गुर्राहट सुनाई दी और मैं तुरंत सख़्त हो गया। बाघ ने हमें देख लिया था और अपने शिकार के पास किसी को देखकर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर कर रहा था। हालाँकि चाँदनी थी, फिर भी मुझे आवाज़ का स्रोत दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने सिडनी को चुप रहने का इशारा किया। हमें ज़्यादा जानकारी नहीं थी, इसलिए हम दोनों मरी हुई गाय की तरफ़ मुँह करके बैठे थे, और अब हमें अपनी मूर्खता का एहसास हो रहा था। अगर बाघ पीछे से आ जाता तो क्या होता? जगह बदलने में बहुत देर हो चुकी थी और गुर्राहट का मतलब था कि शायद हमें कोई देख रहा था। मैंने

झाड़ियों में चारों तरफ़ देखने की पूरी कोशिश की, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। तभी मुझे एक और गुर्राहट सुनाई दी, और बेचारा सिडनी काँपने लगा। वह इतना डरा हुआ था कि ऐसा लग रहा था जैसे उसे दौरे पड़ रहे हों। मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा, उसे कसकर दबाया जैसे कह रहा हो, "हिम्मत रखो, दोस्त", लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, हालत और बिगड़ने लगी, और मुझे डर के मारे महसूस हुआ कि वह चीखने ही वाला है। मैंने आवाज़ को दबाने के लिए अपना हाथ उसके मुंह पर रख दिया, और दूसरे हाथ में राइफल पकड़ ली, एहतियात के तौर पर। सिडनी अब और बर्दाश्त नहीं कर सका, और मेरा हाथ हटाकर उसने टॉर्च जला दी और हंसते हुए मेरे ऊपर गिर पड़ा! उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे, और हांफते- हांफते उसने किसी तरह मुझे बताया कि जो गुर्राहट मैंने सुनी वह उसके पेट से आ रही थी, क्योंकि उसने काफी देर से कुछ खाया नहीं था और उसका यह दौरा दबी हुई हंसी के अलावा कुछ नहीं था! उसके बाद मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई, और बाघ, जो दो हंसते-खेलते किशोरों को झाड़ी से बाहर निकलते देख बहुत हैरान हुआ होगा, शायद गुस्से में चला गया होगा, क्योंकि वह उस रात वापस नहीं आया।
यह अजीब बात है कि सिडनी से मेरी दोस्ती एक लड़ाई से शुरू हुई। स्कूल में किसी बात पर हमारी बहस हो गई, और मुझे ठीक से याद नहीं कि किस बात पर, लेकिन आठ-नौ साल की उम्र में, शारीरिक लड़ाई करना कितना ज़रूरी था, पर आखिरकार बात वहीं तक आ गई। बदकिस्मती से, वह शुक्रवार का दिन था और स्कूल में लड़ाई सुलझाने का जो आम तरीका था, यानी मुक्केबाज़ी, वह मुमकिन नहीं था, इसलिए हम दोनों ने आपसी सहमति से तय किया कि वह मेरे घर आकर मामला सुलझाएगा। हमने तय किया कि हम वही नियम अपनाएंगे जो जिम में थे, बस जगह अलग होगी। यह देखकर वहाँ मौजूद लोग खूब खुश हुए, क्योंकि उन्हें इस तरह की घटनाएं बहुत पसंद थीं। वह मुझसे कद में काफी छोटा था, और उस समय गुस्से में उसे इस बात की परवाह नहीं थी। हालांकि, लड़ाई से आधे घंटे पहले, वह घर आया, माफी मांगी और पूछा कि क्या हम लड़ाई रद्द कर सकते हैं। मुझे नहीं लगता कि उसकी कोई गलती थी, लेकिन वह इतना समझदार था कि जानता था कि सार्वजनिक अपमान से बेहतर है अकेले में माफी मांगना। मैं भी अपने से छोटे किसी व्यक्ति को पीटने का इच्छुक नहीं था, क्योंकि अगर यह बात फैल जाती तो मेरी प्रतिष्ठा को कोई फायदा नहीं होता। खैर, वह लड़ाई दोस्ती में बदल गई और तब से हम पक्के दोस्त हैं। कई बार हमारे बीच ऐसे झगड़े भी हुए जिनसे हमारी दोस्ती खतरे में पड़

गई, लेकिन किसी न किसी तरह हमने उन मतभेदों को भुलाने का रास्ता ढूंढ लिया। आर्थिक रूप से वह तंगहाल था, जबकि मैं था। इसके अलावा, उसे हमेशा "अच्छी लड़कियाँ" मिलती थीं, जबकि मुझे हमेशा ऐसी लड़कियाँ मिलती थीं जो बस मौज-मस्ती करना चाहती थीं। जैसे-जैसे हम बड़े हुए, हमने उन महिलाओं की गिनती रखी जिनके साथ हमने शारीरिक संबंध बनाए थे, और अक्सर एक-दूसरे को कुछ खास लड़कियों को बिस्तर पर लाने की चुनौती देते थे। भले ही मैंने लड़ाई जीत ली हो, लेकिन उसने युद्ध ज़रूर जीता और जीवन में बेहतर फैसले लिए, और आज वह काफी समृद्ध है और उसका परिवार है, जबकि मेरे पास कुछ भी नहीं है। यही है जीवन।
पिताजी के एक मित्र, जो कभी-कभी हमारे शिकार यात्राओं में हमारे साथ हुआ करते थे, मद्रास और मैसूर के प्रसिद्ध फोटोग्राफी स्टूडियो "विएले एंड क्लेन" के विएले थे। वे जर्मन थे और ऊटी में बचपन में जिस लगन से उन्होंने जर्मन भाषा सीखी थी, वह वाकई सराहनीय थी, क्योंकि जब भी वे अंग्रेजी या कोई भारतीय भाषा बोलते थे, तो उनका उच्चारण बहुत कर्कश होता था। और सिर्फ उनका उच्चारण ही अटपटा नहीं था। एक बार उन्होंने मुझे एक बड़ी मुसीबत में फंसा दिया, जिसके बाद मैंने उन्हें यात्राओं पर साथ ले जाना बंद कर दिया। हम दोनों शिकारिपुर गए थे और अपने मित्र को गाँव में छोड़कर जानवरों के पदचिह्न खोजने निकल गए थे। मैं गाँव लौट रहा था जब मैंने देखा कि वहाँ युद्ध नृत्य चल रहा था। जाहिर है, श्री विएले को लगता था कि गाँव में औरतें आसानी से मिल जाती हैं और उन्होंने एक सज्जन के पास जाकर अपनी त्रुटिहीन कर्कश हिंदुस्तानी में पूछा, "लड़की मिलती है?" (क्या मुझे कोई लड़की मिल सकती है?)
विएले के लिए वह दिन अच्छा नहीं था; जिस व्यक्ति से उसने बात की, वह गाँव के मुखिया जैसा लग रहा था और उसका सीधा-सादा सवाल पास खड़ी मुखिया की बेटी को निशाना बनाकर पूछा गया समझा गया। गाँव वाले उसे जान से मारने को तैयार थे, लेकिन ऐसी जगहों पर अक्सर ऐसा होता है कि भीड़ को शांत करने के कुछ आजमाए हुए तरीके होते हैं। एक खास पूजा-अर्चना ने काम कर दिया, साथ ही यह वादा भी कि मैं ऐसे लोगों को फिर कभी उनके गाँव में नहीं लाऊँगा!

विएले के साथ बाईं ओर रेक्स विल्सन और दाईं ओर उनकी माँ हैं।

लगभग पंद्रह साल की उम्र में, मैंने अपने दोस्त रॉनी फिलिप्स की बदौलत अपनी पहली मोटरसाइकिल चलाना सीखा। वह शिमोगा में रहने वाले एक बागान मालिक का बेटा था। रॉनी और उसके परिवार को शिकार में कभी कोई दिलचस्पी नहीं थी, क्योंकि वे इसे क्रूर और खतरनाक मानते थे। रॉनी बिशप कॉटन स्कूल में बोर्डिंग छात्र था, और उसका परिवार अक्सर उससे मिलने आता था। रॉनी कई मायनों में एक आदर्श लड़का था और हमेशा अपने माता-पिता से हर काम करने की अनुमति मांगता था। काफी बातचीत के बाद, आखिरकार उसे मेरे साथ जावलगिरी की यात्रा पर जाने की अनुमति मिल गई। मैंने उसे यह नहीं बताया कि पैंथर का शिकार भी करना है, क्योंकि उसे जानते हुए, वह पैंथर को गोली मारने के लिए विशेष रूप से अनुमति मांगता और बात वहीं खत्म हो जाती। तो, आधे मन से लेकिन औपचारिक रूप से अनुमति लेकर, रॉनी और मैं एक उधार की मोटरसाइकिल पर निकल पड़े, और वादा किया कि हम एक निश्चित समय पर मेरे घर वापस आ जाएंगे। हम दोपहर तक वन विश्राम गृह पहुँच गए और अपना काम शुरू करने से पहले वहाँ के ठंडा होने का इंतजार किया। अब तक रॉनी को मेरी योजना का पता चल चुका था, और वह बहुत उत्साहित था क्योंकि अपने माता-पिता को बिना बताए कुछ करने के रोमांच से उसे एड्रेनालाईन रश हो रहा था। मुझे याद नहीं कैसे, लेकिन हमें

एक मिलनसार गाँव का कुत्ता मिल गया जिसे हमारे द्वारा उसकी गर्दन में रस्सी बाँधने से कोई आपत्ति नहीं थी, और वह बड़े आराम से हमारे पीछे-पीछे चलने लगा। बेचारे को हमारी बुरी योजनाओं का कोई अंदाजा नहीं था और जैसे ही हमने उसे चारा बनाकर बाँधा, वह छटपटाने और चिल्लाने लगा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, और मैंने उसे दोपहर के भोजन के बचे हुए खाने से शांत कर दिया। हमने ज़मीन पर बैठने का फैसला किया, बिना किसी आड़ के, बस एक कंबल ओढ़कर। हमें पूरा विश्वास था कि एक पैंथर आएगा, खासकर कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनकर। हम अविश्वसनीय रूप से भाग्यशाली थे क्योंकि एक घंटे के भीतर, हमने एक छोटे पैंथर को अचानक कहीं से आते हुए देखा और उसने हमारी आँखों के सामने कुत्ते को मार डाला। हमारे दुख की बात यह थी कि वह रस्सी तोड़कर अपने शिकार को पास की झाड़ी में ले गया, जहाँ हम उसे सुन तो सकते थे लेकिन देख नहीं सकते थे। सूरज डूब चुका था, लेकिन चांदनी रात बहुत खूबसूरत थी, इसलिए मुझे लगा कि यह मेरे लिए एक बेहतरीन मौका है। मैंने अपना कंबल रॉनी को दिया, अपने पिताजी की बंदूक उठाई और सावधानी से उस दिशा में चल पड़ा जहाँ पैंथर अपने शिकार के साथ गायब हुआ था। थोड़ी देर बाद, मुझे एक हल्की सी आह सुनाई दी और मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैंने टॉर्च घुमाई और वहाँ, लगभग पंद्रह गज की दूरी पर, पैंथर मुझे घूर रहा था। वह कुत्ते से कुछ दूरी पर था और डरा हुआ भी नहीं लग रहा था, इसलिए मैं सावधानी से उसके करीब गया। छोटे-छोटे कदम, बहुत धीरे-धीरे, बंदूक को बाहों में थामे हुए, उस जगह तक जहाँ मुझे लगा कि बंदूक से निशाना लगाना ठीक रहेगा। फिर मैंने गोली चला दी। मैंने गर्दन पर निशाना लगाया था, लेकिन इसका मनचाहा परिणाम नहीं हुआ, बल्कि इससे वह मुझ पर हमला करने के लिए और भड़क गया। सौभाग्य से, पैंथर सीधे मेरी तरफ नहीं दौड़ा, बल्कि मेरे बगल से गुजरा, इसलिए जैसे ही वह मेरे पास से गुजरा, मैंने घूमकर दूसरी नली से एक गोली दाग दी। मुझे पूरा यकीन था कि इस बार मैंने उसे निशाना बना लिया है, लेकिन पैंथर झाड़ियों में गायब हो गया और नज़रों से ओझल हो गया। हमने अपने माता-पिता से वादा किया था कि हम सुबह होते ही निकल जाएंगे, लेकिन एक शिकारी का नियम - किसी घायल जानवर को तड़पता हुआ न छोड़ना - उस उम्र में भी मेरे कोमल मन में गहराई से बैठा हुआ था, इसलिए हमने रात वहीं रुकने और काम पूरा करने का फैसला किया। अगली सुबह सूरज पूरी तरह से निकलने तक हम इंतज़ार करते रहे, और जब हम निकले तो नौ बज चुके थे। हमारे साथ कोई गाइड नहीं था क्योंकि मुझे अपने ट्रैकिंग कौशल पर

पूरा भरोसा था। यह एक सबक सिखाने वाला अनुभव था; पैंथर को कम से कम एक बार गोली मारने के बावजूद, हम उसका पता नहीं लगा पाए। जब हम एक टीम के रूप में भी ऐसा नहीं कर पाए, तो हमने अलग होने का फैसला किया। यह एक बेहद मूर्खतापूर्ण कदम था, यह देखते हुए कि रॉनी निहत्था था और बहुत बड़ा जोखिम उठा रहा था। लेकिन सौभाग्य से दोपहर तक, हमें यह स्वीकार करना पड़ा कि हम ट्रैक करने में बहुत बुरे थे, और हम निराश होकर घर की ओर चल पड़े। वापस जाते समय, हमने देखा कि गेस्ट हाउस के चारों ओर भीड़ जमा हो गई थी, और कुछ ही सेकंड में वहाँ अफरा-तफरी मच गई। भीड़ हमारी ओर दौड़ी, जिसका नेतृत्व रॉनी के माता-पिता कर रहे थे, जो यह सोचकर वहाँ आए थे कि सबसे बुरा हो गया है। रॉनी को खूब खरी-खोटी सुननी पड़ी, लेकिन उसके सुरक्षित होने की राहत ने उस सदमे को कुछ हद तक कम कर दिया, और इसलिए सारा गुस्सा मुझ पर ही निकला। उन्होंने मेरी बात सुनने से इनकार कर दिया - जैसे कि शिकारी की नैतिकता और अन्य ऊँचे-ऊँचे विचार, और मैं उन्हें दोष नहीं देता, क्योंकि मैंने जो किया था वह लगभग पागलपन था और उन्होंने वैसा ही व्यवहार किया जैसा कोई भी माता- पिता करते। वे अपनी टैक्सी में बैठे और गाँव से निकल गए। रॉनी कुछ समय तक अपने माता-पिता से बहुत नाराज़ रहा। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे वह पैंथर कभी नहीं मिला।
मुझे साइकिल चलाना आता तो था, लेकिन इसका मतलब हमेशा अपने बड़े दोस्तों से उधार लेना होता था, जिन्हें बदले में अपने बड़े भाई-बहनों से अनुमति लेनी पड़ती थी, इसलिए जब मुझे सच में ज़रूरत होती थी, तब मुझे साइकिल मिलने की संभावना न के बराबर थी। मेरे पिताजी को कारों का बहुत शौक था, और जब मैं चौदह साल का हुआ, तब तक उनके गैराज में लगभग पंद्रह मोटरसाइकिलें थीं, और यही मेरे लिए एक साइकिल मांगने का काफी बड़ा लालच था। तब तक मैं बैंगलोर की सड़कों पर साइकिल चला चुका था और मुझे लगा कि मेरी मांग पूरी तरह जायज़ है। हैरानी की बात है कि उन्होंने हां कह दी, लेकिन कई हफ्ते बीत गए और उनका उत्साह काफी कम होता चला गया। फिर एक दिन, हम दोनों होसकोटे गए और साइकिल की बेल्ट टूट गई। जाहिर है, निकलने से पहले बेल्ट चेक करना मेरी ज़िम्मेदारी थी। वे इतने गुस्से में थे कि उन्होंने मुझे साइकिल को धक्का देकर शहर तक वापस लाने के लिए मजबूर किया, जो लगभग सोलह मील दूर था। बस, यही आखिरी झटका था। मुझे यकीन हो गया कि साइकिल की मुझे कितनी सख्त ज़रूरत है, यह बात समझाने का एकमात्र तरीका घर से भाग जाना ही था। अपने माता-पिता के

नाइटस्टैंड पर एक सुपुर्दगी से रखी चिट्ठी के साथ, मैं अपने पहले शहरी एकल साहसिक यात्रा पर निकल पड़ा। घर से बाहर कुछ कदम रखते ही मुझे एहसास हुआ कि मैंने इस बारे में ठीक से सोचा नहीं था। भूखे-प्यासे बेघर बेटे को उसके माता-पिता द्वारा मोटरसाइकिल देकर दिलासा देने का रोमांटिक विचार एक दूर की हकीकत लग रहा था; इसलिए, मैंने दूसरा सबसे अच्छा रास्ता चुना और अपने दोस्त मेरवान के घर रहने चला गया। उसकी माँ ने मेरे आने पर ज़रा भी आपत्ति नहीं जताई, बल्कि मेरी माँ से बात की, और जल्द ही मेरे पिताजी मुझे लेने आ गए और घर ले गए। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन अगले दिन हम एक साइकिल लेने निकल पड़े। मेरे पिताजी... खैर, पिताजी ही तो थे, उन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि केवल सेकंड-हैंड बाइक ही ठीक रहेगी, और इसलिए मैंने 1948 में 300 रुपये में एक 1942 मॉडल की सिंगल सिलेंडर 5 एचपी आर्मी नॉर्टन बाइक खरीदी, जो देखने में बिलकुल सेकंड-हैंड लग रही थी। युद्ध के बाद, बहुत सी बाइकें बेहद सस्ते दामों पर बिक गईं, और सबसे अच्छे ब्रांड जो उपलब्ध थे, वे थे बीएसए, ट्रायम्फ और नॉर्टन। हालांकि उन दिनों मोटरसाइकिल खरीदने वालों के लिए पहला विकल्प साउथ परेड पर स्थित सिम्पसन एंड कंपनी था, लेकिन मैंने जो भी बाइकें खरीदीं, वे हमेशा पहले से इस्तेमाल की हुई ही थीं।
मेरी अगली मोटरसाइकिल भी सेकंड-हैंड थी, युद्ध की एक जर्जर निशानी, 1942 की 500 सीसी बीएसए, जिसमें साइडकार लगी थी। क्या रजिस्ट्रेशन नंबर MYB 3047 आपको जाना-पहचाना लग रहा है? अगर आपने मशहूर फिल्म शोले देखी है तो ज़रूर लगेगा।
साइडकार ने मेरे स्टाइल को थोड़ा तंग कर दिया था, यह कुछ अलग था और उस समय सस्ता होने के साथ-साथ इसमें सामान रखने की जगह भी थी। जब मैंने इसे लिया था, तब इसकी हालत बहुत खराब थी और मुझे इसे ठीक कराने में काफी पैसा खर्च करना पड़ा। अगर मैं साइडकार का वर्णन करूं, तो मैं कहूंगा कि यह पहियों पर ताबूत जैसा दिखता था। मुझे लगता है कि इसका डिज़ाइन बनाने वाला कोई बहुत समझदार इंजीनियर नहीं था, क्योंकि एक बार अंदर बैठने पर ऐसा लगता था जैसे कोई फंस गया हो। उस बाइक से जुड़ी सबसे यादगार घटना तब हुई जब हम कनकपुरा रोड पर बत्तख का शिकार करने गए थे। कई बार सिक्का उछालने के बाद, रॉनी फिलिप्स ड्राइवर बन गया, जबकि हारने वाले सिडनी और मुझे साइडकार में ही

बैठना पड़ा। मैंने सिडनी पर अपना रौब जमाया और उसे साइडकार के पीछे बैठने के लिए मजबूर किया, जबकि मैं आगे बैठ गया। रॉनी बहुत सावधान था।
उस दिन, हम गड्ढों और ऊबड़-खाबड़ रास्तों से बचते हुए आगे बढ़ रहे थे। यह कहना सही होगा कि मोटरसाइकिल का वह हिस्सा जिस पर वह बैठा था, गड्ढों और उतार-चढ़ावों से बच गया, लेकिन वह हिस्सा जिसमें हम फंसे हुए थे, नहीं बच पाए। हमारी चीखें और गालियां उसकी गति के सीधे अनुपात में थीं, और सोमनहल्ली के पास एक मोड़ पर यह गणितीय समीकरण अनंत तक पहुंच गया। हम एक संकरी सड़क पर थे जो एक बड़े टैंक को दो भागों में बांट रही थी, तभी रॉनी को लगा कि यही वह क्षण है जब बाइकर और उसकी मशीन एक इकाई बन जाते हैं। यह निश्चित रूप से एक प्रेरणादायक विचार था, जैसा कि सड़क पर चलते समय अधिकांश बाइकर्स को कभी न कभी महसूस होता है। हालांकि, यह निश्चित रूप से गति, सड़क का वह हिस्सा या वह समय नहीं था जब हम यह भूल गए कि हम उसकी बाइक से जुड़े हुए हैं। हम तेज गति से टैंक वाली सड़क पर पहुंचे, और फिर मुझे याद है अचानक सन्नाटा छा गया और यह एहसास हुआ कि सड़क अब उतनी खराब नहीं रही। एक पल के लिए हमें शांति का अनुभव हुआ। साइडकार मोटरसाइकिल से अलग हो गई, और एक अजीब कोण पर ढलान से नीचे दलदली भूमि के ऊपर से निकल गई। सिडनी चीख-चीख कर पागल हो रही थी और जैसे ही हमने अपना सिर बाहर निकाला, हमने देखा कि एक आदमी हमारे रास्ते में कुछ लगा रहा है। हँसी की बात तो नहीं थी, लेकिन उसका चेहरा देखना काफी हास्यास्पद था, क्योंकि अचानक आसमान से एक ताबूत जैसी चीज़ नीचे आ गिरी, और उसमें दो सिर डर से चीख रहे थे। उसने सब कुछ छोड़ दिया और जान बचाकर भागा। बेशक, हम नरम मिट्टी में गिरे, जिससे गिरने से चोट कम लगी, लेकिन हमें कुछ हड्डियाँ टूट गईं और चोटें और खरोंचें आईं। और तो और, रॉनी दूसरी तरफ एक छोटे से तालाब में गिर गया और उसके पूरे शरीर पर चोटें आईं। ऐसी घटनाओं के बावजूद, मैं हमेशा बाइक ठीक करवा लेता था क्योंकि उस समय किसी भी चीज़ को तब तक फेंकने का कोई चलन नहीं था जब तक वह पूरी तरह से खराब न हो जाए। कई साल बीत गए और मुझे एक नई मोटरसाइकिल चाहिए थी, इसलिए मैंने इसे एक आदमी को बेच दिया, जिसने बाद में इसे अमिताभ बच्चन और धर्मेंद्र द्वारा शोले फिल्म के एक मशहूर गाने में इस्तेमाल करने के लिए उधार दिया। मुझे इस सब के बारे में तब तक पता नहीं चला जब तक मेरे दोस्तों ने मुझे नहीं बताया। बेशक, मैं थोड़ा-बहुत मशहूर हो गया और मैंने

खुद को फिल्म देखने के लिए भी मना लिया, सिर्फ इसलिए कि मैं अपनी पुरानी मोटरसाइकिल को बड़े पर्दे पर देख सकूं।
मेरी अगली मोटरसाइकिल वो है जिसके साथ मुझे साठ के दशक में ज़्यादातर लोग याद करते हैं। हैरानी की बात नहीं, ये भी सेकंड-हैंड थी, एक ट्विन इंजन 5 एचपी 1956 मॉडल नॉर्टन डोमिनेटर, एक शानदार मशीन, जिसकी टॉप स्पीड 100 मील प्रति घंटा थी। इसके पहले मालिक की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी, और कुछ साल बाद, मूल मालिक के भाई और उनके पीछे बैठे यात्री की मैसूर के पास मौत हो गई। मृतक ड्राइवर के पिता बाइक से कोई वास्ता नहीं रखना चाहते थे, क्योंकि उनका मानना था कि बाइक पर श्राप है। इसलिए, इससे पहले कि उनके परिवार के और सदस्य मरें, उन्होंने इसे मात्र 800 रुपये में बेच दिया, जो उन दिनों बहुत सस्ता सौदा था, और अगले नौ सालों में ये मेरी कई रोमांचक यात्राओं का हिस्सा बन गई। दरअसल, ये मेरी दिखावे की बाइक थी। रामनगरम में कई बार पैंथर का शिकार करने के बाद, मैं शहर में जाता था, ये सुनिश्चित करते हुए कि मेरे रास्ते में साउथ परेड ज़रूर आए। मैं हैंडलबार को 180 डिग्री घुमा देता था और उस पर अपने पैंथर को लटका देता था। अब यह कितना मूर्खतापूर्ण लगता है, लेकिन उस समय लोगों का ध्यान इस ओर ज़रूर गया था! मैंने आखिरकार बाइक बेच दी, और यकीन मानिए, एक महीने के भीतर ही ऊटी घाट पर बाइक चालक और उसके पीछे बैठे व्यक्ति की मौत हो गई!

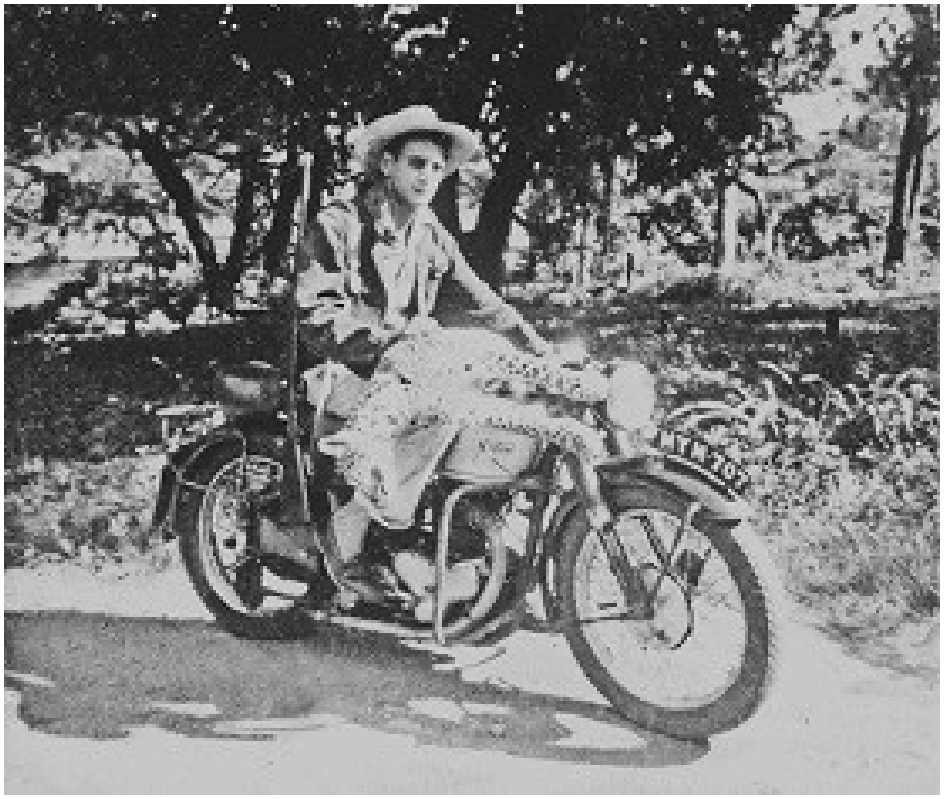

1950 के दशक में बैंगलोर में यह एक आम दृश्य था।

मेरे पास कई बाइकें थीं, लेकिन सबसे शानदार बाइक 1000 सीसी की रेड इंडियन "चीफ" थी, जो कि एक सेकंड हैंड बाइक थी। यह बेहद भारी थी और इसे चलाना आसान नहीं था, लेकिन यकीनन लोग इसे देखकर मुड़कर देखते थे। इसकी आवाज़ बहुत ही खूबसूरत थी, और मैं साउथ परेड पर इसे चलाता था, या तो मेरे पीछे कोई लड़की बैठी होती थी या फिर टैंक पर एक मरा हुआ पैंथर रखा होता था, और इससे लोगों पर काफी असर पड़ता था।
मुझे कारों से बहुत लगाव रहा है, सालों से मेरे पास कई गाड़ियाँ रही हैं और कारों के प्रति यह प्यार मुझे मेरे पिताजी से मिला है। युद्ध से पहले, उनकी सबसे पसंदीदा चीज़ एक टी मॉडल फोर्ड थी जिसका नाम उन्होंने "अचानक मौत" रखा था। सचमुच, उसमें कोई बॉडी नहीं थी, वह बस एक चौकोर डिब्बा था जिसे चेसिस से रस्सी से बांधा गया था। उसमें मड गार्ड भी नहीं थे, जिसका मतलब यह था कि सड़क के दृश्य का आनंद लेने के अलावा, यात्री को उसका स्वाद भी चखना पड़ता था। हालांकि, इन सब बातों को हम मज़ाकिया घटनाएँ मानते थे और हम जैसे आवारा बच्चों के लिए यह सबसे छोटी समस्या थी। हॉर्न ड्राइवर की सीट के बगल में लगा था, जो कि एक पुराना पेट्रोल टैंक था जिसके ऊपर मेरी माँ का एक

कुशन रखा हुआ था। इसी तरह के पुराने कुशन कार के अन्य हिस्सों में बिखरे पड़े थे, और वे अन्य यात्रियों के लिए सीटों का काम करते थे। कार की कीमत लगभग पैंतालीस रुपये थी, और मुझे लगता है कि यह 1941 या 42 का साल था, अगर मैं तस्वीर में अपनी उम्र को ध्यान से देखूँ। यह केरोसिन से चलती थी जिसकी कीमत दो आना प्रति गैलन थी। तो, पिताजी अपनी कंजूसी के कारण, गाड़ी शुरू करने के लिए दो आने का पेट्रोल भरवाते थे और थोड़ी देर बाद केरोसिन डलवा लेते थे। इस तरह, मद्रास जाकर वापस आने का खर्च पंद्रह-बीस रुपये में ही निकल जाता था, जिसमें रास्ते में जलपान भी शामिल था! एक और टी मॉडल फोर्ड में आगे की सीटें सामान्य थीं और पीछे लकड़ी का एक बक्सा था जो मचान का काम करता था। पिताजी शिकार करते समय उसे पेड़ों पर बांध देते थे। पहिए 21 इंच चौड़े और बहुत पतले थे, इसलिए यह गाड़ी लगभग किसी भी इलाके में चल सकती थी - आज के समय में, इसके जैसे इलाके वे हैं जहाँ चार पहिया वाहन की आवश्यकता होती है। इस अद्भुत और अनोखी गाड़ी की सबसे अच्छी बात यह थी कि यह इतनी हल्की थी कि कहीं भी फंसने का कोई चांस ही नहीं था, इसलिए पक्की सड़कों का न होना कोई समस्या नहीं थी। अगर कभी कीचड़ में फंस जाते, तो एक व्यक्ति उसे धक्का देकर पार करवा सकता था और हम आगे बढ़ जाते। पिताजी के पास टी मॉडल फोर्ड के लिए 23 स्पेयर इंजन और दर्जनों स्पेयर पहिए थे। हालांकि वह कोई कुशल मैकेनिक नहीं था, फिर भी उसे इतना तो पता था कि गाड़ियाँ चल सकें। उन दिनों की गाड़ियों में गियर नहीं होते थे; क्लच ही गियर का काम करता था, और क्लच छोड़ते ही गाड़ी चल पड़ती थी। उन गाड़ियों की सादगी अपने आप में अनोखी थी। अगर कोई उसके नीचे देखता, तो उसे बस एक इंजन, कुछ स्पार्क प्लग और एक डायनेमो ही दिखाई देता!

'अचानक मौत'

इसके बाद फोर्ड का ए मॉडल आया, जिसकी कई प्रतियां मेरे घर में जमा थीं, हमारे गैराज की कई अलमारियों और कोनों में फैली हुई थीं। उन्नीस इंच के पहियों, बेहतर इंजन और असली दरवाजों वाली यह एक बेहतरीन कार थी, लेकिन फिर भी यह अपने पूर्ववर्ती की सादगी से मेल नहीं खा सकी। हमारे पास कई अन्य कारें भी थीं, जिनमें चार-पांच स्टडबेकर शामिल थीं, लेकिन उनमें सबसे खूबसूरत 1920 की बुगाटी रेसिंग कार थी, जिसे हमने एक आयरिश सज्जन से खरीदा था जो ऑस्ट्रेलिया जा रहे थे। पिताजी मुझे छोटी-छोटी ड्राइव पर ले जाते थे और शनिवार की सुबह-सुबह साउथ परेड की चौड़ी सड़कों पर रेस लगाते थे। यही एकमात्र समय था जब हम इतनी तेज़ गाड़ी चला सकते थे। कड़ाके की ठंड होती थी और हम दोनों खुद को पूरी तरह से ढक लेते थे और इंजन की पूरी क्षमता का परीक्षण करते थे। यह एक खास एहसास था, लेकिन कुछ ही समय बाद इसमें खराबी आ गई और हमें इसे गुज्जी (रसेल मार्केट के सामने एक जगह जहां पुरानी चीजें खरीदी और बेची जाती हैं) में 225 रुपये में बेचना पड़ा।

1927 □□□□□□

□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□, □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□-□□□□□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□, □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□, □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□, □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□, □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□, □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□! □□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□

□□! □□□□ □□□□□ □□□□, □□□□ .423 □□□□□, □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□!

□□□□ □□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□□

□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□, □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□, □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□, □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□□□, □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□, □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□, □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□, □□□□□□□□□□ □□□□□ "□□□□□" □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□-

गलौज आती थी। हम अंग्रेज़-भारतीय गाली देने से नहीं कतराते, लेकिन एरिक तो हमें भी शर्मिंदा कर देता था। उसकी वजह से मेरी शब्दावली में कई रंगीन क्रियाएँ और विशेषण जुड़ गए। एक बार एरिक मुझे सर्कस दिखाने ले गया, जो एमजी रोड के पास परेड ग्राउंड में था। उन दिनों नियमों का कोई नामोनिशान नहीं था, उन्हें बस दिशा-निर्देश ही कहा जा सकता था। इसलिए, चेतावनियों के बावजूद, एरिक और मैं कुछ लोगों को पीछे छोड़ते हुए सीधे उन पिंजरों तक पहुँच गए जहाँ बड़ी बिल्लियाँ थीं। वह एक तेंदुए को डराकर और तरह-तरह की शरारतें करके उसे चिढ़ा रहा था। जल्द ही तेंदुए थक गया और लेट गया, और एरिक ने सोचा कि वह अपना हाथ अंदर डालकर उसे सहलाएगा! नतीजा तो होना ही था, और उसे इतनी बुरी तरह से चोट लगी कि उसे अस्पताल ले जाना पड़ा और कई टाँके लगवाने पड़े।

मेरी माँ मेरे हीरो, एरिक विल्किंसन की ओर इशारा कर रही हैं।

मैंने जिन लोगों का वर्णन किया है, उनमें से अधिकतर मेरे मित्र थे, लेकिन एक समय मेरा एक व्यावसायिक साझेदार भी था। पैडी कीलर ने ब्रिटिश भारतीय सेना में कुछ समय के लिए कप्तान के रूप में सेवा की थी और हमने एक पेशेवर शिकार कंपनी शुरू करने का निर्णय लिया। वह विदेशों से विभिन्न ग्राहकों

से संपर्क करता और व्यवसाय अधिग्रहण की देखरेख करता, जबकि मैं शिकार पर ले जाने वाला विशेषज्ञ था। उन दिनों भारत में इतना रहस्य और रोमांच था कि विदेशी इसे बाघों, हाथियों, विषैले साँपों और अन्य घातक जानवरों से भरा देश मानते थे। अगर वे आपको नहीं मारते, तो चारों ओर तैरते लाखों रोगाणु निश्चित रूप से मार डालते। हालाँकि इससे बहुत से लोग दूर रहे, लेकिन जानवरों, विशेषकर देश में पाए जाने वाले दुर्लभ जानवरों का शिकार करने की मनुष्य की आदिम प्रवृत्ति ने आगंतुकों का एक छोटा लेकिन निरंतर प्रवाह बनाए रखा। उस समय अधिकांश संगठित शिकार कंपनियाँ उत्तर और मध्य भारत में थीं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध नागपुर की ऑलविन कूपर थी, जिसकी शुरुआत वी.सी. शुक्ला ने की थी, जो आगे चलकर एक प्रसिद्ध राजनेता बने। उन्होंने मध्य भारतीय जंगलों में वन्यजीव सफारी और फोटोग्राफी अभियानों का आयोजन किया, जिनमें रॉबर्ट रुआर्क और खान साहब जमशेद बट जैसे उस समय के प्रसिद्ध शिकारियों के लिए शूट भी शामिल थे। दरअसल, ऑलविन कूपर के लिए काम करना मेरा सपना था और मैंने शिकारी के पद के लिए आवेदन किया। वे मुझे अपने साथ रखने के इच्छुक थे, लेकिन इस शर्त पर कि वे मुझे मासिक भत्ता नहीं देंगे, बल्कि मेरे द्वारा किए गए शूट पर कमीशन देंगे। इस बीच, मुझे नागपुर जाकर ग्राहकों के आने और मेरे सभी खर्चों का भुगतान करने का इंतजार करना था। मुझे यह व्यवस्था ठीक नहीं लगी और मैंने श्री शुक्ला का प्रस्ताव ठुकरा दिया। दक्षिण भारत में ऐसी कोई कंपनी नहीं थी और कीलर और मुझे दोनों को लगा कि यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां व्यावहारिक रूप से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है, इसलिए अपना उद्यम शुरू करना उचित था। उन्हें इस तरह के काम का पहले से अनुभव था, क्योंकि वे उत्तर में कहीं संगठित शिकार से जुड़े हुए थे। इसलिए उन्होंने एक कंपनी पंजीकृत करवाई, सभी दस्तावेज़ पूरे करवाए, अमेरिका और इंग्लैंड दोनों जगह प्रचार किया, और हमने इंटरनेशनल हंटर्स नाम से एक छोटा लेकिन लाभदायक व्यवसाय शुरू किया। शायद मैं भोला था या शायद मैं पैसे कमाने में इतना मग्न था कि मैंने वित्तीय पहलुओं पर कभी ध्यान ही नहीं दिया। वे मुझसे उम्र में बड़े, काफी समझदार और आयरिश थे। मेरे पिताजी, जो शुरू से ही इस साझेदारी से खुश नहीं थे, अक्सर मुझे चेतावनी देते थे, "आयरिश लोगों पर कभी भरोसा मत करना", और मैं उन पर हंसता था, क्योंकि उनके इस नारे में सचमुच कोई तर्क नहीं था; यह कुछ ऐसा था जो उन्होंने बचपन से सुना था, और मैंने उनकी संकीर्ण सोच को अपने आनंद को प्रभावित नहीं करने

दिया। लेकिन मुझे कीलर पर शक होने लगा और भुगतान के मुद्दे पर हमारी कई बार बहस हुई। बात और भी बिगड़ गई क्योंकि वह हमारे व्यवसाय से जुड़े हर व्यक्ति से रिश्वत मांगता था। हम वास्तव में कोई पेशेवर कंपनी नहीं थे; हमारी सभी शिकार यात्राएँ बीआर हिल्स में होती थीं, और ह्यू हेलस्टोन की संपत्ति हमारा बेस थी। मुझे उनके बेतुके व्यवहार का पता तब चला जब उन्होंने स्थानीय ट्रैकर्स और शिकारी गाइडों से भी रिश्वत माँगी। वह ग्राहकों से उन बेचारे लोगों को पैसे देने के बहाने टिप वसूलते थे और उन्हें देने के बजाय, उनकी तनख्वाह में से खुद पैसे माँगते थे, और धमकी देते थे कि अगर उन्होंने पैसे नहीं दिए, तो वह मुडियानूर से और भी ज़्यादा काबिल लोगों को अपने साथ रख लेंगे। हमारे सबसे अच्छे ग्राहक अमेरिका से थे; बेहद अमीर, मिलनसार और बहुत ही आभारी। उनमें सबसे मशहूर पिता-पुत्र बार्नरी बर्लिंगर सीनियर और जूनियर थे। वे अफ्रीका में शिकार कर चुके थे और 1956 में हमसे मिलने आए थे। हमने खूब मज़े किए, और हालाँकि हमें बाघ नहीं मिला, लेकिन उन्हें एक विशाल पैंथर मिला। यह सब और भी बहुत कुछ बार्नी बर्लिंगर सीनियर द्वारा लिखित पुस्तक 'डेंजर डाउन द साइट्स' में दर्ज है। वे दस साल बाद फिर से भारत आए, लेकिन तब तक हमारी टीम भंग हो चुकी थी।

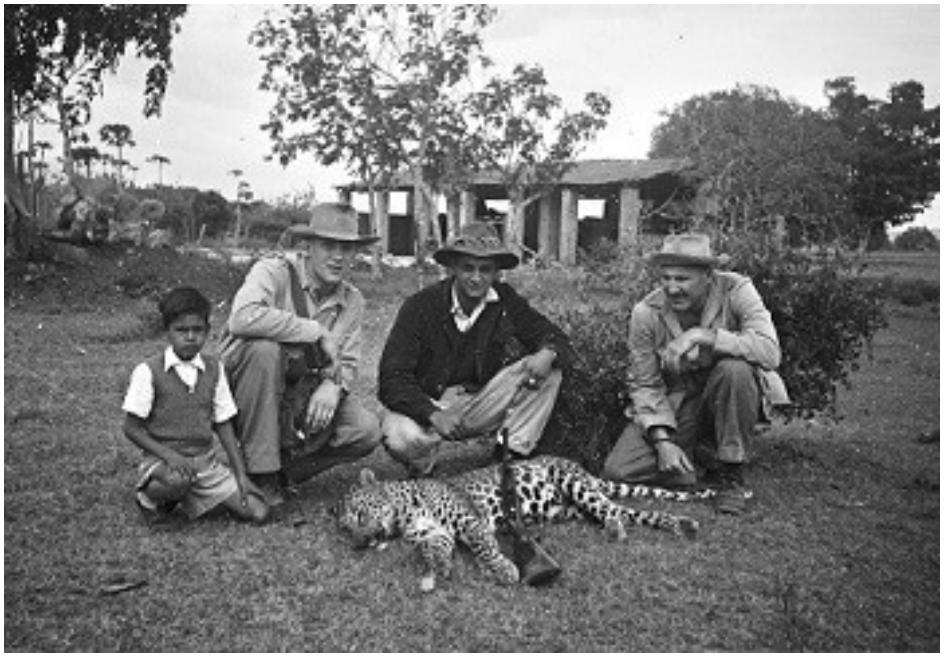

बार्नी बर्लिंगर जूनियर और सीनियर, दोनों ओर

साठ के दशक के उत्तरार्ध में, मेरवान, विली वोलन, मेरे पिताजी और मैं अक्सर सप्ताहांत में जंगलों की सैर पर जाया करते थे। मेरे पिताजी को जंगल से बहुत प्यार था, फिर भी कई बार मुझे समझ नहीं आता था कि क्या यही वजह थी या मेरवान द्वारा यात्राओं पर लाया जाने वाला स्वादिष्ट भोजन, जो उन्हें साथ आने के लिए प्रेरित करता था। उम्र बढ़ने के साथ-साथ मिठाइयों और पुडिंग के प्रति उनका लगाव बढ़ता ही गया और मेरवान, जो अपनी चतुराई से सब कुछ पहले ही बता देते थे, यात्रा का नियम था कि सभी को अपने हिस्से का काम करना होता था, जिसमें ड्राइविंग भी शामिल थी। बेचारे पिताजी, वे मेरवान से इस तरह सौदेबाजी करते थे कि वे ड्राइविंग का काम खुद कर लेते थे और बदले में मिठाइयों का अतिरिक्त हिस्सा पा लेते थे! तब तक हम सभी काम करने लगे थे, इसलिए शुक्रवार को काम के बाद निकलना, लगभग पूरी रात गाड़ी चलाना, कुछ शिकार करना और फिर रविवार रात को वापस लौटना, घर पहुँचना और फिर काम पर जाना होता था। बाद में मेरवान इंग्लैंड गए, कुछ डिग्री हासिल की और वापस आ गए। उन्होंने बंबई में बसने का फैसला किया और करोड़पति बन गए।

जिद्दी गिरोह। रॉनी बटफॉय, मेरवान और मैं।

जॉकी रॉनी बटफॉय मेरा एक और दोस्त था और प्रॉस्पेक्ट हाउस में किराएदार भी। कद में छोटा होने के बावजूद वह ऊर्जा से भरपूर था और यह कहना मुश्किल था कि उसे सबसे ज़्यादा क्या पसंद था - सड़क पर गुस्सा करना, जंगली सूअर का

शिकार करना, मछली पकड़ना, लड़ाई-झगड़े करना, औरतें, या औरतों को लेकर झगड़े करना। वह जिस भी मुसीबत में फँसता, उसमें अपना पूरा ज़ोर लगाता था। मेरे यहाँ किराएदार बनने से पहले, वह रेसिंग सीज़न के दौरान कलकत्ता से आता था और उसका साहसी रवैया सिर्फ़ रेसिंग ट्रैक तक ही सीमित नहीं था। वह बहुत अच्छा डांसर था और बोरिंग इंस्टीट्यूट में होने वाले डांस में नियमित रूप से जाता था। एक बार मुझे रात के करीब 2:00 बजे उसका फोन आया। वह घबराया हुआ लग रहा था और मुझसे गुहार लगा रहा था कि मैं तुरंत बोरिंग आ जाऊँ क्योंकि वह किसी मुसीबत में फँस गया था। उसकी आवाज़ के लहजे से मैं समझ गया कि यह कोई मामूली बात नहीं है, और उसकी बुरी तरह से फँसने की बदनामी पहले से ही फैली हुई थी, इसलिए मैंने ज़रा भी नहीं सोचा। मैंने मुश्किल से ही कपड़े पहने थे, लेकिन मैं भागा, अपनी मोटरसाइकिल स्टार्ट की और कुछ ही मिनटों में बोरिंग क्लब पहुँच गया। मैं अंदर भागा और वहाँ वो एक लड़की के साथ बड़े आराम से नाच रहा था! वो लड़की को बाहों में लिए मेरे पास आया और बोला,
"डॉन, वे लोग मौज-मस्ती करना चाहते हैं, क्या आपको कोई आपत्ति है?"
मैंने चारों ओर देखा तो लगभग आधा दर्जन लोग महंगे सूट पहने और गुस्से भरी निगाहों से रोनी के नाचने का इंतज़ार कर रहे थे। तभी रोनी ने हिम्मत दिखाते हुए उनकी ओर मुड़कर कहा, "यह मेरा दोस्त डॉन एंडरसन है, और वह मेरा साथ देगा।"
अभी भी नाचते हुए, वह मेरे पास आया और बोला, "मैं आपके हस्तक्षेप और त्वरित प्रतिक्रिया की सराहना करता हूं, लेकिन अगर हम बातचीत करने जा रहे हैं, तो मेरा सुझाव है कि आप इसे बिना उत्तेजित हुए करें।"
वह बैंगलोर में एक किंवदंती थे, यहाँ तक कि उन्होंने 1973 में इनविटेशन कप भी जीता था। मैं कभी रेस देखने नहीं जाता था, क्योंकि मैं सट्टेबाजी में विश्वास नहीं करता था, लेकिन शहर में हर कोई उन वर्षों में उनके कारनामों के बारे में बात करता था। उनकी शादी बहुत कम उम्र में हो गई थी और वे इंग्लैंड चले गए थे।
जब से मैं स्कूल में था, हर उम्र की औरतें मेरी तरफ आकर्षित होती रही हैं। मुझे नहीं लगता कि मैं कभी मीठी-मीठी बातें करने वाला या लुभावनी अदाओं वाला था। मुझे बताया गया है कि मैं सुंदर दिखता था, और मुझे लगता है कि जिन औरतों के साथ मैंने डेट की, वे भी मेरी ही तरह सतही थीं। मुझे कभी किसी को रिझाने या मनाने की ज़रूरत नहीं पड़ी, खासकर अपने बचपन में, और एक तरह से

कह सकते हैं कि मेरे पास बहुत सारे विकल्प थे। किसी औरत के साथ मेरा पहला अनुभव तब हुआ जब मैं पंद्रह साल का था और अभी भी स्कूल में पढ़ रहा था, और वह लगभग पच्चीस साल की थी। इसने आने वाले दशकों तक अनौपचारिक मुलाकातों का सिलसिला शुरू कर दिया। यह अविश्वसनीय था कि कितनी सारी औरतें अनौपचारिक यौन संबंध के लिए तैयार थीं, और उन्होंने मेरी यौन इच्छाओं को पूरा किया और मेरे अहंकार को बहुत बढ़ा दिया। अगर मैं जंगलों में नहीं होता, तो हर शुक्रवार रात को मैं ड्राइव-इन थिएटर में होता था। औरतों की संख्या कल्पना से परे थी, और हालांकि उनमें से ज्यादातर अब इस दुनिया में नहीं हैं, जो आज जीवित हैं वे इस ग्रह के दूर-दराज के इलाकों में रहती हैं, ऑस्ट्रेलिया, यूके, अमेरिका में, और निश्चित रूप से कुछ मेरे घर के बहुत करीब, बैंगलोर में भी हैं। जैसे-जैसे साल बीतते गए, मुझे यकीन होता गया कि मैं कभी एक लड़की के साथ स्थिर नहीं हो पाऊंगा, क्योंकि भटकने का प्रलोभन तो लगातार बना ही रहता था, साथ ही उस प्रलोभन को पूरा करने के अवसर भी मिलते रहते थे। एक समय तो मुझे इस बात का भी अफसोस हुआ कि मुझे भारतीय प्रथा के अनुसार अरेंज मैरिज करने का मौका नहीं मिला; शायद तब मेरी शादी हो जाती। उनकी तारीफ करनी होगी कि जिन महिलाओं के साथ मेरे संबंध थे, उनमें से कई में शादी की अच्छी संभावनाएं थीं, लेकिन मैं कभी भी जीवन भर एक ही महिला के साथ रहने की कल्पना भी नहीं कर पाया। अपनी जवानी के बीसवें दशक में मैं एक समय में दो या तीन महिलाओं के साथ डेटिंग करता था और जो भी मुझसे जरूरत से ज्यादा ध्यान और समय चाहती थी, उसे मैं धीरे-धीरे अपनी योजना से बाहर कर देता था। मैंने कभी बच्चे पैदा करने के बारे में नहीं सोचा, क्योंकि मैं जानता था कि मैं उन्हें वह ध्यान कभी नहीं दे पाऊंगा जिसकी उन्हें जरूरत है। मैं जानता था कि अक्सर मुझे अपनी पत्नी और बच्चों और जंगलों के बीच चुनाव करना होगा, और यह मेरे लिए हर बार एक दर्दनाक लेकिन आसान फैसला होगा। मुझे अपने किए पर गर्व नहीं है, लेकिन मुझे शर्म भी नहीं है। मैंने यही जीवन जीने का चुनाव किया था, और मुझे लगता है कि अपने अंतिम वर्षों में मैं जिस पीड़ा से गुजर रहा हूं, उसका कुछ संबंध मेरी युवावस्था में दूसरों को पहुंचाए गए दर्द से है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बेहतर जानकार साथी है लंगूर, जो अपनी कर्कश आवाज़ से अपनी उत्तेजना को हमेशा ज़ाहिर करता है। मोर और जंगली मुर्गे जैसे पक्षी कम भरोसेमंद होते हैं क्योंकि वे नेवले के लिए भी खतरे की घंटी बजा देते हैं, लेकिन हर आवाज़ अमूल्य संकेत होती है। ये आवाज़ें आपको रोमांचित कर सकती हैं, लेकिन उस रोमांच की कोई तुलना नहीं जो किसी जानवर को, चाहे वह कोई भी जानवर हो, अपने पास आते देखकर उमड़ता है। बेशक, अगर वह बाघ, तेंदुआ या हाथी हो, तो आपका एड्रेनालिन चरम पर पहुंच जाएगा, लेकिन अगर कोई जंगली सूअर भी, भोजन की तलाश में गुर्राता और बड़बड़ाता हुआ, आपके पेड़ के ठीक नीचे आ जाए, तो यह एक बेहद रोमांचक अनुभव होगा। हवा में एक जादू है, और जिन्होंने इसे कभी अनुभव नहीं किया है, मैं उनसे कहूंगा कि यह एक ऐसा नुकसान है जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती। यह कहना भी अनुचित होगा कि जंगल में रुचि का एकमात्र स्रोत जानवर ही हैं। ऐसा बिलकुल नहीं है। सैकड़ों साल पुराने पेड़, कुछ अभी भी खड़े हैं, जबकि कुछ जंगल की ज़मीन पर गिर चुके हैं। लताएँ और परजीवी लताएँ जो आपस में लिपटी हुई हैं, झाड़ियों और पौधों पर उगने वाले जंगली फूल, अंजीर जैसे फलदार पेड़ जो शाकाहारी जानवरों को भोजन प्रदान करते हैं। सूखी नदी की घाटियाँ और रेतीले नाले, चट्टानी कगार और गहरी गुफाएँ, सुनसान जलकुंड और हरे-भरे जंगल के तालाब। ये सभी उस रहस्य और रोमांच का हिस्सा हैं जो आपको पैदल यात्रा के दौरान देखने को मिलते हैं, और कोई भी दो दिन एक जैसे नहीं हो सकते, यहाँ तक कि एक ही जानवर के साथ आपका अनुभव भी अलग हो सकता है। भारत में शिकार करने का सौभाग्य प्राप्त कर चुके कई लोग इस बात से सहमत होंगे कि यह खेल दुनिया के सबसे रोमांचक और आनंददायक खेलों में से एक है। हालांकि, ज्यादातर लोगों की सोच के विपरीत, जंगलों में मेरी यात्राएँ हमेशा शिकार के लिए नहीं होती थीं। एक छोटे लड़के के रूप में, जो शक्तिशाली बंदूक चलाने में माहिर था, मुझे अभी भी उन यात्राओं का आनंद आता था जहाँ मैं वन्यजीवों को निहारता था। कई बार मैं अपनी साइकिल से देवराबेट्टा तक जाता, उसे विश्राम गृह में छोड़ देता और रात भर तीन जलकुंडों में से किसी एक पर बैठकर एकांत का आनंद लेता और प्रकृति की सुंदरता को निहारता। विश्राम गृह गाँव से काफी दूर था, इसलिए मेरे पास पैक किया हुआ खाना ले जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था - आमतौर पर विंदालू और चपाती जो दो दिन चलती थी, और मैं बस यही खाता था। उन दिनों मक्खन डिब्बों में मिलता था,

□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□!

□□□□□□□□□ □□□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□, □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ - □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□, □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□, □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ "□□□□□□ □□□□" □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □ □□ □□□□□ □□□□ □□□, □ □□ □□□□, □ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□, □□ □ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□, □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□, □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□: □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□

लेकिन इससे मेरे किए की सज़ा माफ नहीं हो जाती, क्योंकि मैं मानता हूँ कि लाइसेंस के साथ और बिना लाइसेंस के शिकार करने में सिर्फ एक कागज़ का टुकड़ा और मारे गए जानवरों की संख्या का अंतर होता है।
हालांकि मुझे कभी कोई गंभीर चोट नहीं लगी, लेकिन मेरे साथियों के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। आइए, मैं आपको 70 के दशक के उत्तरार्ध में बांदीपुर में घटी एक ऐसी ही दुर्भाग्यपूर्ण घटना सुनाता हूँ। स्कूल का मेरा एक दोस्त ऑस्ट्रेलिया से लौटा था और मैं उसे जंगल ले जाना चाहता था, क्योंकि वह कुछ तस्वीरें खींचना चाहता था। वह मोटरसाइकिल से यात्रा करने का इच्छुक नहीं था, इसलिए हमने टैक्सी किराए पर लेने का फैसला किया। हम तीनों को ही जाना था, लेकिन जब ड्राइवर हमें लेने आया, तो हमने देखा कि एक और व्यक्ति हमारे साथ है। ड्राइवर ने हमसे विनती की कि हम उसके दोस्त को भी साथ ले चलें, क्योंकि जंगल से होकर जाने की बात सुनकर उसकी हिम्मत जवाब दे गई थी। मैं तो जाना नहीं चाहता था, लेकिन फिर भी मैंने उस बिन बुलाए मेहमान को अपने साथ आने दिया। उस शाम, जब हम घूम-घूम कर तस्वीरें खींच चुके थे, तो हम उस जगह पहुँचे जहाँ हमने ठहरने की व्यवस्था की थी और कुछ खाने का मन बनाया। ड्राइवर और उसका दोस्त बीड़ी पीना चाहते थे, इसलिए हम ऊटी-मैसूर मुख्य सड़क के किनारे एक छोटी सी चाय की दुकान पर रुक गए। काफी रात हो चुकी थी, और शायद हम उस छोटी सी चाय की दुकान पर आखिरी ग्राहक थे, जो सिर्फ एक पेट्रोमैक्स लालटेन से रोशन थी। आखिरी बीड़ी बुझ चुकी थी और हमने चाय खत्म कर ली थी। हम कार की तरफ वापस जा रहे थे, तभी अचानक एक तेज आवाज आई और हमने देखा कि एक हाथी सीधे हमारी तरफ दौड़ रहा है, लगभग चाय की दुकान के पीछे से। मेरा दोस्त और मैं पहले ही कुछ दूरी पर थे और हमें आगे निकलने का मौका मिल गया था। हम अलग-अलग दिशाओं में भागे और दूर दिख रही इमारतों की तरफ चल दिए। ड्राइवर हमारी एम्बेसडर कार के पास से भागा और इमारतों से दूर चला गया, शायद यह सोचकर कि घोर अंधेरे में हाथी उसे देख नहीं पाएगा। दुर्भाग्य से, उसके साथी ने सोचा कि सबसे सुरक्षित जगह कार के अंदर है, और अंदर पहुँचकर उसने दरवाजे खोलने की कोशिश की। किस्मत की बात यह थी कि पूरी यात्रा के दौरान हमने सिर्फ एक बार कार लॉक की थी, और दरवाजा खोलने की कोशिश में लगे पाँच-दस सेकंड ने ही सब कुछ बदल दिया। हमने कुछ देखा या सुना नहीं, लेकिन जब हम सब इकट्ठा हुए, तो हमने पाया कि बेचारा हाथी मारा जा चुका था। शायद हाथी ने उसे अपनी सूंड से ज़ोरदार प्रहार किया था, क्योंकि

उसका बेजान शरीर कार से कुछ ही फीट दूर पड़ा था। हम उसे गुंडुलपेट के एक अस्पताल ले गए, जहाँ उसे मृत घोषित कर दिया गया। यह घटना और कुछ अन्य घटनाएँ जिनका मैं आगे उल्लेख करूँगा, इस बात का प्रमाण हैं कि जंगल में जोखिम उठाना हमेशा जानलेवा हो सकता है।
जब आप जंगल में हों, तो हमेशा तैयार रहना ही समझदारी है। अनुभव से बेहतर कोई नहीं सिखा सकता, लेकिन जो लोग पहले वहां जा चुके हैं, उनके सुझावों पर ध्यान देना बहुत फायदेमंद होता है। आमतौर पर, जब आप लगभग घोर अंधेरे में किसी शिकार के पास बैठे होते हैं, तो बाघ या तेंदुआ के आने की आहट सुनना लगभग नामुमकिन होता है। अपने बड़े आकार के बावजूद, वे बहुत सावधानी से चलते हैं और अपने शिकार के पास जाने से कतराते हैं, खासकर आदमखोर और उन शिकारों के पास जिन पर पहले गोली चलाई जा चुकी हो। जब बिल्ली जैसा जानवर खाना शुरू करता है, तभी हड्डियों के चबाने की आवाज़ उनकी मौजूदगी का संकेत देती है। चारों ओर घना अंधेरा होता है और टॉर्च जलाने तक आपको पता नहीं चलता कि वह किस तरफ मुंह किए हुए है। बेहतर यही है कि उसके शरीर के खास हिस्सों पर निशाना लगाएं, इसलिए उसकी दिशा, चाहे वह आपसे दूर हो या आपकी तरफ, बहुत मायने रखती है। आपको हिम्मत चाहिए और तैयार रहना चाहिए क्योंकि आपके पास सिर्फ एक ही मौका होता है। आपको उसकी स्थिति देखनी है, बंदूक उठानी है, निशाना लगाना है, सांस छोड़नी है और गोली चलानी है। यदि आप पहले प्रयास में उसे गिरा नहीं पाते हैं, और यदि उसने आपको नहीं देखा है, तो जानवर उसी दिशा में भागेगा जिस दिशा में गोली चलने के समय उसका मुख था। इसलिए, यदि आप समतल भूमि पर हैं, और किसी भी परिस्थिति में वह प्राणी आपकी ओर मुख किए हुए है, तो समझ लीजिए कि आपकी जान खतरे में है, क्योंकि पलक झपकते ही वह आप पर हमला कर देगा।
मैं बड़े जानवरों के शिकार को लोगों की रक्षा के लिए किए गए किसी प्रकार के कार्य के रूप में सही नहीं ठहराऊंगा, लेकिन सच्चाई यह है कि उन दिनों बाघों, तेंदुओं और जंगली कुत्तों को हानिकारक जीव माना जाता था और उन्हें मारने वाले शिकारियों को इनाम मिलता था। भालू और जंगली सूअर को शिकार के लायक नहीं समझा जाता था और उन्हें मारना किसी को खास रुचिकर नहीं लगता था। हैरानी की बात है कि हाथियों को 1873 से संरक्षित किया गया है, और जब तक उन्हें अपराधी घोषित न किया जाए, उन्हें मारने पर गंभीर अपराध का सामना करना पड़ता था। मैं नीति पर कोई राय नहीं दूंगा, लेकिन यह सच है कि मेरे

जैसे शिकारी वन विभाग द्वारा निर्धारित सख्त नियमों के आधार पर शिकार करते थे, हालांकि हम अपने किए गए कार्यों के लिए अपनी अंतरात्मा पर सवाल उठा सकते हैं।
आजकल जंगल की सैर का मतलब है कारों और जीपों की सुरक्षा में बैठकर ही सब कुछ करना, और मैं सिर्फ पर्यटकों की बात नहीं कर रहा, बल्कि वन विभाग में काम करने वालों की भी। मुझे वो समय याद है जब विभाग के अधिकारी या तो घोड़े पर सवार होकर जाते थे या अपने अधिकार क्षेत्र में पैदल चलते थे। इसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है, लेकिन पुराने लोगों की तरह मैं भी कह सकता हूँ कि जंगल और उसके निवासियों से गहरा जुड़ाव पैदल चलकर ही महसूस किया जा सकता है। चांदनी रात में पैदल चलने की कल्पना कीजिए - आपकी इंद्रियां इतनी तेज हो जाती हैं कि हर झींगुर की आवाज या टहनी का टूटना भी कुछ संकेत देता है। मनुष्य की कोई भी इंद्रिय जानवरों की इंद्रियों से श्रेष्ठ नहीं है, लेकिन एक छोटी दो सेल वाली टॉर्च, हल्के रबर के जूते और संकेतों पर ध्यान देने से एक रोमांचक अनुभव सुनिश्चित होता है। जब हम जंगलों में जाते थे, तो हमारी पहली पसंद वन विश्राम गृहों में रुकना होता था। इन्हें अंग्रेजों ने दक्षिण भारत के सभी राज्यों में बेहद खूबसूरत जगहों पर बनवाया था, और हालांकि अनुमति लेने के लिए काफी कागजी कार्रवाई करनी पड़ती थी, लेकिन यह हमेशा प्रयास के लायक होता था। इनमें से कई आज भी खड़े हैं, जैसे नीलगिरी में अन्नाइकट्टी, लेकिन अन्य खंडहर में तब्दील हो चुके हैं - उदाहरण के लिए गुलहट्टी का। जो बचे हैं, वे अपनी पुरानी स्थिति से काफी बेहतर हैं, क्योंकि उस समय वे बहुत ही साधारण थे। सूखी घास से ढकी छप्पर की छतें शाम ढलते ही चूहों और अन्य जीवों से भर जाती थीं, जो पूरी रात इधर-उधर घूमते, चीखते और इतना शोर मचाते थे कि अगर कोई इसका आदी न हो, तो उसे सोना बहुत मुश्किल हो जाता था। चूहों की मौजूदगी सांपों को आकर्षित करती थी, जो उनका पीछा करते हुए छत पर आ जाते थे, और यह एक अलग ही कहानी है। हमारे पास एकमात्र उपाय यही था कि पूरी रात बत्ती जलाकर रखें और कानों में रुई ठूंस लें ताकि कुछ भी अंदर न जाए।

होगेनिकल फॉरेस्ट बंगलो। 1939

मैं बचपन से ही अपने पिता के साथ जंगलों में जाया करता था, और उन यात्राओं की कुछ यादें मेरे मन में आज भी ताज़ा हैं। सन् 1947 में, जिस साल भारत को स्वतंत्रता मिली, मैंने अपना पहला पैंथर मारा था। मैं लगभग दस साल की उम्र से अपनी बहन जून के साथ जावलगिरी जाया करता था, और तेरह साल की उम्र तक मैं अकेले ही जाने लगा था। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो आश्चर्य होता है कि मेरे माता-पिता ने मुझे कितनी आज़ादी दी थी, लेकिन उस समय दुनिया कहीं ज़्यादा सुरक्षित थी। मैंने अपनी शॉटगन से काफ़ी अभ्यास कर लिया था और मुझे लगा कि अब वो समय आ गया है जब मैं पैंथर का शिकार कर सकूँगा। जावलगिरी मेरे लिए जाना-पहचाना इलाका था और मैं वहाँ "स्पॉट्स" का शिकार करने के पक्के इरादे से साइकिल से गया। हालाँकि मेरे परिवार को पता था कि मैं अपनी शॉटगन साथ रखता हूँ, लेकिन उनके मन में यही था कि यह किसी मुश्किल परिस्थिति में मेरी सुरक्षा के लिए है। मैं अपने से बड़े दोस्त कॉलिन बोन के साथ कुछ घंटों तक साइकिल चलाता रहा, और बेहद खुश था, क्योंकि मेरे पिता ने मुझे शिकार पर जाने की अनुमति दे दी थी। कॉलिन को शिकार में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन मेरी बंदूक ने उसे आत्मविश्वास दिया और उसने कहा कि वह इस रोमांच में मेरे साथ चलेगा। उन दिनों पैंथर इतने आम थे कि थोड़ी ही देर में मुझे एक पैंथर की आवाज़ सुनाई दी। दोपहर ढल रही थी और आवाज़ लगातार आ रही थी। मैंने उस

मैं अपने रुख पर अड़ा रहूंगा।

चलिए, इसके बाद मैं आपको गजनोर गाँव के पास कई वर्षों बाद मारे गए पहले आदमखोर बाघ की कहानी सुनाता हूँ। उन दिनों भी उब्रानी और गजनोर के बीच का इलाका घने जंगलों से भरा नहीं था, बल्कि बंजर भूमि थी जहाँ बौने बांस, खजूर के पेड़ और कांटेदार वृक्ष ही थे। गाँव बहुत कम और दूर-दूर थे और ज्यादातर उस नदी के किनारे बसे थे जो इस क्षेत्र से होकर बहती थी। मैसूर सरकार ने एक अधिसूचना जारी की थी और लाइसेंस प्राप्त शिकारियों को एक आदमखोर बाघ को मारने के लिए इनाम की घोषणा की थी, जो एक बड़ा खतरा बन गया था। ऐसा माना जाता था कि वह बाघ बहुत चालाक था और उसने अपने दो साथियों को गलती से गोली मारकर शिकारियों से बच निकला था। उसका तरीका था चित्रालदुर्ग और शिमोगा शहर के बीच राजमार्ग पर यात्रियों को अगवा करना। बाघ में कभी भी बैलगाड़ी पर हमला करने की हिम्मत नहीं थी, लेकिन वह हमेशा यात्रा के दौरान रुकने वाले लोगों के समूहों पर चुपके से हमला कर देता था। बेशक, कहानियाँ बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई थीं और जल्द ही यह माना जाने लगा कि वह बैलगाड़ियों पर कूदकर शिकार को उठा ले जाता है। नतीजतन, उस सड़क पर शाम से सुबह तक सारा यातायात ठप्प हो जाता था। हर बार जब वह शिकार करता, तो बैलों को छोड़कर केवल इंसानों को ही उठाता, जो एक डरावना दृश्य था, क्योंकि कम से कम जोखिम पर वह बंधे हुए बैल को भी मार सकता था जिससे उसे बड़ा भोजन मिल जाता। इसके बजाय, उसने इंसानों को चुना, जिससे वह मानव मांस का पारखी बन गया, और मैं

सोच रहा था कि मैं इसे कैसे प्राप्त करूँगा, यह देखते हुए कि मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया था। लंबे समय तक अछूते रहने के कारण बाघ में इतना आत्मविश्वास आ गया था कि वह कभी-कभार कुछ गाँवों में भी हमला कर देता था, कभी-कभी तो रात होने का भी इंतजार नहीं करता था। एक शाम मैं गजनोर से लगभग दस मील दूर यात्रियों के बंगले पर पहुँचा। बंगले के चारों ओर कई मील तक खुला मैदान था, जंगल लगभग चार मील पश्चिम में शुरू होता था जहाँ सड़क एक प्रकार के घाट से नीचे उतरकर भद्रा नदी की ओर जाने वाली घाटी में जाती थी। कहा जाता था कि आदमखोर बाघ अक्सर इसी जगह पर आता-जाता था। मैं चारा लगाकर बाघ के आने की उम्मीद नहीं कर सकता था, और मुझे यह भी पता था कि बाघ को मांस पसंद होने के कारण यह व्यर्थ ही होगा। मैं किसी और निर्दोष बाघ को मारना नहीं चाहता था जो शायद लालच में आ जाता। दो रातों तक मैं संभावित स्थानों पर मचान लगाकर बैठा रहा, फिर भी मुझे कोई बाघ नहीं दिखा। जब मैं गजनोर में था, तो मैं उब्रानी में आदमखोर बाघ के कारनामों के बारे में सुनता था, और जब मैं कुछ दिनों बाद वहाँ जाता था, तब भी मुझे वह कभी नहीं दिखा। यह निराशाजनक था। मैंने एक सप्ताह की छुट्टी ली थी, और वहाँ मेरा समय समाप्त होने वाला था। शुक्रवार की सुबह, जो भाग्य अब तक मेरा साथ नहीं दे रहा था, वह बदल गया। दुर्भाग्य से, इसने एक युवक की जान ले ली, जिसे उस खेत से ले जाया गया जहाँ वह काम कर रहा था। अगर मैं दुखी परिजनों को शव को वहीं छोड़ने के लिए मना लेता, तो शायद मुझे आदमखोर बाघ के अपना भोजन पूरा करने के लिए लौटने पर एक मौका मिल जाता। हालांकि, मैं इस गांव में किसी को नहीं जानता था, और मैं उनसे लाश को चारा के रूप में छोड़ने के लिए कहने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। फिर भी, मैंने उस आदमी की मौत का बदला लेने की कसम खाई थी और इसके लिए मैं दिमाग खपा रहा था। ज़ाहिर है, आदमखोर बाघ वापस आएगा, लेकिन उसे कब पता चलेगा कि लाश हटा दी गई है? क्या वह इतना करीब आएगा कि मुझे गोली चलाने का मौका मिले? बहुत सोचने-विचारने के बाद, मुझे एक ही उपाय सूझा - एक बकरी का मांस (सबसे सस्ता विकल्प) लेना और उसे कपड़ों में लपेटना, इस उम्मीद में कि इससे कम से कम बाघ शिकार के पास आने के लिए मजबूर हो जाएगा। इंसानी मांस के प्रति उसकी पसंद को देखते हुए, पहला निवाला शायद उसका राज़ खोल देगा, लेकिन फिर, मुझे उम्मीद थी कि मुझे उसे अपनी नज़र में लाने और उसे करारा जवाब देने के लिए पर्याप्त समय मिल जाएगा। मेरे इस विचार पर इतना संदेह जताया गया कि कुछ बड़े-बुजुर्ग हंसने लगे। “येजमानरे,

लोगों की मदद से मैंने एक मचान खड़ा कर दिया। वहाँ कोई शव नहीं था, और मेरे पास आदमखोर बाघ की भूख मिटाने के लिए भैंस लाने के अलावा कोई चारा नहीं था, और मैंने फिर से उम्मीद की कि वह इस बदलाव से ज़्यादा परेशान नहीं होगा। मचान एक छोटी चारपाई (रस्सी से बंधी एक पारंपरिक चारपाई) थी जिसे पेड़ की शाखाओं से मज़बूती से बांधा गया था और चारों ओर टहनियों की आड़ में रखा गया था, जबकि मेरे नीचे वह बदकिस्मत गाय उस जगह पर थी जहाँ जंगल के दो रास्ते मिलते थे। जल्द ही, दिन की आखिरी किरणें गायब हो गईं, और जैसे ही चाँद धरती से निकला, उसकी धुंधली परछाइयाँ दिखने लगीं, जिससे परछाइयों के बीच रेतीली सड़क धुंधली सी साफ़ दिखाई देने लगी। ठंड बढ़ने लगी और साथ ही सन्नाटा छाने लगा, जंगल के पक्षी आराम करने चले गए थे। दूर से मुझे गाँव के कुत्तों के भौंकने की हल्की आवाज़ सुनाई दे रही थी, और पेड़ों पर झींगुरों की आवाज़ के अलावा कोई और आवाज़ नहीं थी। जल्द ही इतना अंधेरा हो गया कि मैंने रात भर अपनी सुनने की शक्ति पर निर्भर रहने का मन बना लिया, न कि देखने की शक्ति पर। न तो मुझमें मेरे पिताजी जैसा धैर्य है और न ही रात भर जागने की उनकी क्षमता, और सुनने में भले ही अजीब लगे, लेकिन थोड़ी देर बाद मुझे नींद आ गई। मैं अचानक जाग उठा - पूरब से आती एक दूर की दहाड़ ने मुझे जगा दिया था। मैंने अपनी राइफल पकड़ी, लेकिन सन्नाटा था, और फिर मुझे वह आवाज़ दोबारा सुनाई दी, इस बार एक अलग और कुछ नज़दीकी जगह से, और फिर से, बाघ के टेढ़े-मेढ़े रास्ते का संकेत देते हुए। मुझे उम्मीद थी कि वह किसी भी रास्ते पर आएगा और अपने अधूरे शिकार की तलाश करेगा। आखिरी आवाज़ से लग रहा था कि वह अभी भी एक फर्लांग दूर है, इसलिए मैंने जोखिम उठाया और भैंस पर टॉर्च की रोशनी डाली और पाया कि वह गहरी नींद में सो रही थी! उसने गर्जना नहीं सुनी थी, इसलिए या तो वह गहरी नींद में सो रहा था या फिर उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, और दोनों ही बातें मुझे रास नहीं आती थीं। मैं चाहता था कि वह खुद को प्रकट कर दे, इसलिए मैंने एक गैर-खेल भावना वाला तरीका अपनाया और उस पर अपने कुछ कारतूस फेंके, इस उम्मीद में कि वह जाग जाएगा। मैं भैंसों को अच्छी तरह नहीं समझता, लेकिन उसकी धीमी सी गुर्राहट मानो कह रही हो, "जाओ वापस सो जाओ, दो टांगों वाले मूर्ख।" ये उसके आखिरी शब्द थे, क्योंकि शायद इसी से उसकी मौजूदगी का पता चल गया और एक मिनट से भी कम समय में बाघ के दौड़ने की आवाज़ आई और फिर, लगभग पूरी खामोशी में, उसने भैंस को मार डाला। मुझे बस उसके पैरों के लात मारने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, पहले तो बहुत

ज़ोर से, फिर धीरे-धीरे कमज़ोर होती गई और अंत में पूरी तरह रुक गई। अभी दिन नहीं निकला था, और मेरी घड़ी में 5:10 बज रहे थे। कुछ मिनटों तक स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ और फिर मैंने जंगल की ज़मीन पर एक भारी शरीर के घिसटने की स्पष्ट आवाज़ सुनी। पेड़ों के नीचे वह मेरी नज़रों से छिपा रहता, और अगर वह शव को दूसरी दिशा में घसीटता तो शायद जंगल में वापस चला जाता, लेकिन हल्के रंग की मिट्टी की सड़क पर कोई छाया नहीं थी, और भोर की रोशनी ने मुझे बाघ की परछाईं बनाने का एक छोटा सा मौका दिया, और मैंने वह मौका नहीं गंवाया। मेरे सटीक निशाने ने उसे मौके पर ही मार गिराया, और जल्द ही, सुबह के शानदार सूरज ने मेरे पहले आदमखोर बाघ और मुझे कोमल रोशनी में नहला दिया और एक अविस्मरणीय स्मृति बना दी।

एक आदमखोर का अंत

मेरे पिताजी के विपरीत, मैं भूतों या अलौकिक शक्तियों में विश्वास नहीं करता। हालाँकि, जंगलों में कुछ ऐसे मौके आए हैं जब मेरे इस पक्के विश्वास पर सवाल उठे हैं। मैं थाली नामक एक छोटे से गाँव (जिसे अंग्रेज़ 'छोटा इंग्लैंड' कहते थे) में अक्सर जाता था ताकि उस पैंथर से छुटकारा पा सकूँ जिसने ग्रामीणों पर हमला करना शुरू कर दिया था। उसने पहले बकरियों को मारना शुरू किया था, लेकिन धीरे-धीरे उसका इंसानों से डर खत्म हो गया और वह अपने दाँत दिखाने से लेकर चरवाहों पर कूदने तक, बहुत तेज़ी से हिंसक होता चला गया। मुझे पता था कि जो होना है वो होकर रहेगा और मैं उसे रोकना चाहता

था। मैं एक महीने से ज़्यादा समय तक हर सप्ताहांत वहाँ जाता रहा ताकि उससे छुटकारा पा सकूँ, लेकिन मुझे कोई सफलता नहीं मिली। मेरे पक्ष में जो बात काम आई, वह यह थी कि थाली बैंगलोर के बहुत करीब है और मैं जितनी बार चाहूँ वहाँ जा सकता था। जल्द ही गर्मी का मौसम अपने चरम पर था और थाली झील का अधिकांश भाग सूखा पड़ा था। मुझे पता था कि सूर्यास्त के बाद पैंथर अपनी प्यास बुझाने के लिए यहीं आएगा। चूंकि मैं किसी चारागाह पर नहीं बैठा था, इसलिए पैंथर के मेरे सामने आने का कोई कारण नहीं था, और इसलिए मुझे कुछ और सोचना पड़ा। मुझे ऐसी जगह पर होना था जहाँ से मैं पानी के गड्ढे को चारों ओर से देख सकूँ, और इसका एकमात्र तरीका, चाहे वह कितना भी मूर्खतापूर्ण क्यों न हो, पानी के गड्ढे के ठीक बगल में बैठना था। यह एक बहुत बड़ा जोखिम था, यह जानते हुए कि यह पैंथर इंसानों से नहीं डरता, लेकिन मैं जवान और नासमझ था, इसलिए मैंने कुछ ग्रामीणों से रेत में एक गड्ढा खोदने को कहा, जो मेरे बैठने के लिए काफी गहरा हो, लेकिन इतना गहरा हो कि मेरी बंदूक बिना अपनी जगह से उठे बाहर निकल सके। मैं गड्ढे में घुस गया और उनसे उसे कुछ टहनियों और घास से ढकने को कहा। यह सोचते हुए कि मुझे पूरी रात उसमें बैठना था और पैंथर के दूसरी दिशा से आने की स्थिति में हिलने-डुलने की जगह भी चाहिए थी, मैंने उनसे कुछ बदलाव करवाए जब तक कि मैं पूरी तरह तैयार नहीं हो गया। वे दोनों बड़बड़ाते हुए चले गए कि वे अब कभी भी दोराई को नहीं देखेंगे, जिससे निश्चित रूप से मेरा आत्मविश्वास कम हो गया। सूरज ढलते ही आसमान गुलाबी और बैंगनी रंग के कई शेड्स में रंग गया, और जल्द ही रात के पक्षी चहचहाने लगे। मुझे एहसास हुआ कि यह रात मुश्किल भरी होने वाली है, क्योंकि रेत की गर्मी से मेरा जागना बेहद असहज हो रहा था और पेड़ पर मचान की तरह मुझे कभी-कभार चलने वाली हवा से भी कोई राहत नहीं मिल रही थी। यकीन मानिए, इतनी असुविधा के बावजूद मैं सो गया। तभी एक अजीब घटना घटी। मुझे लगा जैसे कोई जाना-पहचाना व्यक्ति मुझे खतरे की चेतावनी दे रहा हो। यह सपने जैसा नहीं था, बल्कि मानो सचमुच हो रहा हो। "ऊपर देखो! ऊपर देखो!" बार-बार यही आवाज़ आ रही थी। मैं चौंककर जाग गया, लेकिन मैंने ध्यान रखा कि कोई आवाज़ न निकले। मैं पसीने से तरबतर और थका हुआ वहीं बैठा रहा। मैं उस पल को कभी नहीं भूलूंगा जब मेरी आँखें आसपास के वातावरण से अभ्यस्त हुईं और मैंने देखा कि एक घात लगाकर बैठा पैंथर मेरी छुपने की जगह से पंद्रह गज से भी कम दूरी पर घूर रहा है। मैंने एक ही गोली से पैंथर को मार गिराया, लेकिन

मुझे समझ नहीं आ रहा कि किसने या किस चीज़ ने मुझे चेतावनी दी और मुझे जगाया, वरना मैं अपनी कहानी सुनाने के लिए ज़िंदा ही नहीं रहता।

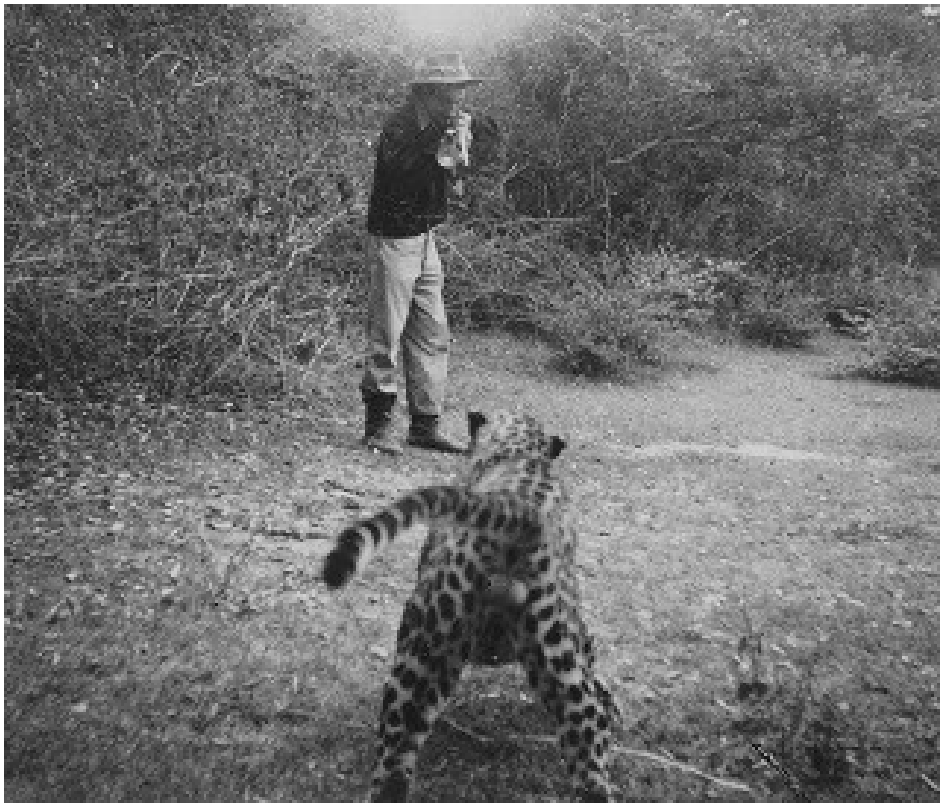

अंतिम प्रहार

वैसे तो मैं हमेशा घायल जानवर की मदद करता हूँ और उसे उसकी पीड़ा से मुक्ति दिलाता हूँ, लेकिन एक घटना ऐसी थी जो मैंने नहीं की। मुझे मद्रास सरकार से सूचना मिली थी कि कोडकराई के पास एक उत्पात मचाने वाले हाथी ने काफी नुकसान पहुँचाया है। होसुर के अधीक्षक को मैं जानता था, और उन्होंने मुझे उस जानवर को भगाने के लिए टेलीग्राम भेजा। मेरे पास केवल सप्ताहांत का समय था, क्योंकि सोमवार सुबह मुझे अपनी फैक्ट्री से कुछ विदेशियों के आने की उम्मीद थी। मुझे पूरा भरोसा था कि मैं सप्ताहांत में ही उसे पकड़ लूँगा, क्योंकि हाथी बाघों या तेंदुओं की तरह आसानी से नहीं मिलते। मैं शुक्रवार शाम को गेरहेट्टी के लिए रवाना हुआ और बंगले पर पहुँचा। मैं इतना बेचैन था कि पूरी रात करवटें बदलता रहा। आखिरकार, सुबह हुई और मैं उठकर बचे हुए सैंडविच और ताज़ी बनी कॉफी के साथ जल्दी से नाश्ता करने के लिए तैयार हो गया। मेरा साथी बंगले के बरामदे में मेरा इंतज़ार कर रहा था, और थोड़ी

बातचीत के बाद हम चल पड़े। सूरज क्षितिज को धीरे से चूम रहा था, और हमारा रास्ता धीरे-धीरे उठते कोहरे से ढका हुआ था जो दूर स्थित ऊँची चट्टानों के साथ लुका-छिपी खेल रहा था। जल्द ही, गुलाबी पूर्वी आकाश धूसर हो गया और फिर सूरज हमारे ऊपर एक चकाचौंध भरी सफेद आग के गोले की तरह उग उठा, जिससे चलना मुश्किल हो गया। लगभग पाँच मील चलने के बाद, हम खेती की एक छोटी सी ज़मीन पर पहुँचे जहाँ हाथी की कलाकारी स्पष्ट थी। फसलें पूरी तरह से बर्बाद हो चुकी थीं और नरम मिट्टी में उसके ताज़े पदचिह्न बिखरे हुए थे। ऐसा लग रहा था कि जानवर को कोई खास जल्दी नहीं थी या उसका कोई खास इरादा नहीं था, क्योंकि पदचिह्न एक-दूसरे को काटते हुए जा रहे थे। अब असहनीय गर्मी थी, और मुझे अपनी प्यास बुझाने के लिए बार-बार रुकना पड़ रहा था, लेकिन मेरा अनुयायी मौसम की परवाह किए बिना लग रहा था। मुझे एहसास हुआ कि हम हाथी की ही गति से चल रहे थे, क्योंकि पदचिह्न और गोबर उतने ही ताज़े थे जितने कि शुरुआत में थे। हम लगभग तीन बजे रुके और बाँस के झुंड की छाया में अपना दोपहर का भोजन किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि हमारे साथ कोई और न हो। हमें पता था कि गर्मी के कारण उसकी गति धीमी हो जाएगी, और हालाँकि उस हाथी को इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उसका पीछा किया जा रहा है, फिर भी हमें सावधान रहना था। अचानक मेरे साथी ने हाथ से इशारा किया और उकड़ू बैठ गया, और मैं जम गया। धीरे-धीरे मैं उसके करीब पहुँचा और मुझे एक शानदार नज़ारा देखने को मिला। एक बड़े पेड़ की छाया में, लगभग स्थिर खड़ा, सिवाय कभी-कभार अपने विशाल कान को फड़फड़ाने के, वह हाथी था। उसके दाँत छोटे थे, लेकिन काफी मोटे थे, और मैंने अंदाज़ा लगाया कि वह एक जवान नर हाथी था। मैं थका हुआ था, लेकिन एड्रेनालाईन के कारण मैं काँप रहा था। इसलिए, मैं लगभग पाँच मिनट तक स्थिर बैठा रहा, यह सुनिश्चित करते हुए कि हवा उसके पक्ष में न बह रही हो। वह हाथी काफी दूर था, लेकिन उससे लगभग तीस गज की दूरी पर एक छोटी झाड़ी थी और मैंने उसी पर अपनी नज़रें जमा लीं। अगर मैं बिना किसी को पता चले उस जगह तक पहुँच जाता, तो उसे मार गिराने का अच्छा मौका था। मैं पेट के बल रेंगता हुआ, एक-एक इंच करके आगे बढ़ा। बहुत गर्मी थी और जलती हुई रेत ने मुझे बेहद असहज बना दिया था। मैं उस झाड़ी तक पहुँचा, जहाँ पूरी तरह से छिपा होने का एहसास होने पर मैं अपने घुटनों के बल बैठ गया और फिर धीरे- धीरे घुटनों के बल आ गया। मैंने अपनी हरकतों को इस तरह से तालमेल बिठाने की कोशिश की जैसे ही वह अपनी पीठ पर धूल उड़ा रहा था - इससे मुझे किसी भी आवाज़

को छिपाने का एक छोटा सा मौका मिल गया। जैसे ही मैंने अपनी राइफल लोड की, मैंने हवा का रुख बदलते हुए महसूस किया और मैं कांप उठा, अपरिहार्य का इंतज़ार करते हुए। मैं उसकी सूंड के सिरे अपनी ओर मुड़ते हुए देख सकता था, और पल भर में वह सतर्क हो गया, उसके कान उसके विशाल सिर के किनारों से चिपक गए। वह अतिशयोक्तिपूर्ण धीमी गति से मेरी ओर मुड़ा, मानो वह नहीं चाहता था कि मुझे पता चले कि उसने मुझे देख लिया है। मैंने ऐसा होने नहीं दिया, क्योंकि आमने-सामने की लड़ाई में मेरे पास उसे गिराने का कोई मौका नहीं था। मेरी राइफल चली, लेकिन स्पष्ट रूप से मेरा निशाना चूक गया, क्योंकि वह मेरी उम्मीद के मुताबिक ढेर में नहीं गिरा। इसके बजाय, क्रोध और दर्द की चीख ही मेरे कानों में गूंजी और वह चला गया। अत्यधिक थकान के अलावा, सुबह की सारी निराशा मुझ पर हावी हो गई क्योंकि मैंने सबसे मूर्खतापूर्ण काम किए। मैंने उसकी गायब होती हुई पीठ पर गोली चलाई, जैसा कि कोई भी अनुभवहीन शौकिया करता। मेरा निशाना बिल्कुल नहीं चूका, क्योंकि उसके बाद कान फाड़ देने वाली आवाज़ गूंजी और जंगल में सन्नाटा छा गया। मैंने ट्रैकर की नाराज़गी भरी नज़रों से बचते हुए उस दिशा में देखा जहाँ से वह हाथी गायब हुआ था। मैंने अपने फायदे के लिए, न कि उसके लिए, कहा, "वह ज़्यादा दूर नहीं गया होगा। दो गोलियों से उसे ज़रूर गंभीर चोट लगी होगी।" शब्दों की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन मेरे ट्रैकर की तिरस्कार भरी आँखों ने बस एक ही बात कही, "पता नहीं इन दोनों जीवों में से किसके पिछले हिस्से में कुछ था!"
हम उस जगह पहुँच गए जहाँ पहली गोली लगी थी, और मैंने ज़मीन पर खून के बड़े- बड़े छींटे देखे। मैं आगे बढ़ने के लिए उत्सुक था, लेकिन मेरे साथी ने मना कर दिया। उसने कहा कि हालाँकि वह कितनी भी दूरी तय कर सकता है, लेकिन कुछ ही घंटों में सूरज डूबने वाला है, और हम सभ्यता से काफ़ी दूर हैं। उसे लग रहा था कि जैसे-जैसे अंधेरा होगा, हमारा सामना बाघों, भालुओं, भूतों और ऐसे ही दूसरे जीवों से ज़रूर होगा जो उसकी कल्पना से पैदा हुए लगते थे। हालाँकि, उसकी बकवास बेकार थी, और मैंने अपनी पूरी ताकत लगाकर ठान लिया कि हम हाथी को हर हाल में ढूँढ़ेंगे। मैंने अपनी राइफ़ल में गोलियाँ भरीं और बिल्कुल अलग-अलग उम्मीदों वाले दो लोग खून के निशानों का पीछा करते हुए चल पड़े। जंगल में हाथी के गुज़रने के साफ़ निशान दिख रहे थे। झुकी और टूटी टहनियाँ और कुचले हुए बाँह, जिन पर खून के छींटे पड़े थे, बता रहे थे कि उसे ज़ोर से चोट लगी थी और वह काफ़ी दर्द में रहा होगा। जल्द ही भूभाग बदल गया

जाए, तो भी मैं हाथी को कभी नहीं ढूंढ पाऊँगी। मैं अपने आप पर बेहद नाराज़ थी कि मैंने दो गोलियां चलाईं और उससे भी ज़्यादा, उस जानवर को उसके बचे हुए समय तक दर्द में जीने दिया।

…और मैं इसी तरह हाथी को गोली मारूंगा।

जंगल की यात्रा के दौरान कई खतरनाक परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, लेकिन मुझे अपनी राइफल और खुद पर इतना भरोसा था कि मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि मैं किसी ऐसी स्थिति में हूँ जो मेरे नियंत्रण से बाहर है। फिर भी, कभी-कभी ऐसी समस्याएँ होती हैं जिनका समाधान बंदूक से नहीं हो सकता। टिक्स इसका एक प्रमुख उदाहरण हैं, जो आमतौर पर गाँवों में पाए जाने वाले मवेशियों और कुत्तों जैसे जानवरों से मनुष्यों में फैलते हैं। जंगल में, टिक्स लगभग सभी जानवरों पर पाए जाते हैं, और इनसे सावधान रहना चाहिए कि ये आपको काट न लें, क्योंकि ये न केवल वायरल और बैक्टीरियल संक्रमण फैला सकते हैं, बल्कि इनसे महीनों तक असहनीय खुजली भी हो सकती है। गर्मियों में, मवेशी बाड़ों जैसी जगहों पर सोने से बचना ही बेहतर है, क्योंकि यकीनन आपको अपनी जिंदगी की सबसे असहज रात बितानी पड़ेगी। जिस तरह सूखे मौसम में टिक्स का सामना करना पड़ता है, उसी तरह बारिश के मौसम में कुछ जंगलों में जाने पर आपको जोंकों का सामना करना पड़ सकता है। मैंने दो प्रकार की जोंकें देखी हैं। पहला वाला पतला होता है, लगभग इल्ली जैसा, जबकि दूसरा मोटा होता है, लगभग अंगूठे जितना मोटा, और शून्य वाट के बल्ब जितना बड़ा हो जाता है। दोनों

संभावित रूप से हानिरहित होते हैं - वे बस आपके शरीर के किसी हिस्से से चिपक जाते हैं, आपका खून तब तक पीते हैं जब तक कि वे फटने वाले न हों, और फिर गिर जाते हैं। कोई दर्द नहीं, कोई दुष्प्रभाव नहीं, लेकिन इन जीवों को, खासकर बड़ी संख्या में, शरीर पर देखना घिनौना होता है, और उन्हें खींचकर न हटाने के लिए काफी इच्छाशक्ति (और अनुभव) की आवश्यकता होती है।
मैं अपने दोस्त क्लाइव ग्रीनवुड के साथ बायरामंगला के एक तालाब में बत्तख का शिकार करने गया था। हमने कुछ राउंड फायर किए, लेकिन सुबह कुछ खास सफल नहीं रही। हमने जिन दो टील बत्तखों को गोली मारी थी, वे तालाब के बीच में गिर गई थीं, इसलिए क्लाइव और मैं सावधानी से पानी में उतरे। किनारे पर बहुत सारी घास-फूस थी और छोटे-छोटे कीड़े लगातार भिनभिना रहे थे। हम कमर तक गहरे पानी में धीरे-धीरे चल रहे थे और कीचड़ से ढके तालाब की तलहटी को टटोलते हुए आगे बढ़ रहे थे। मुझे एक पक्षी मिला, लेकिन क्लाइव को कोई सफलता नहीं मिली, और थोड़ी देर बाद हमने वापस लौटने का फैसला किया। दिसंबर का महीना था और पानी काफी ठंडा था। सौभाग्य से,
सूरज निकल आया था, इसलिए हम भीगे हुए कपड़े उतारकर गर्म होना चाहते थे। जब हम आखिरी खरपतवार साफ कर रहे थे, तभी मैंने देखा कि आगे चल रहे क्लाइव की गर्दन पर कुछ चिपका हुआ था। वह एक चिपचिपी जोंक थी, मोटी वाली, और उसे उसकी गर्दन पर देखकर घिन आ रही थी। मैंने क्लाइव को इसके बारे में बताया, तो उसने अपने बैग से तंबाकू का रस निकाला। तब तक कुछ स्थानीय लोग तालाब पर आ चुके थे और पानी भरने और सुबह के दूसरे काम कर रहे थे। वे दो गोरे आदमियों को ठंड की सुबह, पूरे कपड़े पहने, कीचड़ भरे तालाब में तैरते देखकर थोड़ा हैरान थे। क्लाइव चिल्लाया, "अरे यार, मुझे यकीन है कि और भी होंगी जो हमें दिखाई नहीं दे रही हैं!" मैं उलझन में था और मेरी बात पर यकीन नहीं हो रहा था, क्योंकि मुझे लगा कि उसका मतलब है कि दूसरे ग्रामीण छिपकर यह तमाशा देख रहे होंगे, जब तक मुझे समझ नहीं आया कि वह अपने शरीर पर चिपकी जोंकों के बारे में बात कर रहा था। वह जल्दी-जल्दी अपने कपड़े उतारने लगा और गालियां बड़बड़ाने लगा। मैंने उसे रोकने की कोशिश की, क्योंकि आसपास महिलाएं थीं, लेकिन वह अपने मकसद पर अड़ा हुआ था और उसे रोकना नामुमकिन था।
“अगर मेरे लिंग पर ऐसी कोई चीज़ लगी हो तो मैं उसे कभी माफ नहीं करूँगा,” उसने आखिरी कपड़ा उतारते हुए चिल्लाकर कहा। फिर उसने मुझसे कहा कि मैं उसके नितंबों का आराम से निरीक्षण करूँ, क्योंकि सामने से उसका स्व-

निरीक्षण पूरा हो चुका था। गाँव वालों ने अपने जीवन में ज़रूर कुछ अजीबोगरीब नज़ारे देखे होंगे, लेकिन किसी आदमी को कपड़े उतारते और अपने दोस्त से खुद का निरीक्षण करवाते देखना उनके मनोरंजन के लिहाज़ से काफी दिलचस्प रहा होगा। सौभाग्य से, मुझे खचाखच भरी भीड़ के सामने उसके शरीर पर तंबाकू का रस लगाने के अपमानजनक काम से छुटकारा मिल गया, क्योंकि वह सिर्फ़ एक ही कीड़ा उसकी गर्दन पर था। कुछ बूंदें डालते ही वह कुछ ही सेकंड में गिर गया, जहाँ क्लाइव के पैर ने उसे कुचल दिया था।
“अब तुम्हारी बारी,” क्लाइव ने कहा, लेकिन मैंने मना कर दिया, क्योंकि बायरामंगला के साथी मजे ले रहे थे। मैंने अपने हाथ पूरे शरीर पर फेरे, पर कुछ महसूस नहीं हुआ। घर पहुँचकर जब मैंने कपड़े उतारे, तो मुझे घोर भय हुआ कि मेरे गुप्तांगों पर एक मोटी सी जोंक चिपकी हुई थी। मैंने धीरे से चीख मारी, ज्यादा तेज नहीं, लेकिन अगले कमरे में मौजूद छोकरा, थंगावेलु, दौड़ते हुए अंदर आ गया। “क्या हुआ है, साहब?”
उस दृश्य को शब्दों में बयां करने की कोई जरूरत नहीं थी, वह अपने आप में सब कुछ स्पष्ट कर रहा था। मेरे कुछ कहने से पहले ही वह गायब हो गया, जबकि मैं जोंक को नमक या तंबाकू के रस से हटाने का सबसे अच्छा तरीका सोच रहा था। वह मेरी हॉकी स्टिक लेकर फिर प्रकट हुआ और मेरी ओर बढ़ा, मुझे आश्वस्त करते हुए कहा कि अगर मैं स्थिर रहा, तो उसे इसे हटाने का पूरा भरोसा है। “थंगावेलु, बेवकूफी मत करो। अगर निशाना चूक गया तो क्या होगा?”
“चिंता मत कीजिए, साहब, मैंने अपने जीवन में कई सांप मारे हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि एक ही जोरदार वार से मैं इसे भी मार सकता हूँ।”
“मूर्ख, क्या यह तुम्हें सांप जैसा दिखता है? यह कुछ और ही है।”
उसकी तिरस्कार भरी हंसी से साफ पता चल रहा था कि इस स्थिति में वह मुझसे ज्यादा समझदार है। वह फिर गायब हो गया, और मैं उसकी सूझबूझ पर हैरान रह गया
- शायद वह मेरे लिए कुछ लेने गया हो जिससे यह समस्या दूर हो जाए। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं था; वह कुछ और भी ज्यादा असरदार चीज ले आया - मेरी माँ। कहने की जरूरत नहीं है, मेरी माँ को कमरे से बाहर निकालने के बाद और थंगावेलु की मदद से, मैंने स्थिति को काबू में कर लिया।
बैंगलोर में कई तालाब थे जहाँ प्रवासी पक्षी अक्सर आते थे, लेकिन धीरे- धीरे अंधाधुंध शिकार के कारण वे पक्षी गायब हो गए। हम शहर के बाहर स्थित इन जलाशयों का भी दौरा करते थे और कनवा जलाशय सबसे लोकप्रिय था, हालाँकि मेरी

निजी पसंद मुख्य सड़क से दूर स्थित मद्दूर का एक और तालाब था। शिकार के मौसम के अलावा, इस जगह से एक और स्मृति जुड़ी हुई है। मेरे साथियों में कुछ नियमित सदस्य थे, लेकिन दोस्तों के दोस्त भी कभी-कभी हमारे समूह का हिस्सा बन जाते थे। ऐसा ही एक व्यक्ति स्क्वाड्रन लीडर मिलिकेंस था, जो हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड में टेस्ट पायलट था। वह बहुत बुद्धिमान व्यक्ति था और मैं उसे कई बार जंगलों की यात्राओं पर ले गया था। हम जंगली सूअर का शिकार करने और मछली पकड़ने के लिए मद्दूर गए थे, तभी हमें यह झील दिखाई दी जहाँ सैकड़ों जंगली हंस पानी पर झुंड बनाकर तैर रहे थे। वे झील के दूसरे छोर पर बहुत दूर थे, इसलिए उन्हें अपनी बंदूकों से मारना असंभव था। हमने पूछताछ की और पता चला कि पक्षियों का झुंड पास वाले छोर तक कभी नहीं आएगा, क्योंकि उन्हें कड़वे अनुभव से पता चल गया था कि स्थानीय लोग उन पर अपनी बंदूकों से गोली चला देंगे। झील का दूर वाला छोर घने जंगल से ढका हुआ था, और मेरा मानना है कि उस दिशा में व्यावहारिक रूप से कोई सभ्यता नहीं थी, इसलिए पक्षियों की बात सही थी। लेकिन हम उन तक कैसे पहुँचते? तभी मिलिकेंस को एक विचार आया। यह इतना अजीब और विचित्र लगा कि मुझे लगा कि वह मज़ाक कर रहे हैं, लेकिन उनके चेहरे पर गंभीरता देखकर मुझे यकीन हो गया कि वह सच कह रहे हैं। हम दो हफ़्ते में उनके इस अद्भुत और अटपटे विचार को अमल में लाएंगे, और मैंने अपने दोस्तों टाइनी सेडन और बाबा कारियाप्पा को भी, जिन्हें बत्तख का शिकार करने का शौक था, साथ आने के लिए मना लिया। हम तय तारीख को भोर से पहले झील पर पहुँच गए और अपनी बंदूकें पकड़े हुए जितना हो सके चुपचाप पास वाले छोर के उथले पानी में उतर गए। फिर आया बड़ा आश्चर्य, और यह किसी फिल्म के दृश्य जैसा था। भोर होते ही, पहले एक छोटा विमान सुनाई दिया और फिर झील के दूसरी ओर आता हुआ दिखाई दिया। यह मिलिकेंस था! यही तो योजना थी! मुझे नहीं पता उसने अपने वरिष्ठों को क्या कहानी सुनाई, लेकिन वह वास्तव में एचएएल से मद्दूर के लिए एक विमान भेजने में कामयाब हो गया था। उसकी योजना झील के दूसरी ओर से उड़ान भरकर पक्षियों को डराकर उन्हें हमारी ओर आने के लिए मजबूर करना था। एक आत्मघाती पायलट की तरह, वह नीची उड़ान भरते हुए सीधे पक्षियों के घोंसले में घुस गया, जिससे पक्षी तितर-बितर हो गए। तभी हमें एहसास हुआ कि बेहतरीन योजनाएँ भी कभी-कभी मनचाहे ढंग से काम नहीं करतीं। क्योंकि वहाँ कोई हंस नहीं थे, केवल घरेलू कोक्कू या सारस थे, पतले, बेडौल पक्षी जिन पर गोली चलाना बेकार था। हमने हाथ हिलाकर

उसे समझाने की कोशिश की कि ये पक्षी उसके लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं, लेकिन मुझे लगता है कि सांकेतिक भाषा में हंस और सारस के बीच का अंतर उसके लिए समझ से बाहर था। बेचारा मिलिकेंस! झील के हमारे छोर पर गोलीबारी न होने से वह शायद भ्रमित हो गया था, और उसने अपना पैंतरा दोहराया, और भी नीचे उतर गया, लेकिन उसे वही अहिंसक प्रतिक्रिया मिली। निराश होकर वह अपने अड्डे पर वापस लौट गया, और निश्चित रूप से हमें कोस रहा था। अगले दिन वह हम पर, खासकर मुझ पर, बहुत गुस्सा था, और उसने हम पर आरोप लगाया कि जब वह अपनी जान जोखिम में डाल रहा था, तब हम उसे मजाक समझ रहे थे।
तालाबों में छिपकर शिकार करना हमारा आम शौक था, और हम इसे ज्यादातर मांड्या जिले में करते थे, जहाँ दर्जनों छोटी झीलें और तालाब थे। 1950 के दशक के मध्य और अंत में, इन जगहों पर पक्षियों की विविधता देखकर आश्चर्य होता था। स्पॉटबिल, मल्लार्ड, पिनटेल, विजन, व्हिसलिंग टील, बार-हेडेड गीज और ब्राह्मणी बत्तख जैसे पक्षी हमारे निशाने पर आते थे। ये सभी अब झीलों की तरह ही लगभग गायब हो चुके हैं। हम अलग-अलग जगहों पर कतार बनाकर खड़े होते थे, और कोई एक गोली चलाता था, फिर बाकी लोग उसका अनुसरण करते थे। अंधाधुंध फायरिंग नहीं होती थी; हर गोली सावधानी से, लेकिन तेजी से चलाई जाती थी, क्योंकि कुछ ही सेकंड में झील खाली हो जाती थी। हम अपने शिकार इकट्ठा करते और फिर अगले तालाब की ओर चल पड़ते। अच्छे दिन हम तीस या उससे अधिक शिकार कर लेते थे। चाहे कितने भी शिकार किए हों, अंत में शिकार को बराबर बाँट लिया जाता था।
जब जलपक्षियों का मौसम समाप्त हो जाता था, तो बटेरों का समय आ जाता था। बटेरों का शिकार दिसंबर और मार्च के बीच सबसे अच्छा होता है, और खेती वाले खेत अक्सर इसके लिए बेहतरीन जगह होते हैं। मेरी पसंदीदा जगह मैसूर राजमार्ग पर बेगुर के पास थी, जहाँ ऊँची घास के पैच थे। आजकल, जंगलों में बटेरों को देखना लगभग असंभव है, लेकिन 1950 के दशक में, बैंगलोर के लोग जो साल भर मटन और गोमांस खाते थे, जंगली बटेरों का बेसब्री से इंतजार करते थे, जब तक कि स्थानीय मांग को पूरा करने के लिए बटेर पालन केंद्र नहीं खुल गए। मैंने पक्षियों का शिकार करने के लिए कई जगहों की खोज जारी रखी। थिप्पोगोंडनहल्ली, सवांदुर्गा और मंचिनबेले जैसी जगहें तीतर के शिकार के लिए मेरी पसंदीदा जगहें थीं, और जंगली मुर्गों के लिए हुलियोदुर्गा मेरी पहली पसंद थी।

ज़्यादातर शिकारियों की तरह, मैं भी अपने कपड़ों को लेकर अंधविश्वासी था और मेरे पास कुछ लकी पैंट और कमीज़ें भी थीं। फिल्मों में दिखाए जाने के विपरीत, मैं कभी हल्के खाकी रंग के कपड़े और हेलमेट नहीं पहनता था। मैं ग्रे, हरे या गहरे नीले रंग के कपड़े पहनता था, और वो भी बहुत पुराने, घिसे- पिटे, जो मेरे हाथों और पैरों को ढके रखते थे और मुझे कीड़ों के काटने और कांटों से बचाते थे। "वेट-ए-बिट" कांटे बहुत खतरनाक होते हैं, और नौसिखिए जो उनसे निकलने की कोशिश करते हैं, उन्हें गहरे घाव लग जाते हैं, क्योंकि ये कांटे लगभग एक इंच के पाँचवें हिस्से जितने छोटे होते हैं, लेकिन बेहद सख्त होते हैं और टूटते नहीं। एकमात्र उपाय है धीरे-धीरे पीछे हटना और खुद को उनसे छुड़ाने की कोशिश करना। एक और अंधविश्वास जो मैं मानता था, वो था कभी कैमरा साथ न ले जाना, क्योंकि जितनी बार मैंने ऐसा किया, मुझे कोई शिकार नहीं दिखा। बचपन से ही, मैं या तो कैमरा कैंप में छोड़ देता था या अपने दोस्तों से कह देता था कि वे अपना कैमरा ले जाएं, लेकिन मैं कभी भी जंगल में कैमरा साथ नहीं ले गया। भारतीय जंगल उतना खतरनाक नहीं है जितना शहरों में रहने वाले ज्यादातर लोग मानते हैं। मेरा मानना है कि ज्यादातर धारणाएं घर बैठे पर्यटकों की कल्पना पर आधारित हैं, और बाकी सब बढ़ा- चढ़ाकर बताई गई कहानियों का नतीजा है, जिन्हें अक्सर कहानी सुनाने वाले को नायक दिखाने के लिए गलत तरीके से गढ़ा जाता है।
बंदूकें
जब मैं तीन या चार साल का था, तब मेरे दादाजी ने मुझे एक मटर के दाने के आकार की ब्लो गन दी थी, और मुझे वह इतनी पसंद थी कि मैं उसे तकिए के नीचे रखकर सोता था। मेरे छठे जन्मदिन पर मुझे एक चांदी की परत चढ़ी हुई डेज़ी एयर राइफल मिली, जो उससे कहीं बेहतर थी। मैं बहुत खुश था क्योंकि तब तक मेरा सारा शिकार गुलेल से ही होता था, जिसमें मैं माहिर हो चुका था। मैंने एयर गन से अभ्यास किया और इससे मैं एक अच्छा निशानेबाज बन गया, क्योंकि मैं घंटों अपने घर के पिछवाड़े में छोटे-छोटे निशानों पर निशाना लगाता रहता था। हालांकि, मेरे विचार से, असली बंदूक जिसने मेरे शिकार के दिनों की शुरुआत की, वह 12 बोर की दो बैरल वाली शॉटगन थी जो मेरे पिताजी ने मुझे मेरे नौवें जन्मदिन पर दी थी। यह एक हैमर शॉटगन थी, जिसका मतलब था कि फायर करने से पहले हैमर को कॉक करना पड़ता था। अपनी शॉटगन के साथ जंगल में जाना मेरे लिए एक नया रोमांच लेकर आता था। यह एक ऐसी बंदूक थी जिसके बारे में

मुझे लगता था कि यह मुझे धरती पर चलने वाले हर जीव से बचाएगी। मेरे पास बंदूक का हथौड़ा कसने की ताकत नहीं थी, और हर बार मुझे पिताजी से ऐसा करने के लिए कहना पड़ता था। मैं बंदूक कस कर आगे चलता था, जबकि पिताजी कुछ दूरी पर मेरे पीछे आते थे। मुझे बहुत सावधान रहना पड़ता था कि कहीं ठोकर न लग जाए और मैं गिर न जाऊं, क्योंकि अगर मैं गिर जाता, तो बंदूक चल ही जाती। मैंने अकेले ही सैर पर जाना शुरू कर दिया और एक शक्तिशाली बंदूक के साथ एक डरावने जंगल में अकेले चलना मेरे लिए सबसे बड़ा रोमांच था, हालांकि मुझे इस बात से तसल्ली रहती थी कि मेरे पिताजी और शिविर ज़्यादा दूर नहीं थे। अक्सर, मुझे कुछ भी नहीं मिलता था, क्योंकि मैंने जानवरों का पता लगाने या बिना आवाज़ किए चलने की कला में महारत हासिल नहीं की थी, इसलिए मैं शिविर में वापस आ जाता और पिताजी से बंदूक का हथौड़ा कसने से मना कर देता। पीछे मुड़कर देखता हूं तो मुझे उनका शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने मुझे इतनी कम उम्र में हथियार सौंपा, लेकिन अंततः इसने एक जुनूनी लगाव को जन्म दिया, जिससे मैं अपने वयस्क जीवन के अधिकांश समय तक उबर नहीं पाया। उसके बाद मेरे पास कुछ शॉटगन थीं, जिनमें एक.404 डबल-बैरल वाली जेफरी भी शामिल थी, लेकिन मेरे पास सबसे अच्छी शॉटगन एक ग्रीनर 12 बोर की थी जिसमें मैंने एक बल्ब लगाया था, और इसने मुझे नज़दीकी दूरी पर निशाना लगाने में बहुत मदद की।
जब हाथी या बाइसन का शिकार करने की बात आती थी, तो मैं.470 नाइट्रो एक्सप्रेस राइफल का इस्तेमाल करता था, लेकिन यह इतनी भारी राइफल थी कि मेरी ताकत के बावजूद, इसे चलाने के बाद अक्सर मेरी नाक से खून बहने लगता था। मुझे इसी हथियार से काम चलाना पड़ता था क्योंकि मुझे.416 रिग्बी राइफल नहीं मिल पाती थी, जिसे उस समय दुनिया की सबसे अच्छी राइफल माना जाता था और जिसे हैरी सेल्बी ने अफ्रीका में बड़े जानवरों का शिकार करते हुए लोकप्रिय बनाया था। इसे अंग्रेजों द्वारा भारत लाया गया था, और इसके मुकाबले में जर्मनों ने अपनी.423 माउजर राइफल से भारतीय बाजार को भर दिया था। सौभाग्य से, मुझे पिताजी के एक मित्र ह्यू हेलस्टोन ने एक राइफल भेंट की थी। तब तक, भारतीय बाजार में लोकप्रिय राइफल आईओएफ.315 स्पोर्टिंग राइफल थी, जो तिरुचिरापल्ली में बनी ब्रिटिश सैन्य ली-एनफील्ड राइफल का नागरिक संस्करण थी। इसमें भारी गोली लगती थी, और मैं इसका इस्तेमाल

बैंगलोर के बाहरी इलाकों में जंगली सूअरों का शिकार करने के लिए करता था। मेरे पास एक.30-06 स्प्रिंगफील्ड राइफल भी थी।
मेरे पास मिलिट्री मॉडल एम 1 गैरांड थी, लेकिन मुझे दोनों में से कोई भी खास पसंद नहीं थी। मेरे पिताजी के पास, ज़ाहिर है, उनकी.405 विंचेस्टर राइफल थी, जिसे उन्होंने 50 रुपये में खरीदा था, और उन्हें अपनी राइफल और उसकी कीमत दोनों पर बहुत गर्व था। यह एक सस्ती, बड़े शिकार के लिए बनी अंडरलीवर राइफल थी, लेकिन सभी विंचेस्टर राइफलों की समस्या यह थी कि अगर इसे सही तरीके से न चलाया जाए, तो यह जाम हो सकती थी। इस जोखिम के बावजूद, उन्होंने इसे कभी नहीं छोड़ा, और इसकी खासियत यह थी कि इसने उन्हें कभी निराश नहीं किया। मेरे पिताजी के पास एक.500 ब्लैक पाउडर एक्सप्रेस हैमर भी थी, और हालांकि यह एक शानदार हथियार था, उन्होंने इसका शायद ही कभी इस्तेमाल किया हो, वे हमेशा अपनी विंचेस्टर पर ही भरोसा करते थे।
उस समय, तीन सज्जन थे जो शिकार के लिए मेरे पिताजी जितने ही प्रसिद्ध थे। वे उनके दोस्त पैट वॉटसन, डिक बर्ड और रसेल ग्रीन थे, जो मद्रास से थे। उनमें से मैं डिक बर्ड को सर्वश्रेष्ठ मानता हूँ। वे बाबा बुदन पहाड़ियों में स्थित संतावेरी में पोस्टमास्टर थे, और मुझे वर्षों में वहाँ की हमारी कई यात्राएँ याद हैं। वे न केवल एक कुशल निशानेबाज थे, बल्कि एक बेहतरीन ट्रैकर भी थे, बेहद निडर थे और अपना अधिकांश शिकार पैदल ही करते थे। उन्होंने कई बाघों का शिकार किया और एक समय वे बैंगलोर और शिमोगा से ग्राहकों को शिकार के लिए ले जाते थे। बैंगलोर स्थित एचएएल में काम करने वाले कुछ अमेरिकी ग्राहकों से उनकी दोस्ती हो गई थी, और उनके साथ शिकार यात्राओं के लिए आभार व्यक्त करते हुए, उन्होंने उनसे वादा किया कि अगली बार जब वे वहाँ से गुजरेंगे तो उन्हें पैसे देंगे। अमेरिकियों में हास्यबोध था, क्योंकि अगली बार जब वे वहाँ से गुजरे, तो वे हवाई जहाज में थे, और अपने वादे के मुताबिक, उन्होंने पैराशूट से भारी मात्रा में धन गिराया, जिससे डिक ने एक कॉफी बागान खरीदा, जिसका प्रबंधन उन्होंने अपने निधन तक किया। दूसरी ओर, पैट वॉटसन डिक जितने साहसी या कुशल नहीं थे। बिरूर में उनका एक पैर कट गया था, और शायद इसी शारीरिक अक्षमता के कारण उन्होंने रात में बैलगाड़ी पर बैठकर शिकार करने का अपना तरीका अपनाया। वे ज्यादातर कादुर में शिकार करते थे, और अक्सर पिताजी और मैं उनसे मिलने जाया करते थे। कादुर बैंगलोर से 130 मील दूर है। हमारी ट्रेन रात नौ बजे निकलती थी, और हम

सुबह चार बजे वहाँ पहुँच जाते थे, फिर हम वॉटसन के शिविर तक दस मील पैदल चलते थे। मेरी राय में, बैलगाड़ी की सुरक्षा में टॉर्च जलाकर जानवर को गोली मारना बिल्कुल भी खेल भावना के विरुद्ध है, इसलिए पिताजी और मैं रात किसी जलाशय पर बिताते थे। शिकार के दौरान, न तो उन्होंने और न ही उनके समकालीनों ने कभी स्कोप से निशाना लगाने के बारे में सोचा, और यह सिलसिला 1950 के दशक के मध्य तक जारी रहा।

पैट वॉटसन (बाईं ओर)

मेरे दोस्त क्लाइव ग्रीनवुड ने बैंगलोर में स्कोप लगाकर शूटिंग शुरू की, हालांकि तब तक यह मध्य प्रांतों में लोकप्रिय हो चुकी थी। मैं खुद को खुली नज़रों से अच्छा शिकारी मानता था, लेकिन स्कोप के साथ तो मैं और भी माहिर हो गया। स्कोप लगाने का काम गनक्राफ्ट में सुंदर राज ने किया, जो इस काम में माहिर थे। गोला-बारूद महंगा था, और मैं ट्रिगर तभी दबाता था जब मुझे पूरा यकीन होता था कि दबाना ही पड़ेगा, लेकिन मेरे दोस्तों के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता था। मेरी कंजूसी के लिए मेरा खूब मज़ाक उड़ाया जाता था; अब वे मुझे बताते हैं कि उन दिनों मेरा पसंदीदा वाक्य होता था, "दोस्तों, जो तुम अपने हाथों में पकड़े हो वो एंटी-एयरक्राफ्ट गन नहीं हैं।"

इसका मतलब यह था कि जब तक निशाना सही न लग जाए, तब तक गोली न चलानी थी। सौभाग्य से, यह बात कि मैं कारतूस गनक्राफ्ट को रीलोडिंग के लिए वापस बेचता था, सुंदर राज और मेरे बीच ही गुप्त रही, वरना मेरे गिरोह को मेरा मज़ाक उड़ाने का एक और बहाना मिल जाता! मेरी कंजूसी और ऐसी ही कई और बातें सोमवार शाम को क्राउन कैफे में होती थीं, जब हम सब काम के बाद मिलते थे और सप्ताहांत में किए गए शिकार के बारे में बीयर और कबाब के साथ बातें करते थे। यह सब 1972 में वन्यजीव अधिनियम पारित होने के साथ समाप्त हो गया। इसने भारतीय वन्यजीवों का भविष्य तो बचा लिया, लेकिन धीरे-धीरे इसने मुझ जैसे लोगों की उन सभी वर्षों की आज़ादी छीन ली। शिकार करने की आज़ादी नहीं, बल्कि आवागमन की आज़ादी। अधिनियम के बिना भी, मेरे शिकार के दिन ढल रहे थे, इसलिए मैं विशेष रूप से दुखी नहीं था, हालांकि इसे पूरी तरह से छोड़ने का थोड़ा दुख ज़रूर था। अधिनियम रातोंरात पारित नहीं हुआ था; बहुत सारी अफवाहें थीं, और कई शौकिया शिकारियों ने अपने आखिरी शिकार में हद से ज़्यादा खर्च कर दिया था। अचानक वन विभाग के लोग मुझे शक की नजरों से देखने लगे, और यह विडंबना ही थी कि मेरे जैसे लाइसेंसधारी बंदूक धारक, जो हमेशा नियमों का पालन करते थे, इस व्यवहार का खामियाजा भुगत रहे थे, जबकि शिकारी और विभाग के साथ मिलीभगत करने वाले अन्य लोग जंगलों में घूमने से कहीं ज्यादा छूट पा रहे थे। अधिनियम पारित होने के काफी समय बाद तक, वन विभाग ने कोई लाइसेंस रद्द नहीं किया, बल्कि नए लाइसेंस जारी करना बंद कर दिया। इसका मतलब यह था कि कुछ सरकारी अधिकारी जानवरों का शिकार करते रहे और यह कहकर इसे सही ठहराते रहे कि उनके पास अभी भी वैध लाइसेंस हैं। दरअसल, अधिनियम पारित होने के कुछ महीनों बाद, अधिनियम पारित होने से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी ने बांदीपुर चेक पोस्ट के बाद मुख्य ऊटी सड़क पर तालाब के पास एक बाघ को गोली मार दी। ऐसी घटनाओं को गंभीरता से लेने में कुछ समय लगा, लेकिन मैंने कभी जोखिम नहीं लिया। मैंने अपने बाघ के शिकार अमेरिका में कुछ लोगों को बेच दिए। मैं कागजी कार्रवाई में नहीं पड़ा; मैं बस उन्हें ठिकाने लगाना चाहता था। मैंने अपने अधिकांश पैंथर के सिर पैट वॉटसन को दे दिए, और मुझे लगता है कि उन्होंने इसे व्हाइटफील्ड क्लब को दे दिया, और बाकी मैंने अपने दोस्तों और शुभचिंतकों में बाँट दिए। मेरे पिताजी के निधन के बाद, मैंने अपनी सभी बंदूकें गनक्राफ्ट को वापस बेच दीं,

नीलगिरी के कुरुम्बा मूल रूप से चरवाहे थे, जो जंगलों में शिकारी, जाल बिछाने वाले और संग्राहक के रूप में रहते थे और बुनियादी खेती करते थे। मेरे पिताजी ने मुझे बताया था कि जब वे छोटे थे तो उन्होंने उन्हें गुफाओं में देखा था, लेकिन जब से मुझे याद है, मैंने उन्हें छोटे-छोटे बस्तियों में देखा है जहाँ वे बांस, मिट्टी और घास से बनी झोपड़ियों में रहते हैं, अक्सर जंगलों के भीतर गहराई में। वे मिलनसार होते हैं, वस्तु विनिमय प्रणाली में संलग्न होते हैं, शहद और औषधीय पौधे इकट्ठा करते हैं और टोडा और बडागा जैसी अन्य समुदायों के साथ व्यापार करते हैं। बडागा लोगों के साथ उनका एक अनूठा संबंध है, जिन्होंने अपने छोटे समुदाय के रक्षक के रूप में एक कुरुम्बा पुरुष को नियुक्त किया है। नीलगिरी में रहने वाले कुरुम्बा पाँच प्रकार के होते हैं, अर्थात्, पालू (दूध) कुरुम्बा, बेट्टा (पहाड़ी) कुरुम्बा, जेनु (शहद) कुरुम्बा, मुल्ला (जाल) कुरुम्बा और उराली (गाँव) कुरुम्बा, उनके पेशे या रहने के स्थान के आधार पर। मुझे उनके साथ काम करने का अवसर मिला है, और उनके कौशल उल्लेखनीय हैं, हालांकि आजकल मैं देखता हूं कि उन्होंने अपनी पुरानी जीवनशैली को त्याग दिया है और नीलगिरी में पनपे बागानों और रिसॉर्ट्स में दिहाड़ी मजदूरी पर काम करते हैं।
नीलगिरी में पाई जाने वाली एक और जनजाति इरुला है। वे फल, कंद और अन्य वन उत्पाद इकट्ठा करके अपना जीवन यापन करते हैं और उन्हें चावल, नमक और यहां तक कि कपड़ों के बदले बेचते हैं। हालांकि, उनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण दुर्गम स्थानों से शहद इकट्ठा करने की उनकी क्षमता है। परंपरागत रूप से वे नीलगिरी में बडागा जनजाति के लिए चरवाहे के रूप में काम करते थे, इसलिए वे बड़ी बिल्लियों की गतिविधियों के बारे में जानकारी का एक अच्छा स्रोत हैं। मद्रास राज्य के अन्य भागों में एक अलग प्रकार की इरुला जनजाति पाई जाती है, जिसे काडू पुजारी कहा जाता है। मेरे पिताजी के मित्र बायरा, ऐसे ही एक पुजारी थे जिनका उल्लेख मेरे पिताजी की किताबों में मिलता है। मुझे बायरा को तब देखना याद है जब हम डेनकनिकोट्टा और अंचेटी के पास के जंगलों में जाया करते थे। उनके बाल उलझे हुए थे और वे केवल एक लंगोटी पहनते थे। वे मेरे पिताजी से काफी बड़े थे, लेकिन जब पिताजी अंचेटी और उसके आसपास के जंगलों में जाया करते थे तो वे लगभग साथ ही रहते थे। वे अन्य आदिवासियों की तुलना में और भी अधिक साधारण थे, क्योंकि वे कभी कमीज भी नहीं पहनते थे। मुझे लगता है कि वह अपनी तरह के आखिरी लोगों में से एक थे, एक सच्चे

□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ 1950 □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□

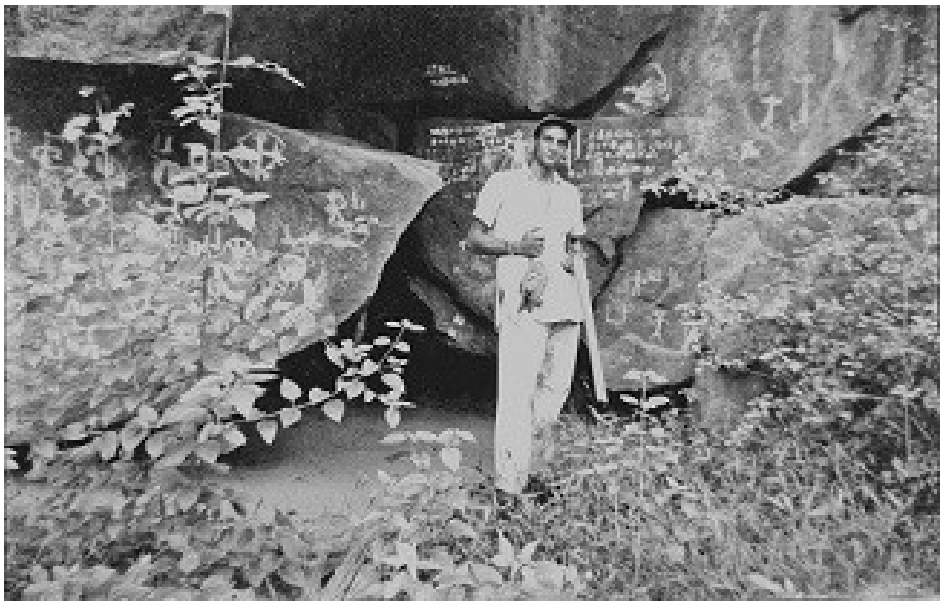

□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□

□□□□□ □□, □□□□, □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□ □□□□□ □□ □□□-□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□, □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□

□□□□ □□□□□ (□□□□□ □□□□□□ '□□□□ □□ □□□□' □□□□ □□) □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□-□□□□□□□□□□□□ □□□, □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□, □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□

प्रति इनकी अत्यधिक अनिच्छा पहली बार मिलने वाले व्यक्ति के लिए हैरानी का कारण बन सकती है। हालांकि, ये सरल, अत्यंत ईमानदार और हमेशा भरोसेमंद लोग हैं।
शोलागा जनजाति कर्नाटक और तमिलनाडु में पाई जाती है, लेकिन उनका मुख्य निवास स्थान बीआर हिल्स है। वे शायद सबसे कुशल बाघ खोजकर्ता हैं जिनसे मैं कभी मिला हूँ, और मैंने हेलस्टोन की यात्राओं के दौरान उनमें से कई लोगों के साथ काम किया है। मेरा प्रसिद्ध बाघ मंत्र (जादू टोना) इसी जनजाति के एक सदस्य ने मुझे सिखाया था। चालीस साल पहले, वे पूरी तरह से जंगली कंद और बेर जैसे वन उत्पादों पर निर्भर थे। चूंकि वे मांसाहारी हैं, इसलिए वे जंगल से मिलने वाले विभिन्न प्रकार के मांस के शौकीन हैं। उनकी एक अजीब आदत थी कि वे अपने बालों को दूध से धोते थे, जिससे बहुत दुर्गंध आती थी, हालांकि मैंने देखा है कि यह प्रथा पिछले कुछ वर्षों में काफी कम हो गई है। अन्य सभी आदिवासियों की तरह, उन्हें बीड़ी पीना और पान खाना पसंद है। वे जंगल के भीतर स्थित दो हजार साल पुराने डोड्डा संपिगे नामक वृक्ष की पूजा करते हैं। उन्होंने मुझे एक तरकीब सिखाई थी, जंगली मुर्गे की आवाज की नकल करना, और सही तरीके से करने पर निकलने वाली आवाज अद्भुत होती है। इसके लिए एक बहुत पतली पत्ती की आवश्यकता होती है जिसे रोल करना पड़ता है, और फिर चूसने और फूंकने की कई क्रियाओं के साथ, कोई व्यक्ति एक विश्वसनीय कॉल कर सकता है; बेशक, इसमें निपुणता बहुत अभ्यास से आती है।
चेंचु आंध्र प्रदेश के नल्लामाला जंगल में रहने वाली एक आदिवासी जनजाति है। केवल धनुष और बाण के बल पर, वे इन जंगलों के विशेषज्ञ हैं और जड़, बेर और महुआ के फूल जैसे खाद्य पदार्थ इकट्ठा करते हैं या जानवरों का शिकार करते हैं। उनके भोजन में ज्वार (एक प्रकार का अनाज) से बना दलिया होता है और इमली उनके व्यंजनों का एक प्रमुख घटक है। वे कद में छोटे और नीलगिरी की जनजातियों की तुलना में गोरे रंग के होते हैं। वे भी वर्षों से खेती-बाड़ी या वन विभाग के लिए काम कर रहे हैं। वे हिंदू देवता शिव की पूजा करते हैं और श्रीशैलम उनके लिए एक महत्वपूर्ण मंदिर है। हालाँकि मैंने हैदराबाद राज्य में कभी ज्यादा शिकार नहीं किया, लेकिन चमाला ही वह जगह थी जहाँ मैं अक्सर जाया करता था। चमाला के स्टेशन मास्टर से पिताजी की बहुत अच्छी दोस्ती हो गई थी, क्योंकि उन्होंने एक आदमखोर को मार गिराने में मदद की थी, और तब से, जब भी हम वहाँ जाते थे, एंडरसन परिवार का बहुत गर्मजोशी से

स्वागत होता था। मुझे न केवल चमाला के वन बंगले में आसानी से बुकिंग मिल जाती थी, बल्कि स्टेशन मास्टर ने पिताजी को वन बंगले के काफी करीब एक बड़ा भूखंड दिलाने में भी मदद की थी। विशेष सुविधाएँ मिलने के बावजूद, दूरी के कारण मेरी यात्राएँ सीमित रहीं। यह स्थान बेहद सुरम्य था और यहाँ अद्भुत वन्यजीव पाए जाते थे, लेकिन कावेरी नदी या नीलगिरि के विपरीत, इस जगह की यात्रा में अधिक समय लगता था और धीरे-धीरे हैदराबाद राज्य की मेरी यात्राएँ रुक गईं।

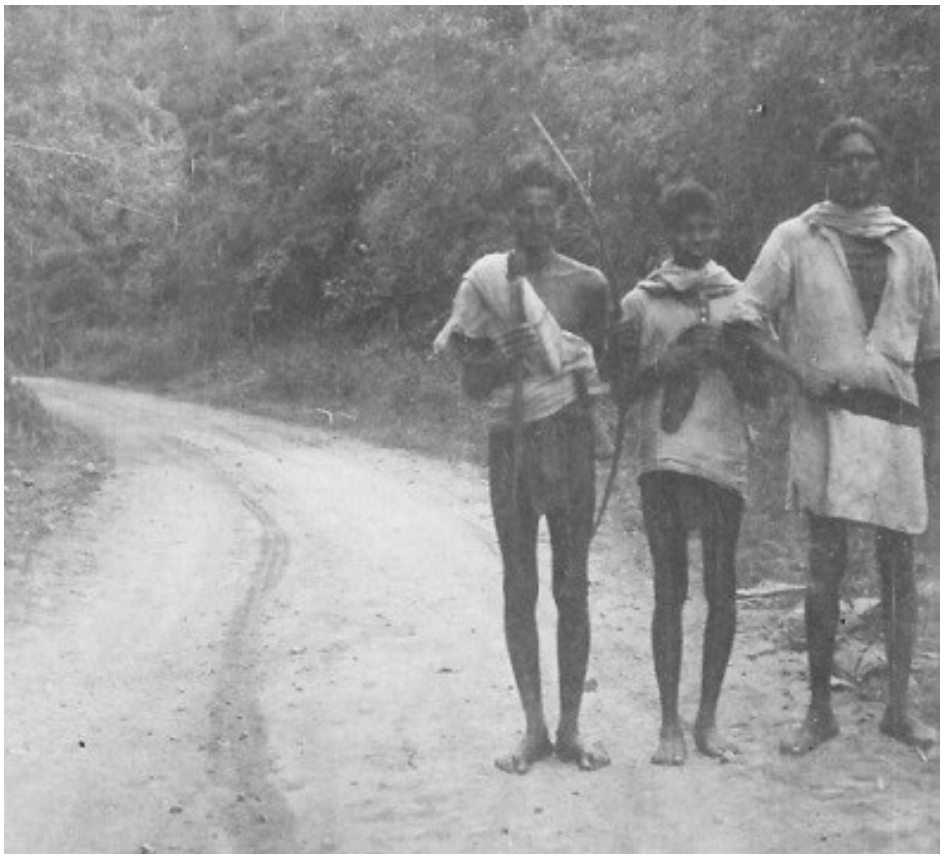

चेनचू जनजाति के लोग

जैसे-जैसे मैंने जंगलों में समय बिताना शुरू किया, मुझे जल्दी ही एहसास हो गया कि मुझे अकेले रहना ज़्यादा पसंद है, खासकर जब शिकार करना हो। मैं हमेशा अपने साथ ले जाने वाले लोगों को लेकर बहुत सतर्क रहता था। इसका मतलब था अतिरिक्त भोजन, सामान और एक और जीव की ज़िम्मेदारी। ज़्यादातर लोगों में जंगल में जीवित रहने का अनुशासन नहीं होता, या उससे भी बुरा, मेरे नियमों का पालन करने का! मैं लोगों को साथ ले जाते समय हमेशा सख्त नियम

बनाता था, और केवल वही लोग दोबारा आते थे जो वास्तव में रुचि रखते थे। समय पर निकलना, भोर से पहले उठना, और ज़ाहिर है, यह सुनिश्चित करना कि भोर और शाम का समय चार दीवारों के अंदर नहीं बल्कि खुले आसमान के नीचे कुछ होने की तलाश में बिताया जाए, यात्रा के लिए अनिवार्य था। मेरा स्पष्टीकरण सरल था - हम वहाँ वन्यजीवों का आनंद लेने के साधारण उद्देश्य से जाते हैं। यह उसी तरह है जैसे कोई जानवर को देखने जाता है - आप वहाँ एक विशिष्ट उद्देश्य से जाते हैं। इसलिए, हमें जानवर के समय के अनुसार चलना होगा, अपने समय के अनुसार नहीं।
आजकल किसी को तैयार होने में औसतन तीस मिनट लगते हैं! और यह दस मिनट उन्हें जगाने के बाद का समय है। आजकल के लोग हद से ज़्यादा बिगड़े हुए हैं। उन्हें खास तरह का खाना चाहिए, मिनरल वाटर और सनस्क्रीन चाहिए, पश्चिमी शौचालय और मच्छर भगाने वाली दवा चाहिए, भड़कीले कपड़े पहनते हैं या शॉर्ट्स और सैंडल पहनकर हॉलीवुड सितारों की नकल करने की कोशिश करते हैं। उन्हें मुलायम बिस्तर और कंबल चाहिए। बारिश की पहली बूँद पड़ते ही वे रुक जाते हैं, इत्र लगाते हैं, और सबसे आधुनिक घड़ियाँ होने के बावजूद उन्हें समय का पाबंद होना नहीं आता। मामूली खरोंच पर भी उन्हें डेटॉल लगाना पड़ता है, और अक्सर मुझसे पूछा जाता है कि क्या टिटनेस का टीका लगवाना ज़रूरी है। यहाँ तक कि बीते ज़माने की औरतें भी आज के मर्दों से कहीं ज़्यादा मज़बूत थीं। आधुनिक जीवनशैली को देखकर मैं खुद को दुर्भाग्यशाली मानता हूँ। ऐसा लगता है कि हर साल कुछ न कुछ सुविधाएँ और आराम मिलते ही हैं, लेकिन पुराने और नए दोनों को देखकर मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि आज हम जिस तरह से जी रहे हैं, वह जीने का सही तरीका नहीं है। हर कोई हर समय कहीं न कहीं पहुँचने की जल्दी में रहता है। मुझे वो दिन याद हैं जब मैं बेंगलुरु की किसी सड़क से गुजरता था और मेरे साथ चल रहे कई लोगों को मैं जानता था। लोग विनम्र और दयालु थे, वे सम्मानजनक और विचारशील थे, और ये शिष्टाचार वे अजनबियों के प्रति भी दिखाते थे। अगर मुझे अपना पुराना जीवन वापस मिल जाए, तो मैं आज की हर सुविधा को त्याग दूँगा।

□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□

अध्याय पाँच

बीच के वर्ष
स्कूल के दिनों के अंत तक, मुझे पता चल गया था कि मैं बस
मुझे दोबारा क्लासरूम में पढ़ने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं थी। यह कोई क्रांतिकारी विचार नहीं था, क्योंकि बहुत से एंग्लो-इंडियन इस स्तर से आगे पढ़ाई नहीं करते थे। हमारा परिवार काफी जाना-माना था, इसलिए कभी-कभार कोई छोटा-मोटा काम मिल जाता था। तभी मेरे मन में आया कि कार वर्कशॉप एक ऐसा व्यवसाय होगा जिसमें हमेशा ग्राहकों की भीड़ लगी रहेगी। बेशक, मुझे ऑटोमोबाइल के बारे में कुछ भी नहीं पता था और न ही मेरे पास शुरुआती निवेश के लिए पैसे थे, और न ही किसी ऐसे व्यक्ति को काम पर रखने के लिए जो कार की मरम्मत करना जानता हो। सौभाग्य से, पिताजी को मेरे लिए एक गैरेज खोलने के लिए मनाने की मेरी छोटी सी कोशिश चमत्कारिक रूप से सफल रही। मैं तो यह भी कह सकता हूँ कि कारों के प्रति उनके आकर्षण ने मेरे इस चतुर दिमाग में इस विचार को जन्म देने में मदद की। वे प्रॉस्पेक्ट हाउस की संपत्ति के भीतर एक छोटा सा गैरेज खोलने के लिए शुरुआती निवेश करने को तैयार हो गए, और मैंने अपने पिताजी के परिचित सिडनी पोकॉक को इसे साझेदारी में शुरू करने के लिए मना लिया। उन्हें वेतन नहीं दिया जाएगा, बल्कि आय को पचास-पचास बाँटा जाएगा। वे विशेषज्ञता लाएंगे, जबकि मैं संपत्ति और पूंजी प्रदान करूँगा। उन्हें हमारे एक बाहरी मकान में रहने की जगह भी दी गई और हमने पूरी लगन से काम शुरू किया। पोकॉक की अच्छी प्रतिष्ठा थी और जल्द ही हमारा कारोबार खूब फलने-फूलने लगा। हम स्टैंडर्ड, वैनगार्ड, ऑस्टिन, फोर्ड और शेवरलेट जैसी गाड़ियों पर काम करते थे। उन दिनों भारतीय गाड़ियाँ नहीं थीं - मॉरिस माइनर समेत सभी गाड़ियाँ आयात की जाती थीं, और हम दोनों हर महीने लगभग पचहत्तर रुपये कमाते थे। यह मेरे लिए पेट्रोल, चारा, शिकारी गाइड की फीस और अन्य विविध खर्चों सहित दो मासिक यात्राओं का खर्च उठाने के लिए पर्याप्त था। कुछ समय तक सब ठीक चला, लेकिन फिर पैसों, औजारों की कमी आदि को लेकर हमारे बीच झगड़े होने लगे और हमारी साझेदारी के दो साल बाद ही हमारा रिश्ता खराब हो गया। हमारे रिश्ते के टूटने की आखिरी वजह तब साबित हुई जब मैंने उनके बेटे को गुजरात में औजार चुराते और बेचते हुए

रंगे हाथों पकड़ा, और पोकॉक ने कभी भी अपने बेटे के चोर होने की बात स्वीकार नहीं की, इसलिए अंततः हमारा कारोबार खत्म हो गया।

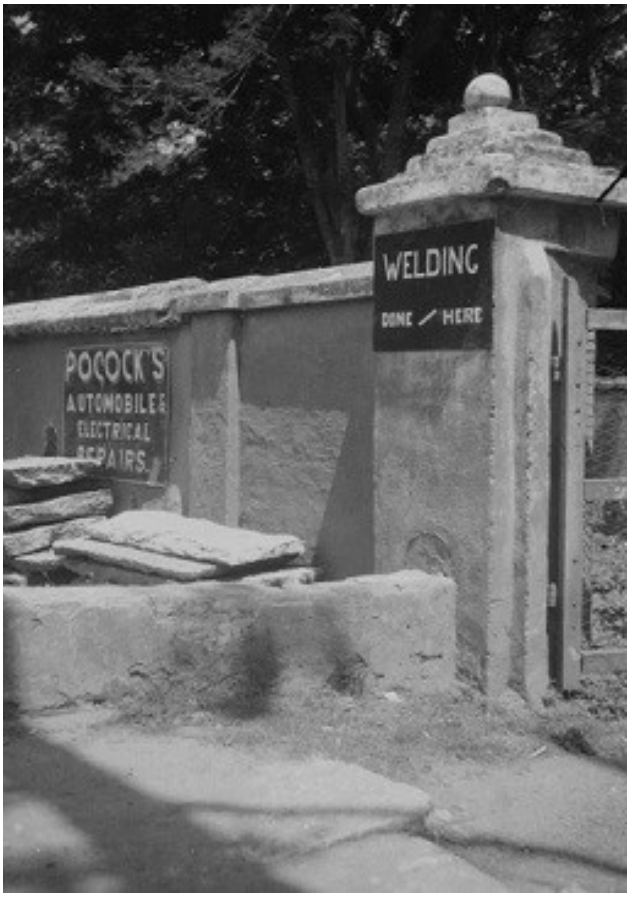

पोकॉक का गैराज

यह अजीब बात है, लेकिन मेरे माता-पिता ने मुझसे कभी शादी करने के लिए नहीं कहा। उन दिनों बच्चों पर शादी का दबाव डालना कतई आम बात नहीं थी, लेकिन फिर भी उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया, सिवाय कभी-कभार पूछने के। वे महिलाओं और शिकार के प्रति मेरे अटूट जुनून से वाकिफ थे और उन्हें लगता था कि मैं हमेशा अपने कार्यों की जिम्मेदारियों और परिणामों को समझता था। इसके अलावा, उनका वैवाहिक जीवन भी मुश्किल दौर से गुजर रहा था, इसलिए शायद वे नहीं चाहते थे कि मुझे भी उन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़े जिनसे वे गुजरे थे। हालांकि हम एक मध्यमवर्गीय परिवार थे, फिर भी हमारे पास हमेशा पैसे की कमी नहीं थी, और एक तरह से इसने मुझे बिगाड़ दिया, क्योंकि मुझ पर कभी भी घर चलाने के लिए बाहर जाने का कोई दबाव या मजबूरी नहीं थी। मेरे पिताजी की दोनों नौकरियां अच्छी तनख्वाह वाली थीं; पहले टेलीग्राफ ऑफिस

में और बाद में एचएएल में। इसके अलावा, उनकी किताबें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत सफल रहीं और हमें मिलने वाली रॉयल्टी से हमारा जीवन बहुत आरामदायक रहा। इसलिए, मुझे बस इतना करना था कि शिकार के अपने शौक के लिए पर्याप्त आर्थिक सहायता जुटाने के तरीके खोजूं, और मैंने जीवन में बहुत जल्दी यह समझ लिया था कि कुछ लोग प्रतिभाशाली होते हैं और कुछ धनी। मैं स्पष्ट रूप से पहले वर्ग में आता था, इसलिए मुझे समान रुचियों वाले, और आदर्श रूप से धनी लोगों को ढूंढना था। मैं कोई बहुत मेहनती व्यक्ति नहीं था, लेकिन मुझे जंगलों में वापस जाने, राइफल और गोला-बारूद खरीदने के लिए पैसे जुटाने थे, और इन सब में पैसा लगता था। इसलिए, हालांकि मेरा पहला व्यवसाय विफल हो गया था, मैंने छोटे-मोटे काम करने शुरू कर दिए, और इससे मुझे काफी आजादी तो मिली, लेकिन आमदनी स्थिर नहीं थी और मुझे आर्थिक तंगी को पूरा करने के लिए नौकरी ढूंढनी पड़ी। एक बार फिर, किस्मत मेरे साथ थी, और मुझे स्थानीय अखबार छापने वाले स्टार प्रिंटिंग प्रेस में नौकरी मिल गई और मैंने वहां 1955 तक काम किया। प्रेस मेरे स्कूल के सामने स्थित था और मेरवान के पिता का था। मुझे नौकरी पाने के लिए ज्यादा मनाने की जरूरत नहीं पड़ी। उस समय बैंगलोर इतना छोटा था कि हर कोई एक-दूसरे को जानता था और लोग एक-दूसरे पर आँख बंद करके भरोसा करते थे। मुझे नहीं लगता कि मेरे पास कोई खास योग्यता थी; मेरे अंक औसत से कम थे, लेकिन श्री चमारबागवाला ने मुझे यह अवसर देने में ज़रा भी संकोच नहीं किया। मैं मशीनरी में मदद करता था, छोटे-मोटे काम भी करता था और महीने में लगभग साठ रुपये कमाता था। हालाँकि मैं पैसों के लिए आभारी था, लेकिन यह मेरे गैराज के व्यवसाय से होने वाली कमाई से कम था। मेरे खर्चों में गर्लफ्रेंड्स का खर्च भी जुड़ जाता था। मेरी यौन इच्छा बहुत प्रबल थी और मैं बहुत सी महिलाओं के साथ सोकर उसे पूरा करता था। जवान, बूढ़ी, अविवाहित, विवाहित, तलाकशुदा, विधवाएँ, यूरोपीय, एंग्लो-इंडियन, भारतीय, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मुझे लगभग कभी भी उनके पीछे नहीं पड़ना पड़ा, मैं महिलाओं के इशारों को समझने का इतना आदी हो चुका था, चाहे वे इशारे हों या स्पष्ट। कई बार एक रात का रिश्ता होता था, कुछ दो हफ्ते तक चलती थीं, और कुछ तो महीनों तक भी चलीं। हालाँकि मुझे कभी भी नए रिश्ते बनाने का रोमांच पसंद नहीं आया, लेकिन एक ही समय में कई महिलाओं के साथ रहने के अपने जोखिम और फायदे थे। मैंने शुरू से ही अपने रिश्ते की अल्पकालिकता के बारे में स्पष्ट कर दिया था, और मैंने कभी भी एकनिष्ठ होने का दिखावा नहीं किया,

लेकिन फिर भी, कई रिश्तों को संभालना आसान काम नहीं था। जंगल के विपरीत, जहाँ हर पल एक नए रोमांच का वादा करता था, महिलाओं के साथ, मुझे जल्दी ही एहसास हो गया कि यह बहुत उबाऊ हो गया है। इस दौर ने मुझे यह एहसास दिलाया कि मैं कभी भी शादी करके स्थिर नहीं हो सकता; मैं अपने बाकी जीवन एक ही महिला के साथ बिताने की नीरसता की कल्पना भी नहीं कर सकता था!
जब बात विविधता की आती थी, तो मेरी चाहत हद से ज़्यादा बढ़ जाती थी और इस अंतहीन उपलब्धता ने मेरे अहंकार को असहनीय हद तक बढ़ा दिया था। ठीक जब मुझे लगता कि आखिरकार मुझे सही लड़की मिल गई है, तभी मुझे एहसास होता कि वह मुझे बोर कर रही है, और मेरी नज़रें अगली लड़की पर टिक जातीं। इस दौर ने मेरे इस विश्वास को और मज़बूत कर दिया कि मैं शहर की तमाम उलझनों के बजाय जंगल में किसी जलकुंड के किनारे बैठकर ज़्यादा सुकून महसूस करता हूँ। बिन्नी मिल्स
बैंगलोर वूलन, सिल्क और कॉटन मिलें, जिन्हें बिन्नी मिल्स के नाम से जाना जाता था, उन दिनों बैंगलोर में काम करने के लिए सबसे प्रतिष्ठित संगठनों में से एक थीं। 1884 में स्थापित, यह क्षेत्र की सबसे पुरानी मिल थी, जो सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले सूती और ऊनी वस्त्रों का उत्पादन करती थी। शुरुआती दिनों में, मिल भाप से चलती थी, लेकिन 1900 के दशक की शुरुआत में बैंगलोर देश का पहला शहर बना जहाँ बिजली पहुँची। जल्द ही मिलें जलविद्युत से चलने लगीं और संभवतः बैंगलोर में बिजली से चलने वाली शुरुआती कुछ फैक्ट्रियों में से एक थीं। इसके बाद मिल को चेन्नई स्थित बकिंघम एंड कार्नेटिक मिल्स (बिन्नी एंड कंपनी) ने अपने अधीन ले लिया, जिन्होंने लगभग एक सदी तक इसका संचालन किया। चेन्नई में उनकी दो बड़ी मिलें और बैंगलोर में एक छोटी मिल थी। बैंगलोर स्थित इकाई को बिन्नी कॉटन फैक्ट्री कहा जाता था और इसका संचालन एक अमेरिकी औद्योगिक इंजीनियर और एक जर्मन संचालन प्रबंधक द्वारा किया जाता था। उनका बिक्री कार्यालय एमजी रोड पर था, बेन्सन टाउन में उनके अधिकारियों के लिए विशाल बंगले थे, जबकि उनका मुख्य कार्यालय ओखलीपुरम में शहर के रेलवे स्टेशन के पास था। अन्य कई मिश्रित कपड़ा मिलों की तरह, बिन्नी मिल्स का पतन 70 के दशक के उत्तरार्ध में शुरू हुआ। उन्होंने अपनी मशीनों का आधुनिकीकरण बंद कर दिया और अचानक बाज़ार में प्रतिस्पर्धा बढ़ गई, जिससे उत्पादन में वृद्धि की मांग होने लगी। इसका अर्थ था श्रमिकों के लिए अधिक काम, और इसी के साथ श्रम अशांति भी शुरू

हो गई। ये यूनियनें लगभग उग्र थीं और केवल अशांति पैदा करना चाहती थीं, उनका काम करने का कोई इरादा नहीं था। संगठन ने बढ़ती श्रम और परिचालन लागतों की भरपाई के लिए कपड़ों की कीमतें बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन यह भी एक और विफलता साबित हुई। उपभोक्ताओं की इसमें कोई रुचि नहीं थी क्योंकि उनके पास सस्ते और बेहतर विकल्प उपलब्ध थे, इसलिए स्वाभाविक रूप से बिक्री में भारी गिरावट आई और उसके बाद से स्थिति और भी खराब होती चली गई।
मुझे बिन्नीज़ में अच्छी नौकरी मिल गई, यह मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात थी और यह संयोगवश ही हुआ। हालाँकि मेरे पास स्नातक की डिग्री नहीं थी - उन दिनों यह कोई अनिवार्य शर्त नहीं थी - फिर भी कुछ अनुकूल परिस्थितियों के चलते मुझे नौकरी मिल गई। मैं कई वर्षों से शिकार कर रहा था और बैंगलोर के साथ-साथ वन विभाग के कई अधिकारियों के बीच मेरी अच्छी प्रतिष्ठा थी। मेरी उम्र के कई लड़के मुझे अपना आदर्श मानते थे और हमेशा मुझे अपने साथ शिकार पर ले जाने की कोशिश करते थे। हालाँकि, मैं बहुत सोच-समझकर ही शिकार चुनता था, क्योंकि मैंने यह अनुभव कर लिया था कि शहर के लोग जंगलों में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते। मेरे मित्र क्लाइव ग्रीनवुड, जिनके पिता बिन्नीज़ में एक वरिष्ठ अधिकारी थे, एक अपवाद थे। मैं 1956 से क्लाइव के साथ नियमित रूप से शिकार पर जाता था। शिकार यात्रा के दौरान उनका पूरा ध्यान किसी ट्रॉफी को हासिल करने पर होता था, और मुझे लगता था कि कभी-कभी उन्हें जंगलों में रहने का रोमांच नहीं मिलता था, लेकिन इन यात्राओं में वह एक अच्छे साथी थे। वह एक अचूक निशानेबाज थे, उनकी नज़रें तेज़ थीं और उनका हौसला बुलंद था। उन्हें एहसास हुआ कि उस समय मेरी नौकरी मुझे शिकार पर जाने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता नहीं दे रही थी, और उन्होंने अपने पिता से मेरे बारे में बहुत प्रशंसा की। ग्रीनवुड सीनियर को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा कि उनका बेटा मेरे जैसे बिगड़े हुए, खून के प्यासे बदमाश के साथ समय बिता रहा था, जो उन दिनों बैंगलोर के समाज का उच्च वर्ग नहीं था। लेकिन, लड़के तो लड़के होते हैं और बेटे अपने पिता की बात नहीं मानते, इसलिए पिता अपने बेटे के दबाव के आगे झुक गए, और मैंने 1959 में स्टोर्स में सहायक क्लर्क के रूप में काम शुरू किया। मेरा शुरुआती वेतन एक सौ पचास रुपये प्रति माह था, जो काफी अच्छा था, और मैंने वहीं रहने का फैसला किया। यह फैसला सही साबित हुआ क्योंकि जब मैंने पच्चीस साल की सेवा के बाद इस्तीफा दिया, तो मैं हेब्बल में गारमेंट इंडस्ट्रीज डिवीजन में मैनेजर

[illegible]

[illegible]

मैं हमेशा सप्ताहांत में जंगल घूमने का समय निकाल लेता था, फिर भी सोमवार सुबह सायरन बजना कभी नहीं भूलता था। साल बीतते गए और लगातार पदोन्नति के साथ मेरा कद बढ़ता गया। संयोगवश, मेरा वजन भी बढ़ता गया, और उससे भी कहीं ज़्यादा गंभीर बात यह थी कि बिन्नी की फैक्ट्री में मज़दूर संघ की शक्ति भी बढ़ती गई। सत्तर के दशक के मध्य तक, उनका एकमात्र उद्देश्य फैक्ट्री को पूरी तरह से ठप करना था। साम्यवाद उन लोगों का नया मंत्र बन गया था, जिनका एजेंडा दुनिया को जितना वे दिखाना चाहते थे, उससे कहीं ज़्यादा भयावह था। बिन्नी की फैक्ट्री एक बुरे सपने में तब्दील हो गई थी और रोज़ाना अजीबोगरीब मांगें उठती रहती थीं। संघ का नेतृत्व माइकल फर्नांडीस कर रहे थे, और हालांकि वे संघ के नेता थे, फिर भी कभी-कभी मुझे लगता है कि मज़दूरों की कुछ मांगों के लिए उन्हें ज़िम्मेदार ठहराना भी मुश्किल था। मुझसे पहले वाले मैनेजर ने तय किया था कि सभी मज़दूरों को शाम को चाय के साथ नाश्ता भी दिया जाना चाहिए; वास्तव में, उन्होंने तो हर चीज़ का ग्राम भी निर्धारित कर दिया था, जो जर्मन सटीकता के कई उदाहरणों में से एक था। इस बात को एक भारतीय कम्युनिस्ट ने संदर्भ से हटाकर पेश किया, और हर शाम चाय के समय हंगामा होता था। भीड़ जमा हो जाती और मेरी तरफ खाना फेंका जाता, जहाँ मैं बाकी मजदूरों के साथ बैठा होता था, साथ ही गालियों की बौछार भी होती थी।
"आप हमें धोखा दे रहे हैं, यह वड़ा सात औंस का नहीं है" या "क्या आप हमसे यह डोसा खाने की उम्मीद करते हैं जो स्पष्ट रूप से पांच औंस का नहीं है"। हालांकि मेरे पास उन आरोपों का बचाव करने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं था, लेकिन कभी-कभी प्राकृतिक जगत की मेरी समझ मेरी मदद करती थी। वे कभी-कभी अपने खाने में भृंग या "वंडू" डाल देते थे और शिकायत करते थे कि मैं रसोई कर्मचारियों को खाने में मात्रा बढ़ाने के लिए उनका इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करता था। मैं जवाब देता था: "मुझे बेवकूफ मत बनाओ, ये वंडू सिर्फ रात में निकलते हैं, दिन में नहीं!"
औरतें भी कम नहीं थीं। शायद उनमें वो बात थी जिसे मेरे पिताजी "छठी इंद्री" कहते थे, बस फर्क इतना था कि उन्हें आने वाली हड़ताल का आभास हो गया था, और कुछ ही मिनटों में एक सुचारू रूप से चलने वाली मशीन से पचास से ज़्यादा महिलाओं के बाथरूमों का सारा पानी निकल गया। फिर शुरू हुआ दिखावा: "जब बाथरूम में पानी ही नहीं है तो आप हमसे काम करने की उम्मीद कैसे कर सकते

हैं?" जो लोग गुप्त कला आंदोलन से परिचित हैं, जो रहस्यमय तरीके से सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाते हैं, उन्हें बिन्नी के बाथरूमों के अंदर का नजारा देखकर जानी-पहचानी स्थिति का एहसास हो जाता। और जिन लोगों को लगता था कि उस समय महिला कलाकार कम थीं, उन्हें बिन्नी के महिलाओं के बाथरूमों में जाकर ही पता चल जाता कि उनका डर बेबुनियाद था। मुझे नहीं पता कि मैं खुश हुई या हैरान, क्योंकि मैं भी इनमें से कुछ भित्ति चित्रों में दिखाई दी थी - मुझे कभी-कभी जाकर इन्हें देखना पड़ता था, ये मेरे काम का हिस्सा था - अक्सर अतिरंजित, अशोभनीय और शारीरिक रूप से असंभव आकारों और स्थितियों में! मेरे अधीन कई लोग काम करते थे, जिनमें कई महिलाएं भी शामिल थीं। हालांकि मेरी बदनामी हुई, लेकिन इससे मेरे व्यवहार या काम पर कभी कोई असर नहीं पड़ा। ऑफिस शुरू होने से पहले, ऑफिस के बाद, ब्रेक के दौरान... मैं हमेशा दस मिनट अकेले बिताने का बहाना और समय निकाल लेता था। कंडोम एक अनजान चीज़ थी, इसलिए बहुत सावधानी बरतनी पड़ती थी; एक तरह का एड्रेनालाईन रश, ठीक वैसा ही एहसास जैसा मुझे शिकार के दौरान किसी को अंतिम वार करते समय होता था। काम में मेरी सफलता और महिलाओं के साथ मेरी खराब छवि के बावजूद, मैं अक्सर अनजाने में ऐसी स्थितियों में फंस जाता था जिनसे मामला और बिगड़ जाता था। एक बार हमारे ऑफिस में एक कल्याण अधिकारी थीं, कांचीपुरम की साड़ी पहनने वाली ब्राह्मण महिला, जो बहुत पढ़ी-लिखी थीं, लेकिन छोटी-मोटी समस्या के लिए भी मेरे पास आती थीं। मुझे उन समस्याओं का समाधान ढूंढने की क्षमता के लिए सम्मान मिलता था जिन्हें हल करने का मुझे कोई अनुभव नहीं था, और वह मुझसे सलाह लेने के लिए दिन में कई बार आती थीं। तब तक मैं काफी वरिष्ठ पद पर था और अंग्रेज़ों और जर्मन अधिकारियों की तरह कांच के केबिन वाला इकलौता भारतीय था। एक सुबह मुझे कारखाने से एक बेहद परेशान करने वाला फोन आया, “सर, जल्दी आइए, हमें मजदूरों से जुड़ी गंभीर समस्या हो रही है। और अपने साथ कल्याण अधिकारी को भी ले आइए।”
“अरे यार!” मैंने मन ही मन कहा। मेरे पास कार नहीं थी; मैं क्या करूँ? इसलिए मैंने अपने एक सहायक से पूछा कि क्या मैं उसका स्कूटर उधार ले सकता हूँ; हालाँकि उसके पास कोई और विकल्प नहीं था, फिर भी वह मान गया। श्रीमती वी, जिन्हें पीछे बैठने की आदत नहीं थी, ने हिम्मत जुटाकर कहा, “मैं पीछे बैठ जाऊँगी।”

मुझे पक्का यकीन था कि स्कूटर पर पहले कभी न बैठने की वजह से ही उसने जल्दी फैसला लिया। मैं मोटरसाइकिल चलाने का आदी था और मुझे पूरा भरोसा था कि मैं स्कूटर चलाना भी सीख लूंगा। मेरी मोटरसाइकिल पर महिलाएं हमेशा मेरे पीछे पैर फैलाकर बैठती थीं, और मैं सोच रहा था कि श्रीमती वी अपनी साड़ी को देखते हुए ऐसा कैसे करेंगी, लेकिन वह तो एक तरफ से बैठ गईं। वैसे तो आम तौर पर इसमें कई अनजान पहलू होते, लेकिन यह एक आपातकालीन स्थिति थी, इसलिए हम चल पड़े। अगर भगवान को थोड़ा और मज़ा लेना था, तो श्रीमती वी ने यह कहकर उनकी मदद की कि वह मुझे पकड़ना नहीं चाहतीं। वैसे भी हालात कुछ खास अच्छे नहीं थे और स्कूटर स्टैंड से 100 मीटर दूर जाकर बात बिगड़ गई। एक कुत्ता सड़क पार कर रहा था, इसलिए मैंने झट से ब्रेक लगाया और देखा कि श्रीमती वी की स्कूटर पर पकड़ लगभग खत्म हो चुकी थी। वह बहुत मजबूत थीं और चोट लगने के बावजूद, ऑफिस वापस जाते समय उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। मैंने उसे उसके घावों की देखभाल करने के लिए वहीं छोड़ दिया और वैकल्पिक व्यवस्था के लिए कुछ फोन करने की कोशिश करने लगा। मैं किसी से बात कर रहा था तभी वह अंदर आ गई।
"क्या आप ठीक हैं, श्रीमती वी?"
“जी सर, यहाँ मुझे चोट लगी है,” और उन्होंने लगभग अपनी साड़ी उठाकर मुझे अपनी जांघ पर लगी चोट का निशान दिखाया। मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन वहाँ कांच का दरवाजा था और सब लोग हमें घूर रहे थे। बेचारी महिला सदमे में इतनी डूबी हुई थी कि उसे इस बात का एहसास ही नहीं हुआ।
मैंने कहा, "इसे जल्दी नीचे रख दो। मैं पहले से ही यूनियन के साथ काफी झंझट में फंसा हुआ हूँ।"
"जी श्रीमान!"
सचमुच एक "अय्याइयो" वाला पल था, क्योंकि मेरे दोस्त आने वाले कई सालों तक इस बात पर मेरा मजाक उड़ाते रहे।
हम अक्सर बोर्ड सदस्यों के लिए सामाजिक समारोह आयोजित करते थे और सभी व्यवस्थाओं की ज़िम्मेदारी मेरी थी। विदेश से आने वाले मेहमानों को भारत में अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, और अक्सर मज़ेदार "भारतीय किस्से" सुनाए जाते थे। श्रोताओं को पहले ही चेतावनी दे दी जाती थी कि अगर उन्हें अपनी नौकरी प्यारी है तो इन चुटकुलों पर हँसें और भाषणों पर तालियाँ बजाएँ। मुझे एक घटना याद है जब इंग्लैंड से बेंगलुरु आई

एक महिला भारतीय व्यंजनों की बारीकियों के बारे में बता रही थी। "मुझे कहना होगा कि ये चपरासी (चपरासी) उतने हल्के नहीं होते जितने दिखते हैं। रात में बस दो-तीन खाने से ही आपका पेट भर जाएगा और आप संतुष्ट हो जाएँगे।" जब श्रोता ज़ोर से हँसे तो उन्हें बहुत गर्व महसूस हुआ होगा, हालाँकि उन्हें शायद पता नहीं था कि ऐसा क्यों हुआ।
मुझे लगता है कि मैं एक बहुत ही निष्पक्ष और मेहनती प्रबंधक था। मैंने कभी अपनी आवाज़ ऊंची नहीं की और न ही अपना रौब दिखाया, और मैंने हमेशा अनुशासन और शिष्टाचार का उदाहरण पेश किया। मुझे अक्सर पदोन्नति मिलती रहती थी, और मुझे एक बहुत ही आरामदायक कांच का केबिन मिला जहाँ मैं रिपोर्ट और कागजी कार्रवाई संभालता था। फिर स्थानीय प्रबंधन को यह अजीबोगरीब विचार आया कि हमारे पास प्रशिक्षण और अन्य कौशल की कमी है। इसलिए, उन्होंने अपने ब्रिटिश निदेशकों से कहा कि वे किसी को कपड़ा कारखाने के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए भेजें। प्रशिक्षण के लिए आने वाले पहले व्यक्ति को बोर्ड ने एक महीने के भीतर ही निकाल दिया। दूसरा व्यक्ति कुछ समय तक टिका रहा लेकिन उसे भी निकाल दिया गया। जैसा कि अधिकांश चुनौतियों में होता है, उन्होंने इसके बाद डोनाल्ड एंडरसन को बुलाया। यह स्पष्ट रूप से वह नहीं था जो मैं चाहता था, और मेरे चेहरे के भाव मेरे मन की सच्ची अभिव्यक्ति थे। ध्यान रहे, यह सब बोर्ड के सामने हुआ।
"आप इतने खुश क्यों नहीं दिख रहे हैं, मिस्टर एंडरसन?"
“देखिए महोदय, मैंने पहले दो प्रशिक्षकों के साथ जो हुआ वो देखा है, और मैं नौकरी से निकाला जाना नहीं चाहता, क्योंकि स्पष्ट रूप से मुझे लोगों को प्रशिक्षण देने का कोई पूर्व अनुभव नहीं है।” “श्रीमान एंडरसन, मैं इसे आपके लिए बिल्कुल स्पष्ट और सरल शब्दों में समझा देता हूँ। यदि आप यह नौकरी नहीं लेते हैं, तो आपको ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ेगा, हम आपको अभी निकाल देंगे।” मुझे नहीं पता कि जर्मनों में हास्यबोध होता है या नहीं, लेकिन जब उन्होंने यह कहा तो उनके चेहरे पर मुस्कान नहीं थी, और मैं सचमुच कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था। तो रातोंरात, बिना किसी चेतावनी या इच्छा के, मुझे प्रशिक्षण और उत्पादन प्रबंधक बना दिया गया। अगले दिन जब मैं पहुँचा तो पाया कि मेरे केबिन में कोई और बैठा था। मैं गुस्से में अपने प्रबंधक के कार्यालय गया और उनसे स्पष्टीकरण मांगा, क्योंकि क्या मैं नया “प्रशिक्षण और उत्पादन प्रबंधक” नहीं था?

“तुम तो प्रोडक्शन मैनेजर हो, तुम्हें ही फैक्ट्री में काम करना होगा।” इस तरह मेरी शान गिरी; वातानुकूलित दफ्तर से मुझे एक गर्म, शोरगुल भरे माहौल में काम करने के लिए भेज दिया गया, जहाँ मेरे लिए कोई काम करने वाला भी नहीं था। मैं आठ घंटे की शिफ्ट करता था और फिर चार घंटे कागजी काम और निगरानी में लगा रहता था। यह बेहद कठिन काम था। चरम पर, आठ घंटे की शिफ्ट में हम दो हज़ार कमीज़ें और आठ सौ पतलूनें बनाते थे। आठ घंटे तक लगभग बिना रुके खड़े रहने से, दिन के अंत तक मैं पूरी तरह थक जाता था। और यकीन मानिए, शुक्रवार को मैं काम से सीधे जंगल के लिए निकल जाता था, छह घंटे गाड़ी चलाता था, शनिवार की सुबह शिकार शुरू करता था, उसी रात और रविवार की सुबह इसे दोहराता था, रविवार को दिन भर आराम करता था, और अगर मुमकिन होता तो रविवार रात को शिकार भी कर लेता था और सोमवार सुबह बेंगलुरु वापस आकर यही दिनचर्या फिर से शुरू कर देता था। बेशक, मैं हर सप्ताहांत जंगल नहीं जाता था, यह मेरे लिए भी बहुत ज़्यादा होता।

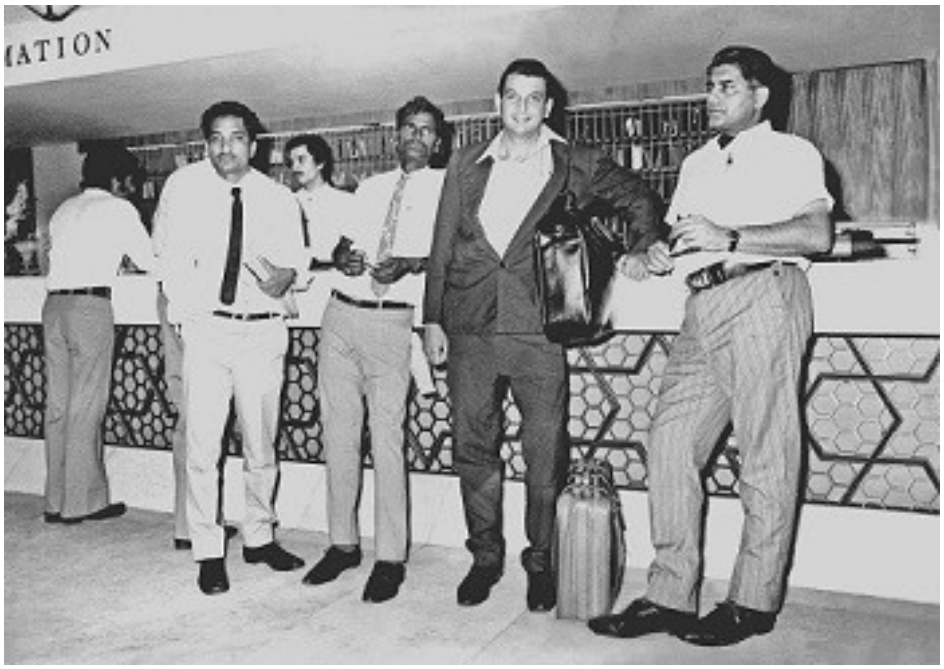

ताज कॉनेमारा में, बिन्नी के एक सम्मेलन के लिए।

मैंने यह सुनिश्चित किया कि मेरी तनख्वाह 1600 रुपये प्रति माह पर ही अटकी रहे, भले ही मैंने इसे बढ़ाने के कई प्रयास किए। मैंने हमेशा ईमानदारी से मना किया क्योंकि बिन्नी के नियम के अनुसार, 1600 रुपये प्रति माह से अधिक वेतन पाने वाले कर्मचारी को ग्रेच्युटी या पेंशन नहीं

मिलती थी। 1979 के अंत तक, बिन्नी के चेन्नई कारखाने में बारह हजार और बैंगलोर में आठ हजार कर्मचारी थे। यूनियनों की लगातार हड़तालों के कारण उत्पादन और मुनाफा बुरी तरह गिर गया और हम ऐसी स्थिति में पहुँच गए जहाँ हमें बड़ी संख्या में कर्मचारियों को निकालना पड़ा। यह एक ऐसी स्थिति थी जिसमें कोई जीत नहीं थी, क्योंकि लोग अपनी नौकरी खो देते, यूनियन विद्रोह कर देती और इससे और भी समस्याएँ पैदा हो जातीं। फिर भी, यह करना आवश्यक था, और मुझे लोगों को निकालने का अपमानजनक काम सौंपा गया। इससे भी बुरी बात यह थी कि मेरे सभी विरोधों के बावजूद उन्होंने मुझे पदोन्नत कर दिया और मेरा वेतन बढ़ाकर दो हजार रुपये प्रति माह कर दिया। जब मैंने 1980 में कंपनी छोड़ी, तो मुझे पेंशन के रूप में एक बड़ी राशि मिली। माइकल फर्नांडीस मेरे पास आए और बोले, "आपको जाते हुए देखकर दुख हो रहा है।" मुझे लगता है कि यह सम्मान के कारण था, न कि चिंता या सहानुभूति के कारण। मैं उस समय बहुत उग्र स्वभाव का था और मैंने पलटकर कहा, "देखते हैं अब तुम कंपनी कैसे चलाते हो।" इसके बाद बिन्नी का पतन बहुत भयानक हुआ।
खाना
माँ कभी खाना नहीं बनाती थीं, क्योंकि हम काफी संपन्न थे और एक रसोइया रख सकते थे। लेकिन उन्होंने हमारी रसोइया रोज़ी को कुछ पारंपरिक व्यंजन बनाना सिखाया था, जो हमारे घर का अभिन्न अंग बन गए थे। रोज़ी एक तमिल ईसाई थीं और उन्होंने पहले से ही विशिष्ट एंग्लो-इंडियन व्यंजनों में अपना विशेष स्वाद जोड़ दिया था। हमारी रसोई में विभिन्न प्रभावों का गहरा असर था: कुछ मेरे पिताजी के ब्रिटिश पक्ष से, कुछ मेरी माँ के फ्रांसीसी और श्रीलंकाई पक्ष से, और फिर, निश्चित रूप से, बैंगलोर छावनी के अनूठे स्वाद और व्यंजन। हमारे घर में शाकाहारी भोजन कभी लोकप्रिय नहीं था, लेकिन आलू की चपातियाँ मुझे हमेशा पसंद थीं। अचार भी बहुत लोकप्रिय थे, जिनमें नींबू और बैंगन सबसे ऊपर थे। अचार बनाना मेरे पिताजी की ज़िम्मेदारी थी और वे जहाँ भी जाते, सामग्री और व्यंजन विधियाँ इकट्ठा करते और उन्हें अपना अनूठा रूप देते। ये आम भारतीय अचारों की तुलना में थोड़े कम खट्टे होते थे और तीखे-मीठे होते थे। मेरे पिताजी घर की रसोई में ज़्यादा कदम नहीं रखते थे, लेकिन जंगल में घूमने के दौरान हम जो शिकार करते थे, उससे अपनी पसंद की कुछ रेसिपी बनाने की कोशिश ज़रूर करते थे। इस तरह इन यात्राओं में वो खाना बनाने और घर चलाने दोनों का काम करते थे और माँ को ये बहुत अच्छा लगता था,

क्योंकि इससे उन्हें बिना किसी झंझट के असली छुट्टी मिल जाती थी। उत्तर भारतीय खाना ज़्यादा प्रचलित नहीं था, इसलिए भुट्टा (भुट्टा) या उबली हुई मूंगफली जैसी चीज़ें हमारे बचपन में कभी देखने को नहीं मिलती थीं। चीनी रेस्टोरेंट युद्ध के एक दशक बाद तक अस्तित्व में नहीं आए थे और आमतौर पर पूर्वी देशों से आए अप्रवासियों द्वारा चलाए जाते थे, कभी-कभी तो तीसरी या चौथी पीढ़ी के लोग। कोशीज़ और द ओनली प्लेस स्टेक खाने के लिए बेहतरीन जगहें थीं और ब्रिगेड रोड पर स्थित ब्रीज़ बैंगलोर के पहले ज्यूकबॉक्स वाले रेस्टोरेंट में से एक था। रेस्टोरेंट की बात करें तो, एमजी रोड पर स्थित फन्नेल युद्ध से पहले बहुत मशहूर था, लेकिन मेरा पसंदीदा इंपीरियल या इम्पीज़ था, जिसके कुश्का और मटन चॉप्स लाजवाब होते थे। इन्फैंट्री रोड पर स्थित ताज रेस्टोरेंट मेरे दोस्तों के बीच काफी लोकप्रिय हो गया था, और साठ के दशक में तीन-चार लोगों के लिए भरपेट खाना सिर्फ दस रुपये में मिल जाता था। जिसे हम आज थॉम्स बेकरी के नाम से जानते हैं, वह 60 और 70 के दशक में एक बहुत ही मशहूर कैफे था, जिसे ब्रिगेड रोड पर स्थित कोशीज़ को टक्कर देने के लिए शुरू किया गया था। उस समय बेकरी और डिपार्टमेंट स्टोर तो मौजूद थे, लेकिन वे रेस्टोरेंट का ही एक हिस्सा थे, और बैंगलोर के युवाओं, खासकर उस इलाके में रहने वाले एंग्लो-इंडियन परिवारों के बीच यह बहुत लोकप्रिय जगह थी। उन दिनों नाचने पर कोई रोक नहीं थी और दस पैसे में कैफे के ज्यूक बॉक्स पर कोई भी गाना बजने लगता था, और वहां का माहौल हमेशा बहुत ही खुशनुमा रहता था। हालांकि मैं वहां आने वाले लोगों की औसत उम्र से बड़ा था, फिर भी ज्योति निवास कॉलेज की लड़कियां मुझे हमेशा तारीफ भरी नजरों से देखती थीं, जिसका कैंपस कैफे के बिल्कुल बगल में था। जैसे-जैसे मैंने काम करना शुरू किया, ऑल सेंट्स बेकरी, कैथोलिक क्लब के पास क्राउन बेकरी और फातिमा की बेकरी हमारी पसंदीदा जगहें बन गईं, जहां हम सब इकट्ठा होकर मौज-मस्ती करते थे। जिन जगहों पर मैं अक्सर जाया करता था, उनमें से एक एमजी रोड पर स्थित थ्री एसेस क्लब था। हालांकि मैं डांस में उतना माहिर नहीं था, लेकिन क्लब में हमेशा अच्छा संगीत बजता था, और कलकत्ता के कई प्रतिभाशाली कलाकार वहां परफॉर्म करते थे। यह अपनी तरह का अनोखा क्लब था और महिलाओं से मिलने के लिए एक बेहतरीन जगह थी। हालांकि इसे संभ्रांत वर्ग के लिए अनुपयुक्त माना जाता था, फिर भी कई वर्षों तक यह एक प्रतिष्ठित जगह बनी रही, लेकिन अधिक ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए यह एक स्ट्रिप क्लब में

बदल गया और फिर उससे भी बदतर हो गया। उन दिनों के जाने-माने ब्रांड आज हमारे घरों की अलमारियों से गायब हो चुके हैं। क्रॉस एंड ब्लैकवेल पनीर, मक्खन, जैम, जेली और अचार बनाते थे। मेजर ग्रे की चटनी भी मेरी पसंदीदा थी; इसमें किशमिश, सिरका, नींबू का रस, प्याज, इमली और मसाले होते थे। कोलमैन की सरसों और पॉलसन का मक्खन हर नाश्ते की मेज पर मौजूद होता था, और वैन हाउटेन का कोको मुझे शाम को हॉट चॉकलेट का पेय देता था, जबकि क्वेकर ओट्स का दलिया नाश्ते का नियमित हिस्सा था। कुछ ही भारतीय ब्रांड थे, जिनमें से मुझे वेंकटचेल्लम का करी पाउडर अच्छी तरह याद है, जो हर घर में आसानी से मिल जाता था, चाहे वह अंग्रेज़ घर हो या भारतीय। ये सारी चीज़ें कुछ ही जगहों पर मिलती थीं, जिनमें सबसे बढ़िया एमजी रोड पर स्थित स्पेंसर एंड कंपनी थी, जिसकी स्थापना एक अंग्रेज़ श्री ओकशॉट ने की थी। स्पेंसर के ठीक दाईं ओर लिबर्टी थिएटर था, जहाँ आज हैंडलूम हाउस है। स्पेंसर के अलावा, दूसरा डिपार्टमेंटल स्टोर ब्रिगेड रोड पर नीलगिरिस था, लेकिन वह स्पेंसर जितना भव्य नहीं था। इन सुपरमार्केटों के होने के बावजूद, हम बहुत ही सादा जीवन जीते थे और कभी वहाँ जाते नहीं थे। हम कार्बोलिक साबुन और घर में बने शैंपू इस्तेमाल करते थे। हम कभी अस्पताल नहीं जाते थे, डॉक्टर के पास तो कभी जाते ही नहीं थे, सिवाय तब जब कोई बड़ी चोट हो जैसे कि हड्डियाँ टूटना। गरम सूप से ज़्यादातर बीमारियाँ ठीक हो जाती थीं, एक चम्मच ब्रांडी से अच्छी नींद आती थी और अक्सर इससे सारी परेशानियाँ दूर हो जाती थीं। अगर इतना ही काफी नहीं होता, तो हम विरोल पीते थे, एक टॉनिक जो बच्चों के विकास में मददगार माना जाता था। घर पर नाश्ते में बेकन, सॉसेज और तले हुए अंडे के साथ ब्रेड, मक्खन, मुरब्बा और जैम जैसे विकल्प होते थे। इसके बाद श्रेडेड व्हीट या कॉर्नफ्लेक्स नामक अनाज खाया जाता था। कभी-कभी हमें मार्माइट भी खाना पड़ता था, जो देखने में काले जैम जैसा लगता था और स्वाद में बेस्वाद होता था, लेकिन माना जाता था कि इसमें भरपूर प्रोटीन होता है, इसलिए कभी- कभी यह हमारे नाश्ते में शामिल हो जाता था। हॉर्लिक्स और ओवलटाइन बच्चों के लिए नाश्ते के पेय थे, जबकि वयस्क कैंप चिकोरी कॉफी पीते थे, जो ब्रू कॉफी जैसी ही होती थी।
जब हम जंगल पहुँच जाते थे, तो हम लगभग सब कुछ खा लेते थे। मेरा मतलब है, सब कुछ। जब हमारा राशन कम हो जाता था, तो हम जंगली बेर, कंद, जंगली मुर्गे और कभी-कभी हिरण का मांस भी खा लेते थे, हालाँकि मेरे पिताजी इसका कड़ा विरोध

करते थे। पानी की बात करें तो, पास की बहती नदी से राहत मिल जाती थी, लेकिन कभी-कभी प्यास इतनी तेज होती थी कि हम जंगल के तालाबों से पानी पी लेते थे, यह जानते हुए भी कि हमें दस्त और दूसरी बीमारियाँ हो जाएँगी।

जंगलों में बीमार पड़ने का सबसे आसान तरीका

हैरी ब्लैक और बाघ
1957 में, 20th सेंचुरी फॉक्स ने डेविड वॉकर के उपन्यास 'हैरी ब्लैक' पर आधारित फिल्म 'हैरी ब्लैक एंड द टाइगर' की घोषणा की। शुरुआती योजना इसे उत्तरी भारत में कहीं शूट करने की थी, लेकिन यह संभव नहीं हो पाया और इसे नीलगिरी में शूट करने का फैसला किया गया। 'भवानी जंक्शन' 1956 में रिलीज़ हुई थी और हालांकि इसे पाकिस्तान में शूट किया गया था, लेकिन फिल्म की सफलता ने हॉलीवुड को भारतीय उपमहाद्वीप में कदम रखने के लिए प्रोत्साहित किया। स्टूडियो को लगा कि आदमखोर बाघ सहित इसी तरह की कहानी का रहस्यवाद और रोमांस बॉक्स ऑफिस पर ज़बरदस्त सफलता के लिए सभी ज़रूरी तत्व प्रदान करता है। स्थापित स्टार स्टीवर्ट ग्रेंजर, जिन्होंने हाल ही में 'गन एंड ग्लोरी' पूरी की थी, को मुख्य भूमिका के लिए चुना गया, जबकि उनके साथ बारबरा रश और एंथनी स्टील सहायक भूमिकाओं में थे। भारत में बनी फिल्म के लिए भारतीयों की ज़रूरत थी, और उनके लिए दो भूमिकाएँ थीं। आई.एस. जौहर ने बंदूकधारी बापू की भूमिका निभाई, जबकि खूबसूरत कमला देवी ने नर्स सोमोला की भूमिका निभाई। हॉलीवुड में उनकी मोहक अदाओं ने उन्हें पहचान दिलाई और उन्होंने अमेरिका में कुछ फिल्मों में काम किया। सबसे नज़दीकी हवाई अड्डा

थे। इसलिए टीम को असली जंगलवासियों की ज़रूरत थी और इसके लिए लोगों को बुलाया गया। बांदीपुर में कभी भी कोई स्थायी आदिवासी आबादी नहीं थी, इसलिए कुछ हकीपिकी लोगों को लाने का अस्थायी इंतज़ाम किया गया। वे बेहतरीन ट्रैकर, ट्रैपर और नकलची हैं, और मुझे अफ़सोस है कि उनके साथ काम करने का एकमात्र मौका मुझे इसी फिल्म के लिए मिला। ह्यूगो सियार की आवाज़ें रिकॉर्ड करना चाहता था, लेकिन बदकिस्मती से हमें दो दिन तक कोई आवाज़ नहीं मिली। तीसरे दिन हमारी किस्मत चमकी और हाकीपिकी की जोड़ी हमें एक ऐसी जगह ले गई जहाँ सियारों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। मुख्य सड़क से इतनी दूर जाने में टीम थोड़ी घबराई हुई थी, इसलिए मैं सुरक्षा के लिए उनके साथ चला गया। हम एक जगह तक गाड़ी से गए और फिर काफी दूर तक पैदल चले। दोनों ने सियार की आवाज़ें निकालकर कमाल का प्रदर्शन किया और हैरानी की बात यह है कि कुछ ही मिनटों में उनकी आवाज़ का जवाब मिला और हमने कुछ रिकॉर्डिंग कर ली। हालांकि, कैंप वापस आने के बाद हमें एहसास हुआ कि रिकॉर्डिंग उतनी साफ़ नहीं थी जितनी हम चाहते थे, इसलिए पूरी झंझट दोबारा करने के बजाय, हमने समझदारी दिखाई और बस उन दोनों को सियार की आवाज़ निकालने को कहा। यह इतना बढ़िया था कि फ़र्क़ बताना नामुमकिन था!
ग्रेंजर हमेशा स्थानीय लोगों से दूरी बनाए रखता था, लेकिन हम कभी-कभार मिलते थे और शिकार के प्रति अपने साझा प्रेम पर चर्चा करते थे। दरअसल, वह बाइसन का शिकार करने के लिए उत्सुक था, लेकिन निर्देशक ने साफ मना कर दिया कि वह नहीं चाहता कि ग्रेंजर को चोट लगे। थोड़ी कहा-सुनी हुई, लेकिन ह्यूगो की बात मान ली गई और ग्रेंजर को किसी भी ऐसी गतिविधि में भाग लेने से मना कर दिया गया जिससे प्रोडक्शन खतरे में पड़ सकता था। वह मेरे पास आया और हम अपने इस्तेमाल किए जाने वाले हथियारों के बारे में बात करने लगे। ग्रेंजर, जो अभी भी गुस्से में था और बहस करना चाहता था, मुझसे असहमत होने लगा और मेरे इस्तेमाल किए गए हथियारों की बुराई करने लगा। उसने एक खास राइफल का जिक्र किया जिसे वह बेहतर मानता था और तब तक हमारे आसपास कुछ लोग जमा हो चुके थे जिन्होंने इस तरह की बातें पहले भी देखी थीं।
“डॉन, मुझसे बहस मत करो, मैं तुम्हारे बचपन से ही शिकार कर रहा हूँ, इसलिए मुझे बंदूकों की अच्छी जानकारी है। दरअसल, मैं अफ्रीका भी गया हूँ और हैरी सेल्बी के साथ बड़े जानवरों का शिकार किया है, और ये रहा वो निशान जो मुझे एक केप भैंस ने दिया था।” उसने अपने पेट पर एक निशान की ओर इशारा किया, और

हालाँकि मुझे यकीन नहीं था कि यह भैंस ने बनाया था, फिर भी वहाँ मौजूद लोगों ने उम्मीद के मुताबिक “ओह” और “आह” की आवाज़ें निकालीं। मैं मुस्कुराया और बोला,
“क्या तुम जानते हो कि मैं क्यों कहता हूँ कि मेरी यह राइफल श्रेष्ठ है? देखो, जिमी, इस पर कोई निशान नहीं हैं!” और मैंने अपनी कमीज़ ऊपर उठा ली। भीड़ खिलखिलाकर हंस पड़ी और ग्रेंजर को भी मुस्कुराना पड़ा। मैं सिर्फ तेईस साल का था, लेकिन मुझमें इतना आत्मविश्वास था कि मैंने स्टीवर्ट ग्रेंजर को उनकी औकात दिखा दी और इससे मेरी प्रतिष्ठा को बहुत फायदा हुआ। दरअसल, अगले दिन वह मेरे पास आए और मुझसे पूछा कि सेट पर मेरे द्वारा किए गए सारे काम के लिए मुझे कितना भुगतान मिल रहा है। जब मैंने बताया कि मुझे कुल मिलाकर दो हजार रुपये मिल रहे हैं, तो वह चौंक गए। जाहिर है, सबसे निचले स्तर के क्रू मेंबर को भी मुझसे कहीं ज्यादा मिलता था और वह इसे ठीक करने के लिए दृढ़ थे। उन दिनों, उनके पास स्पूल टाइप के रिकॉर्डर होते थे और जैसा कि पहले बताया गया है, क्रू जंगल के दृश्यों और आवाजों को रिकॉर्ड करने के लिए दृढ़ थे। इसका मतलब था जानवरों के करीब जाना और ग्रेंजर ने उन खतरों को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जिनका वे सामना कर रहे थे।
“क्या तुम्हें अंदाज़ा है कि भारत के जानवर कितने खतरनाक हो सकते हैं?” वह गरज उठा। “अगर तुम लोग व्हीलचेयर पर या इससे भी बदतर हालत में घर नहीं जाना चाहते, तो मेरा सुझाव है कि तुम अपने साथ एक अनुभवी शिकारी ले जाओ, जैसे कि यहाँ युवा एंडरसन,” उसने लापरवाही से कहा, उसकी आँखों में एक शरारती चमक थी जिसे केवल मैंने ही देखा। सच में, मेरी तनख्वाह तीन गुना बढ़ गई, और मुझे बस कुछ आदमियों के साथ जाना था और उनकी रिकॉर्डिंग के दौरान अपनी राइफल पकड़नी थी। हालाँकि, चीजें हमेशा मेरी मर्जी के मुताबिक नहीं होती थीं। कभी-कभी, सबसे पढ़े-लिखे लोग भी तर्क नहीं सुनते और ह्यूगो भी कोई अपवाद नहीं था। उदाहरण के लिए, एक बार वे बाघों के शिकार का वीडियो बनाना चाहते थे और उसने शॉट में हाथी के बच्चों का इस्तेमाल करने पर जोर दिया। मैंने तर्क दिया कि असल जिंदगी में कोई भी हाथी के बच्चों का इस्तेमाल नहीं करता, लेकिन उसका तर्क था कि फिल्मों में लोग हाथी के बच्चों को देखना पसंद करते हैं और आखिरकार उसकी बात मान ली गई।

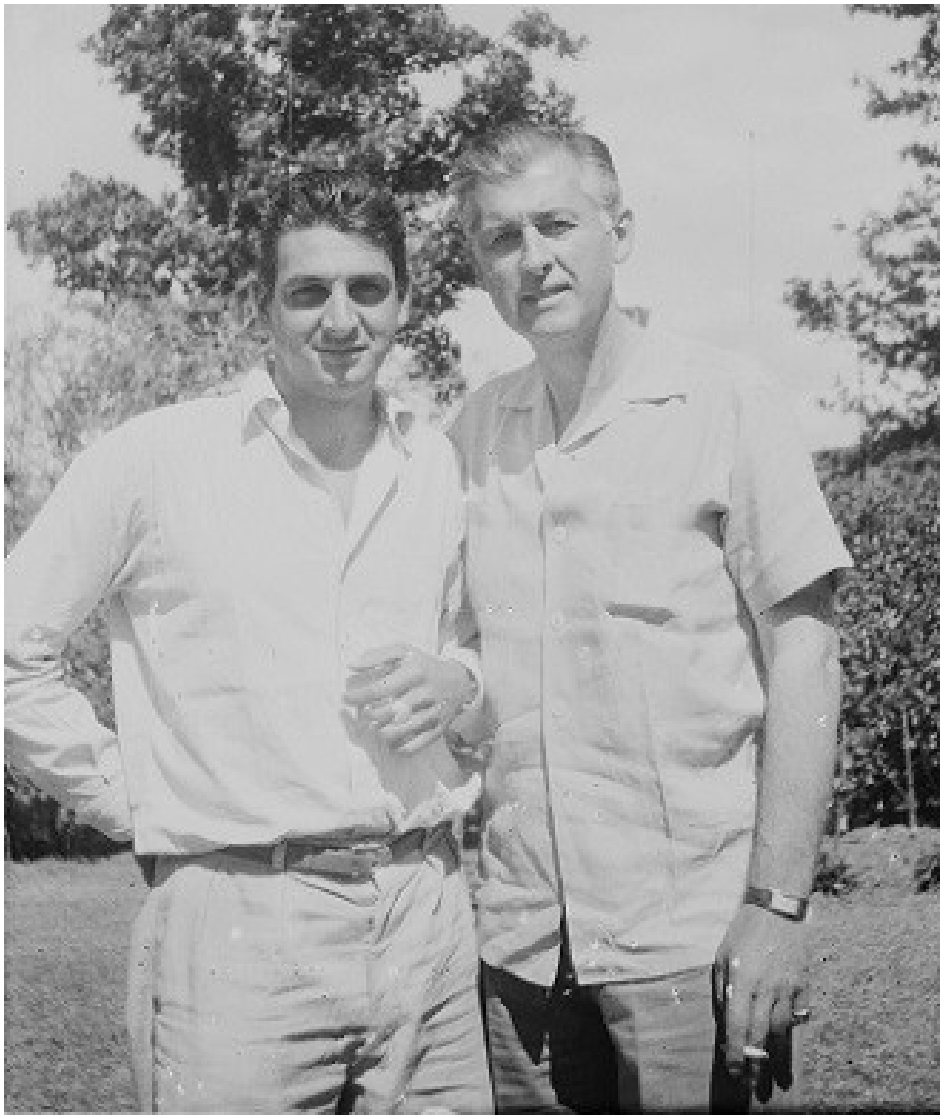

□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□

□□□□ □□ □□ □□□ □ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ - □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□, □□□ □□□□, □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□, □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□

उन्होंने बाघिन को बार-बार उछलने के लिए मजबूर किया, और हर बार मुझे उसके साथ पीछे गिरना पड़ता था, जिससे ऐसा लगे कि वो सचमुच मेरे ऊपर गिर रही है। कैमरामैन चिल्लाता और चीखता रहा जबकि वो बाघिन और मैं अंदर एक-दूसरे को घूर रहे थे। उसे अच्छा खाना मिला था, लेकिन एक ऐसे कुत्ते की तरह जो करतब दिखाना और करतब करना पसंद करता है, वह कुछ खास उत्सुक नहीं थी। असल में, मज़ाक चल रहा था कि बाघिन मुझसे ज़्यादा खतरे में थी, और मुझे जाल में डालने से पहले अच्छी तरह से जांचा जाना ज़रूरी था, क्योंकि मेरी प्रवृत्ति उसे गोली मारने की होती। ग्रेंजर ने ये सब दृश्य कभी देखे ही नहीं, वह सेट पर महिलाओं के साथ उम्र या राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना फ्लर्ट करने में इतना व्यस्त था। हालांकि, वह निस्संदेह फिल्म का स्टार था, और उसकी शोहरत पहले से ही फैली हुई थी। दरअसल, बैंगलोर से कई महिलाएं उससे मिलने आती थीं, लगभग हर दिन! वे उसकी झोपड़ी में चली जातीं और अगली सुबह, एक नज़र डालने पर, उसकी झोपड़ी तरह-तरह के महिलाओं के कपड़ों से भरी पड़ी मिलती। मेरा कमरा अलग था - मैं यह सुनिश्चित करता था कि महिलाएं सब कुछ अपने साथ ले जाएं और कुछ भी पीछे न छोड़ें! वह बहुत ही सुंदर और मर्दाना दिखता था और महिलाओं का उस पर फिदा होना उसे आदत थी। हालांकि, मुझे लगता है कि सभी फिल्मी सितारों की तरह उसका भी अहंकार था जिसे संतुष्ट करने की ज़रूरत थी और उसे अपने आस-पास की हर चीज़ को नियंत्रित करना पड़ता था। एक बार हम एक सीन शूट कर रहे थे जिसमें उन्हें शर्टलेस होना था। शॉट खत्म होने के बाद उन्होंने अपनी पैंट भी उतार दी, सिर्फ अंडरवियर में रह गए और सबके सामने तमाशा खड़ा कर दिया। यह ऊटी की मुख्य सड़क पर हो रहा था और देखते ही देखते पर्यटकों की भीड़ शहद पर चींटियों की तरह जमा होने लगी। शूट पर वापस जाने का समय हो गया था और एक यूरोपीय महिला, जो जरूरत से ज्यादा उत्तेजित हो गई थी, ने ग्रेंजर के करीब जाने की कई कोशिशें कीं। क्रू के मना करने के बावजूद, वह कांप रही थी और हल्की-हल्की आवाजें निकाल रही थी, और फिर ग्रेंजर का आपा टूट गया। "ह्यूगो, अगर तुमने इस लाल बालों वाली कुतिया को चुप नहीं कराया, तो मैं अब और एक्टिंग नहीं करूंगा।" कहने की जरूरत नहीं है, बेचारी महिला गायब हो गई। यकीन करना मुश्किल है, लेकिन सच है, कि एक आदमी था जिसका अहंकार ग्रेंजर से भी बड़ा था, और वह था लाइट संभालने वाला। वह सबसे ज्यादा नखरे दिखाता था और काम होने पर हमेशा बहाने बनाता था, और यह हैरानी की बात है कि उसे कभी नौकरी से नहीं निकाला गया।

मेरे पिताजी हर बात से बहुत उत्साहित थे और एक दिन मुझसे मिलने आए। मेरी तरह उन्हें भी खाने का बहुत शौक था, और हम कुछ क्रू सदस्यों के साथ दोपहर का भोजन कर रहे थे, तभी उनमें से एक ने कहा, "बूढ़े, क्या बात है, क्या तुम भारतीयों ने पहले कभी खाना नहीं देखा?" उस समय के हिसाब से भी यह एक बेहद नस्लवादी टिप्पणी थी, और मुझे याद है कि मैं गुस्से से लाल हो गया था, बस उछल पड़ा और उसे घूंसा मारने के लिए आगे बढ़ा! सौभाग्य से, लड़ाई शुरू होने से पहले ही हम अलग हो गए। तब तक ग्रेंजर ने मेरे पिताजी की एक किताब पढ़ ली थी और वह बहुत प्रभावित हुए थे; दरअसल, उन्होंने बैंगलोर से एक किताब खरीदी और अपने सह-कलाकारों के साथ उस पर हस्ताक्षर किए। फिल्म की शूटिंग खत्म होने पर, सितारे बैंगलोर हवाई अड्डे से रवाना हुए, जहां सैकड़ों लोग उन्हें विदाई देने के लिए पहुंचे थे। उनके जाने की खबर पूरे बैंगलोर में फैल गई थी और उस दिन हवाई अड्डे पर अभूतपूर्व भीड़ थी। मैं लगभग गेट तक क्रू के साथ रहा, और जब वे जा रहे थे, अचानक कैमरामैन ने घोषणा की कि उनके बीच एक और स्टार है - साबू, हाथी वाला लड़का, और मेरी ओर इशारा किया। मैं तो हैरान रह गया, लेकिन भीड़ में मौजूद कई लोग, जो मुझे अच्छी तरह से नहीं जानते थे और जिन्हें साबू की शक्ल का हल्का-फुल्का अंदाजा था, मुझे घेर लिया और मुझसे ऑटोग्राफ मांगने लगे। मैंने गलतफहमी दूर करने की पूरी कोशिश की, लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं सुनी। मैंने अपनी आंखों के कोने से देखा कि ग्रेंजर और बाकी लोग हंसते-हंसते वहां से निकल गए! इस भ्रम की वजह यह थी कि साबू ने 1948 में कॉर्बेट के जीवन पर बनी फिल्म 'मैन-ईटर्स ऑफ कुमाऊं' में अभिनय किया था और शायद उस समय हॉलीवुड में भारत का सबसे जाना- माना चेहरा थे।

□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□

□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□

□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□-□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ - □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ 1930 □□ 40 □□ □□□ □□□, □□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□, □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□, □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□, □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□

मौतें बढ़ जाती थीं, और यह बात ज़्यादातर लोगों को पता नहीं है। पचास के दशक की शुरुआत तक, भारत भर के गांवों में फोलिडोल का इस्तेमाल विनाशकारी रूप से किया जा रहा था। यह आसानी से मिलने वाला और सस्ता कीटनाशक था, और चरवाहे इसे मांसाहारी जानवरों द्वारा मारी गई गायों, भैंसों और बकरियों के शवों पर छिड़कते थे। आर्सेनिक में गंध नहीं होती थी, फिर भी ज़्यादातर बाघ, तेंदुआ और यहां तक कि मृत जानवरों का मांस खाने वाले जानवर भी इससे सने शवों को खाने से मना कर देते थे। हालांकि, फोलिडोल में गंध होने के बावजूद, शव पर छिड़कने पर भी मृत जानवरों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, और वे धीरे-धीरे दर्दनाक मौत मर जाते थे। यह बहुत ही शक्तिशाली था क्योंकि यह त्वचा के माध्यम से भी शरीर में समा सकता था, इसलिए पास से मरी हुई गाय को सूंघने वाला कोई भी जानवर इसका शिकार बन सकता था। यह इंसानों के बीच भी काफी लोकप्रिय हो गया था, जिसका इस्तेमाल अक्सर निर्दोष पीड़ितों की हत्या करने या आत्महत्या करने के लिए किया जाता था, और साठ के दशक के अंत तक दुनिया भर के अधिकांश देशों में इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, लेकिन तब तक नुकसान हो चुका था, और यह एक ऐसा युग है जिसे अक्सर भुला दिया जाता है जब भारत के वन्यजीवों का एक हिस्सा विलुप्त हो गया था।
1972 के भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम ने लाइसेंसशुदा शिकार पर विराम लगा दिया। हालांकि, आज की तरह ही, अगर आपके पास पैसा होता, तो कुछ भी मुमकिन था। मैं ऐसे उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारियों को जानता हूँ जिन्होंने अस्सी के दशक की शुरुआत में वन विभाग की जीपों से, बड़ी-बड़ी टॉर्च की रोशनी में बाघों का शिकार किया था। तटस्थ दृष्टिकोण से देखने पर ऐसा लग सकता है कि सबसे ज़्यादा तबाही मेरे जैसे लाइसेंसशुदा शिकारियों ने मचाई, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं है। हममें से कोई भी मशीन गन लेकर बाघों या हिरणों को नहीं मारता था। हमें अपनी कुशलता को एक जानवर के सामने आज़माने में गर्व होता था, और इसका मतलब था जंगल में कई दिन बिताना, संकेतों को देखना और समझना, जानवर का पीछा करना और आखिरकार उसे अपनी बंदूक की नज़र में लाना। मेरे पिताजी के शिकार के दिनों में, जानवरों का शिकार करना आम आदमी के लिए न तो व्यावहारिक था और न ही किफायती। अगर वह जंगलों के पास रहते थे, तो उन्हें अपनी फसलों, पशुधन या परिवार को बचाने के लिए शिकार करना पड़ता था, और अगर वह बैंगलोर जैसे शहर में रहते थे, तो उन्हें इसके लिए बहुत अमीर होना पड़ता था। इसलिए, मुट्ठी भर लोग ही गंभीरता से शिकार करते थे। जारी

किए जाने वाले लाइसेंसों की संख्या पर कड़ा नियंत्रण था, और लाइसेंस में स्पष्ट रूप से लिखा होता था कि क्या अनुमति है और क्या नहीं। नीलगिरी वन्यजीव संघ (जो बाद के वर्षों में अपने संरक्षण कार्यों के लिए प्रसिद्ध हुआ) द्वारा 1962 में लाइसेंस प्राप्त शिकार के तहत घोषित की गई बातों का शब्दशः विवरण यहाँ दिया गया है।
सभी जानवरों को या तो बड़े शिकार या छोटे शिकार के रूप में वर्गीकृत किया जाता है और आपको उस जानवर के आधार पर लाइसेंस लेना होगा जिसका आप शिकार करने की योजना बना रहे हैं।
- बड़े शिकार में बाघ, पैंथर, भालू, बाइसन, सांभर, चित्तीदार हिरण, भौंकने वाला हिरण, नीलगिरी तहर, नीलगाय, चार सींग वाला मृग और काला हिरण शामिल हैं।
एक सीज़न के दौरान शिकार किए जाने वाले बड़े जानवरों की संख्या ऊपर उल्लिखित प्रत्येक जानवर की संख्या से अधिक नहीं हो सकती, सिवाय चित्तीदार हिरण के मामले में जहां दो की अनुमति है और भौंकने वाले हिरण के मामले में जहां चार की अनुमति है।
- छोटे शिकार में जंगली मुर्गे, स्परफाउल, तीतर, बटेर, वुडकॉक, स्नाइप, जंगली कबूतर, खरगोश और माउस हिरण शामिल हैं। प्रवासी पक्षियों, वुडकॉक और कबूतरों का शिकार वर्ष के कुछ महीनों के दौरान प्रतिबंधित है।
वे प्रजनन और घोंसला बनाने की अवस्था में हैं।
नीचे उन नियमों की सूची दी गई है जिनका पालन लाइसेंस प्राप्त शिकारी को करना होता है।
1. मचान या जलकुंड से शिकार करना मना है।
2. सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद शिकार करना मना है।
3. सड़क या पगडंडी से 100 गज के दायरे में बाघ या तेंदुए का शिकार करना मना है।
4. वन्यजीव अभ्यारण्य के अंदर सभी जीवों का शिकार करना प्रतिबंधित है और केवल आरक्षित शिकार क्षेत्रों में ही इसकी अनुमति है।
5. लाइसेंस प्राप्त शिकारी किसी भी समय दो से अधिक हथियार नहीं रख सकता।
6. शिकारी को केवल नीलगिरी वन्यजीव संघ में पंजीकृत लाइसेंस प्राप्त शिकारी गाइड के साथ ही शिकार पर जाना चाहिए।
शिकार पर प्रतिबंध और सीमाएं

1. हाथी – विधिवत रूप से निर्धारित उत्पात मचाने वाले हाथी को छोड़कर या जीवन और संपत्ति की आत्मरक्षा में।
2. वन प्रमुख संरक्षक की अनुमति के बिना हिरण या मोर का शिकार नहीं किया जा सकता है।
3. बंदर, ब्राह्मणी चील, तोते, गीत गाने वाले पक्षी और चमकीले पंखों वाले पक्षी।
4. दूध पीते शावकों के साथ बाघिन।
5. बाइसन, चित्तीदार हिरण, मृग और भौंकने वाले हिरण की मादाएं और अपरिपक्व नर जिन्हें बड़े शिकार के रूप में नामित किया गया है।
6. परिपक्व नर को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया गया है:
क) बाइसन – ऐसे जानवर जिनके सींगों के बीच की अधिकतम बाहरी चौड़ाई 33 इंच से कम न हो या सींग के आधार की परिधि 18 इंच से कम न हो या सींग पर कम से कम 4 खांचे हों। बाइसन के शिकार के लिए केवल उच्च वेग वाली गोलियों का ही प्रयोग किया जा सकता है। न्यूनतम बोर 333 एच.वी. होना चाहिए और गोली का वजन 300 ग्रेन से कम नहीं होना चाहिए।
b) चित्तीदार हिरण – कठोर सींग में, सबसे लंबे सींग की लंबाई, बाहरी वक्र के साथ, नुकीले सिरे से लेकर नोक तक, 28 इंच से अधिक होनी चाहिए।
ग) सांबर – कठोर सींग में, बाहरी वक्र के साथ मापी गई सबसे लंबी सींग की लंबाई, खुरदरे सिरे से लेकर नोक तक, 24 इंच से अधिक होनी चाहिए।
d) भौंकने वाला हिरण – कम से कम एक सींग की लंबाई पेडीकल से 3 इंच होनी चाहिए।
ई) आइबेक्स – काठी अच्छी तरह से परिभाषित होनी चाहिए।
च) बाघ – नर बाघों की लंबाई कम से कम 9 फीट और मादा बाघों की लंबाई नाक की नोक से पूंछ की नोक तक पीठ के साथ कम से कम 8 फीट होनी चाहिए।
इसके अतिरिक्त, निम्नलिखित चीजें निषिद्ध हैं:
1. पक्षियों के अंडों को हटाना।
2. जाल, फंदे, जाल बिछाना और जहर या विस्फोटक पदार्थों का प्रयोग करना।
इनमें से किसी भी नियम का पालन न करने पर लाइसेंस रद्द किया जा सकता है और मद्रास अधिनियम द्वितीय, 1879 और मद्रास वन अधिनियम पंचम, 1882 के अनुसार आगे दंड दिया जा सकता है।

इन सभी नियमों का मतलब था कि मेरे जैसे लाइसेंस प्राप्त शिकारियों को न केवल कुशल निशानेबाज होना पड़ता था, बल्कि अच्छे प्रकृतिवादी भी होना पड़ता था। हमें जानवरों के व्यवहार को समझना होता था और यह पहचानना सीखना होता था कि कोई जानवर गोली मारने के लिए पर्याप्त परिपक्व है या नहीं। जो लोग आज वाहनों से वन्यजीव अभ्यारण्यों का दौरा करते हैं, वे जानते हैं कि किसी शिकारी का सामना करना कितना कठिन है, और जिन्होंने पैदल ऐसा करने का प्रयास किया है, वे जानते हैं कि यह लगभग असंभव है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वर्षों से, इन जंगलों में जानवर वाहनों के दृश्य और ध्वनि के आदी हो गए हैं और उन्हें गैर-खतरनाक मानते हैं। हालांकि, उनकी सहज प्रवृत्ति कहीं अधिक तीव्र होती है और मानव पदचिह्न की आवाज या मनुष्य की गंध से वही जानवर छिपने के लिए भाग जाते हैं, क्योंकि सदियों के विकास ने उन्हें ऐसा बना दिया है। इसलिए, मेरे शिकार के दिनों में बाघ या तेंदुआ ढूंढना, उसे गोली मारना तो दूर की बात है, बेहद चुनौतीपूर्ण था। पिताजी और मैंने जिन अधिकांश शिकारों को प्राप्त किया, उन्हें टोचर एंड टोचर द्वारा संवारा गया था, जिन्होंने 1900 के दशक की शुरुआत में फ्रेजर टाउन में किंग्स स्ट्रीट पर अपना व्यवसाय स्थापित किया था। मुझे लगता है कि उन्होंने अपना हुनर मैसूर के वैन इंगेंस से सीखा था, जिन्होंने 1890 के दशक में अपना कारोबार शुरू किया था। वैन इंगेंस एक अलग ही स्तर के कारीगर थे और दुनिया भर के महाराजाओं, शिकारियों और संभ्रांत लोगों को अपनी सेवाएं देते थे, इसलिए वे काफी महंगे थे। इसलिए, हमारे लिए अपने शिकार को तैयार करवाने के लिए टोचर संगठन, जो कि ज़्यादा किफायती और नज़दीकी था, हमारी पहली पसंद बन गया। टोचर मेरे पिताजी के दोस्त थे और उन्होंने हम दोनों को सिखाया कि जानवरों की खाल को माउंट करने के लिए कैसे तैयार किया जाता है। यहां तक कि उन्होंने मुझे यह सिखाने के लिए मेरे साथ कुछ यात्राएं भी कीं। उन्हें हर माउंट को तैयार करने में लगभग दो महीने लगते थे और वे अपने काम में माहिर थे, उन्होंने अलग-अलग मुद्राओं में कुछ अद्भुत नमूने तैयार किए। दूसरे टैक्सिडर्मिस्ट, मुनिस्वामी, जो लालबाग रोड पर रहते थे, उनका इस्तेमाल हम करते थे। हालांकि मैं उन्हें बिल्लियों का काम कभी नहीं सौंपता था, लेकिन जब जंगली सूअर और सांभर की बात आती थी, तो मैं अक्सर टोचर की आधी कीमत पर काम करवाने के लिए उन्हीं के पास जाता था।

टोचर, जो एक टैक्सिडर्मिस्ट था।

टोचर ने मुझे टैक्सिडर्मी के कुछ बुनियादी हुनर भी सिखाए, और कैंची, एक तेज़ चाकू, प्लायर, नमक या राख के साथ फिटकरी की मदद से शौकिया तौर पर खाल उतारने का काम शुरू किया जा सकता है। जो लोग अकादमिक दृष्टिकोण से इसमें रुचि रखते हैं, उनके लिए यह तरीका है। सबसे पहले जानवर को नापना ज़रूरी है, क्योंकि अक्सर खाल उतारने और फैलाने के बाद जो नमूना बनता है, वह मूल आकार से बड़ा होता है, और ज़्यादातर शिकारी इसे इसी तरह पसंद करते हैं! सबसे पहले, जानवर को पीठ के बल लिटाकर, कोयले से उस पर निशान लगाने होते हैं। निचले होंठ से शुरू करके पूंछ तक, अगले कट आगे और पीछे के पैरों के अंदरूनी हिस्से से होते हुए, पंजों तक लगाए जाते हैं। अब खाल उतारी जा सकती है, हालांकि सिर के आसपास बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। यह कमज़ोर दिल वालों के लिए नहीं है और कई बार मेरे कुछ दोस्त इसे देखकर उल्टी कर देते हैं। मांसाहारी जानवरों को सड़ने में अधिक समय लगता है और उनसे दुर्गंध भी आती है, इसलिए हमेशा नाक और मुंह को रुमाल से ढक कर रखना बेहतर होता है। त्वचा को साफ करके खून हटा दिया जाता है और फिर उसे सूखी घास की चटाई पर फैला दिया जाता है, जिस पर राख अच्छी तरह से मिलाई जाती है। सिर के नीचे अतिरिक्त सहारा होना चाहिए और कानों को अंदर की ओर मोड़ देना चाहिए। फिर नमी निकालने के लिए उस पर नमक और राख की बराबर मात्रा डाली जाती है। अगले

अड़तालीस घंटों तक इस प्रक्रिया को कई बार दोहराया जाता है, जिसके बाद यह टैक्सिडर्मिस्ट द्वारा माउंट करने के लिए तैयार हो जाता है। यह सब मेरे पिताजी ने मुझे सिखाया था, और वे इस तरह की चीजों को लेकर बहुत सख्त थे। दक्षिण भारत में हवा में हमेशा नमी रहती है, इसलिए त्वचा के वे हिस्से जो परिरक्षक को सोख लेते हैं, वे सड़ जाते हैं और भद्दे गंजे धब्बे छोड़ देते हैं। बेहतरीन टैक्सिडर्मिस्टों की अक्सर जानवरों के गुस्से जैसे भावों को हूबहू उतारने की क्षमता की प्रशंसा की जाती है, लेकिन मेरी राय में, उनका काम अक्सर सटीक नहीं होता क्योंकि असल दुनिया में, जानवर अक्सर अपने भावों को शरीर की भाषा के साथ मिलाकर दिखाते हैं। इसलिए, गुर्राते हुए भरे हुए बाघ का हावभाव काफी शांत होना एक आम और हास्यास्पद दृश्य है, जिस पर अक्सर किसी का ध्यान नहीं जाता!

पिताजी साही की खाल उतार रहे हैं

अध्याय छह

मेरी पसंदीदा जगहें – भाग 1

सभी मनुष्यों की तरह, मैं भी आदतों का गुलाम हूँ, और
हालांकि जवानी में मैं नए जंगलों और कम इस्तेमाल किए गए रास्तों को खोजने की कोशिश करता था, फिर भी कभी-कभी मैं उन जगहों पर लौट आता था जहाँ मुझे सुकून मिलता था। एक जाना-पहचाना जंगल का बंगला, परिचित चेहरे, तय रास्ते... इन सब से एक खास तरह का सुकून मिलता था। इस अध्याय और अगले अध्याय में मैं आपको उन जंगलों के बारे में बताने की कोशिश करूँगा जो मुझे बहुत पसंद थे और जहाँ मैं अक्सर जाता था, और उन रोमांचक अनुभवों के बारे में भी जो मैंने किए।
अगर मैं उन गांवों की तुलना करूं जहां मैं पहले जाया करता था और आज वे जैसे हैं, तो शायद सबसे ज्यादा बदलाव होगेनिकल में आया है। हालांकि यह तमिलनाडु में है, लेकिन इसका नाम कन्नड़ शब्दों होगे (धुआं) और कल (पत्थर या चट्टान) से आया है, जो शक्तिशाली कावेरी नदी के ग्रेफाइट चट्टानों से टकराने पर बनने वाले मनमोहक झरनों से निकलने वाली बारीक फुहार से उत्पन्न होते हैं। स्थानीय लोग इसे मारिकोट्टायम कहते हैं। 1950 के दशक के मध्य तक यह एक शांत गांव हुआ करता था, जहां मिलनसार लोग रहते थे, मछली पकड़ने के लिए एक बेहतरीन जगह थी और बहुत सारे हाथी, तेंदुए, जंगली कुत्ते और कभी-कभार बाघ भी दिखाई देते थे। फिर यह आबादी के बोझ और मानवीय लालच के आगे उजड़ गया। अंधाधुंध शिकार, नदी में मछलियों को डायनामाइट से मारना और पेड़ों की कटाई ने उस जगह को नष्ट कर दिया जो कभी एक निर्मल स्वर्ग थी, एक ऐसी जगह जिसे मेरे पिताजी बहुत प्यार करते थे। कावेरी की कई सहायक नदियां हैं, जिनमें से एक सबसे छोटी चिनार है। हालांकि, एंडरसन परिवार के नज़रिए से, यह नदी सबसे महत्वपूर्ण थी क्योंकि हमने इसके सहारे बसे जंगलों में कई रोमांचक अनुभव किए थे। अक्सर, चिनार नदी दुर्गम इलाकों में गायब हो जाती है, लेकिन फिर घुमावदार रास्तों से बहते हुए सोलह मील बाद मुख्य गुलहट्टी रोड पर वापस आ जाती है। अगर कोई अंचेटी से गुंडालम की ओर चलना शुरू करे, तो वह खुद को उस प्रसिद्ध गुप्त नदी के किनारे पाएगा जिसके बारे में मेरे पिताजी ने लिखा है। यह गुप्त नदी कावेरी की एक और सहायक नदी है और अंचेटी से लगभग सोलह मील दूर मुख्य नदी में मिल जाती है। गुप्त नदी, एक सहायक नदी होने के

कारण, साल के कुछ हिस्सों में अक्सर सूख जाती है, शायद यही एक कारण है कि इसे ढूंढना आसान नहीं है। मैं अपने पिताजी की तरह भावुक नहीं हूँ, और मुझे इसमें कभी कुछ रहस्यमय नहीं लगा। हालांकि, मैं पानी की गुणवत्ता पर टिप्पणी कर सकता हूँ - क्योंकि यह किसी बड़े गाँव से होकर नहीं गुजरती थी, इसलिए पानी हमेशा पीने योग्य होता था। बीस मील और चलने पर आप संगम पहुँचेंगे, जहाँ कावेरी नदी अर्कावती नदी से मिलती है। संगम के आगे, निश्चित रूप से, मेकेदातु है, जो एक पर्यटन स्थल है और बैंगलोर के लोगों के लिए एक सुरम्य अवकाश स्थल है।
हालाँकि मेरे पिताजी होगेनिकल के नियमित आगंतुक थे, लेकिन 1952 तक मैंने अकेले वहाँ जाना शुरू नहीं किया था। इसका मतलब था कि मुझे एंचेटी, गेरहेटी, मुत्तूर, पेन्नाग्राम से होते हुए अपने गंतव्य तक जाना पड़ता था। चिनार नदी खतरनाक हो सकती है, खासकर मानसून के दौरान, और रास्ते में इसे दो बार पार करना पड़ता था। मुत्तूर में नदी पार करना विशेष रूप से खतरनाक था और कई बार मैंने अपनी यात्रा रोककर नदी के शांत होने का इंतजार किया, बजाय इसके कि उफान पर होने पर उसे पार करने का जोखिम उठाऊं। होगेनिकल से छह मील दूर उत्तिमलाई नामक एक जगह है, जहाँ मेरे पिताजी की एक छोटी सी, फूस की झोपड़ी थी। गाँव की मुख्य सड़क के समानांतर एक और सड़क थी जो आसपास के जंगलों में टेढ़ी-मेढ़ी होकर जाती थी, और यह मेरे पिताजी के पसंदीदा रास्तों में से एक हुआ करती थी। कई बार वे दिन में अपनी झोपड़ी में रहते और फिर, केवल एक लालटेन लेकर, उस संकरे रास्ते पर निकल जाते, शायद पूरी रात चलते और सुबह लौट आते। जंगलों में हाथी रहते थे, लेकिन उनका दृढ़ विश्वास था कि सभी जंगली जानवर रोशनी से डरते हैं और किसी भी कीमत पर टकराव से बचते हैं। बायरा, उनका शिकारी जिसका ज़िक्र उनकी किताबों में अक्सर आता है, इन इलाकों में उनके साथ रहता था और वे दोनों एक अनोखी लेकिन अटूट जोड़ी थे। कभी-कभार होगेनिकल में त्योहार मनाए जाते थे और आसपास के सभी छोटे गांवों और बस्तियों से लोग उनमें शामिल होने आते थे। मुझे 1950 के दशक की शुरुआत की एक घटना याद है जब मैं उत्सव के हिस्से के रूप में आयोजित गांव की छोटी सी पार्टी में गया था, और यकीन मानिए, वहां नारियल गिराने का एक भारतीय खेल चल रहा था। जैसे-जैसे दिन बढ़ता गया, पत्थरों जैसी चीज़ों से नारियल गिराने की पारंपरिक कला की जगह स्थानीय लोगों ने अपने स्थानीय रूप से निर्मित माचिस वाली बंदूकों से नारियल गिराने की कोशिश शुरू कर दी। वे

चूकते रहे और यह तटस्थ लोगों के लिए एक मनोरंजक दृश्य था। मुझमें आत्मविश्वास की कोई कमी नहीं थी और मैंने शर्त लगाई कि मैं अपनी बंदूक से नारियल गिरा सकता हूँ। वे हिचकिचा रहे थे क्योंकि उन्हें पता था कि मेरे पास बेहतर हथियार है, लेकिन समझौता यह हुआ कि वे लक्ष्य को थोड़ा पीछे कर देंगे ताकि मुकाबला बराबरी का हो जाए। मैंने स्वाभाविक रूप से अपने हथियार से उसे गिरा दिया, लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि वे लोग हार बर्दाश्त नहीं कर सकते। "डोराई, एक मूर्ख भी जानता है कि तुम्हारे पास बेहतर बंदूक है, इसलिए इससे तुम्हारी कुशलता पर कोई सवाल नहीं उठता। अगर तुम हमें प्रभावित करना चाहते हो, तो हमारे हथियार से ऐसा ही करो।" देखने वालों और खासकर मुझे आश्चर्य हुआ, जब मैंने पहले ही शॉट में नारियल गिरा दिया। माहौल और भी रोमांचक हो गया, खूब चिल्लाहट और धक्का-मुक्की होने लगी और अगली बार मेरी नाकामी साबित होने से पहले ही मैं जल्दी से वहां से भाग गया। आजादी के बाद इन इलाकों में कुटिल गतिविधियों में काफी तेजी आई। हालांकि अंग्रेज अभी भी मौजूद थे, लेकिन भारतीय जल्दी अमीर बनने की होड़ में और भी ज्यादा बेखौफ होने लगे। देसी बंदूकें और बम दिखने लगे, जिनका इस्तेमाल मुख्य रूप से जानवरों के शिकार के लिए किया जाता था। गर्मियों का मौसम सबसे बुरा होता था, क्योंकि वे हिरण और सूअरों का शिकार करने के लिए पानी के स्रोतों पर घात लगाए बैठे रहते थे। वे पानी में डायनामाइट से विस्फोट करके मछलियों को अंधाधुंध मार डालते थे। रात में, जंगल के रास्ते जो पहले सुनसान रहते थे (ऐसा इसलिए नहीं कि जंगल में लोग नहीं थे, बल्कि इसलिए कि स्थानीय लोग मेरे पिताजी जैसे लोगों से मिलने से बचने के लिए सतर्क रहते थे), अब वहां हथियारबंद शिकारियों के गिरोह से मिलने की संभावना रहती थी। हालांकि अधिकारियों को उनकी सूचना देना मेरा कर्तव्य था, लेकिन मैं जानता था कि कभी-कभी वे ऐसा सिर्फ घर में भूखे पेट भरने के लिए करते थे और मेरा दिल उन्हें रोकने का नहीं करता था। वे मेरा बहुत सम्मान भी करते थे, क्योंकि मैं अक्सर अकेले बैठकर शिकार करता था, जानवरों या बुरी आत्माओं से बेखौफ, जिनके बारे में उनका मानना था कि वे इन इलाकों में अक्सर आते-जाते रहते हैं। वे अक्सर यह स्वीकार करते थे कि वे मेरी किस्मत देखकर हैरान रह जाते थे और मुझसे पूछते थे कि मेरे पास कौन सा मंत्र है। मैं उन्हें धैर्यपूर्वक समझाता था कि यदि वे किसी जलस्रोत के किनारे कंबल ओढ़कर बैठें, बीड़ी सुलगाएँ और बार-बार कंबल उठाकर कुछ बुदबुदाएँ, तो पाँच सौ गज

के दायरे में कोई भी प्राणी उस जलस्रोत के पास नहीं आएगा। मेरी सलाह के बावजूद, कई बार वे तमाम मुश्किलों के बावजूद भाग्यशाली साबित हो जाते थे।

होगेनिकल में शिकार

मेरे पिताजी की पसंदीदा जगहों में से एक जावलगिरी भी थी, जहाँ उन्होंने कुछ आदमखोर साँपों का शिकार भी किया था। हालाँकि, इस जगह की लोकप्रियता बैंगलोर के नज़दीक होने के कारण थी। मात्र पैंतालीस मील दूर होने के कारण, यह उन्हें जल्दी से कहीं घूमने जाने का मौका देता था और शायद यही पहला जंगल था जहाँ मुझे याद है कि वे मुझे ले गए थे। जब तक मैं एक अनुभवी शिकारी बन चुका था, इस गाँव में मेरा शिकारी गाइड मुनियप्पा था। वह कुछ अन्य शिकारी गाइडों की तरह आदिवासी नहीं था, जिनकी सेवाएँ मैं लेता था, बल्कि वह तेलुगु भाषी था और वहीं रहता था। शोलागा या चेन्चू लोगों की तरह वंशानुगत कौशल न होने के बावजूद, वह एक बेहतरीन गाइड था, और शिकार का पता लगाने के कौशल में जो कमी थी, उसकी भरपाई उसने अपने साहस और दृढ़ संकल्प से की। उसके पास ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा और एक छोटी सी झोपड़ी थी, जो बस्ती से लगभग आधा मील दूर जंगल की सीमा पर स्थित थी। जंगल में बने बंगले में रहने की बेहतर व्यवस्था थी, लेकिन इसका मतलब यह भी था कि उसे पहले से बुक करना पड़ता था,

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

बड़ा सा भूसे का ढेर बनाया, और मैं उसमें घुस गया। यह बहुत अच्छा छलावरण था और मुझे यकीन था कि मैं पैंथर को चकमा दे दूँगा। मुनियप्पा के पास एक जूँ से भरा कुत्ता था जिसका एकमात्र काम उसका साथ देना था, और दोनों पास ही स्थित उसकी झोपड़ी में चले गए, जहाँ शोर-शराबा बिल्कुल नहीं होता था। लगभग साढ़े छह बज रहे थे और सूरज डूब रहा था, तभी मैंने देखा कि एक जानवर धीरे- धीरे गाय की ओर चल रहा है और चरने लगा है। मैंने अपनी राइफल कसकर पकड़ ली, लेकिन करीब से देखने पर मुझे एहसास हुआ कि यह मुनियप्पा का बीमार कुत्ता था! अगर मुनियप्पा इसे देख लेते तो उन्हें बहुत गुस्सा आता, लेकिन मुझे कुत्ते की सुरक्षा की ज़्यादा चिंता थी। तेंदुआ किसी भी पल आने वाला था, और अगर वह कुत्ते को भी पकड़ लेता तो उसे दोहरा इनाम मिलता। पहले मुख्य भोजन के रूप में स्टेक और फिर कुत्ते के लिए मिठाई। मुझे कुत्ते को वापस लाना था, इसलिए मैंने धीरे-धीरे सीटी बजाई, यह सोचकर कि शायद यह किसी पक्षी की आवाज़ जैसी हो और तेंदुआ ध्यान न दे। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि वह आवारा कुत्ता अपने खाने का आनंद लेने में व्यस्त था। मैंने थोड़ी ज़ोर से सीटी बजाने की कोशिश की और ऐसा लगा कि यह काम कर गया, क्योंकि वह मेरी ओर दौड़ने लगा। मैं काफी खुश था, तभी मैंने एक बड़े तेंदुआ को उसका पीछा करते देखा। मैंने पहले कभी इस तरह की चीज़ें नहीं देखी थीं; मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं जहां बैठा था वहीं से गोली चलाऊं या खड़ा हो जाऊं, क्योंकि मुझे तो बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था कि मैं, कुत्ता और पैंथर, तीनों एक साथ भूसे के ढेर में हों! कुत्ते ने मेरा फैसला आसान कर दिया, क्योंकि वह मेरी छुपने की जगह से दौड़ता हुआ निकल गया और मुझे पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया। मुझसे पांच फीट से भी कम दूरी से गुजरते हुए, वह मुनियप्पा की झोपड़ी की ओर भागा। कुत्ते की आंखें डर से भरी हुई झोपड़ी पर टिकी थीं, जबकि पैंथर की धधकती आंखें अपने शिकार पर टिकी थीं। जैसे ही मेरे सामने जीवन और मृत्यु का यह दृश्य सामने आया, मैं उछल पड़ा, मुड़ा और अपनी बंदूक लेकर उन दोनों के पीछे चल दिया। पैंथर ने कुत्ते को पकड़ लिया, लेकिन उसकी पकड़ बहुत मजबूत नहीं थी, और दो शरीर तड़पते, चीखते और गुर्राते हुए मेरे सामने बिखर गए। शायद मैं असंवेदनशील था, लेकिन मुझे कुत्ते की ज्यादा परवाह नहीं थी। मैं नहीं चाहता था कि पैंथर मुनियप्पा की झोपड़ी के अंदर जाए, जो बस कुछ ही गज दूर थी, इसलिए मैंने निशाना साधा और गोली चला दी। सौभाग्य से मैं उस तेंदुआ को मारने में कामयाब रहा। मुनियप्पा, जिसने समझदारी दिखाते हुए

अंदर ही रहने का फैसला किया था, बाहर झाँका और कुछ ही फीट की दूरी पर एक मृत तेंदुआ देखकर दंग रह गया!
साठ के दशक के आरंभ में जावलगिरी में वन्यजीवों की भरमार थी और यह देखकर आश्चर्य होता है कि वे सब रातोंरात कैसे गायब हो गए। दरअसल, मुझे याद है एक बार मैं बैंगलोर से देर रात निकला और आधी रात के बाद वहाँ पहुँचा। मैं मुनियप्पा को जगाना नहीं चाहता था, और मौसम गर्म होने के कारण मैंने गाँव में ही किसी खुली जगह पर सोने का फैसला किया। मैंने गाँव के बीचोंबीच भूसे से लदी एक लॉरी खड़ी देखी और सोचा कि रात बिताने के लिए यह एक आदर्श जगह है। यह एक बेहतरीन योजना थी, जब तक कि एक बहुत ही धीमी सी आवाज़ सुनकर मेरी नींद नहीं खुली। मैंने देखा तो एक नर हाथी अपनी सूंड से मेरी चादर को ऐसे कुतर रहा था मानो वह दुनिया की सबसे स्वादिष्ट चीज़ हो। जावलगिरी इतना जंगली था!

दोस्तों के साथ जवलागिरी में। मुनियप्पा एकदम दाहिनी ओर

बीआर हिल्स
बिलिगिरिरंगा पहाड़ियाँ, जिन्हें आमतौर पर बीआर पहाड़ियाँ कहा जाता है, मेरे दिल में एक खास जगह रखती हैं, क्योंकि मेरे पिता की तरह मैंने भी वहाँ कुछ यादगार अनुभव किए हैं। ये पूर्वी घाट के सबसे पूर्वी हिस्से का

प्रतिनिधित्व करती हैं और इनके बीच की घाटियों और पठारों के माध्यम से पश्चिमी घाट को जोड़ती हैं। ये उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली दो पर्वत श्रृंखलाओं से बनी हैं। ये घने पर्णपाती वन शोलागा जनजाति का घर हैं - जो मेरे अब तक के सबसे बेहतरीन शिकारी रहे हैं - और इस जंगल में डोड्डा संपिगे नामक एक विशाल, हज़ार साल पुराना पेड़ है जो उनके लिए पवित्र है। ये पहाड़ियाँ घने जंगलों से ढकी हैं और हाथियों का प्रमुख निवास स्थान हैं। इन्हीं पहाड़ियों की तलहटी में जी.पी. सैंडरसन हाथियों को पकड़ने के लिए अपना खेड़ा (एक प्रकार का बाड़ा) चलाते थे। अपेक्षाकृत दुर्गम और अज्ञात होने के बावजूद, बीआर पहाड़ियाँ तब प्रसिद्ध हुईं जब रैंडोल्फ मॉरिस ने इस क्षेत्र में अपने कॉफी बागान स्थापित किए। वह मेरे पिता की तरह ही स्कॉटिश थे, हालांकि उनसे काफी बड़े थे। कहा जाता है कि मॉरिस भारत में बिल्कुल खाली हाथ आए और अलग-अलग बागानों में छोटे-मोटे काम करते रहे, जब तक कि वे यहाँ नहीं आ गए। फिर उन्होंने अत्तिकान में पहला बड़ा कॉफी बागान स्थापित किया। एक बाइसन ने उन्हें मार डाला और उन्हें उनके ही बागान में बेलागी नामक स्थान पर दफनाया गया है। उनके बेटे राल्फ ने बाद में बागान का कार्यभार संभाला और वे अपने पिता से कहीं अधिक शिकारी थे और बेहद गुप्त स्वभाव के थे, जैसा कि ज्यादातर शिकारी होते हैं, जिनमें मैं भी शामिल हूँ! मुझे एक बार उनसे मिलने का मौका मिला जब वे अपने अत्तिकान बागान के लिए एक प्रबंधक की तलाश कर रहे थे और उन्होंने बैंगलोर के स्थानीय अखबार में विज्ञापन दिया था। मैंने इसे बैंगलोर से दूर जाने और एक ऐसी जगह बसने का एक बेहतरीन अवसर समझा जहाँ मुझे अच्छी तनख्वाह मिले और, ज़ाहिर है, मेरे शिकार के शौक को भी बढ़ावा मिले, जो उस समय लगातार पैसे खर्च करने के कारण कम होता जा रहा था। अत्तिकान एक खूबसूरत जंगल में स्थित है जो वन्यजीवों से भरा हुआ है और मुझे दो बार सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ी। मैंने पद के लिए आवेदन किया और उन्होंने तुरंत जवाब दिया। उन्होंने मुझसे मिलने की उत्सुकता ज़ाहिर की, और लगभग एक हफ़्ते बाद ही मुझे बैंगलोर के वेस्ट एंड होटल में उनसे मिलने का न्योता मिला। हमने कई विषयों पर चर्चा की, जिनमें स्थानीय भाषाएँ बोलने की मेरी क्षमता और जंगलों की मेरी समझ शामिल थी। लगभग तीस मिनट बाद, हमारी बातचीत समाप्त होने वाली थी और मुझे लगा कि नौकरी पक्की हो गई है। तभी उन्होंने मज़ाक में कहा, “एक बागान मालिक का जीवन अकेलापन भरा होता है। क्या आप इसके लिए तैयार हैं?”

और फिर मैंने अपना मुंह खोल दिया। "हाँ, बिल्कुल ठीक है, क्योंकि मुझे बाहर घूमना और शिकार करना बहुत पसंद है।"
उसके कान तो खड़े हो गए लेकिन मेरी इंद्रियां नहीं।
"तो, तुम्हें शिकार करना पसंद है, है ना?" उसने बेपरवाही से जवाब दिया। मैंने निर्णायक प्रहार किया। "बिल्कुल, दरअसल मेरे पास आपकी जागीर के आस-पास के इलाकों में शिकार करने का लाइसेंस है।"
अब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे लगता है कि मैंने उसे ऊपर तारों के प्रति कृतज्ञता की प्रार्थना करते हुए सुना था।
“ओह, सच में? बहुत दिलचस्प! हमें फिर कभी मिलना चाहिए और कहानियाँ साझा करनी चाहिए। वैसे, मैं आपको पोस्ट के बारे में बाद में बताऊँगा,” और ये मॉरिस के आखिरी शब्द थे जो मैंने सुने। वह लगभग तुरंत बाद ही भारत छोड़कर चले गए और पचास के दशक के मध्य में अपनी सारी जागीरें बिड़ला परिवार को बेच दीं। मैं उन इलाकों में अक्सर जाता रहता था और एक बार अपनी यात्रा के दौरान मुझे पत्तों की झोपड़ियों का एक समूह दिखाई दिया। मैंने अपने शोलागा शिकारी गाइड से पूछा कि ये क्या हैं। उन्होंने बताया कि मॉरिस इन झोपड़ियों में तब रुकते थे जब वे इन इलाकों में शिकार करने आते थे। ये झोपड़ियाँ इतनी साधारण थीं कि बारिश से बचाव के अलावा और कुछ नहीं देती थीं, और इसका मतलब यह था कि मॉरिस अपनी जागीरों की सुख-सुविधाओं को छोड़कर कई दिनों तक इन परिस्थितियों में रहने आते थे। वह इलाका रहने लायक नहीं था, बाकी दुनिया से कटा हुआ था, जोंकों से भरा हुआ था, और मैं उस व्यक्ति के ऐसे प्रतिकूल हालातों में रहने के लिए प्रशंसा करने लगा। यह उस समय के साहसी लोगों को दर्शाता है। दिलचस्प बात यह है कि राल्फ और मेरा शोलागा शिकारी गाइड एक ही था, जिसके बारे में मैं बाद में बात करूँगा।
ह्यू हेलस्टोन और उनका घर, मोयार वैली रेंच, पचास और साठ के दशक में मेरे रोमांचक अनुभवों का अभिन्न अंग थे। ह्यूई न केवल एक उच्च कोटि के शिकारी थे, बल्कि एक उद्यमी और चतुर व्यवसायी भी थे। वे मेरे पिताजी से छोटे थे, लेकिन कई मायनों में वे एक जैसे थे और अपने-अपने तरीके से प्रतिभावान थे। जहाँ मेरे पिताजी की बुद्धि केवल लेखन पर केंद्रित थी, वहीं हेलस्टोन के कई क्रांतिकारी विचार थे, जो सभी सफल रहे। मुडियानूर में उनकी 180 एकड़ ज़मीन थी, जिस पर वे खेती करते थे और बेहद सफल रहे। उन्होंने कोयंबटूर में "मॉडर्न गनस्मिथ" खोला और उस शहर का हर स्वाभिमानी शिकारी उनका ग्राहक बन

गया। उन्होंने धातु विज्ञान से संबंधित कुछ व्यवसाय भी शुरू किया और मुझे याद है कि वह भी सफल रहा। पचास के दशक के मध्य में, इन इलाकों में बिजली आम लोगों की पहुँच में नहीं थी, लेकिन हेलस्टोन ने हार नहीं मानी। पवनचक्कियों, डायनेमो और कार बैटरियों की मदद से उन्होंने अपने बंगले को बिजली दी और आसपास रहने वाले लोगों के लिए यह एक अद्भुत नजारा था। हेलस्टोन के घर तक पहुंचने के लिए बीआर हिल्स से होकर गुजरना पड़ता था, और डिंबुम से आगे जाना पड़ता था, जहां पहाड़ी की चोटी पर एक सुंदर सा छोटा बंगला हुआ करता था। वहां से ढलान शुरू होती थी, तलामलाई से होते हुए अंततः मुडियानूर के छोटे से गांव तक पहुंचते थे, जहां उनका फार्म बाईं ओर था। डिंबुम से मुडियानूर तक का रास्ता बेहद खराब था और रास्ते में कई छोटी- छोटी नदियां पार करनी पड़ती थीं। मैं ज्यादातर अकेले ही बीआर हिल्स जाया करता था, पहले अपनी बाइक से और बाद में मेरवान की कार से, और इन सड़कों पर कई बार हाथियों ने मुझ पर हमला किया है। मोटरसाइकिल पर हमेशा बाल-बाल बचना ही पड़ता है, लेकिन मैं जवान था और यह सब मुझे बहुत रोमांच देता था। एक और सड़क जिसका मैं अक्सर इस्तेमाल करता था, वह तलामलाई से मोयार नाले तक बनी हुई थी, जिसे उस महाराजा के नाम पर टीपू सुल्तान रोड कहा जाता था, जिसने इसे बनवाया था। उस समय वह इलाका सुनसान और वीरान था, और आज भी हालात वैसे ही हैं। मैं करीब बीस साल का था जब मेरी पहली मुलाकात हेलस्टोन से हुई और पता नहीं क्यों, उन्हें मैं पसंद आ गया और उन्होंने मुझे उस इलाके में शिकार शुरू करने के लिए बुलाया। पहली बार जब मैं उनसे मिला, तो उन्होंने मेरी बंदूक देखी जो काफी पुरानी हो चुकी थी। उन्होंने मेरी बंदूक को देखा और गंभीर लेकिन शांत स्वर में बोले, "बेटे, क्या तुम खुद को मरवाना चाहते हो?"
मैं उसकी बात समझ गया था, लेकिन मैंने अनभिज्ञता का नाटक किया।
नहीं, आप क्यों पूछ रहे हैं?
"तो फिर मेरा सुझाव है कि आप कोई दूसरा हथियार चुनें।"
चारों ओर असहज सन्नाटा छाया हुआ था, और इससे पहले कि मैं कोई चतुराई भरा जवाब सोच पाता, उसने पूछा, "क्या मैं आपके लिए एक राइफल ला सकता हूँ?" मुझे यकीन नहीं था कि वह मुझे उपहार में कुछ देने की पेशकश कर रहा था या नहीं, लेकिन मैंने इसे संयोग पर नहीं छोड़ा।

“श्री हेलस्टोन, मुझे नहीं पता कि आप मजाक कर रहे हैं या नहीं, क्योंकि इसमें पैसे लगते हैं। राइफल खरीदने का लाइसेंस प्राप्त करना बहुत मुश्किल है, और फिर, जाहिर है, मेरे पास इसके लिए पैसे नहीं हैं।”
वह मुस्कुराया। "क्यों न आप मुझे यह आखिरी काम करने दें, और आप जाकर लाइसेंस बनवा लें?"
लाइसेंस मिलने के बाद उन्होंने मुझे कोयंबटूर में अपनी बंदूक की दुकान के बारे में बताया और मुझे एक शानदार बंदूक, .423 माउज़र - ए ग्रेड, भेंट की। जो लोग इन संख्याओं का मतलब समझते हैं, उनके लिए बता दूं कि ये गोली छोड़ने वाली नली की लंबाई होती है, और इस मामले में इसका मतलब 0.423 इंच या लगभग 10.75 मिमी था। माउज़र उनकी पसंदीदा बंदूक थी और उन्होंने बताया कि उन्होंने इससे सौ से ज़्यादा तेंदुओं का शिकार किया था। यह बंदूक मेरी भी अब तक की सबसे बेहतरीन बंदूक साबित हुई। इसने मुझे जंगल में जाने का आत्मविश्वास दिया और मुझे हमेशा यह भरोसा दिलाया कि मैं किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हूं। हालांकि बहुत से लोग जानते हैं कि उन्होंने मुझे अपनी.423 माउज़र भेंट की, वही बंदूक जिससे मैं पहचाना जाता था, लेकिन उन्हें पूरी कहानी नहीं पता। मैं बेहद उत्साहित होकर बैंगलोर गया और एक हफ्ते बाद मुझे पता चला कि वे बैंगलोर आ रहे हैं। वे घर आए और मुझे कारतूसों का एक बड़ा डिब्बा और एक बिल भेंट किया! उन दिनों एक कारतूस की कीमत 1.50 रुपये थी, लेकिन उसने दुगनी कीमत वसूली। मैं कोई हंगामा नहीं करना चाहता था, क्योंकि मुझे राइफल पाकर बहुत खुशी हुई थी, इसलिए मैंने मोटी रकम चुका दी और मेरे पिताजी ने मुझे खूब खरी-खोटी सुनाई!

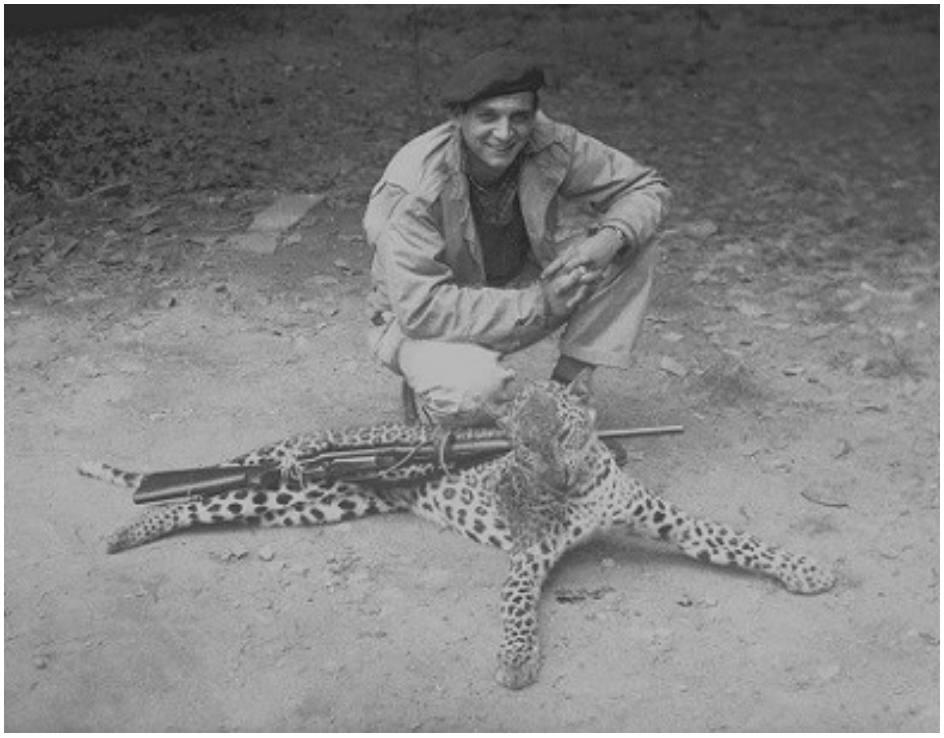

मेरी.423 माउज़र। आर्सिकेरे में।

मुझे लगता है कि मैंने ह्यूग को कई साल पहले के उनके साहसी और महत्वाकांक्षी स्वभाव की याद दिला दी थी, और उन्होंने मुझ पर बहुत ध्यान दिया, धैर्य दिखाया और निश्चित रूप से, मुझे अपने फार्महाउस तक पहुँच भी दी। हालाँकि, उनका व्यवहार कभी-कभी अनिश्चित हो जाता था, और कभी-कभी मैं खुद को मुश्किल में पा लेता था। भारत में अपने आखिरी वर्षों में, वह एक भारतीय महिला के साथ रह रहे थे जो उनसे लगभग पच्चीस साल छोटी थीं, और ऐसे रिश्तों में उम्र का अंतर अक्सर बड़े व्यक्ति के लिए असुरक्षा का कारण बनता था। एक बार उन्होंने मुझे अपने घर बुलाया क्योंकि उन्हें अपनी एक कार मरम्मत के लिए कोयंबटूर छोड़नी थी। हमें अलग-अलग गाड़ियों से जाना था और फिर एक ही गाड़ी में वापस आना था। मैं शाम को पहुँचा और यह जानते हुए कि मेरे पास शिकार करने के लिए ज़्यादा समय नहीं है, मैंने अपनी बंदूक उठाई और निकल गया। दुर्भाग्य से, बारिश शुरू हो गई और मैं भीगते हुए वापस भागा। मैं कपड़े नहीं लाया था, इसलिए मैंने खुद को सुखाया और बिना कमीज़ पहने खाना खाने बैठ गया। मैं उस महिला से बात कर रहा था, तभी वह अंदर आए और भड़क उठे। “क्या तुम किसी महिला के सामने ऐसे कपड़े पहनते हो?” वह मुझ पर गरज उठा, हालाँकि उसकी नज़रें उस महिला पर टिकी थीं। न तो वह महिला और न ही मैं किसी

ऐसी चीज़ के दोषी थे जो उसके दिमाग में आती, लेकिन मैं जानता था कि अपना बचाव करना व्यर्थ होगा क्योंकि इससे बात और बिगड़ जाती। इसलिए, मैंने विनम्रता से माफ़ी मांगी और एक फटी हुई कमीज़ उधार ली जो शायद किसी नौकर की थी। उसके साथ रहने वाली महिला का एक बेटा था और ह्यूगी उस लड़के से इतना प्यार करता था कि उसने उसे कानूनी तौर पर गोद ले लिया था, जो उन दिनों आम बात नहीं थी क्योंकि उसकी उससे शादी नहीं हुई थी। वे सब इंग्लैंड चले गए और ह्यूगी का वहीं निधन हो गया। महिला और उसका बेटा, जॉनी, वापस आने में दिलचस्पी नहीं रखते थे और अंततः उसके साम्राज्य पर कुछ लोगों ने कब्ज़ा कर लिया, जिन्होंने अधिकांश ज़मीन अपने नाम करवा ली और बाद में उसे बेच दिया। यह संपत्ति कई हाथों से गुजरी, और जब मैंने 2013 में उस जगह का दौरा किया, तो उसे टाइगर फार्म कहा जाता था, एक जर्जर इमारत जिसके चारों ओर कुछ एकड़ ज़मीन थी। ह्यूगी का फ्रेज़र टाउन में भी एक घर था और वह अक्सर बैंगलोर आता-जाता रहता था और सिडनी रोड स्थित हमारे घर पर भी अक्सर आता रहता था। कराची और इंग्लैंड में भी उनके घर थे, और बेशक मुडियानूर से साठ मील दूर कोयंबटूर में भी। वे जोधपुर के महाराजा के वित्तीय सलाहकार भी थे और एक कुशल धातुविज्ञानी थे, जो उद्योगों को अपनी सेवाएं देने के लिए पूरे भारत में यात्रा करते थे। वे हमेशा नए-नए व्यावसायिक विचार लेकर आते थे और उन्हें वित्तीय सहायता की कभी कमी नहीं होती थी। उदाहरण के लिए, जंगली फलों से टूथपाउडर बनाने का विचार सबसे पहले उन्हीं का था। पेड़ों को काटने के बजाय, बीआर पहाड़ियों पर उगने वाली हाथी घास की डंडियों से माचिस बनाने का विचार भी उन्हीं का था।

□□□□ □□□□□□□□

□□□ □□□□□□□□ □□-□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□, □□□□□□, □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□ (□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□) □□□□, □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□, □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□, □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ 8:00 □□ 9:00 □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□, □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□, □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□, □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□, □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□,

जो पूरी रात मचान पर बैठे रहते थे, मुझमें कभी भी शांत बैठने का गुण नहीं आया, वो भी पेड़ पर इतनी ऊंचाई पर, जब तक कि कोई बहुत ज़रूरी मजबूरी न हो। इसलिए, मैं सिंड्रेला की तरह आधी रात से पहले घर लौट आती। मुझे कहना पड़ेगा कि पूरी रात मचान पर बैठने के बजाय, मुझे ज़मीन पर बैठना ज़्यादा पसंद है, और मेरे पिताजी जानते थे क्यों - मैं इंतज़ार करते-करते हमेशा सो जाती थी! वर्गीस को हेलस्टोन के ड्राइवर के रूप में काम पर रखा गया था, लेकिन वह उन लोगों में से एक था जो अपनी तय भूमिका से कहीं ज़्यादा काम करता था। हमेशा नई चीज़ें आज़माने के लिए उत्सुक और जोश से भरा रहने वाला वह हर कोशिश में पूरी तरह नाकाम रहा, और हमने उसके कई "शानदार विचारों" को रोकने की कोशिश की जो अक्सर उसके दिमाग में घूमते रहते थे। वह खुद को जन्मजात बहादुर मानता था और कभी-कभार उसमें साहस के दौरे पड़ते थे, जो आमतौर पर थोड़े समय में बहुत ज़्यादा ब्रांडी पीने से आते थे। एक बार, और यह तब की बात है जब मैं उसे अच्छी तरह से नहीं जानता था, वह मेरे पास आया और मेरी शॉटगन माँगी। आम तौर पर, मैं अपनी बंदूक किसी को नहीं देता, लेकिन किसी कारण से मैंने उसकी बात मान ली, यह सुनिश्चित करते हुए कि मैंने उसमें से गोलियाँ निकाल दी थीं। वह मेरे पैरों के पास बरामदे में बैठ गया और अंधेरे में निशाना साधते हुए मैदान में घूम रहे दर्जनों खूंखार जानवरों को मार गिराया। तब तक गर्म पानी का स्नान तैयार हो चुका था और मैं उसे अकेला छोड़कर चला गया। ठीक मेरे स्नान के बीच में, मेरी बंदूक चलने की ज़ोरदार आवाज़ आई। मैंने एक तौलिया उठाया और सबसे बुरे की आशंका से घबराकर बाहर भागा। तौलिया छोटा था और जब मैं घटनास्थल पर पहुँचा तो मुझे राहत और शर्मिंदगी दोनों का मिला- जुला एहसास हुआ। सच है, मैं ठीक से ढका हुआ नहीं था, लेकिन वहाँ वर्गीज था, सुरक्षित लेकिन व्याकुल दिख रहा था।
“अइय्यो, सारे, अइय्यो।” (अरे नहीं! सर! अरे नहीं!)
जाहिर है, उसने मेरी बंदूक में गोलियां भर लीं, मेरी टॉर्च ले ली और अपने घर के ठीक बाहर झाड़ियों में चला गया। टॉर्च की रोशनी में उसे दो आंखें दिखाई दीं और उसने सहज ही बाघ पर निशाना साध कर गोली चला दी। उसने अपनी पहली बिल्ली को मार गिराया - जो दुर्भाग्य से उसकी अपनी पालतू बिल्ली निकली!

वर्गीस मेरी सफलता का लाभ उठा रहा है। मोयार वैली रेंच में।

मैं आपको ब्रिटिश कोलंबिया की पहाड़ियों में मारे गए एक आदमखोर बाघ की कहानी सुनाता हूँ। यह घटना पचास के दशक के उत्तरार्ध में हुई थी, जब राल्फ मॉरिस इंग्लैंड लौट चुके थे। एक बाघ मजदूरों को मारने लगा और अत्तिक्कन कॉफी बागान में अफरा-तफरी मच गई। मजदूरों ने काम करने से इनकार कर दिया और स्थिति और बिगड़ने से पहले ही प्रबंधन ने वन विभाग से उस आदमखोर बाघ को मारने का आदेश दिया। उस आदमखोर बाघ की कुख्याति थी कि वह बिल्कुल निडर था और दिन दहाड़े भी लोगों पर हमला कर देता था। स्वाभाविक रूप से, कोई भी वन अधिकारी इस जानलेवा मिशन पर जाने को तैयार नहीं था। सौभाग्य से, मेरे पास उन इलाकों में शिकार करने का लाइसेंस था और उन्होंने सोचा कि अगर वे मुझे उस जानवर को मारने के लिए मना लें, तो उनका दो काम हो जाएगा। बेशक, मुझे पूरी बात नहीं बताई गई थी, खासकर उस आदमखोर बाघ के निडर होने के बारे में, और तभी विभाग से मेरे घर एक पत्र आया, जिसमें विशेष रूप से पूछा गया था कि क्या मैं उस परेशान करने वाले बाघ को मारने में रुचि रखता हूँ। मैं बहुत खुश हुआ और तुरंत योजना बना ली। शुक्रिया अदा करते हुए, शुक्रवार की दोपहर को मैंने अपनी नॉरटन मोटरसाइकिल पर सवार होकर यात्रा शुरू की, और काम पर बीमार होने का बहाना बनाया। कुछ यात्राएँ ऐसी होती हैं जिनमें सबसे कम अंधविश्वासी शिकारी भी जानता है कि कुछ गड़बड़ होगी, और यह उनमें से एक थी।

बैंगलोर शहर से निकलने से पहले ही मेरी मोटरसाइकिल का टायर पंचर हो गया, और मैसूर के बाहर बजरी पर फिसलने से मेरा लगभग एक्सीडेंट हो गया। मैं डिंबम चेक पोस्ट पर चाय और जलपान के लिए रुका और तभी मुझे सारी कहानी समझ में आई। मोटरसाइकिल स्टार्ट करते ही मेरे शरीर में एड्रेनालाईन का एक जाना-पहचाना उछाल दौड़ गया। मैं जल्द ही समतल सड़क पर था और कीचड़ भरी सड़क पर गड्ढों से बचते हुए तेज़ी से आगे बढ़ा। बारिश शुरू हो गई और आसमान से मूसलाधार बारिश होने लगी, जिससे मुझे रुकना पड़ा। जल्दबाजी में, मैंने एक अंधे मोड़ पर गाड़ी मोड़ दी और सड़क के ठीक बीच में खड़े बाइसन के झुंड से टकराने से बाल-बाल बचा। मैं उनसे कुछ ही कदम दूर था जब मुझे उनकी मौजूदगी का एहसास हुआ, और जैसे ही मैंने उनसे बचने की कोशिश की, मेरी साइकिल उस दिन दूसरी बार फिसल गई। मैं सहज रूप से चिल्लाया और साइकिल से गिरते ही मेरे कंधे में तेज दर्द हुआ। हेडलाइट टूट गई और साइकिल कुछ दूर जाकर लुढ़क गई। कुछ सेकंड की शांति के बाद, झुंड के जोर से दहाड़ने और चारों दिशाओं में बिखरने से अफरा-तफरी मच गई। बाइसन शायद जंगलों में चिंता करने वाले आखिरी जानवर होते हैं, लेकिन यहाँ घोर अंधेरे में लगभग बीस बाइसन का झुंड जोर-जोर से दहाड़ रहा था और रूसी रूलेट का खेल खेल रहा था। वे बस भागने और अपने बच्चों की रक्षा करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन यह निश्चित रूप से कोई सुखद अनुभव नहीं था। थोड़ी देर बाद भगदड़ शांत हुई और उपहास की छिटपुट फुफकार के अलावा, फिर से शांति छा गई। बारिश रुक गई थी, और मैंने स्थिति का जायजा लेने की कोशिश की। मेरी साइकिल ठीक लग रही थी, और टूटी हुई लाइट के अलावा, स्थिति बहुत खराब नहीं थी। मैंने अपनी बाइक स्टार्ट की और बिना बत्तियों के जंगल की सड़क पर बाइक चलाने का अपेक्षाकृत आसान काम शुरू किया, जहाँ किसी भी तरह की रोशनी नहीं थी और निश्चित रूप से वहाँ कोई आदमखोर बाघ छिपा हुआ था। मैं तेज़ नहीं चला सकता था क्योंकि मुझे कुछ ही फीट आगे दिखाई दे रहा था, फिर भी मैं इतनी धीमी गति से नहीं चलना चाहता था कि कोई भूखी बिल्ली मेरी ओर आकर्षित हो जाए। सौभाग्य से, मैं अपने पहले गंतव्य, शोलागा बस्ती पहुँच गया, जहाँ मैंने अपने शिकारी गाइड रेशा को बुलाया। उसकी मदद से, मैं तुरंत चारा खोजने निकल पड़ा, लेकिन पास के एक पशु बाड़े के मालिक ने कोई मदद नहीं की क्योंकि उसने अपनी भैंसें बेचने से इनकार कर दिया। मैंने उसे बताया कि मैं आदमखोर को मारने के लिए चारा खरीद रहा हूँ, जिससे वह थोड़ा खुश हुआ, लेकिन फिर भी उसने मेरी बात नहीं मानी। परेशान होकर,

मैंने थोड़ा इधर-उधर भटकने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि शायद मुझे कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो मुझे आदमखोर के बारे में कुछ सुराग दे सके। मुझे कुछ कुली मिले जो कहीं जाने के लिए गाड़ी का इंतजार कर रहे थे। मुझे बताया गया कि यही वह सड़क थी जहाँ बाघ अपने आखिरी शिकार को ले गया था। इस थोड़ी सी हौसला अफजाई से मैं आगे बढ़ गया। मैं लगभग दो मील चल चुका था और एक घाट की सड़क पर धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा था कि तभी मुझे एक बाघ दिखाई दिया। वह एक दीवार पर अपने पिछले पैरों के बल बैठा था और हम दोनों एक-दूसरे को देखकर बराबर चौंक गए। मैंने धीरे से अपनी राइफल उठाई और बाघ को किसी तरह यह आभास हो गया कि मैं उसका कोई आम शिकार नहीं हूँ, इसलिए वह कूद गया। मैं जानता था कि यह ईश्वर की कृपा है और मैं इस अवसर को खोना नहीं चाहता था। मैं सड़क पार करके दीवार से कूद गया, यह देखे बिना कि मैं जमीन से कितनी ऊँचाई पर हूँ। यह बहुत ही मूर्खतापूर्ण काम था, क्योंकि मैं एक लैंटाना झाड़ी पर गिरा, और हालाँकि ऊँचाई ज़्यादा नहीं थी, फिर भी मैंने बहुत शोर मचाते हुए बड़ी बेढंगी कोशिश की और आदमखोर बाघ ने मुझे पूरी तरह से अपने रहमो-करम पर पा लिया। मुझे खुद पर और अपनी.423 राइफल पर पूरा भरोसा था, हालाँकि दुर्घटना के दौरान वह मुझसे गिर गई थी। जैसे ही मुझे होश आया, मैंने ऊपर देखा और कुछ दूरी पर बाघ मुझे हैरानी से देख रहा था। पलक झपकते ही वह ज़मीन पर लेट गया, छलांग लगाने के लिए तैयार, उसके होंठ गुस्से से सिकुड़े हुए थे। यह सब बताने में समय लग गया, लेकिन जब यह सब हुआ, तो कुछ ही सेकंडों का था। मैंने ट्रिगर दबाया और गोली उसके खुले मुंह के पास से निकल गई। मैं उसके आखिरी हमले से बचने के लिए एक तरफ हट गया और लगभग बिल्कुल करीब से एक और गोली चलाई। मैं बुरी तरह कांपने लगा और फिर मुझे उल्टी आने लगी। जंगलों में बाल-बाल बचने के बाद अक्सर ऐसा होता था; मेरे शरीर में एड्रेनालाईन का स्तर कम करने का प्रकृति का तरीका। रेशा स्क्रीन पर दिखाई दी और खुशी से झूम उठी। यह एक ऐसा रोमांच था जो शुरू होते ही लगभग खत्म हो गया, लेकिन मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ा!
रेशा मेरा शिकारी था और उसकी सेवाओं के लिए उसे अच्छी खासी रकम देने के अलावा, मैंने उसे जंगली मुर्गे और चिड़ियों का शिकार करना भी सिखाया ताकि वह अपने परिवार का भरण-पोषण कर सके। उन इलाकों में खेती-बाड़ी का कोई काम नहीं था और पैसा कमाना बहुत मुश्किल था। बहुत से स्थानीय लोग अपनी आजीविका के लिए मुझ जैसे शिकारी के लिए काम करने पर निर्भर थे। शोलागा लोग सीधे-

सादे लोग हैं और उनके पास चेन्चू या हक्की पिक्की लोगों की तरह धनुष-बाण जैसे हथियार नहीं होते। वे बेहतरीन शिकारी हैं और छोटे स्तनधारियों और पक्षियों को फंसाने के अनूठे तरीकों से मांस प्राप्त करते हैं। वे जंगल से मिलने वाली चीजों के बारे में बचपन से ही जानते हैं कि वे उनके लिए क्या उपयोगी हैं, और कभी-कभी ऐसी चीजों के प्रति उनका दृढ़ संकल्प मुझे आश्चर्यचकित कर देता था। कभी-कभी चलते समय वे मुझसे पेड़ के एक छोटे से छेद में हाथ डालने के लिए कहते थे। हालांकि मुझे उन पर भरोसा था, फिर भी मैं अपना हाथ किसी छेद में नहीं डालना चाहता था, कहीं ऐसा न हो कि वे गलत हों। वे मेरी परेशानी देखकर हंसते और फिर खोखले हिस्से में हाथ डालकर छोटे-छोटे मधुकोश निकालते, जिन्हें वे मेरे साथ बांटते। कुछ मधुमक्खियां डंक मारतीं, लेकिन वे उन्हें झटक कर हटा देते, मानो डंक का उन पर कोई असर ही न हो। आम धारणा के विपरीत, मेरा हमेशा शिकार करने का इरादा नहीं होता था। कभी-कभी अपने ट्रैकर्स के साथ टहलते हुए मुझे कुछ अद्भुत चीज़ें देखने को मिलती थीं। एक बार, रेशा और मैं एक बैल बाइसन और एक विशाल नर बाघ को लगभग एक-दूसरे के बगल में मृत पड़े हुए पाए। पास की एक बस्ती से हमें पता चला कि उनके बीच पूरी रात लड़ाई चली थी। दोनों को गंभीर चोटें आई थीं और मैं यह जानने के लिए उत्सुक था कि कोई भी दुश्मन भागा क्यों नहीं। उन दिनों घास के मैदानों में बाघ बहुत आम नहीं थे, इसलिए शायद दोनों के लिए अपने प्रतिद्वंद्वी को देखना एक नया अनुभव था। मैंने पहाड़ियों के शुरू होने वाले घने जंगलों में रेशा की सेवाएं लेना शुरू किया, लेकिन समय के साथ, वह पूरे बीआर हिल्स में मेरा भरोसेमंद ट्रैकर बन गया।

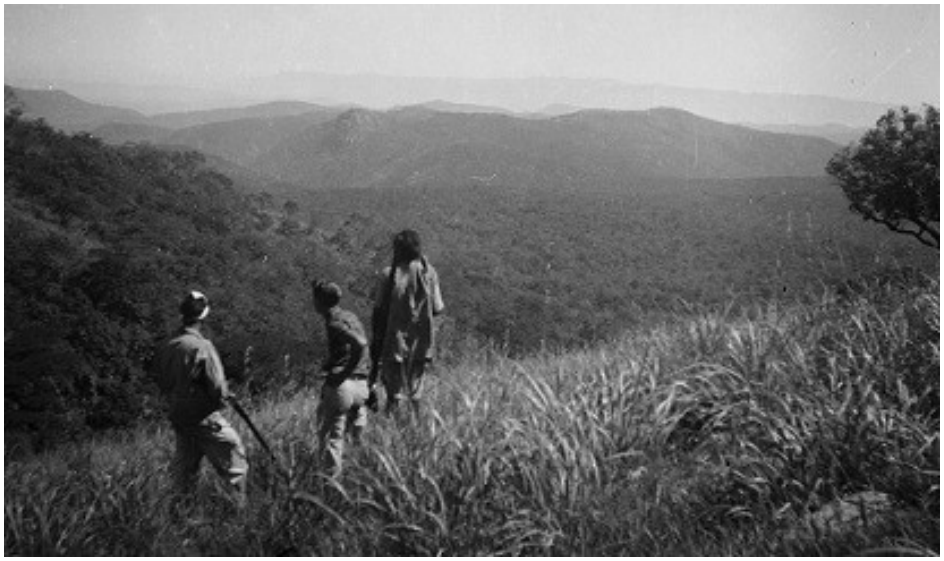

रेशा आगे बढ़कर नेतृत्व कर रही हैं। बीआर हिल्स में।

रेशा ही मेरे इकलौते ट्रैकर और गाइड नहीं थे, और भी लोग थे, जैसे डोड्डाथोड्डी मड्डा के बेटे जेडिया। मैं उनके पिता से कभी नहीं मिला, लेकिन मैंने अपने पिताजी को उनके बारे में बात करते सुना है। वह भी रैंडोल्फ मॉरिस के लिए ट्रैकर थे। संयोग से, जेडिया को राल्फ मॉरिस और मेरे दोनों के लिए काम करने का गौरव प्राप्त था। वह शोलागा प्रजाति के ट्रैकर थे और मुडियानूर गाँव के पास रहते थे। हालाँकि मैं ह्यूगी हेलस्टोन से मिलने से पहले उन्हें जानता था, मैंने उनकी काबिलियत के बारे में उनसे बात की थी और जब भी हेलस्टोन के घर शिकार के शौकीन मेहमान आते थे, तो उन्हें अक्सर बुलाया जाता था। हालाँकि वह ह्यूगी के लिए काम करते रहे, लेकिन जब भी मैं आता, वह अपने सभी कामों से छुट्टी लेकर अपना पूरा समय सिर्फ मुझे ही देते थे। हालाँकि उनका नाम नहीं दिया गया है, लेकिन उनकी तस्वीर मेरे पिताजी की एक किताब 'मैन-ईटर्स एंड जंगल किलर्स' में छपी है, जिसका शीर्षक है "एक बाघ के भोजन की सीमा"। शोलागा कुत्ते उन सबसे बहादुर शिकारी कुत्तों में से हैं जिनके साथ काम करने का मुझे सौभाग्य मिला है। जब भी हम खतरनाक जानवरों का पीछा करते थे, वे आगे-आगे चलते थे, और जब रास्ता मुश्किल हो जाता था, तो वे सचमुच रेंगते हुए जानवरों के पदचिह्न खोजते थे। वे अक्सर छोटे कद के होते हैं, ऊर्जा से भरपूर होते हैं, बिना रुके घने जंगलों में मीलों तक चल सकते हैं, और उन्हें हमेशा अपने द्वारा मिले पदचिह्नों का पूरा भरोसा होता है। उनका आहार मुख्य रूप से जंगली मशरूम,

शहद और बांस के अंकुर होते थे, इसलिए मेरे द्वारा शिकार किया गया कभी-कभार मिलने वाला हिरण या सूअर उन्हें बहुत पसंद आता था। हालांकि, उनका मांस का पूरक भोजन पूरी तरह से मुझ जैसे शिकारी कुत्तों पर निर्भर नहीं था। वे जंगली मुर्गे, तीतर, खरगोश और चूहे जैसे हिरण जैसे छोटे जानवरों को पकड़ने के लिए जाल बिछाने में माहिर थे, अगर वे भाग्यशाली होते तो।
ह्यूगी से दोस्ती होने से पहले मैं जेडिया को जानता था और मोयार वैली रेंच में अक्सर जाता रहता था। इसलिए, शुरुआती दिनों में, जब मैं मुडियानूर पहुँचा, तो मेरे पास जेडिया की झोपड़ी में रात बिताने के अलावा कोई चारा नहीं था। कई शोलागा लोगों की तरह, वह भी अक्सर भैंस के दूध से अपने बाल धोता और उन्हें सूखने के लिए छोड़ देता था, जिससे बहुत बदबू आती थी। ज़रा सोचिए, एक ऐसी छप्पर की झोपड़ी में, जिसमें न खिड़कियाँ थीं और न ही हवा आने-जाने का कोई इंतज़ाम था, और जहाँ प्रवेश द्वार सिर्फ़ दो फुट चौड़ा और दो फुट लंबा था, और जिसमें रेंगकर जाना पड़ता था। वहाँ न तो मोमबत्ती होती थी और न ही कोई और रोशनी। मैं मिट्टी के फर्श पर लेटता था और रात में कीड़े- मकोड़े मेरे ऊपर चढ़ जाते थे। मुझे याद है एक बार मैं देर शाम पहुँचा था, और जब मैं अगले दिन उठा तो मुझे पता चला कि पूरी बस्ती में चेचक फैल गया था! जेडिया ने मुझे इस बारे में बताना ज़रूरी नहीं समझा। कुछ दिनों बाद जब मैं घर पहुँचा, तब तक मुझे भी खुजली होने लगी थी। इससे पता चलता है कि ये लोग बीमारी जैसी छोटी-मोटी बातों को लेकर बिल्कुल भी परेशान नहीं होते थे – अगर किसी को बीमारी हो जाती थी, तो या तो वो ठीक हो जाता था या मर जाता था। वे बीमारियों को लेकर हमारे जैसे न तो कोई कलंक मानते थे और न ही उनसे नफरत करते थे। मैं अक्सर खुले में सोने के बारे में सोचता था, लेकिन यह हाथियों का इलाका था और मेरा थका हुआ और दर्द भरा शरीर जेडिया के शानदार बर्ताव को सहते हुए मेरी सूंघने की शक्ति को खत्म कर देता था। हमारी भूमिकाएँ और रीति-रिवाज बस औपचारिक थे। वो मुझे भोर से एक घंटा पहले जगा देते थे, जो अपने आप में एक बड़ी बात थी क्योंकि उनके पास न तो घड़ी थी और न ही कोई अलार्म। उनकी उम्र 60 के आसपास रही होगी और मेरी उम्र 20 के आसपास, लेकिन वो एक मजबूत और मेहनती बूढ़े आदमी थे। उन्हें कभी किसी बात की परवाह नहीं होती थी और जंगल में रहते हुए उनमें असीम ऊर्जा होती थी।

जेद्दिया

कभी-कभी हम हेलस्टोन की संपत्ति और मुडियानूर गाँव के बीच स्थित एक झील तक पैदल जाते और झील के किनारे थोड़ी ऊँची जगह पर बैठ जाते जहाँ से हम जंगली सूअरों को खेतों में रात भर की लूटपाट के बाद लौटते हुए देख सकते थे। प्यास बुझाने और जलकुंभी के कंद खाने के लिए झील उनका पसंदीदा स्थान था। जब हम झील के एक हिस्से का चक्कर लगाते हुए उस जगह पहुँचते जहाँ से मैं सूअरों को गोली मार सकता था, तब क्षितिज पर आकाश में सुबह की पहली किरणें दिखाई देतीं। वे जहाँ गिरते, उसके आधार पर मैं या तो किनारे पर ही रहता या बर्फीले पानी में उतरकर, बत्ती जलाकर उसे वापस खींच लाता। कई बार ऐसा हुआ है कि मुझे पानी में एक हाथी दिखाई नहीं दिया और गोली की आवाज़ से वह जाग गया। वह पानी में छप-छप करता हुआ झाड़ियों में भाग जाता, मानो उसे बीच में टोका गया हो। सूअर को गोली मारने के बाद, जेडिया मांस को अपने गाँव ले जाने के लिए किसी की मदद लेता। मेरे लिए यह एक रोमांच था, लेकिन गाँव के लिए इसका मतलब पूरे एक सप्ताह का भोजन था, इसलिए हमारा यह छोटा सा कारनामा हम दोनों के लिए अलग-अलग तरीकों से समान रूप से संतोषजनक रहा। तलामलाई और तलावड़ी में चारों ओर घनी वनस्पति से घिरे दलदल और झीलें हैं, और इसी वजह से यह बाइसन और हाथियों के लिए एकदम उपयुक्त इलाका था।
शोलागा लोग गाँव के सबसे ईमानदार, सरल और बेहद वफादार लोगों में गिने जाते हैं। हालाँकि, बहुविवाह प्रथा आम थी और जेड्डिया के कई बच्चे थे। उम्र

हमने उसे देख लिया। जैसे कोई धावक दौड़ शुरू होने की पिस्तौल बजने का इंतज़ार करता है, वैसे ही उसने अपना सिर ऊँचा रखा और अपनी सूंड को अपने दाँतों के बीच समेट लिया। मैं उसकी क्रूर आँखों को क्रोध से घूरते हुए देख सकता था। मानो तबाही मचाना काफी नहीं था, बैल चिंघाड़ते हुए एक एक्सप्रेस ट्रेन की तरह दौड़ा, नफरत से चीखता हुआ तेजी से आगे बढ़ा, अदम्य शक्ति का प्रदर्शन करते हुए। मैं जानता था कि अगर मुझे नरम नोक वाली गोली से सीधे उसके सिर पर निशाना लगाना पड़े तो उसे रोकना नामुमकिन था, इसलिए मैंने वही किया जो मुझे करना था। यह मेरे लिए गर्व का क्षण नहीं था, लेकिन मैंने उसके बाएं घुटने पर निशाना साधा और गोली चला दी। निश्चित रूप से, उसका बायां अगला पैर लड़खड़ा गया और उसकी गति रुक गई। यह एक भयानक दृश्य था क्योंकि हाथी अपनी गति के कारण लगभग पलट गया और बैल धूल के विशाल बादल के बीच लड़खड़ाकर रुक गया। यह सुनिश्चित करते हुए कि मैं सूंड से दूर रहूँ, मैं उसके बगल में और पीछे चलने लगा। वह विशालकाय जानवर दर्द और गुस्से से चीख रहा था, स्पष्ट रूप से स्तब्ध और भ्रमित था। जंगल उसकी चीखों से गूंज उठा जब मैंने लगभग बिल्कुल करीब से उसकी कनपटी पर गोली मार दी। यह काफी नहीं था क्योंकि वह हिलता ही रहा, और मैंने कांपते हुए शरीर पर एक और गोली चलाई और उसकी पीड़ा का अंत कर दिया। यह सब असहनीय था और मुझे उल्टी आने लगी, ऐसा मेरे पिताजी को भी अक्सर होता था। बैठते ही मैंने जेडिया को ढूंढा, लेकिन वह मुझे दिखाई नहीं दिया। मैं सोच ही रहा था कि क्या हुआ होगा, तभी एक चीख सुनाई दी। मेरा वफादार साथी पेड़ पर चढ़ गया था! "बुद्धिवंता, बुद्धिवंता" (प्रतिभाशाली, प्रतिभाशाली!) उसने चिल्लाया, और मैंने नम आँखों से मुस्कुरा दिया।
यह नाम मेरे साथ जुड़ गया और मैं कुछ समय के लिए बीआर हिल्स का "बुद्धि" शिकारी बन गया, और निश्चित रूप से जेडिया के लिए भी, क्योंकि वह मुझे जीवन भर इसी नाम से पुकारता रहा, "देवरे" से बदलकर। उस दिन, आस-पास के गांवों से बहुत से लोग मरे हुए बदमाश को देखने आए, जिनमें मेरा दोस्त हेलस्टोन भी शामिल था, जिसे इस बात पर बहुत गर्व था कि उसी की राइफल से उसे मारा गया था। मेरा पीछा बाघों, तेंदुओं, भालुओं और जंगली सूअरों ने किया है, लेकिन हाथी द्वारा पीछा किया जाना सबसे डरावना होता है, दुश्मन के विशाल आकार को देखते हुए, और मुझे यह स्वीकार करना होगा कि यह घटना शायद मेरे पूरे जीवन की सबसे भयानक घटनाओं में से एक थी। वास्तव में, उस दिन के बाद से, मुझे

हमेशा यह विश्वास रहा है कि जंगल में अपने किसी साहसिक अभियान के दौरान एक हाथी मुझे मार डालेगा।
माका एक और ट्रैकर था जिसकी मदद से मैं अक्सर शिकार करता था। वह एक शोलागा था, जो मूल रूप से बैलूर का रहने वाला था और मुडियानूर में बस गया था। बैलूर में एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर एक सुंदर वन बंगला था, जहाँ से हरियाली का मनोरम दृश्य दिखाई देता था। यह बीआर हिल्स के दूसरी ओर स्थित है और मेरी पसंदीदा जगहों में से एक हुआ करती थी। अगर किसी के पास शिकार का लाइसेंस होता था, तो इस बंगले में ठहरना अनिवार्य था, और मैंने इस अनोखे बंगले में कई रातें बिताईं। लोकनहल्ली से बैलूर जाने वाली सड़क अंततः डिंबम और फिर कोयंबटूर तक जाती है। उन दिनों पूरा इलाका लगभग छह फीट ऊँची हाथी घास से ढका रहता था, और इसी से वहाँ रहने वाले जानवरों की प्रजाति का निर्धारण होता था। मांसाहारी जानवर कम ही दिखाई देते थे, लेकिन यह जगह उन विशाल बाइसन के झुंडों के लिए स्मृति में बसी हुई है जो कभी इन क्षेत्रों में घूमते थे। कई बार मैंने दो सौ से अधिक बाइसन के झुंड देखे हैं, जो आजकल अकल्पनीय दृश्य है। हालांकि, दोहरी मार - रिंडरपेस्ट और लैंटाना के आगमन - ने उनकी आबादी को पूरी तरह से नष्ट कर दिया और उस क्षेत्र का पूरा भूभाग बदल गया। न केवल वहां बड़े-बड़े झुंड थे, बल्कि इस क्षेत्र में मैंने अब तक के सबसे बड़े बाइसन भी देखे। शायद यह इसलिए था क्योंकि वह इलाका एकांत में था, शायद वनस्पति और घास द्वारा प्रदान की गई छाया के कारण, लेकिन बाइसन विशालकाय आकार के हो गए और मैंने उनमें से कुछ का शिकार किया, सबसे बड़े बाइसन के सींगों की लंबाई सिरे से सिरे तक सत्तर इंच (बाहरी घुमावों के आसपास) थी। हालांकि वे अच्छे ट्रॉफी थे, लेकिन उन्हें मारते समय मैंने किसी विशेष कौशल का इस्तेमाल नहीं किया या मुझे कोई एड्रेनालाईन रश महसूस नहीं हुआ। यह बस एक गाय को मारने जैसा था। साथ ही, शोलागा लोग गोमांस नहीं खाते हैं, इसलिए लगभग एक हजार किलो मांस बर्बाद हो रहा था और मैं इसे अपने अंतरात्मा पर बोझ नहीं बनने देना चाहता था।
धीरे-धीरे इन इलाकों में हाथी घास की जगह लैंटाना उग आई। दोनों ही तरह की वनस्पतियों में चलना मुश्किल लगता है, घास में तो चला जा सकता था, लेकिन लैंटाना में चलना नामुमकिन था, क्योंकि उसमें उलझकर निकलना नामुमकिन था। लैंटाना को 1800 के दशक की शुरुआत में भारत में लाया गया था और धीरे-धीरे यह दक्षिण भारत तक फैल गई। यह सचमुच एक अभिशाप है क्योंकि कोई भी शाकाहारी

जानवर इसे नहीं खाता; इसे काटने या जलाने से यह और भी तेज़ी से उगने लगती है, और कई जंगली पौधों के विपरीत, यह न तो इंसान के लिए और न ही जानवर के लिए बिल्कुल बेकार है। यह हमेशा से ही मौजूद थी, खासकर बीआर हिल्स जाते समय दाहिनी ओर, लेकिन 1950 के दशक के अंत तक इसकी वृद्धि बहुत बढ़ गई और जल्द ही बड़े-बड़े घास के मैदान इस खरपतवार से भर गए, जिसका एक कारण वहाँ से भारी मात्रा में बांस का खनन भी था।
माका की बात पर वापस आते हैं। मैं आदमखोर बाघिन की तलाश में इन इलाकों में आया था। बैंगलोर का एक और शिकारी, गार्डनर, भी उसी इलाके में था। उसने एक शिकार के पास बैठकर बाघिन पर गोली चलाई, जिससे वह घायल हो गई, जबकि मेरी रात भर की निगरानी से कुछ हासिल नहीं हुआ। गार्डनर सुबह होते-होते बहुत बीमार हो गया था, क्योंकि उसने पूरी रात मचान पर बिताई थी और वह अंधेरे में घायल बाघ का सामना नहीं करना चाहता था। उसे निमोनिया होने का संदेह था और उसने मुझसे विनती की कि मैं उसका अधूरा काम पूरा कर दूं। सामान्य परिस्थितियों में, मैं मना कर देता, क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास था कि यह उसकी जिम्मेदारी है। लेकिन उसकी हालत देखकर मैंने अपना मन बदल लिया। मैंने उसे उस बंगले में छोड़ दिया जहाँ हम दोनों साथ रह रहे थे। माका की मदद लेकर, मैंने बाघिन के रास्ते का पता लगाने का फैसला किया। जब हम मचान पहुँचे तब तक सुबह के मध्य का समय हो चुका था। देखते ही देखते शोलागा ने खून के निशान का पता लगा लिया। खून के छोटे से पोखर से यह स्पष्ट था कि नरम नोक वाली गोली किसी महत्वपूर्ण अंग को लगी थी और इससे मुझे थोड़ी तसल्ली मिली। यकीनन, गोली ज्यादा दूर नहीं गई होगी। पंद्रह मिनट तक हाथों और पैरों के बल रेंगने के बाद हम एक छोटे से खुले मैदान में पहुँचे। पास की झाड़ियाँ कुछ दूरी पर थीं और मैंने सोचा कि यहाँ थोड़ी देर आराम करने के लिए ठीक रहेगा। हम दोनों को पूरा यकीन था कि वह जानवर वहाँ से चला गया होगा, और मैं अपनी राइफल आधी उठाए खड़ा रहा जबकि माका मेरी बाईं ओर पेशाब करने के लिए चला गया। वह मुश्किल से बीस गज ही चला था कि एक भयानक, जानी- पहचानी दहाड़ सुनाई दी और पलक झपकते ही बाघिन हवा में उछली और माका पर झपट पड़ी। हमने उस जानवर को कम आँका था - खुले मैदान को पार करने के बजाय वह लगभग वापस मुड़ गई और हमारे गुजरने का इंतजार करने लगी, मानो पीछे से हम पर हमला करने की योजना बना रही हो। माका लगभग उस जानवर के जबड़ों में चला गया था और उसने उसे मारने के लिए हवा में छलांग लगाई। सहज ही, उसने हमले से

बचने के लिए एक तरफ हटकर खुद को बचा लिया, जिससे बाघिन उस पर वार नहीं कर सकी और न ही उसकी गर्दन पकड़ सकी, लेकिन उसके पंजों ने उसके शरीर को बुरी तरह से घायल कर दिया और इस वजह से माका गिर पड़ा, बाघिन उसके ऊपर आ गिरी। वह कोई बड़ा जानवर नहीं था और माका को नीचे दबाकर ज़मीन पर लोट रहा था। लगातार वह मुझे उसे गोली मारने के लिए चिल्ला रहा था, लेकिन मुझे डर था कि कहीं उसे गोली न लग जाए, इसलिए मैं ऐसा नहीं कर सका। मैंने बेहतर निशाना लगाने की कोशिश की और दूसरे कोण पर चला गया, लेकिन वे दोनों बुरी तरह से जकड़े हुए थे, बाघिन उसे काट नहीं पा रही थी क्योंकि उसने अपनी छोटी कुल्हाड़ी उसके मुंह के सामने कर दी थी। मैंने बाघिन का ध्यान भटकाने के लिए चीख-पुकार मचाई, इस उम्मीद में कि वह मुड़ जाएगी और मुझे वह मौका मिल जाएगा जिसकी मुझे ज़रूरत थी। पलक झपकते ही वह दोमुंही होकर माका के ऊपर से कूद पड़ी - एक शानदार कलाबाजी का प्रदर्शन, और मुझ पर झपट पड़ी। मुझे निशाना लगाने का समय नहीं मिला, मैंने लगभग बिना सोचे-समझे राइफल से गोली चला दी, मेरे पास जो हथियार था उसे देखते हुए यह एक हास्यास्पद निशाना था, लेकिन गोली हवा में उड़ते हुए उसकी गर्दन में जा लगी और वह वहीं रुक गया। हो सकता है कि वह उस गोली से मर जाता, लेकिन मैंने एहतियात के तौर पर एक और गोली चला दी। मैं माका की ओर दौड़ा जो खून के तालाब में पड़ा था। मैंने अपनी राइफल वहीं जमीन पर छोड़ दी और उसे अपने कंधे पर उठाकर गांव ले गया। यह बहुत लंबा रास्ता था और मेरी ताकत के बावजूद, चिलचिलाती गर्मी में खून से लथपथ शरीर के साथ एक मृत शरीर को उठाना एक असहनीय यात्रा थी। हम गांव पहुंचे और फिर मैं उसे चालीस मील दूर सत्यमंगलम के एक अस्पताल ले गया, जहां उसने चार महीने से अधिक समय तक आराम किया। मैंने उसके इलाज का खर्च उठाया; अपनी जान बचाने के लिए मैं कम से कम इतना तो कर ही सकता था। उसका इलाज पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ, उसके एक पैर में चोट लग गई थी, जिससे वह हमेशा के लिए लंगड़ाने लगा और एक ट्रैकर के रूप में उसकी रोजी-रोटी लगभग खत्म हो गई। उसकी बांह पर हुआ घाव बेहद भयावह था, क्योंकि उससे बांह में एक छेद हो गया था, जिसमें से दो उंगलियां गुजर सकती थीं। घाव भरने के बाद उसे दर्द तो नहीं होता था, लेकिन उस चोट को देखने वाला हर कोई अचंभित रह जाता था। मुडियानूर में एक और घटना हुई थी जिसमें एक बाघ शामिल था, लेकिन वह उतनी डरावनी नहीं थी, क्योंकि उसमें दो बाघ शामिल थे और उनमें से एक लकड़ी का बना था! यह घटना मेरी उन शुरुआती यात्राओं के दौरान की है, जब मैं हेलस्टोन

को नहीं जानता था। मैंने एक बाघ को गोली मारी थी जिसे वन विभाग ने उपद्रव घोषित कर दिया था क्योंकि वह उस क्षेत्र में लोगों और पशुओं पर हमला कर रहा था। संयोग से, चरवाहे एक अमीर जमींदार के लिए काम करते थे और जब मैंने उस बाघ को मार गिराया तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। इसलिए, आम तौर पर जहां मैं गांव से कुछ सहायकों को जानवर की खाल उतारने के लिए बुलाता हूं, वहां के विपरीत, यह एक भव्य उत्सव था। वे मुझे ढोल-नगाड़ों, तुरहियों और धूमधाम के साथ पूरे गांव में घुमाने ले गए। फिर वे मुझे एक अजीब दृश्य दिखाने ले गए - एक लकड़ी का बाघ जो एक पेड़ के नीचे रखा था। मैंने उनसे इसके इतिहास या महत्व के बारे में पूछा, लेकिन उन्हें ज्यादा जानकारी नहीं थी। वे बस इतना जानते थे कि वे वर्षों से इसकी पूजा करते आ रहे थे और हर बार जब किसी बाघ की जान ली जाती थी तो पूजा करते थे। यह समारोह क्षमा मांगने और देवताओं के दंड से बचने का एक तरीका था, एक ऐसी परंपरा जो पीढ़ियों से चली आ रही थी। कई वर्षों तक मैं उस लकड़ी के बाघ की उत्पत्ति के बारे में सोचता रहा और फिर 2008 में, मेरे एक मित्र ने मुझे कर्नल ए.ई. पॉवेल द्वारा लिखित 'कॉल ऑफ द टाइगर' नामक पुस्तक दी। उन्होंने इस क्षेत्र में अपने कारनामों के बारे में बताया है और उसी लकड़ी के बाघ को देखने का जिक्र किया है, जिसका समय उन्होंने अपने से सौ साल पहले का बताया है। मैं सोचता था कि मैं ही वह पहला श्वेत व्यक्ति था जिसने इसे देखा था, लेकिन पॉवेल ने मेरे भ्रम को तोड़ दिया। पॉवेल बताते हैं कि एक अंग्रेज कप्तान अक्सर बाघों का शिकार करने के लिए उस क्षेत्र में आता था और स्थानीय लोगों को अपनी याद में एक लकड़ी का बाघ बनाने के लिए पैसे देकर पुरस्कृत करता था, जिसका समय कम से कम दो सौ साल पुराना बताया गया है। बाघ आज भी मौजूद है, हालांकि अब इसे गांव के एक मंदिर में रखा गया है।
एक और व्यक्ति जिसका ज़िक्र करना ज़रूरी है, वह था मेरा खालसाज़ मुथु। मुथु बाकी लोगों की तरह शोलागा नहीं था, बल्कि एक तमिलियन था जो वहाँ आकर बस गया था। इसलिए उसे जंगल में जानवरों के निशान ढूंढने जैसे हुनर तो नहीं आते थे, लेकिन वह खाल उतारने में माहिर था। वह माका के साथ मिलकर काम करता था और किसी जानवर को गोली मारने के बाद उसका काम शुरू होता था। मेरे टैक्सिडर्मिस्ट टोचर ने मुझे खाल उतारने और उसे सुखाने जैसे सारे हुनर सिखाए थे, वो सब मैंने मुथु को सिखा दिए, और जल्द ही मुडियानूर में उसकी खूब मांग होने लगी क्योंकि वहाँ के शोलागा लोगों में ये हुनर नहीं था।

हालांकि, मोयार वैली रेंच और पास की झील के बीच सड़क पर एक हाथी ने उसे मार डाला। माका की भी ज़िंदगी बहुत छोटी रही, हालांकि मुझे याद नहीं कि उसकी मौत कैसे हुई।

किसी काम को करने का बस एक ही तरीका होता है। माका और मुथु को निर्देश देना।

मैं एक जोशीला पुरुष हूँ और हालाँकि बैंगलोर में रहते हुए मुझे महिलाओं से कभी कोई कमी नहीं हुई, फिर भी जंगलों में जाते समय मैं हमेशा मौज-मस्ती की तलाश में रहता था। उन दिनों, जंगलों से सटे गाँवों में ऐसी व्यवस्थाएँ मिलना लगभग नामुमकिन था, मुडियानूर शायद एकमात्र अपवाद था। पचास के दशक के उत्तरार्ध में, मैं अपने आयरिश साथी, कैप्टन कीलर के साथ अक्सर उस गाँव जाया करता था। वह व्यापार जुटाने का काम संभालता था, जबकि मेरी ज़िम्मेदारी ग्राहकों को शिकार पर ले जाना थी। मेहमानों को मोयार वैली रेंच में ठहराया जाता था और मैं अपने शिकारी कुत्ते के साथ उन्हें मुडियानूर के आसपास शिकार पर ले जाता था। मैं वन विभाग में लोगों को जानता था और उन्होंने मुझे शिकार लाइसेंस दिलाने में मदद की, और सब कुछ ठीक चल रहा था। हालाँकि हमारी शुरुआत अच्छी रही, लेकिन हमारी साझेदारी में दरार के संकेत दिखने लगे। मुडियानूर गाँव किसी कारणवश उस क्षेत्र में ईसाई धर्म परिवर्तन आंदोलन का केंद्र बन गया था। ईसाई धर्म अपनाने के बदले में, स्थानीय लोगों, विशेषकर कई शोलागा लोगों को, कपड़े, भोजन और बुनियादी शिक्षा दी जाती थी, भला भला भला इसे कौन ठुकरा सकता था? इसलिए, जहाँ पुरानी

□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□, □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□

□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ - □□□□□□ □□□□ □□ □□□

□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□-□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□! □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□-□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□-□□□□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□□□

आयरिश व्यक्ति ऐसा कारनामा कैसे कर सकता है! मैं विस्तार से नहीं बताऊंगा, लेकिन कीलर के व्यवहार को लेकर शिकायतें थीं और अगर मैंने हस्तक्षेप न किया होता, तो कीलर गंभीर मुसीबत में पड़ जाता। मुझे इस पूरे मामले को शांत करने के लिए काफी पैसा खर्च करना पड़ा। खैर, कीलर और मैं अलग हो गए और जॉर्ज फर्नांडीस दूसरे गाँव चले गए, लेकिन मेरे मन में यह विचार बैठ चुका था और मैंने मुडियानूर की कई महिलाओं के साथ कई रातें बिताईं। उन दिनों कंडोम नहीं मिलते थे और भगवान ही जानता है कि मेरे इन कामों के क्या परिणाम हुए।
हर अच्छी चीज़ का अंत होता है, इसलिए मैं यहाँ अपने आखिरी शिकार की कहानी सुना रहा हूँ। यह लगभग सन् 1969 की बात है और मैं मोयार वैली रेंच पर खुद ही चला गया था। यह मेरी एक हफ्ते की यात्रा का पहला दिन था और मैं बहुत उत्साहित था, लेकिन साथ ही साथ पुरानी यादें भी उमड़ रही थीं, शायद एक तरह का पूर्वाभास जिसे मैंने तुरंत ही भुला दिया। अप्रैल की बारिश के तुरंत बाद का समय था और मेफ्लावर के पेड़ हल्के हरे से चमकीले लाल रंग में बदल गए थे। नम जंगल में चमेली और यूकेलिप्टस की मीठी खुशबू फैली हुई थी जो उस एस्टेट में उगते थे। ह्यूग मेरे बगल में अपनी पसंदीदा कुर्सी पर बैठा था और हम सिगरेट पी रहे थे कि अचानक बाहर एस्टेट के कुत्तों में से एक ने दर्द भरी आवाज़ में चीख मारी। हम दोनों ने एक-दूसरे को देखा और एक साथ कहा, "पैंथर!" मैं दौड़कर अपने कमरे में गया और अपनी.423 माउज़र पिस्तौल उठाई जिस पर हमेशा टॉर्च लगी रहती थी। मैं सामने के दरवाजे से बाहर भागा और उन बाहरी कमरों की कतार तक पहुँचा जहाँ से मुझे लगा कि मैंने चीख सुनी थी। मैंने अपनी टॉर्च जलाई और उसे घुमाया। मुझे रोशनी में पीले-हरे रंग की आँखों का एक जोड़ा दिखाई दिया और मैंने एक तेंदुआ की स्पष्ट आकृति को पहचान लिया। वह ज़रा भी परेशान नहीं लग रहा था क्योंकि वह धीरे-धीरे कुत्ते को घसीटकर ले जाने लगा। मैंने उसकी पीठ पर तेज़ी से निशाना लगाया (शिकार के दिनों में यह निशाना मेरे लिए बहुत कारगर साबित हुआ था)। एक पल बाद, मैंने एक दहाड़ सुनी और तेंदुआ कॉफ़ी की झाड़ियों से टकराता हुआ चला गया। मुझे पता था कि गोली उसे लग गई है, हालाँकि गोली अपने निशाने से चूक गई थी। मैंने ऐसा पहले भी किया था, इसलिए मैंने सुबह तक इंतज़ार करने का फैसला किया, क्योंकि अंधेरे में घायल तेंदुआ का पीछा करना आत्महत्या के बराबर है, और वह भी दर्दनाक आत्महत्या। यह देखते हुए कि मैंने उसे काफी

करीब से गोली मारी थी, इस बात की अच्छी संभावना थी कि वह अगली सुबह तक मर चुका होगा। या गोली ने उसे इतना नुकसान पहुँचाया होगा कि बहुत ज़्यादा खून बह रहा होगा और वह मुझ पर हमला करने के लिए बहुत कमज़ोर हो गया होगा। हालांकि, मुझे कुछ अपवादों का भी पता था, जैसे रामनगरम में एक घटना, जब एक पैंथर जिसका निचला जबड़ा उड़ गया था, पूरी ताकत से मुझ पर झपटा और लगभग द्वंद्वयुद्ध में जीत ही गया था। बंगले की ओर लौटते समय, मैंने कुलियों को कुछ बुदबुदाते हुए सुना और मैं उनके पास जाकर उन्हें पूरी घटना का ब्योरा दिया। मैंने उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए कि मेरे आदेश तक कोई भी उस स्थान के पास न जाए। मैंने ह्यूगी को बताया कि मैं भोर में कुप्पा, जो एक माहिर शिकारी है, को लेकर जाऊंगा और काम पूरा करूंगा। इतना शिकार करने के बावजूद, ह्यूगी का...
मेरी अगले दिन की योजना सुनकर उसकी आँखों में चमक आ गई। माका अब नहीं रही, लेकिन मुझे पूरा भरोसा था कि कुप्पा अपने पूर्ववर्ती जितना ही कुशल था। मेरी रात बेचैनी से गुज़री, मैं करवटें बदलता रहा, जैसा कि सभी शिकारी तब करते हैं जब उन्हें किसी घायल जानवर का पीछा करके उसे मार गिराना होता है। मैंने अभी तक किसी ऐसे ईमानदार शिकारी से मुलाकात नहीं की है जो यह कह सके कि घायल तेंदुआ या बाघ का पीछा करते समय वह घबराता नहीं है, यह एक ऐसा काम है जिसे किसी भी युवा शिकारी को हल्के में नहीं लेना चाहिए। घनी झाड़ियों में तेंदुओं का पीछा करते समय (जो केवल अनुभवी शिकारियों को ही करना चाहिए) मैं दोनों बैरल में एसजी वाली 12-गेज शॉटगन रखने की सलाह देता हूँ। साथ ही, घायल जानवर दूर से दिखाई देने पर एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को विश्वसनीय राइफल के साथ आपके पीछे चलना चाहिए। भोर होते ही मेरे वफादार कुप्पा ने मुझे जगा दिया। मैंने अपना गोला-बारूद जाँचा, बंदूकें भरीं और एहतियात के तौर पर अतिरिक्त गोला-बारूद भी ले लिया। अंत में, मैंने एक छोटी सी प्रार्थना की। ह्यूगी की शुभकामनाओं के साथ जब मैं बंगले से निकला तो आसमान से अंधेरा छंटने लगा था। हमें जल्द ही खून का एक निशान मिला, जो पहले अर्धवृत्ताकार था। निशान का पीछा करना आसान नहीं था क्योंकि कॉफी की झाड़ियाँ छाती तक ऊँची थीं और जब तक हम चारों पैरों पर न होते, पैंथर को देखना असंभव था। इसलिए हम दोनों घुटनों के बल बैठ गए और बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़े, यह सुनिश्चित करते हुए कि हम बिल्कुल चुप रहें। सूरज की पहली किरणें जमे हुए खून के छोटे-छोटे धब्बों को उजागर कर रही थीं और मैंने अनुमान

déjà vu

आदमियों को कुप्पा को उठाने के लिए बुलाया। लेकिन जब हम वहाँ पहुँचे तो हमें एहसास हुआ कि बहुत देर हो चुकी थी। वह मर चुका था, उसकी आँखें अभी भी खुली थीं, और वह अपने दुश्मन को देख रहा था जो कुछ ही गज की दूरी पर पड़ा था। मेरी आँखों में आँसू आ गए क्योंकि मैं कुप्पा से बहुत प्यार करता था। वह कितना छोटा था! मैंने उसकी मौत के लिए खुद को दोषी माना, लेकिन मुझे पता था कि कुप्पा मुझे इसके लिए दोषी नहीं ठहराएगा, क्योंकि वह जहाँ भी होगा, उसे पता होगा कि मैंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की। मैंने उसकी आँखें बंद कीं और उससे वादा किया कि मैं उससे फिर मिलूंगा और हमारे सभी शिकारी अनुभवों के बारे में, खासकर इस दिन के बारे में बात करूंगा। उस बहादुर छोटे पैंथर के साथ हुई घटना, जो संयोग से केवल 5 फीट 8 इंच का था, ने मुझे हमेशा के लिए बदल दिया।

अध्याय सात

मेरी पसंदीदा जगहें – भाग 2

भारत के पूर्वी और पश्चिमी तटों पर, जिन्हें क्रमशः कोरामंडल और मालाबार तट भी कहा जाता है, तटरेखा के समानांतर पर्वतों की एक श्रृंखला फैली हुई है। इन्हें क्रमशः पूर्वी और पश्चिमी घाट कहा जाता है और बेंगलुरु के अधिकांश लोगों के लिए, पश्चिमी घाट में स्थित नीलगिरि एक पसंदीदा पर्यटन स्थल रहा है। हरे-भरे नीलगिरि को एक पठार के रूप में देखा जा सकता है, जो उत्तर में मैसूर, उत्तर-पश्चिम, पश्चिम और दक्षिण में मालाबार और दक्षिण-पूर्व, पूर्व और उत्तर-पूर्व में कोयंबटूर जिले से घिरा हुआ है। उत्तरी भाग में, पायकारा नदी घने जंगलों वाली घाटियों से होकर बहती है और नीलगिरि की तलहटी के साथ-साथ मोयार नदी के रूप में आगे बढ़ती है, जिससे प्रसिद्ध मैसूर खाई का निर्माण होता है। अगर कोई बैंगलोर से मैसूर राजमार्ग होते हुए ऊटी की यात्रा करे, तो ऊटी जाने के दो रास्ते हैं: पहला गुडालूर कस्बे से होकर और दूसरा कलहट्टी से होकर। इनमें से फैसला मुदुमलाई जंगल के अंदर स्थित थेप्पेकाडु नामक स्थान पर लेना होता है। कलहट्टी वाला रास्ता मेरी यात्राओं में ज़्यादा इस्तेमाल होता था, क्योंकि मेरे पिताजी की इस सड़क पर ज़मीन थी और हमने साथ मिलकर उस इलाके में कई रोमांचक अनुभव किए थे। हम ऊटी के लिए बस लेते, पूरा दिन वहाँ बिताते और फिर घाट के नीचे बसे एक छोटे से गाँव मावनहल्ला में स्थित अपनी झोपड़ी तक पैदल जाते। ऊटी से आठ मील दूर, मावनहल्ला से पहले, सेगुर नामक स्थान पर कलहट्टी बंगला है।
जेफरी डेविस, जो सेना में एक ब्रिटिश सैनिक थे, 1930 के दशक में सेगुर में तैनात थे और उनका सामाजिक जीवन नीरस था, जबकि उनके सभी मित्र ऊटी में मौज-मस्ती करते थे। इसलिए, वह हर शुक्रवार को शराब पीने के लिए घोड़े पर सवार होकर ऊटी जाते और सप्ताहांत के बाद लौट आते। एक बार लौटते समय, बारिश शुरू हो गई और दृश्यता इतनी कम हो गई कि उन्होंने रात बिताने के लिए कलहट्टी बंगले में रुकने का फैसला किया। आधी रात को, उनकी नींद खुली और बंगले के बरामदे में कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। वह नशे में चूर थे और लगभग पूरे अंधेरे में, उन्हें लगा कि सामने के दरवाजे पर एक भालू है, जो उन दिनों में एक गलत अनुमान नहीं था। वह जल्दी से अपनी बंदूक लेने वापस भागे और निशाना साधकर

उस भालू पर गोलियां चला दीं, जिससे बंगले की दीवारों पर गोलियों की बौछार हो गई।
“ऐय्यो!” एक भयानक चीख सुनाई दी।
दुर्भाग्य से, वह भालू नहीं बल्कि बंगले का रखवाला था, जिसने कड़ाके की ठंड से बचने के लिए खुद को एक गहरे कंबल से ढक रखा था। डेविस का निशाना बेहद खराब था, और बंदूक से निकली गोली बेचारे चौकीदार को लगी, लेकिन उसकी तुरंत मौत नहीं हुई। उसकी चीखें डेविस को भालू जैसी लगीं, और वह तुरंत बंदूक में दोबारा गोली भरकर लगभग बिल्कुल करीब से उसे मार गिराने के लिए बेताब हो गया। अगली सुबह ही उसके कारनामों का पता चला और उस पर हत्या का आरोप लगाया गया, लेकिन कहानी यह है कि हत्या के लिए उसे जेल तो नहीं हुई, लेकिन उसका कोर्ट मार्शल कर दिया गया। दशकों बाद, मेरे पिताजी और मैं रात में सेगुर घाट रोड पर सिर्फ एक दो सेल वाली टॉर्च लेकर जाया करते थे। इस सड़क पर शायद ही कोई वाहन होता था और मैंने एक दर्जन से अधिक बार बाघों को यहाँ से गुजरते देखा है। हम ऐसी ही एक सैर पर थे, और अचानक इतनी तेज बारिश होने लगी कि हमारी टॉर्च बेकार साबित हुईं। हाथी से टकराने का जोखिम उठाने के बजाय, हम दौड़कर कलहट्टी बंगले तक पहुँचे, और चूंकि वह बंद था, हमने बारिश रुकने तक बरामदे में इंतजार करने का फैसला किया। हम पूरी तरह भीग चुके थे, और आग जलाने का कोई तरीका नहीं था, इसलिए हमने अपनी जैकेटें उतार दीं और हवा से दूर एक जगह पर लेट गए। हम दोनों काफी थके हुए थे और लगभग तुरंत सो गए। सुबह लगभग दो बजे, कड़ाके की ठंड हो गई, और एक चरमराहट की आवाज सुनकर मैं जाग गया। मैंने देखा कि मेरे पिताजी पहले से ही जाग चुके थे, और वे ध्यान से उस आवाज को सुनने की कोशिश कर रहे थे; वही आवाज थी, कुएं पर बिना ग्रीस वाली पुली की स्पष्ट आवाज। मेरे रोंगटे खड़े हो गए; मैं आसानी से डरता नहीं हूँ, लेकिन यह आवाज डरावनी थी। रात के उस समय किसी ग्रामीण के पानी भरने का कोई तरीका नहीं था, इसलिए एकमात्र दूसरा स्पष्टीकरण कुछ ऐसा लग रहा था जिस पर मुझे विश्वास नहीं था। दूसरी ओर, मेरे पिताजी को भूत से मिलने का विचार अच्छा लगा और उन्होंने चिल्लाकर पूछा कि कौन है वहाँ। अचानक शोर बंद हो गया। तो हमने टॉर्च ली और कुएँ की तरफ चल पड़े, लेकिन जब हम वहाँ पहुँचे तो वहाँ कोई नहीं था। रस्सी हिली हुई नहीं लग रही थी, इसलिए हमने सोचा कि शायद यह हमारा भ्रम था और हम वापस बंगले की तरफ चल दिए। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे, शोर फिर से शुरू हो गया और इस बार हम पूरी तरह जाग चुके थे। यह हमारा वहम तो

झोपड़ियों की कतार हुआ करती थी, अब उसे "क्वाइट कॉर्नर" कहा जाता है, जो ईंटों और कंक्रीट से बना है, और उसका पुराना आकर्षण गायब हो गया है। मैंने 1980 में मावनहल्ला में पिताजी की तीन एकड़ ज़मीन पाँच हज़ार रुपये में बेच दी। ऊटी वाली संपत्ति शायद पिताजी की आखिरी संपत्तियों में से एक थी जिसे मैंने बेचा था, और यह अस्सी के दशक के मध्य में लगभग आठ हज़ार रुपये में हुआ था। एक और जगह जहाँ पिताजी और मैं अक्सर जाया करते थे, वह सुकोथ एस्टेट नाम का एक बागान था, जो ऊटी रोड से थोड़ी दूर वाझैथोट्टम नामक बस्ती से पाँच मील दूर था। उस समय एस्टेट तक कोई सड़क नहीं थी, और हमें अपनी कार वाझैथोट्टम में छोड़कर बाकी का रास्ता पैदल चलना पड़ता था। वाझैथोट्टम और सुकोथ दोनों जागीरें डी'रोज़ा नाम के एक एंग्लो-इंडियन की थीं, जो अपनी पत्नी और दो बेटों के साथ पहाड़ी की चोटी पर रहते थे। वाझैथोट्टम में उनका एक टिन का शेड था, जिसे उन्होंने कोलेट नाम के एक अंग्रेज को किराए पर दिया हुआ था। अंग्रेज होने के बावजूद, कोलेट स्थानीय लोगों की तरह व्यवहार करने लगा था और किराया न देने समेत उनकी सारी अनैतिक आदतें अपना ली थीं। वह एक स्थानीय महिला के साथ रहता था और मासिनागुडी बाजार में हिरण का मांस और अन्य मांस बेचकर पैसे कमाता था। वह एक कुशल निशानेबाज था और अपनी राइफल, जिसे वह प्यार से "शॉर्टी बिल" कहता था, के साथ बेहद आरामदेह और सुखमय जीवन जीता था। एक सांभर के मांस से उसे बाजार में बीस रुपये मिल जाते थे, जिससे उसका कुछ समय का गुजारा चल जाता था। जब मैं छोटा लड़का था, तो मैं कोलेट और उसकी जीवनशैली से बहुत प्रभावित था। हालांकि उसने कभी किसी खतरनाक जानवर का शिकार नहीं किया, फिर भी मैं मन ही मन उसे अपना आदर्श मानता था क्योंकि उसके पास सभी सुख-सुविधाएं थीं और वह अपनी बंदूक से ही अपनी रोजी-रोटी कमाता था। उसने दावा किया कि उसके भाई को गुडालूर में एक पैंथर ने मार डाला था और इसीलिए वह कभी बड़े जानवरों का शिकार नहीं करता था, लेकिन सच्चाई यह थी कि वह लंगड़ाता था और बहुत शराब पीता था, और नशे की हालत में कोई भी खतरनाक जानवरों को गोली मारने की कोशिश नहीं कर सकता था। वास्तव में, वह इतना आलसी था कि वह अपने कारतूस भी खुद नहीं खरीदता था, बल्कि स्थानीय लोगों को सेगुर घाट भेजकर पेयोरे एंड संस से एक बार में दो कारतूस मंगवाता था। पिताजी का डी'रोजा से मिलने का शुरुआती कारण दोनों जागीरें खरीदना था, लेकिन सौदा कभी पूरा नहीं हुआ। हालांकि, पिताजी को एक अच्छा दोस्त मिल गया, और उससे भी महत्वपूर्ण बात, उनके नजरिए से, जंगल के बीचोंबीच बिना किराया

□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□'□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□ □□□□□ □□□□□, □□'□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□, □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□, □□'□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□, □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□, □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□

□□'□□□□□, □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□

1972 □□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□

शिकारी गाइड से एक शर्मनाक कहानी सुनने को मिलती थी कि उसका साथी निर्धारित नियमों के अनुसार शिकार करना नहीं जानता था, और यह कोई गर्व की बात नहीं थी। शिकारी गाइड वह व्यक्ति होता था जिसे लाइसेंस प्राप्त शिकार पर साथ ले जाया जाता था। उसे एक तय दर के अनुसार भुगतान करना पड़ता था, जबकि टिप आदि अलग से देनी होती थी। सभी गाइड बेहतरीन ट्रैकर होते थे, लेकिन उनका कौशल उस समय पी गई शराब की मात्रा पर निर्भर करता था। इसलिए, भले ही आपके पास गांव का सबसे अच्छा ट्रैकर हो, उसकी धीमी, लड़खड़ाती चाल और लेटे रहने का मतलब यह नहीं था कि वह ज़मीन पर जानवरों के पदचिह्नों को ध्यान से देख रहा है। कोनमारी इस इलाके के सबसे अच्छे शिकारियों में से एक था, और मैंने अपने दोस्त क्लाइव ग्रीनवुड के साथ उसे एक खास यात्रा पर ले जाने का फैसला किया। हम मेंडेकर के घर पर ठहरे हुए थे और पूर्वी आकाश में भोर होते ही ऊटी रोड पार कर चुके थे। हम लगभग दो फर्लांग चले और एक छोटी सी धारा पार की। जैसे ही हम बांस के झुंड वाले एक मोड़ पर मुड़े, हमें चित्तीदार हिरणों की चेतावनी भरी आवाजें सुनाई दीं। क्लाइव और मैंने अपने-अपने लाइसेंस पर एक-एक बाघ का शिकार किया था, इसलिए मुझे क्लाइव को यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि चेतावनी भरी आवाजों का क्या मतलब था - जंगली कुत्ते, एक पैंथर, या एक ऐसा बाघ जिसका शिकार नहीं किया जा सकता! अंधेरा था, लेकिन आगे कुछ दूरी तक देखने के लिए पर्याप्त रोशनी थी, और हम सावधानी से आगे बढ़े। एक जगह मैंने कोनमारी को रुकने का इशारा किया, जबकि क्लाइव और मैं लगभग कंधे से कंधा मिलाकर दबे पांव आगे बढ़े। हम झाड़ियों के एक छोटे से हिस्से से बाहर निकले, जो कुछ कांटेदार पेड़ों को छोड़कर खुला था, और हमें हिरणों का एक झुंड दिखाई दिया। वे सभी सतर्क खड़े थे, अपनी पूंछ ऊपर उठाए हुए, हमसे दूर देख रहे थे। लगभग पचास हिरण थे, और हवा उनकी रुक-रुक कर आने वाली "आओ" की आवाज़ों से गूंज रही थी। हम नीचे झुक गए और अपनी बंदूकें तैयार कर लीं। अगले ही पल अफरा-तफरी मच गई क्योंकि झुंड टूट पड़ा और सीधे हमारी ओर दौड़ पड़ा। इससे पहले भी कई जानवरों ने मेरा पीछा किया था, लेकिन हिरणों के झुंड ने नहीं! इससे पहले कि हम कुछ प्रतिक्रिया कर पाते, मैंने कारण देख लिया। एक बाघ! वह अपने अंतिम हमले से पहले ही पकड़ा गया था और अपने शिकार का पीछा कर रहा था, मानो हताशा में। हिरण सीधे हमारे पास से भाग गया, हमें पूरी तरह से अनदेखा करते हुए, लेकिन बाघ ने हमें देख लिया और पल भर में अपनी दौड़ने की गति बदलकर उछल-कूद करने लगा, मानो अभ्यास किया हो। अपने नाश्ते के

विपरीत, उसका हमारे पास से या हमारे ऊपर से भागने का कोई इरादा नहीं था। यह बाघ सुबह जल्दी उठने वाला नहीं था, खासकर अब जब उसका शिकार गायब हो चुका था, और ऐसा लग रहा था कि वह जल्दी से एक-दो निवाला लेने के लिए दृढ़ संकल्पित था। वह इतना करीब था कि मैं उसकी मूंछें कांपती देख सकता था। उसने खुद को ज़मीन पर गिरा लिया और उसकी पूंछ इधर-उधर हिलने लगी, और वह गुर्राया जैसे अंतिम प्रहार करने के लिए तैयार हो रहा हो। क्या ज़्यादा बुरा था? एक गुस्से में भरे बाघ के हमले का शिकार होना या अधिकारियों का सामना करके यह समझाना कि मैंने उसे गोली क्यों मारी? दोनों ही विकल्प सुखद नहीं लग रहे थे। मेरी नज़र के कोने से, मैंने क्लाइव को अपनी बंदूक उठाते देखा और यह बस कुछ ही पलों की बात थी कि कुछ बुरा होने वाला था। इसलिए, मैंने वही किया जो मेरे दिमाग में सबसे पहले आया। पागलों की तरह चीखते हुए मैं बाघ की ओर दौड़ा। हाथ-पैर हिलाते और सिर झटकते हुए, मैं सीधे उस दुबके हुए बाघ की ओर भागा। बेचारे जानवर ने शायद पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था; वह एक तरफ कूदा और गालियाँ बड़बड़ाते हुए भाग गया। जैसे-जैसे एड्रेनालाईन का असर कम होने लगा, मैं बेकाबू होकर हंसने लगा। मुझे लगता है कि यह बस इस बात की राहत थी कि मैं बच गया था, और जल्द ही क्लाइव भी मेरे साथ हंसने लगा। हम ज़मीन पर लोट-पोट होकर इतना हंस रहे थे कि हम कोनमारी के बारे में भूल ही गए। हमने उसकी ओर देखा, और वह वहीं पत्थर की तरह स्थिर खड़ा था। मैं उसके पास गया और उसकी बांह पर थपथपाया। लगभग एक विलंबित पुनर्मंचन की तरह, उसने वही किया जो मैंने किया था। वह चीखते हुए हमसे दूर भाग गया, “अय्याय्यायो दोराई, पैत्या पिदिचिरुक्कू! (अरे नहीं! दोराई पागल हो गया है!)” वह बार-बार यही चिल्लाता रहा, और मुझमें उसका पीछा करने की हिम्मत नहीं थी। इस तरह पूरे गाँव को पता चल गया कि मैं कितना पागल हूँ और कुछ समय के लिए कोई भी शिकारी गाइड मेरे साथ यात्रा पर नहीं जाना चाहता था। Ramanagaram
रामनगरम, जिसे एक ब्रिटिश अधिकारी के नाम पर क्लोज़पेट भी कहा जाता है, दशकों तक मेरे पसंदीदा शिकार स्थलों में से एक रहा है। डेविड लीन की फिल्म 'ए पैसेज टू इंडिया' के कुछ दृश्य यहाँ फिल्माए गए थे, लेकिन इसकी प्रसिद्धि इससे कहीं पहले, 1975 में आई फिल्म 'शोले' के माध्यम से मिली थी। यह एक बहुत छोटा शहर था और मुख्य रूप से रेशम और ग्रेनाइट उद्योग पर निर्भर था। यह क्षेत्र पहाड़ियों से घिरा हुआ है जो मगदी से शुरू होकर रामनगरम से

पड़ने वाला केंगेरी भी मेरी पसंदीदा जगहों में से एक था, और रामनगरम के विपरीत, यह काफी हरा-भरा और उपजाऊ था, जहाँ सैकड़ों एकड़ में नारियल के बागान थे। मेरा दोस्त सिडनी डी'सिल्वा और मैं अक्सर अपने गुलेल लेकर यहाँ आते थे और हाथियों के झुंड को छोड़कर, जो कभी-कभार हमें दिख जाते थे, यह इलाका हमें शहर की भागदौड़ से राहत देता था। मैंने गुलेल से शुरुआत की और धीरे-धीरे 12 बोर की बंदूक तक पहुँच गया। मैं चिड़ियों और तीतरों का शिकार करता था, जिन्हें हम पकाकर खाते थे। यह एक असली रोमांच जैसा था। हमारी उम्र के ज़्यादातर लड़कों की तरह "बैंग बैंग" करके काल्पनिक खाना पकाने और खाने का नाटक करने के बजाय, हमने इसे असल ज़िंदगी में अनुभव किया। हम हाथियों के झुंड से बचते थे, जलाशयों में तैरते और मछली पकड़ते थे, और एक बार तो केथोहाल्ली के बड़े बरगद के पेड़ की ओर जाते समय अपने शावकों की रक्षा कर रही एक मादा पैंथर ने हम पर हमला कर दिया था। पैंथर दो प्रकार के होते हैं — एक होता है वन पैंथर, जो घने जंगलों में रहने वाला एक बड़ा जानवर है, और दूसरा होता है ग्राम पैंथर, जो आमतौर पर रात में गांवों पर हमला करके किसी आवारा कुत्ते या बकरी को उठा ले जाता है। रामनगरम में ग्राम पैंथर काफी आम है और अक्सर गांवों में घुसकर बकरी के बाड़े में घुसकर किसी दुर्भाग्यपूर्ण शिकार को घसीटकर ले जाता है। वे ग्रामीणों को देखने के आदी होते हैं, इसलिए वे अपने बड़े चचेरे भाई की तरह इंसानों से डरते नहीं हैं। इन इलाकों में शिकार करते समय, हमारे पास चारे के लिए बकरियों या भेड़ों के अलावा कोई चारा नहीं होता था। सर्वोत्तम परिणाम के लिए, सबसे ज़रूरी बात यह सुनिश्चित करना था कि बकरी पैंथर का इंतज़ार करते हुए आपको न देख पाए। जब उसे लगेगा कि वह अकेली है, तभी वह मिमियाएगी और पैंथर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगी। मैं आमतौर पर उन्हें किसी गुफा या नाले के पास बांध देता था जहाँ मैंने पैंथर के पदचिह्न देखे होते थे। यहाँ पैंथर का शिकार करते हुए इतने सालों में, मैंने बहुत कम बार ही अपनी चारा बकरी खोई है। मुझे गलत मत समझिए, यह बकरी की चिंता नहीं थी, बल्कि यह तथ्य था कि 1960 के दशक के उत्तरार्ध में प्रत्येक बकरी की कीमत मुझे पंद्रह रुपये पड़ती थी। अगर वह मर जाती, तो मेरा सारा पैसा डूब जाता, लेकिन अगर मैं उसे बिना किसी खरोंच के वापस कर देता, तो मुझे दस रुपये वापस मिल जाते! कुछ मामलों में, मुझे जीवित चारे की ज़रूरत नहीं पड़ती थी, लेकिन जब पड़ती थी, तो चौडिया बिचौलिए का काम करता था। उसे जानवरों के पदचिह्नों का पीछा करने

या मचान बांधने का कोई कौशल नहीं था और उसकी भूमिका तब समाप्त हो जाती थी जब वह मुझे उस क्षेत्र में ले जाता था जहाँ उसने पैंथर देखा था। एक दिन, शायद जिज्ञासा या साहस के कारण, उसने मुझसे उसे साथ ले जाने के लिए कहा। मुझे ऐसे लोगों को साथ ले जाना बिल्कुल पसंद नहीं है जिनमें इस तरह की चीजों के लिए बिल्कुल भी सब्र नहीं होता। साथ में बिल्कुल स्थिर रहना पड़ता है, बीड़ी नहीं पीनी चाहिए, जोर से डकार नहीं लेनी चाहिए, या इससे भी बुरा, फसल कैसी होगी या पत्नी के खाने से कितनी ऊब हो गई है, इस बारे में बात नहीं करनी चाहिए। मैंने योग्यता के ऊंचे मापदंड तय किए हैं, और किसी के भी मेरे साथ यात्रा पर जाने से पहले उन पर आपसी सहमति बन जाती है; इसीलिए मेरी कई शिकार यात्राएं अकेले ही हुईं। लेकिन इस मामले में मेरी बात अनसुनी कर दी गई।
“सर, आप जाइए – मैं आता हूँ”, इसके बाद दर्जनों बार “कृपया-कृपया” की आवाज़ आई। इसलिए, बड़ी अनिच्छा से मैंने उन्हें अपने साथ ले जाने का फैसला किया, लेकिन तभी जब उन्होंने “डॉन एंडरसन की चुपचाप प्रतीक्षा करने की शपथ” ली। हालांकि ट्रैकिंग में उसकी कुशलता स्पष्ट रूप से कम थी, फिर भी उसे मिली जानकारी काफी सटीक थी और हमें नाले में मारी गई बकरी के आधे खाए हुए अवशेष आसानी से मिल गए। उसकी थोड़ी मदद से, मैंने बकरी से लगभग बीस गज दूर, पूर्वी ढलान पर सूखी टहनियों से एक छुपने की जगह बनाई। मचान बांधने के लिए आस-पास कोई पेड़ नहीं थे, इसलिए यही दूसरा सबसे अच्छा उपाय था। इसका मतलब था कि हम दोनों को छुपने की जगह में समा जाना था, जो कि बहुत असुविधाजनक था। उसे नियम तोड़ने पर गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देकर, हम शाम के लिए वहीं बैठ गए। मैंने नरम रेत में बने उसके पदचिह्नों से अंदाजा लगा लिया था कि पैंथर नाले के पास से गुजरकर दाहिनी ओर मुड़ गया था, और मेरे पास यह सोचने का कोई कारण नहीं था कि वह किसी और दिशा से आएगा, इसलिए मैंने उसके जाने के निशानों की ओर मुंह कर लिया। चौडिया ने दूसरी ओर मुंह किया, और यह तय किया गया कि अगर उसे कुछ दिखाई दे, तो वह बोलेगा नहीं, यहां तक कि फुसफुसाएगा भी नहीं, बल्कि बस मेरी बांह को हल्के से धक्का देगा। वह ग्रामीण भारत के सभी लोगों की तरह अपने घुटनों के बल बैठा इंतजार कर रहा था, जबकि मैं आराम से बैठा था। दुर्भाग्य से, उस रात चाँद मुश्किल से ही दिखाई दे रहा था, कभी-कभार ही शर्मिंदगी से झलक रहा था, बारिश की आशंका वाले घने बादलों के पीछे से झाँक रहा था। लगभग 9:30 बजे, मुझे आभास हुआ कि

पैंथर आ गया है। मेरी आशंका के विपरीत, वह उस दिशा से आया था जिस ओर चौडिया देख रहा था, और मैं उसे मुझे सचेत न करने के लिए दोष नहीं देता क्योंकि कुछ ही कदमों से आगे देखना असंभव था। दुर्भाग्य से, उसने हमें अपनी उपस्थिति का एहसास होने से बहुत पहले ही देख लिया था। दो ताक-झाँक करने वालों द्वारा रात का खाना खराब करने से बेहद नाराज़ होकर, उसने अपनी नाराज़गी को जितना हो सके ज़ोर से, छोटी-छोटी गुस्से भरी गुर्राहटों के साथ ज़ाहिर किया, ताकि हमें डरा कर भगा सके। वह पास नहीं आया और अपनी छिपी हुई जगह से ब्रह्मांड के प्रति अपना गुस्सा निकालता रहा। मैंने सोचा कि मैं चौडिया को उसे विचलित करने के लिए कहूँगा जबकि मैं दूसरी तरफ से चुपके से उसके पास पहुँच जाऊँगा। मैं सावधानी से मुड़ा और अपना हाथ उसके कंधे पर रखकर अपनी योजना समझाई और उसे डर से काँपते हुए महसूस किया। स्पष्ट रूप से यह वह नहीं था जिसके लिए उसने हामी भरी थी। उसे एहसास हो गया था कि जिस पैंथर को मैंने गोली मारी थी, उसके अगले दिन सुबह मरे हुए पैंथर को देखने और रात में गुस्से में भरे पैंथर को देखने में जितना फर्क था, उसने कभी सोचा भी नहीं था। फिर अचानक मुझे अमोनिया की तेज़ गंध आई, जैसे सूखी ज़मीन पर कोई तेज़ खाद डाली गई हो! चूंकि मैं उससे हाथ भर की दूरी पर था, इसलिए मैंने आगे क्या होगा यह देखने का इंतज़ार नहीं किया, मैंने उसके कान में धीरे से चेतावनी दी और फिर हवा में एक गोली चला दी। कहने की ज़रूरत नहीं है, मैं उस पैंथर को कभी नहीं मार पाया और मेरा साथी फिर कभी मेरे साथ किसी यात्रा पर नहीं गया। शिकार करते हुए मैंने जितने साल बिताए, उतने सालों में मैंने यह सीखा कि पैंथर्स को हल्की धूप में अपनी गुफाओं के बाहर धूप सेंकने की आदत होती है। मेरी आजमाई हुई रणनीति यही थी कि मैं उन्हें इन्हीं खास समयों पर ढूंढता, हमेशा उनकी गुफाओं के ऊपर चढ़कर उनका पीछा करता। मैंने यह भी देखा कि वे कभी ऊपर नहीं देखते थे, खासकर पीछे की ओर, और मैंने इस खासियत का फायदा उठाया। इन फायदों के बावजूद, कई बार ऐसा भी हुआ कि मैं अपना काम पूरा नहीं कर पाया और मुझे घायल पैंथर्स का पीछा करके उनकी पीड़ा का अंत करना पड़ा। रामनगरम में कोई कुशल आदिवासी नहीं हैं, इसलिए अक्सर मेरे पास कोई शिकारी गाइड नहीं होता था जो मेरा पीछा करने में मदद कर सके। यह एक बेहद मुश्किल काम है, क्योंकि न केवल जानवर का पीछा करना होता है, बल्कि अगर वह हमला करे तो उसे गोली मारने के लिए भी तैयार रहना होता है। बहुत धीरे-धीरे चलना पड़ता है, बिल्कुल चुप रहना पड़ता है, कभी-कभी घुटनों के बल रेंगना पड़ता

है, आस-पास के साथ-साथ दूर तक भी देखना पड़ता है, पैंथर के छिपने की हर जगह को खत्म करना पड़ता है, फिर भी उंगली ट्रिगर पर रखनी पड़ती है, और यह सिर्फ भगवान की कृपा थी कि मैं जीवित रहा। मुझे लगता है मैं मूर्ख था और मैंने जो जोखिम उठाए वे कई बार जानलेवा साबित हुए। कई बार तो मैं यह जानते हुए भी गुफाओं में घुस जाता था कि पैंथर अंदर है। तेज धूप से गुफा के घने अंधेरे में जाने में आंखों को एडजस्ट होने में समय लगता है, इसलिए मैं टॉर्च जला लेता था। कोई भी जानवर अपने घर में घुसपैठिए को बर्दाश्त नहीं करता और पैंथर भी इसका अपवाद नहीं हैं। कई बार ऐसा हुआ कि पैंथर अचानक बाहर निकला और मुझे तब तक उसकी आवाज नहीं सुनाई दी जब तक वह मेरे पास से गुजर नहीं गया। फिर भी, मैं बस यही कह सकता हूं कि किस्मत मुझ पर मेहरबान थी, क्योंकि अगर उसने मेरी गर्दन पर हमला कर दिया होता, तो मेरी जान उसी पल चली जाती। एक बार मैंने देखा कि एक पैंथर शाम को गुफा के बाहर बैठा है। मैंने पहले नर पैंथर पर गोली चलाई, क्योंकि वे ज्यादा आक्रामक होते हैं। मुझे नहीं पता था कि निशाना चूका या नहीं, लेकिन दोनों पैंथर गुफा में वापस भाग गए, और यह जानते हुए कि उनकी इंद्रियां सतर्क होंगी, मैंने उस दिन गुफा में जाने की हिम्मत नहीं की। अगली सुबह, मैं गुफा तक पहुँचा और अंदर झाँका। गुफा एकदम शांत थी, और मैं सावधानी से अंदर रेंगने लगा। मैं आधा झुका हुआ था क्योंकि गुफा ज़्यादा बड़ी नहीं थी। अचानक, मादा बाहर निकली, गुर्राती हुई और भागने की कोशिश करती हुई, लेकिन इससे पहले कि मैं अपनी बंदूक उठा पाता, वह गायब हो गई। मैं सहम गया, लेकिन अंदर और आगे बढ़ा। गुफा ज़्यादा लंबी भी नहीं थी और जहाँ वह खत्म होती थी, वहाँ नर जमा हुआ पड़ा था। चौंकाने वाली बात यह थी कि वह आधा खाया हुआ था। उसकी मादा को शायद 'बेड एंड ब्रेकफास्ट' का विचार कुछ ज़्यादा ही पसंद आ गया था!
रामनगरम में बड़ी संख्या में सुस्त भालू भी पाए जाते हैं, जो अक्सर ग्रामीणों को अपनी बकरियों या फसलों की देखभाल करते समय दिखाई देते हैं। उन्हें देखने का सबसे अच्छा समय सुबह जल्दी या देर शाम का होता है, जब मौसम सुहावना होता है, क्योंकि इन इलाकों में दिन असहनीय रूप से गर्म होते हैं! इसका मुख्य कारण बड़े छायादार पेड़ों की कमी और नदी या अन्य बड़े जल स्रोतों का न होना है, जिससे यह इलाका काफी शुष्क हो जाता है। मेरे अनुभव के अनुसार, घायल होने पर भालू में एड्रेनालिन का स्तर जंगल के किसी भी अन्य जानवर से अधिक होता है। वह आक्रामकता का साक्षात रूप होता है और एक बार तो

मुझे उसे मार गिराने के लिए चार गोलियां चलानी पड़ी थीं। इन इलाकों का एक और उल्लेखनीय जीव सियार है, लेकिन ग्रामीणों ने तेंदुओं द्वारा मारी गई बकरियों और मवेशियों के मांस में जहर मिलाकर उन्हें और गिद्धों को पूरी तरह से खत्म कर दिया है, जिससे खाद्य श्रृंखला के एक महत्वपूर्ण तत्व - सफाई करने वाले जानवरों - का पूरी तरह से सफाया हो गया है।

मुस्कुराओ और सह लो। रामनगरम

मेरे शिकार शुरू करने के बाद मेरे पिताजी केवल एक बार रामनगरम आए थे, और वह भी एक अजीब घटना के कारण। यह मेरे वहाँ के शुरुआती दिनों में से एक था। मैं शायद बीस साल का ही था, अनुभवहीन था, और मुझे लगता था कि मुझे किसी की मदद की ज़रूरत नहीं है। मैंने इस बात को नज़रअंदाज़ कर दिया कि पिताजी का शिकारी, नांजिया, मेरे साथ था और मैंने अकेले ही शिकार करने का फैसला किया। पहले दिन की सुबह मैंने एक चट्टानी टीले पर धूप सेंकते हुए एक तेंदुआ को देखा और उस जगह को ढूँढ़ने का तरीका याद कर लिया। शाम लगभग 4:30 बजे, मैंने चढ़ाई शुरू की। उमस भरी गर्मी में पसीना बहाते हुए, मुझे यकीन था कि उस समय कोई भी समझदार तेंदुआ बाहर नहीं होगा, लेकिन मैं एक ऊँची जगह पर चढ़कर वहाँ से अपने शिकार को देखने के लिए उत्सुक था। अचानक मेरी नज़र एक हल्की सी हलचल पर पड़ी। कुछ दूरी पर एक चट्टानी किनारे पर मेरा तेंदुआ था, और वह कहीं और देख रहा था। मैंने अपने मन को शांत होने का इंतज़ार किया और धीरे- धीरे साँस छोड़ते हुए गोली चलाई। वह गायब हो गया, लेकिन मुझे पता था कि

मेरा निशाना नहीं चूका था। मैं धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद, एक जगह पर, मैंने अपनी प्रगति देखने के लिए ऊपर देखा और एक अजीब नज़ारा देखा - पैंथर सीधे मेरी तरफ देख रहा था। वह अच्छी हालत में लग रहा था, लगभग जिज्ञासु सा, और मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने साँस लेने के लिए थोड़ा इंतज़ार किया, फिर निशाना साधा और गोली चला दी। मैंने उसे कलाबाज़ी खाते हुए गायब होते देखा; ऐसा लग रहा था जैसे मैंने पहले निशाना नहीं लगाया था। मैं उसे ढूंढने और यह पता लगाने के लिए दृढ़ था कि पहली बार क्या हुआ था। रात हो रही थी, और मैंने अपनी दो सेल वाली टॉर्च जला ली। मैं उस जगह के बहुत करीब टॉर्च की रोशनी डाल रहा था, तभी मुझे एक फुफकार सुनाई दी। सहज रूप से, मैंने अपनी टॉर्च उस आवाज़ की तरफ चमकाई जबकि मेरा बायाँ हाथ तैयार था। अविश्वसनीय, लेकिन पैंथर फिर से वहीं था, ज़्यादा दूर नहीं, उसकी आँखें डर और उलझन से मेरी तरफ देख रही थीं। इतनी दूरी से निशाना चूकने का कोई चांस ही नहीं था, और वो लगभग धैर्य से अपनी पीड़ा का अंत करने वाली आखिरी गोली का इंतज़ार कर रहा था। मेरा दिल नहीं माना, और ट्रिगर दबाते ही वो पैंथर मेरे सामने गिर पड़ा, ये उन गोलियों में से एक थी जिसमें मुझे कोई रोमांच नहीं था। थोड़ी देर आराम करने के बाद, मैंने कुछ टहनियाँ काटीं और उसे ढक दिया, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि सुबह गिद्ध उसे ढूँढ़ें। अंधेरे में मैं गाँव वापस पहुँचा और भूसे के ढेर के नीचे सो गया। मच्छरों ने मेरी नींद बार-बार भंग की, और यही एकमात्र कारण नहीं था कि मैं सूरज के उगने का इंतज़ार कर रहा था। मैंने गाँव के एक आदमी को पैंथर को नीचे उतारने में मदद करने के लिए मना लिया, और हम उस जगह पर गए। पैंथर वहाँ अकड़कर पड़ा था, और मैं हैरान था क्योंकि उसकी खाल पर मुझे सिर्फ़ एक ही जगह दिख रही थी जहाँ मेरी गोली ने उसे मारा था। मैंने एक आवाज़ सुनी; मेरा नया दोस्त उत्साह से किसी चीज़ की ओर इशारा कर रहा था। मैं वहाँ पहुँचा और अपनी हैरानी से लगभग तीस फीट दूर एक और मरा हुआ पैंथर देखा। जब मेरी नज़र चारों ओर घूमी तो मैंने एक कैक्टस की झाड़ी के नीचे कुछ पड़ा हुआ देखा और वहाँ एक और पैंथर था! मैंने असल में तीन गोलियों से तीन पैंथरों को मार गिराया था, जबकि मैं सोच रहा था कि यह सिर्फ एक ही है। करीब से देखने पर पता चला कि उनमें से एक मादा पैंथर थी जबकि बाकी दो नर थे। सब कुछ समझने के बाद मुझे समझ आया कि मादा पैंथर मद में रही होगी और दो नर पैंथर अपना प्रभाव दिखाने के लिए आए थे। उन सभी को वापस ले जाना मेरे लिए

असंभव था, इसलिए मैंने अपने पिताजी को संदेश भेजा कि वे जीप लेकर मुझे और मेरे बाकी सामान को लेने आएं। तीन खालें देखकर वे दंग रह गए और हालांकि उन्होंने तीन पैंथरों को मारने के लिए मुझे डांट लगाई, लेकिन उन्हें इस कहानी पर काफी गर्व था और वे अक्सर इसे अपने दोस्तों को सुनाते थे। साठ के दशक के मध्य तक पिताजी ने बंदूक रखना छोड़ दिया था और एक संरक्षणवादी बन गए थे। उन्हें मेरा यह क्रूर शौक बिल्कुल पसंद नहीं था और कुछ विषयों पर हमारी राय कभी एक जैसी नहीं होती थी, जिनमें से एक यह भी था।
संगम
हालांकि मैंने पचास और साठ के दशक में संगम का दौरा किया था, लेकिन वन्यजीव अधिनियम पारित होने के बाद जो उत्साह था, वैसा उत्साह पहले कभी नहीं था। ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं था कि मैंने अपने पिता से कभी शिकार न करने का वादा किया था, बल्कि इसलिए भी कि मैं चालीस वर्ष से अधिक उम्र का हो चुका था और शिकार के प्रति मेरा जुनून काफी कम हो गया था। फिर भी, जंगलों के प्रति मेरा अटूट प्रेम ऐसा था जिसे मैं छोड़ नहीं सकता था, और मजबूरीवश मछली पकड़ना मेरा नया शौक बन गया। इस प्रकार संगम मेरा सप्ताहांत का ठिकाना बन गया। संगम बैंगलोर से 62 मील और कनकपुरा (जिसे पहले कंकनहल्ली कहा जाता था) से 16 मील दूर है। यह दुख की बात है कि आज कनकपुरा के आसपास के खूबसूरत झाड़ीदार जंगल इन क्षेत्रों में ग्रेनाइट के अंधाधुंध खनन के कारण लगभग गायब हो चुके हैं। कनकपुरा के आगे संगम है, जो अर्कावती और विशाल कावेरी नदी का संगम स्थल है। इस स्थान पर पानी के किनारे एक खूबसूरत वन बंगला है, और मुझे याद है कि उस क्षेत्र में वह एकमात्र बड़ी इमारत थी। जब पिताजी और मैं वहाँ से निकलते, सूरज डूब चुका होता, और दूर बालकनी में चौकीदार द्वारा जलाए गए एक दीपक की हल्की रोशनी दिखाई देती, जो मीलों तक एकमात्र प्रकाश था। हालाँकि पहली मंज़िल पर दो कमरे थे, लेकिन बालकनी हमारी पसंदीदा जगह थी, और अगर बारिश न हो रही हो, तो हम खुले में ही सोते थे। वह बालकनी के किनारे एक कुर्सी पर बैठे, पाइप पीते, घने अंधेरे में टकटकी लगाए देखते रहते। झींगुरों और नदियों की कलकल की आवाज़ कभी-कभी नदी किनारे उगे विशाल पेड़ों में से किसी एक से मछली के हल्के से गिरने या मछली उल्लू की उदास आवाज़ से बाधित होती थी। चौकीदार के अलावा कोई और नहीं होता, जो अपना "कोटा" पीकर गहरी नींद में सो चुका होता था।

मेरी याद में, टिनी सेडन वह पहला व्यक्ति था जिससे मेरी मुलाक़ात संगम में अक्सर होने वाली थी। वह मेरे पिताजी की उम्र के करीब था और उसने चालीस के दशक के उत्तरार्ध में हमें इस जगह से परिचित कराया था। टिनी के पास एक मॉडल टी फोर्ड कार थी, और मेरे पिताजी के विपरीत, जिन्हें पैदल चलना पसंद था, टिनी को अगर मौका मिलता तो वह गाड़ी से ही मछली पकड़ने के लिए कांटा डालना पसंद करता था। गर्मियों में वह संगम में नदी के उथले हिस्सों से होते हुए दो मील आगे स्थित मेकेदातु तक मछली पकड़ने के लिए जाता था। साल के महीने के अनुसार, कोई पैदल जा सकता था, टिनी की तरह गाड़ी चला सकता था, या दूसरी तरफ जाने के लिए छोटी नाव (कोराकल) का सहारा ले सकता था और फिर मेकेदातु तक बाकी का रास्ता पैदल तय कर सकता था। अनुवादित रूप से इसका अर्थ है "बकरी की छलांग", यह एक ऐसी जगह है जहाँ कावेरी नदी भंवरों, गुफाओं और घाटियों के एक संकरे, भयावह मार्ग से होकर बहती है। बेहद खतरनाक, और बारिश के मौसम में लगभग दुर्गम, यह जगह कई अनजान पर्यटकों के लिए मौत का जाल बन जाती है जो यहाँ घूमने आते हैं। जब पानी का स्तर कम होता था, तो हम खाई के किनारे रेतीले नदी तल में सोते थे और मगरमच्छों को दूर रखने के लिए नियमित अंतराल पर तूफानी लैंप जलाकर रखते थे।
टिनी के ज़माने से लेकर अब तक, संगम रोड के किनारे जंगल साफ़ होते चले गए और खेत तेज़ी से फैल गए, डब्ल्यू.ए.एस.आई. जैसे संगठन स्थापित हुए और संगम एक पर्यटन स्थल बन गया, जहाँ लोग अपने परिवार और दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने आते थे। मैं नब्बे के दशक के बाद वहाँ कभी नहीं गया, और तब तक वह जगह दिन में शोरगुल करने वाले, उपद्रवी लोगों से भरी रहती थी, और रात में वहाँ तरह-तरह की गतिविधियों में लिप्त होने वाले संदिग्ध लोग आते थे। दुकानें खुल गईं, जिससे पर्यटकों द्वारा फैलाए गए कचरे में और इज़ाफ़ा हुआ, और संगम का चेहरा हमेशा के लिए बदल गया। यह सिर्फ़ पर्यटकों की वजह से नहीं था; उस जगह में एक और बदलाव आया, वह था अवैध शिकार में तेज़ी से वृद्धि। मेरे पिताजी और मैं पचास के दशक की शुरुआत से ही अवैध शिकारियों को देखते आ रहे थे, लेकिन साठ के दशक के मध्य से वे और भी ज़्यादा बेखौफ़ होने लगे, उनका लालच बेकाबू हो गया, और नदी में डायनामाइट से विस्फोट करना बेहद आम हो गया। हिरण या जंगली सूअर का शिकार करने के विपरीत, जहाँ केवल एक ही जानवर मारा जाता है, नदी में विस्फोट का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है और इससे होने वाला नुकसान भयावह होता है। विस्फोट के केंद्र के एक निश्चित दायरे में मौजूद

कोई भी जीवित प्राणी अचेत हो जाएगा या मर जाएगा और सतह पर आ जाएगा, जिसे मछुआरे पकड़ लेंगे। इनमें से अधिकांश इतने छोटे होते हैं कि उनका कोई मूल्य नहीं होता और उन्हें वापस नदी में फेंक दिया जाता है, जहाँ वे सड़ जाते हैं या बड़ी मछलियों और मगरमच्छों द्वारा खा लिए जाते हैं। पहले वे ऐसा सुबह या शाम के समय करते थे, लेकिन वे अधिक साहसी होते जा रहे थे और हमें दिन के समय भी उनकी आवाज़ें सुनाई देने लगीं; मछली पकड़ते समय पानी पर गूंजती हुई गड़गड़ाहट की आवाज़ें सुनाई देती थीं। इस तरह की अनियंत्रित गतिविधियों के कारण संगम नदी अपने वन्यजीवों को खो रही थी। लगभग 1973 में, एरिक बोएसिंगर, आर्थर ग्रीनवुड और मैंने फैसला किया कि हमें इस नरसंहार को रोकने के लिए कुछ करना होगा, हमें इन शिकारियों को रोकना ही होगा। मौजूदा सरकारी तंत्र को कोई परवाह नहीं थी, और हम जानते थे कि नदी की निगरानी और मछलियों के अंधाधुंध शिकार को रोकने के लिए संसाधन लगाने का हमारा अनुरोध हंसी का पात्र बनेगा। मुझे एक ऐसा ही वाकया याद है जब हमारी मुलाकात एक वरिष्ठ वन अधिकारी से हुई। नए कानून के बारे में उनकी समझ बहुत स्पष्ट थी - ज़मीनी जानवरों का शिकार करना अपराध था, लेकिन मछलियों के मामले में इतना हंगामा क्यों हो रहा है, यह उन्हें समझ नहीं आ रहा था। उनके अनुसार "वन्यजीव" का मतलब ज़मीन पर मौजूद हर चीज़ था; नदी में जो कुछ भी था, उस तक पहुँचने का साधन रखने वाला कोई भी उसका शिकार कर सकता था। जहाँ आर्थर और मैंने अपना उत्साह खो दिया, वहीं एरिक के डच जीन ने उन्हें इस काम में लगे रहने का हौसला दिया, और उन्होंने एक उल्लेखनीय पहल की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह न केवल मछली पकड़ने के शौकीन थे, बल्कि उनमें यह दूरदर्शिता भी थी कि अगर हालात ऐसे ही चलते रहे तो क्या होगा। उन्हें पता था कि उन्हें दक्षिण भारत में महसीर मछली के अंतिम गढ़ संगम की रक्षा करनी है और मायराडा समूह की मदद से उन्होंने 1976 में डब्ल्यू.ए.एस.आई. (दक्षिण भारत वन्यजीव संघ) की स्थापना में सहयोग दिया। उन्होंने सरकार से 28 किलोमीटर का एक क्षेत्र पट्टे पर लिया और इस क्षेत्र में अवैध शिकार को रोकने के लिए कुछ पहरेदारों को नियुक्त करके संरक्षण परियोजना शुरू की। उनके दिशानिर्देशों में कहा गया था कि मछली पकड़ना केवल अनुमति से, केवल सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच, केवल मछली पकड़ने की छड़ी और रील से ही अनुमत था, और पकड़ी गई सभी मछलियों को छोड़ना अनिवार्य था। अपने तमाम प्रयासों के बावजूद, एरिक को वह पहचान कभी नहीं मिली जिसके वे हकदार थे, और

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि संगम के अधिकांश मछुआरे यह भी नहीं जानते कि ऐसा कोई व्यक्ति कभी अस्तित्व में था। डब्ल्यू.ए.एस.आई. को अंततः जंगल लॉजेस एंड रिसॉर्ट्स ने अपने अधीन ले लिया और उन्होंने डोड्डामककली, चिक्कमकल्ली, भीमेश्वरी और गलिबोर जैसे कुछ पूर्व मछली पकड़ने के शिविर स्थलों पर रिसॉर्ट स्थापित किए। आज, डब्ल्यू.ए.एस.आई. का पूरे कावेरी क्षेत्र पर नियंत्रण नहीं है, बल्कि यह केवल शिवसमुद्रम क्षेत्र तक ही सीमित है। मुसलमानों द्वारा बस्ती और वहां रहने वाले स्थानीय हिंदुओं द्वारा डोड्डी कहे जाने वाला संगम कोई गुप्त स्थान नहीं था। वास्तव में, चालीस और पचास के दशक में भी मैसूर के महाराजा इसका व्यापक रूप से उपयोग करते थे, जिन्हें मछली पकड़ने और शिकार करने का बहुत शौक था। शाही दल नदी किनारे डेरा डालते थे और विशेष रूप से आमंत्रित मेहमानों के साथ कई हफ्तों तक वहीं रहते थे। मुझे नहीं लगता कि वे कोई गंभीर शिकार करते थे; हो सकता है उन्होंने जंगली सूअर या कभी-कभार तेंदुआ मारा हो, लेकिन मछली पकड़ना ही शिविर का मुख्य कारण था। संगम काफी हद तक बैंगलोर के लोगों या हैदराबाद राज्य के नवाबों और अन्य राजघरानों तक ही सीमित था। पॉल बूट नामक एक अंग्रेज के प्रयासों के बाद इसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली। वह मछली पकड़ने के शौकीन थे और शिवसमुद्रम में रहने वाले कुछ दोस्तों के माध्यम से उन्हें इस स्थान का पता चला। संगम की यात्रा के बाद, वे यूरोप के भ्रमण पर निकल पड़े और रहस्यमय भारत के घने जंगलों में नदी के किनारे मछली पकड़ने वालों के लिए एल डोराडो (मछली पकड़ने की सबसे बेहतरीन जगह) की कहानियाँ गढ़ने लगे। लोगों के बीच चर्चा के माध्यम से, चुनिंदा मछुआरे धीरे-धीरे भारत आने लगे, जिनमें युवा जेरेमी वेड भी शामिल थे, जो वर्षों बाद टीवी पर एक सनसनी बन गए। बूटे को तब बड़ा मौका मिला जब वे स्वीडन गए और एबी उरफैब्रिकेन या एबीयू एंगलिंग कंपनी को 1978 में भारत आने के लिए मना लिया। एबीयू की टीम ने वहाँ लगभग दो महीने बिताए और अपने वाटरप्रूफ टेंट में डेरा डाला, केवल बुनियादी ज़रूरतों के साथ गुज़ारा किया, लेकिन वे अपने काम में माहिर थे। उन्होंने ही मछलियों की खाने की आदतों को समझा और स्थानीय लोगों को महसीर जैसी तली में रहने वाली मछलियों को पकड़ने के बेहतर तरीके सिखाए। तब तक लोग छोटे केकड़ों और टिड्लर्स का इस्तेमाल चारे के रूप में करते थे, लेकिन एबीयू की टीम ने महसूस किया कि रागी ज़्यादा कारगर है। उस समय रागी बीस पैसे प्रति किलोग्राम थी और आसानी से उपलब्ध थी,

इसलिए जल्द ही यह संगम आने वाले सभी मछुआरों के लिए पसंदीदा चारा बन गई। इसी दौरान, एबीयू की टीम बोएसिंगर से मिली और वे उनसे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उनके लिए एक रॉड बनवाई और उन्हें पहला "कावेरी पैनासोनिक बूम" भेजा, जो एक खूबसूरत चीज थी जिसे एरिक ने संजोकर रखा और अपनी जान से भी ज्यादा उसकी रक्षा करते थे।

यह बिल्कुल अलग मामला है। एरिक बोएसिंगर, संगम से।

संगम दक्षिण भारत में महसीर मछली पकड़ने के लिए एक प्रसिद्ध स्थान बन गया था, और यहाँ आमतौर पर पाई जाने वाली महसीर की प्रजातियाँ थीं: सुनहरी महसीर, चांदी की महसीर, काली महसीर और विशाल कूबड़ वाली (जिसे नारंगी पंखों वाली महसीर भी कहा जाता है)। महसीर कार्प परिवार से संबंधित है और पूरे भारत में अंग्रेजों के लिए एक पसंदीदा शिकार थी, जो उनके अपने देश में पकड़ी जाने वाली ट्राउट मछली का एक बेहतर विकल्प थी। हालांकि, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कावेरी नदी में लाई गई नीली पंखों वाली महसीर ने देशी नारंगी पंखों वाली कूबड़ वाली महसीर को लगभग विलुप्त होने की कगार पर पहुंचा दिया है। इन पसंदीदा शिकार मछलियों के अलावा, यहाँ मिनो, बार्ब्स और अन्य कार्प मछलियाँ भी पाई जाती थीं, जैसे ग्रास कार्प, कॉमन कार्प, कर्नाटक कार्प, रोहू, कैटला, मुर्रेल, मुलेट, ईल और तिलापिया। मछली पकड़ने

रूप में, मैं यह देखकर दंग रह गया कि वे छोटे जीव बिना किसी की नजर में आए हमारे शिविर के इतने करीब कैसे चुपके से आ गए और अपना काम अंजाम दे दिया। कैम्पिंग करते समय, खासकर संगम जैसी जगह पर, मेरा एक सबसे अहम नियम यह था कि बिस्तर बिछाने के लिए जंगल की ज़मीन से गिरी हुई पत्तियों को कभी भी झाड़कर इस्तेमाल न किया जाए। शहर के ज़्यादातर लोगों के लिए गंदगी और कीड़े-मकोड़े हटाना एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है, लेकिन इसके अक्सर भयानक परिणाम हो सकते हैं और मैंने यह बात बहुत मुश्किल से सीखी है। बिच्छू जैसे कीड़े-मकोड़े जंगल की ज़मीन पर, सूखी और सड़ती हुई पत्तियों के बीच घोंसला बनाते हैं और मधुमक्खियों की तरह ही, वे किसी पर भी हमला कर देते हैं जिसे वे अपने घर के लिए खतरा समझते हैं। वे कैम्प में मौजूद किसी रोशनी के स्रोत, जैसे कि पेट्रोमैक्स, की ओर आकर्षित होते हैं और हटाई गई पत्तियों के ढेर से दर्जनों की संख्या में निकलकर कैम्प में घुस जाते हैं, अपने रंग के कारण लगभग अदृश्य रहते हैं। सबसे अच्छा उपाय यही है कि पत्तियों को वैसे ही रहने दिया जाए, इससे सुरक्षा लगभग सुनिश्चित हो जाती है। इसी तरह, मधुमक्खियों के मामले में, जब वे पास आती हैं तो उन्हें भगाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, और ऐसा करना ठीक है, बशर्ते कि आप उन्हें घायल या मार न दें। आमतौर पर, वे केवल टोही अभियान पर निकले सैनिक होते हैं, जो छत्ते के लिए किसी भी खतरे की जाँच कर रहे होते हैं। यदि आप उनमें से किसी एक को कुचल देते हैं, तो वह हवा में फेरोमोन छोड़ता है, और जल्द ही शिविर में मौजूद लोगों के पीछे मधुमक्खियों का झुंड लग जाता है।
महसीर मछली पकड़ना कुछ मायनों में जंगल में बाघ को देखने के बराबर है, लेकिन वो दिन चले गए जब कोई 100 पाउंड से बड़ी मछली का सपना देख सकता था। वासी में रिकॉर्ड 125 पाउंड है, और 104 पाउंड की हंपबैक व्हेल पकड़ने के रिकॉर्ड धारकों में मेरा नाम भी शामिल है। कहा जाता है कि 180 पाउंड तक की मछलियाँ पकड़ी गई हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह संभव है। वैसे भी, अगर आज किसी को बताया जाए कि कुछ दशक पहले 125 पाउंड की मछली पकड़ी गई थी, तो वे भी इस पर विश्वास नहीं करेंगे। हालांकि, शिकार की तरह, मैं बेहद भाग्यशाली रहा हूँ। वास्तव में, थोड़ा घमंड भरा लग सकता है, लेकिन मैं उन बहुत से लोगों के लिए भी बेहद भाग्यशाली रहा हूँ जो मेरे साथ मछली पकड़ने गए हैं, खासकर संगम में।

OUR
YEAR
1989-DON ANDERSON- 90-LBS
(RECORD CATCH-I)
1990-S.C.BURMAN-95 Lbs
1992-LT COL C.N.CARIAPA 90-LBS
(RECORD CATCH -I)
BIGGEST CATCH BY INDIAN ANGLER
1995 ARUL DHAERYAM-73 LBS
1996-SHIVADARSHAN BALSE-98 LBS
(RECORD CATCH-I)

[illegible].[illegible].[illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ज़्यादा भीड़भाड़ वाला शिविर स्थल ओंटिगोंडु (एक चट्टान) था। इस जगह को पहचानना आसान था क्योंकि इसके तुरंत बाद नदी की धारा तेज़ हो जाती है और नदी खतरनाक होने लगती है। उस जगह पर मेरी किस्मत अच्छी होने के बावजूद, डॉन 1 की सबसे प्रसिद्ध घटना मछली पकड़ने से जुड़ी नहीं थी। मैंने पहले जिन वैन इंगेंस का ज़िक्र किया था, उनमें से एक संगम में अक्सर आते-जाते थे, और एक बार वे वहाँ सिर्फ़ अपने चोकरा (जानवर के शव को संरक्षित करने वाला) के साथ थे। मछली पकड़ने के एक बेहद संतोषजनक दिन के बाद, वे अपने तंबू में जल्दी सो गए क्योंकि वे भोर होने से पहले उठकर तैयार होना चाहते थे। अच्छी नींद के बाद, वे सूरज उगने से पहले ही उठ गए, लेकिन शिविर से बाहर निकलते समय उन्होंने लालटेन लेना ज़रूरी नहीं समझा। उनका चोकरा खाना तैयार कर रहा था और कुछ दूरी पर था, और जैसे ही वैन इंगेंस अपना काम करने के लिए झाड़ियों में गए, उनका सामना एक बेहद गुस्सैल हाथी से हुआ जिसने बिना किसी चेतावनी के उन पर हमला कर दिया। जानवर अचानक अंधेरे से निकला, और उसके भारी कदमों की आहट सुनकर टैक्सिडर्मिस्ट (जानवरों के शवों को संरक्षित करने वाला) पलक झपकते ही भाग गया। उन्होंने मदद के लिए चिल्लाते हुए अपने शिविर में वापस जाने की कोशिश की, और ऐसा लगा कि इससे हाथी और भी ज़्यादा क्रोधित हो गया क्योंकि उसने ज़ोर से चिंघाड़ा और उनका पीछा करना जारी रखा। उसका साथी अचानक मौके पर पहुंचा और चिल्लाकर हाथी का ध्यान भटकाने की कोशिश की, लेकिन हाथी बहुत ही दृढ़ निश्चयी था और भागते हुए आदमी को पकड़ लिया। सूंड से एक जोरदार प्रहार ही वह कर पाया, शायद उसका साहस या रुचि खत्म हो गई थी, लेकिन इतना प्रहार उस कमजोर इंसान को एक तरफ फेंकने के लिए काफी था। वैन इंगन की कुछ पसलियां टूट गईं, लेकिन चोट गंभीर नहीं थी। अगर हाथी और नुकसान पहुंचाना चाहता तो पहुंचा सकता था, लेकिन वह जंगल में गायब हो गया।
संगम में हाथी अक्सर आते-जाते रहते थे और हालांकि उन्हें गुस्सैल कहना अतिशयोक्ति होगी, वे हमेशा जिज्ञासु और काफी हद तक निडर होते थे, जिससे वहां रहने वाले कई लोगों को काफी असुविधा होती थी। गर्मियों में यह इलाका बेहद गर्म हो जाता है और अर्कावती नदी कावेरी में मिलते ही धीरे-धीरे अपनी जलधारा और गति खो देती है। एक बार मैं अपने दोस्तों के साथ वहां गया था, लेकिन वे कैंप में थे जबकि मैं अकेले मछली पकड़ने चला गया था। काफी रात हो चुकी थी और मैं थका हुआ कैंप की ओर लौट रहा था तभी मुझे नदी के दूसरी ओर किसी के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे वह व्यक्ति मुसीबत में

है, इसलिए मैं दौड़कर अपने रास्ते से हटकर नदी के किनारे की ओर चल पड़ा। एक अद्भुत दृश्य ने मेरा स्वागत किया। एक विशाल नर हाथी अर्कावती नदी के किनारे एक किसान द्वारा उगाए गए तरबूज के खेत में घुस आया था और तरबूजों की दावत शुरू करने ही वाला था। बस एक ही रुकावट थी, वो छोटा-सा किसान जो सिर्फ़ एक लंगोटी पहने उस हाथी और उसके भोजन के बीच खड़ा था। हाथी एक कदम आगे बढ़ाता, वो आदमी चिल्लाता और ताली बजाता, जिस पर हाथी अपना पैर पीछे खींच लेता। फिर वो दूसरी दिशा में जाने की कोशिश करता, लेकिन वही समस्या फिर सामने आ जाती। मैं जानता था कि इसका एक ही तार्किक परिणाम होगा - देर-सवेर, हाथी का लालच इंसान के डर पर हावी हो जाएगा, और अंधेरे में एक और बहादुर अपनी आजीविका बचाने की कोशिश में अपनी जान गंवा देगा। मैंने खुद को कोसते हुए कहा कि मैंने अपनी बंदूक क्यों नहीं निकाली; मैं हाथी को गोली नहीं मारना चाहता था, बस उसे डराकर भगाना चाहता था। उस छोटे किसान को पता था कि उसे कुछ जल्दी और असरदार करना होगा। इसके बाद जो हुआ वो हताशा और सूझबूझ का मिला-जुला रूप था। किसान ने जलती हुई आग के अंगारों से एक जलती हुई डाल उठाई और चिल्लाते हुए हाथी पर झपटा। अगर हाथी चौंक गया था, तो बात यहीं खत्म नहीं हुई। वो आदमी और करीब आता गया, और हाथी और मैं दोनों उसके रुकने का इंतज़ार कर रहे थे। फिर, उस आदमी ने अपने हाथों को ज़ोर से झटकते हुए शाखा को हाथी के ऊपर फेंक दिया। जलती हुई शाखा के झटके और दर्द से हाथी चिंघाड़ उठा और भाग गया। दुर्भाग्य से, शाखा किसी तरह उसके विशाल कान के बीच फंस गई, और जंगल में भागते समय उसे बहुत तकलीफ हुई होगी। सामान्य परिस्थितियों में भागता हुआ हाथी झाड़ियों में गायब हो जाता है, लेकिन इस मामले में मैं जलती हुई लकड़ी से गिरते अंगारों से रोशन रास्ते को देख सका, जो वाकई एक अद्भुत दृश्य था। मुझे हाथी पर दया आई, लेकिन मुझे उस किसान को सलाम करना ही पड़ा जिसका साहसी कार्य इतनी आसानी से भयानक रूप ले सकता था। उन दिनों हाथी लालटेन से डरते या आशंकित रहते थे, और इसी वजह से हम अक्सर सुरक्षित रहते थे। पचास के दशक के उत्तरार्ध में एक अजीब घटना घटी, जब मैं अपने दोस्तों जीन, बंटी और अपने साथी थंगावेलु के साथ गलिबोर में मछली पकड़ने गया था। उस समय हाथियों से खुद को बचाने के लिए, मैं पेड़ों की लचीली शाखाओं को तोड़कर उन पर केरोसिन से भरी लालटेनें बांध देता था और उन्हें इस तरह छोड़ देता था कि लालटेन ऊंचाई से जलती हुई चारों दिशाओं में भरपूर रोशनी फैलाए। अगले दिन शाखाओं के ऊपर बंधी रस्सियों को खोलकर

लालटेनें वापस ले ली जाती थीं। मैं इन लालटेनों को अपने मुख्य तंबुओं और पलंगों से सौ गज की दूरी पर चारों दिशाओं में रख देता था। केवल नर हाथी ही शिविर के पास आने की हिम्मत करते थे, और ये रोशनी इसलिए रखी जाती थी ताकि वे ज्यादा उत्सुक न हों। मेरे दोस्त खूब शराब पीते थे और आधी रात तक हम तीनों ने मिलकर दो बोतलें खत्म कर दी थीं और खुद को घसीटते हुए कुर्सियों से अपने पलंगों तक पहुंचे थे। हालांकि गर्मी का मौसम था, लेकिन जंगलों में हल्की ठंड थी, और सोते समय हमने एक छोटी सी आग जला रखी थी। मेरी नींद बहुत हल्की है, और लगभग एक बजे मैं अचानक जाग गया। मुझे कोई शक नहीं था, मुझे पत्थर फेंके जाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, जो गिरने पर ज़ोर से धड़ाम की आवाज़ कर रहे थे। यह इतना अजीब था कि मैं लाख कोशिश करने पर भी नहीं सोच पा रहा था कि रात के उस समय ऐसा कौन कर रहा होगा। आवाज़ सुनकर मुझे लगा कि ये काफी बड़े पत्थर थे। मैंने अपनी टॉर्च निकाली और जूते पहन लिए। मेरे एक दोस्त के कभी-कभार खर्राटे लेने के अलावा, जंगल में सन्नाटा था। उस यात्रा पर मैं अपने साथ जो सबसे शक्तिशाली हथियार लाया था, वह मेरी मछली पकड़ने वाली छड़ी थी, और मुझे लगा कि इस स्थिति में यह ज़्यादा काम नहीं आएगी। मैं अभी भी अपने कैंप के पलंग पर बैठा था और टॉर्च उस दिशा में चमका रहा था जहाँ से आवाज़ आई थी, तभी मैंने कुछ झाड़ियों को हिलते हुए देखा और एक इमली के पेड़ के पीछे से एक हाथी निकला। वह लगभग वयस्क था और शायद इसी वजह से वह इतना उत्सुक था। उसने मेरी टॉर्च की रोशनी को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया और हमारी ओर बढ़ने लगा। कैंप की चारपाई पर लेटे हुए मैं उस हाथी को करीब आते देख सकता था। परछाइयों में वह विशालकाय लग रहा था, लेकिन मैं घबराया नहीं। मुझे थोड़ी हैरानी हुई क्योंकि पंद्रह फीट की दूरी पर हाथी हमें सूंघ सकता था, फिर भी वह भागा नहीं। मैंने जीवन भर यही माना था कि मेरी मृत्यु जंगलों में होगी और वह भी एक हाथी के पैरों तले, और अब यह सच होने वाला था। चूंकि हम सब वैसे भी मरने वाले थे, मैंने सोचा कि मुझे अपने दोस्तों को उनकी मृत्यु का कारण दिखाना चाहिए, इससे पहले कि वह वास्तव में हो, एक तरह से उनकी आखिरी इच्छा पूरी करने जैसा - बेशक उनकी अनुमति के बिना। मैं झुका और जमीन पर सो रहे जीन और बंटी को हल्का सा धक्का दिया। वे जल्दी से जाग गए; जंगलों में मेरे साथ समय बिताने के कारण वे बिना ज्यादा प्रयास किए जागने के लिए तैयार थे। हाथी उनकी ओर मुंह करके नहीं खड़ा था, लेकिन वे उसका आकार देख सकते थे। यह दृश्य वास्तव में सुकून देने वाला

नहीं था, क्योंकि वे दोनों डर से कांपने लगे। मुझे नहीं लगता कि वे पूरी तरह समझ पा रहे थे कि यह सपना था या हकीकत। सौभाग्य से, बैल जांच-पड़ताल से तंग आ चुका था और झाड़ियों में चला गया। तब तक थंगावेलु भी उठ चुका था और उसने जल्दी से आग में और केरोसिन डालकर इतनी बड़ी आग लगा दी कि उस रात कोई और आगंतुक न आ सके। जीन ने कहा कि इस घटना के कारण उसके पास शौच करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था, इसलिए वह झाड़ियों में चला गया। तभी एक ज़ोरदार चिंघाड़ सुनाई दी; हाथी जीन से दस फीट से ज़्यादा दूर नहीं रहा होगा! वह वापस भागा, और इस दौरान हमने दो नर हाथियों को अपनी-अपनी सूंडें फैलाए हमारी ओर दौड़ते हुए देखा। मैं पिछली रात सुनी गई आवाज़ का स्रोत जानने के लिए उत्सुक था, और सुबह मैंने खुद इसका पता लगाने की कोशिश की। यह अजीब था, लेकिन बैल पेड़ पर लटकी हुई लालटेन से परेशान था और उस चिड़चिड़ी चीज़ से छुटकारा पाने के लिए पत्थर फेंक रहा था।
संगम में मेरे साथ नियमित रूप से मछली पकड़ने जाने वाले पहले समूह में टिनी सेडन, बाबा कारियाप्पा और चिप्पी ब्रिग्स शामिल थे। मैंने टिनी से मछली पकड़ना सीखा और मैं जल्दी ही सीख गया। सभी नौसिखियों की तरह, मैंने शुरुआत में स्पिनिंग रील का इस्तेमाल किया। मैंने गलतियों से सीखते हुए काफी कुछ सीखा, और कई बड़ी मछलियाँ, खासकर महसीर, खोने के बाद, मैंने बेट कास्टिंग रील का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। मुझे लगा कि इससे मुझे अधिक लचीलापन और नियंत्रण मिलता है, खासकर फ्लिपिंग और पिचिंग करते समय - गहरे पानी में पाई जाने वाली बड़ी मछलियों को पकड़ने की कोशिश करते समय। मैंने संगम और उसके आसपास सौ से अधिक मछलियाँ पकड़ी होंगी, जिनका वजन पचास पाउंड या उससे अधिक था, जिनमें सबसे बड़ी मछली निश्चित रूप से वही 104 पाउंड की थी जिसका मैंने पहले जिक्र किया था। सभी स्वाभिमानी मछुआरों की तरह, मैं भी दावा करता हूँ कि मैंने इससे भी बड़ी मछलियों से मुकाबला किया है, बस उन्हें पकड़ नहीं पाया। मछली पकड़ने में दो अलग-अलग कौशल शामिल होते हैं। पहला है चारा संभालना, लाइन फेंकना और धैर्य, और समय के साथ इसे सीखा जा सकता है। दूसरा और ज़्यादा मुश्किल हिस्सा है "मछली को पकड़ना" या जब कांटे के अंत में मछली हो तो क्या करना है, और यही किसी के कौशल और सहनशक्ति की असली परीक्षा होती है। इन दोनों मामलों में, मैं जानता हूँ कि मैं एरिक जैसे अपने कई समकालीनों से बहुत पीछे हूँ, जिनकी प्रतिभा असाधारण थी।

निराशा ही हाथ लगती थी। हर दो महीने में वह मुझसे भी मिलने आता था और हम बैठकर बीते खूबसूरत पलों को याद करते थे।

मेरे बगल में बूढ़ा जलील खड़ा है

छोटा सुभान जैसे स्थानीय लोगों से हमें संगम में मछली पकड़ने वाले दिग्गजों के बारे में सुनने को मिलता था, और जॉन विल्सन को उस क्षेत्र का सबसे बेहतरीन मछुआरा माना जाता था। हालाँकि संगम में मछली पकड़ने के लिए वे उतने प्रसिद्ध नहीं थे, लेकिन हमारे साथ वहाँ मछली पकड़ने वाले सबसे मशहूर व्यक्ति जेरेमी वेड थे, जो अब एक बहुत लोकप्रिय टेलीविजन स्टार हैं। इसे शुरुआती किस्मत ही कहिए, लेकिन वेड ने उस गर्मी में कुछ बहुत बड़ी मछलियाँ पकड़ीं और उन्होंने पॉल बूट के साथ मिलकर 'समवेयर डाउन द क्रेज़ी रिवर' नामक पुस्तक लिखी।

पिछले कुछ वर्षों में, मैंने मछली पकड़ने की यात्राओं के लिए एक कार्यक्रम बना लिया था। मेरी राय में, सूर्योदय और सूर्यास्त का समय मछली पकड़ने के लिए सबसे अच्छा होता है, इसलिए हम दिन की योजना इसी तरह बनाते थे। हम सुबह बहुत जल्दी चाय पीकर निकल पड़ते थे। हम लगभग 10:00 बजे तक वापस आ जाते, नाश्ता करते और कुछ घंटे आराम करते। फिर दोपहर 1:00 बजे हम उन जगहों पर जाते जहाँ मुर्रेल मछली मिलती थी, जैसे कि मोसालुहल्ला के ऊपर एक जगह पर, जहाँ कई छोटे चट्टानी द्वीप थे। हम लगभग 10 किलोग्राम मुर्रेल मछली तलकर लाते, जिसे हम अपने रसोइए थंगावेलु द्वारा तैयार किए गए गरमागरम दोपहर के भोजन के साथ खाते थे। इसके बाद हम एक घंटे आराम करते, फिर चाय पीते और दोबारा निकल पड़ते, लगभग 7:30 बजे तक वापस आ जाते। अगले दिन भी यही दिनचर्या दोहराई जाती थी। थंगावेलु और अन्य रसोइये शरारती तत्वों और बंदरों से हमारे शिविरों की रक्षा भी करते थे, जो अक्सर हमारे शिविरों पर हमला करते थे।
हमें महसीर मछली पकड़ने के दौरान नियम बनाने के लिए W.A.S.I. की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि हम हमेशा उनका वज़न करने और फ़ोटो खींचने के बाद उन्हें वापस पानी में छोड़ देते थे। हमारी थालियों में आमतौर पर छोटी कार्प, मुर्रेल, तिलापिया और सभी तरह की छोटी मछलियाँ आती थीं। हर कैंपसाइट में मछली पकाने की अपनी-अपनी विधि होती थी। हम मछली के छिलके साफ़ करते, उसे काटकर उसके टुकड़े करते और उस पर प्याज़ और हरी मिर्च का पेस्ट लगाते। फिर इसे गीले अख़बार की मोटी परत में लपेटकर टहनियों के छोटे चबूतरे पर रख देते और नीचे छोटी सी आग जला देते। इस पर ध्यान से नज़र रखनी पड़ती थी क्योंकि अख़बार को बहुत ज़्यादा सूखने नहीं देना था। इसे दो-तीन बार पलटा जाता, फिर बाहर निकाला जाता और मछली पर हल्का सा तेल लगाया जाता। फिर, अख़बार के पैकेट को दोबारा गीला किया जाता और यही प्रक्रिया दोहराई जाती। मछली जल्दी पक जाती है और बाहर से हल्की तली हुई, बहुत ही स्वादिष्ट फिश बेक बनाई जा सकती थी। बेशक, यह केवल थोड़ी बड़ी मछलियों के साथ ही संभव था; छोटी मछलियों को पूरा तलकर पकाया जाता था और वे हमारी शराब के साथ स्वादिष्ट नाश्ते का काम करती थीं। कैटफ़िश तलने के लिए एक बढ़िया विकल्प है और मेरा दोस्त मुखर्जी उन्हें तलकर अपनी बनाई स्वादिष्ट करी में डालता था। मछली की फ्राई या करी हमारे साथ लाए गए कुछ खाने के साथ परोसी जाती थी। चावल और दाल बोलाइया पकाती थी और मैं अचार लाता था। हालाँकि मुझे पकड़ी

हुई मछलियाँ खाना पसंद था, कभी-कभी मैं भी खाने के लिए कुछ शिकार करता था। जंगली मुर्गे और स्पूरफाउल हमारे खाने में शामिल होते थे। मांस हम अपने जान-पहचान के ग्रामीणों में बाँट लेते थे और छोटा सुभान और बोलाइया के परिवारों को भी दे देते थे। हालाँकि थंगावेलु एक अच्छा रसोइया था, लेकिन तली हुई तीतर बनाने में वह उतना माहिर नहीं था, यह एक ऐसा व्यंजन था जिसे अक्सर मेरे आखिरी संगम समूह, जिसमें सुधीर, जिमी और रवि शामिल थे, पसंद करते थे। हालांकि हमने जंगल में जाकर उनका शिकार किया था, लेकिन कम समय में उन्हें लाना पड़ा, इसलिए हमें रसेल मार्केट के स्टॉक पर निर्भर रहना पड़ा, और सुधीर ने उन्हें पकाने का काम बहुत गंभीरता से लिया। तीतर को साफ करके, नमक डालकर कुछ देर प्रेशर कुकर में पकाया गया। फिर उसे निकालकर अमूल मक्खन में डुबोकर, प्याज और काली मिर्च के साथ धीमी आंच पर तला गया। चाहे किराने का सामान हो या कुछ और, हर चीज की योजना बनानी पड़ती थी और यह काम सिर्फ वही कर सकता था जिसकी नजर हर छोटी-छोटी बात पर रहती हो। हर चीज ग्राम और मिलीलीटर में लिखी होती थी और मैं उसका हिसाब रखता था। हर व्यक्ति ने कितना भुगतान किया, प्रति व्यक्ति लागत कितनी थी, सब कुछ मेरी किताब में दर्ज होता था और मुझे माचिस की डिब्बी की कीमत भी लिखने के लिए हमेशा ताने सुनने पड़ते थे। बेशक, सबसे मुश्किल काम तब होता था जब हम अपना कैंप समेटते थे। मैं अपने दोस्तों से सुभान और बाकी लोगों के लिए बचा हुआ सामान छोड़ने के बारे में बहस करता था। अगर मैं उन्हें मना लेता, तो बचे हुए सामान को सबके बीच बांटने का मुश्किल लेकिन जरूरी काम शुरू होता था। यह सबके लिए हंसी-मजाक का जरिया होता था, लेकिन मैं अपना काम बहुत गंभीरता से लेता था।

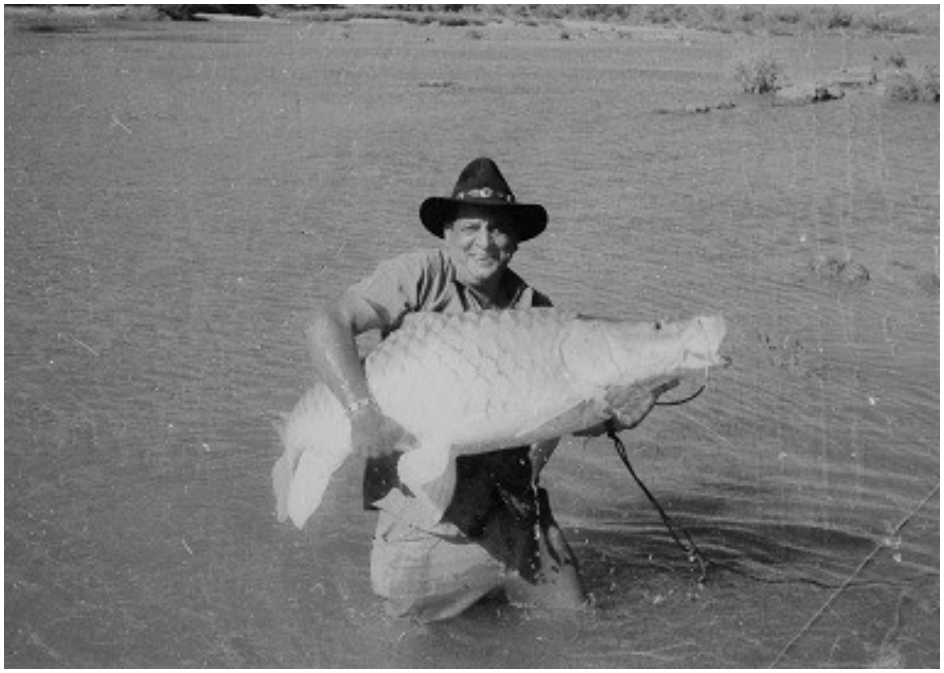

संगम में एक और सामान्य दिन

संगम में मछली पकड़ने का काम शुरू करने से पहले, हम उन जंगलों में शिकार के लिए जाया करते थे और वहाँ के बेहद शांत वातावरण का आनंद भी लेते थे। थंगावेलु खाना बनाने का ज़िम्मा संभालते थे और इन यात्राओं में सबसे ज़्यादा शराब पीने वाले भी वही होते थे, ये दोनों भूमिकाएँ एक-दूसरे के विपरीत थीं। पचास के दशक में, हम अपने पिताजी, सन्नी लियोनार्ड और कुछ अन्य लोगों के साथ संगम की यात्रा पर थे। हम शिविर में ठहर चुके थे और अपनी ड्रिंक्स का मज़ा ले रहे थे, तभी सन्नी को अपने जानलेवा करतब दिखाने का मन हुआ और उसने हमारे द्वारा जलाई गई अलाव के ऊपर से छलांग लगा दी। उनकी कलाबाज़ी सही थी, और जल्द ही थंगावेलु भी उनके साथ शामिल हो गए, जो ब्रांडी का अपना हिस्सा पीने के बाद खुद को सर्कस का कलाबाज़ समझ रहे थे। अगर हम किसी दुर्घटना की उम्मीद कर रहे थे, तो हमारी उम्मीद पूरी हुई। उन दोनों बेवकूफों ने अपनी छलांगों को इतनी सटीकता से लगाया था कि एक पल वे हवा में एक-दूसरे से टकरा गए और फिर नीचे जलते अंगारों पर गिर पड़े, जिससे वे बुरी तरह जल गए। हम सभी इस बात पर सहमत थे कि चोट लगने का यह शायद सबसे मूर्खतापूर्ण तरीका था, और इस कुख्यात घटना के सम्मान में, हमने "थंगावेलु जैसा मत करो" वाक्यांश गढ़ा ताकि भविष्य की यात्राओं में एक-दूसरे को चेतावनी दे सकें जब हमें लगे कि कोई मूर्खता की चरम सीमा को छूने वाला है।

संगम कई लोगों को आकर्षित करता था, लेकिन मैं वहाँ जिन सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों को लेकर गया, वे थे पूर्व सेना प्रमुख रॉड्रिक्स और उनकी पत्नी। यह ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद का समय था और रॉड्रिक्स खतरे में थे, इसलिए यात्रा के दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। उनका होटल एमजी रोड के पास ही था और उनके होटल से लेकर कैंप तक एक विशाल बटालियन तैनात थी। जब हम वहाँ पहुँचे, तो मैंने देखा कि कम से कम पचास कमांडो पहले से ही तैनात थे, जो पिछले दिन इलाके की रेकी करने और संगम के विभिन्न स्थानों पर चौकियाँ स्थापित करने के लिए आए थे। फिर शुरू हुआ शाही स्वागत - उनके लिए बेहतरीन रसोइये रखे गए थे, बारबेक्यू की व्यवस्था थी, और हमें सफेद दस्ताने पहने और महंगे बर्तनों का इस्तेमाल करने वाले एक वेटर ने खाना परोसा, जो स्पष्ट रूप से संगम में मेरे या किसी और के लिए असामान्य था। रॉड्रिक्स और उनकी पत्नी दोनों ही मछली पकड़ने के शौकीन थे, और पहले ही दिन उनकी पत्नी ने बीस पाउंड की महसीर मछली पकड़ी। सप्ताहांत में संगम में मछली पकड़ने के कई समूह होते थे, लेकिन हमें कभी भी दूसरों से कोई समस्या नहीं हुई और हम हमेशा एक-दूसरे के साथ शालीनता से पेश आते थे। हालांकि, एक घटना ऐसी हुई जिस पर मुझे बिल्कुल भी गर्व नहीं है, क्योंकि उसमें मेरा गिरोह शामिल था। हम सभी मोटरसाइकिलों से संगम गए थे और मोसालुहल्ला में रात भर रुके थे। हमने काफी शराब पी ली थी और लगभग तीन बज रहे थे जब हम सोने गए। मेरे कुछ नशे में धुत दोस्तों के विपरीत, मुझे मछली पकड़ने का शौक था, इसलिए मैं सुबह तड़के ही उठ गया। मैंने रसोइए को सुबह 4:00 बजे हमारे लिए उप्पितु बनाने को कहा और खाना तैयार होते ही हमें जगा देने के सख्त हिदायत के साथ वापस सो गया। कुछ मिनट बाद मुझे अंधेरे में थंगावेलु के इधर-उधर घूमने की आवाज सुनाई दी।
मैंने उस बदमाश को कोसते हुए कहा: “येन्ना अचु?” (क्या हुआ?)
“सार कथी इल्ला।” (सर, चाकू गायब है)
एक मिनट बाद मैंने सुना, "सार येन्नई इल्ला" (तेल गायब है)। जाहिरा तौर पर, जिस व्हिस्की की बोतल में तेल था, वह गायब थी। पहले तो मुझे लगा कि मेरे कुछ दोस्तों ने गलती से तेल पी लिया होगा, लेकिन फिर मैंने सोचा कि वे इतने नशे में नहीं थे।
मैंने चिढ़कर जवाब दिया, "सारे काम-काज की ज़िम्मेदारी तो तुम्हारी है, तो मुझसे क्यों पूछ रहे हो?"

बहुत गुस्से में आकर मैंने सोने की कोशिश की, लेकिन मुझे उसकी बड़बड़ाहट सुनाई दी। रसोइए को कोसते हुए मैं उठा और उसका सामान ढूंढने में उसकी मदद करने की कोशिश की। मुझे यह देखकर बहुत हैरानी हुई कि वह सच कह रहा था और हमारा सारा सामान गायब हो गया था। हमारे मछली पकड़ने के उपकरण, हमारे कैमरे, हमारे खाना पकाने के बर्तन, लगभग सब कुछ। मुझे सिर्फ मेरी टॉर्च मिली जो मेरे बिस्तर पर मेरे पास ही थी। मैं आग बबूला हो गया। उन लोगों की हिम्मत तो देखो जिन्होंने हमारी नाक के नीचे से इसे चुरा लिया! हमने सूरज उगने का इंतजार किया और पैरों के निशान ढूंढने लगे। मुझे तुरंत रेत में निशान दिखाई दिए और हम उनका पीछा करने लगे। हम थोड़ी दूर चले और अचानक नंगे पैरों की जगह जूतों के निशान दिखने लगे। उसने सुधीर के जूते भी चुरा लिए थे और उन्हें वहीं पहन रखा था। हमने वापस कैंप जाकर डब्ल्यू.ए.एस.आई. को सूचना देने का फैसला किया, लेकिन जिमी अपनी बात पर अड़ा रहा। उसे तुरंत न्याय चाहिए था और उसने अपराधी का पीछा करने का फैसला किया। एक घंटे बाद भी जिम्मी का कोई अता-पता नहीं था, और हमें पता नहीं था कि वह कहाँ गया है, इसलिए हमने पास के मवेशी बाड़े तक पैदल चलकर मदद मांगने का फैसला किया। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे, हमने उसे देख लिया। ज़ाहिर है, वह नदी के किनारे- किनारे अपराधी का पीछा करते हुए उसी जगह पर आ पहुँचा था। फिर हम सब मिलकर पास की एक छोटी पहाड़ी पर खोजने लगे। हमें ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ा, जूतों के निशानों से हमें एक लोमड़ी का बिल मिला जिसमें एक लुंगी थी और हमारा सारा चोरी का सामान उसमें था। हम वापस बाड़े पर गए जहाँ किसी ने लुंगी के मालिक की पहचान कर ली। हम उसे उसके घर से बाहर लाए लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा। उसके मुँह से बस यही निकला, “गोथिल्ला, गोथिल्ला, गोथिल्ला” (मुझे नहीं पता, मुझे नहीं पता, मुझे नहीं पता)। उसने जुर्म कबूल करने से इनकार कर दिया और एक पल बाद हमें एहसास हुआ कि इस तरह से पूछताछ करने से कोई फायदा नहीं होगा। मुझे इस बात पर गर्व नहीं है कि हमने फिर क्या किया - हमने उसकी जमकर पिटाई की। दरअसल, मुझे धुंधला-सा याद है कि एक समय समूह के सबसे समझदार सदस्य ने चिल्लाकर कहा था, "बस करो यार, तुम उसे मार डालोगे।" हमने उसे वहीं ढेर की तरह पड़ा छोड़ दिया, और कहने की जरूरत नहीं है कि अगले कुछ दिनों तक हमने लगातार सभी अखबारों पर नजर रखी।
सबको लाने-ले जाने के लिए गाड़ियाँ मिलना मुश्किल था, इसलिए ज़्यादातर हम साइकिल से ही जाते थे। साइकिल की एक कमी यह थी कि उस पर ज़्यादा सामान नहीं

ले जाया जा सकता था, इसलिए हममें से कुछ लोग मैजेस्टिक बस स्टैंड से सुबह 6:00 बजे वाली बस पकड़ लेते और 10:00 बजे तक संगम पहुँच जाते। वे सामान ढोते, जबकि मेरे जैसे लोग साइकिल से आते। मेरे पास एक सुवेगा सुपर 50 थी, जो काम आती थी। मैं उसे चलाता, जबकि मेरा पीछे बैठा व्यक्ति बड़े-बड़े बोरों में सामान भरकर ले जाता। हम सब जवान तो नहीं हो रहे थे, और यह सब मज़ेदार तो था, लेकिन हमें एहसास हुआ कि यात्राओं के लिए लोगों और सामान को लाने-ले जाने के लिए हमें एक गाड़ी की ज़रूरत है। देव मुखर्जी मेरे दोस्त मेरु सालढाना के घर के सामने रहते थे और उनके पास एक एम्बेसडर कार थी। एक सोची-समझी योजना के तहत, हमने उन्हें अपना "बकरा" बनाने का फैसला किया। हमने मेरु को जाल डालने और मुखर्जी को फंसाने का जिम्मा सौंपा। उसने पहले "प्रसिद्ध एंडरसन" मछली का चारा डालकर कोशिश की, लेकिन मुखर्जी ने चारा नहीं लिया, क्योंकि उसने मेरे पिताजी के बारे में कभी सुना ही नहीं था। मेरु जानता था कि सभी स्वाभिमानी बंगालियों की तरह, मुखर्जी भी मछली के व्यंजनों के बारे में बात करने पर बेहतर प्रतिक्रिया देंगे। "क्या आपको नदी की मछली पसंद है मुखर्जी?" उसने बात शुरू की।
“क्या आप सच कह रहे हैं?” मुखर्जी ने अपनी मनमोहक उपलब्धियों का वर्णन करते हुए, नम आँखों से पलटकर कहा। “अरे, जब मैं छोटा था, तो तीस्ता नदी में दोहरे हुक से खुद मछली पकड़ता था।”
"मुखर्जी, मैंने आपसे कुछ छिपाया है। बैंगलोर के पास एक जगह है जहाँ आप जैसे मछली पकड़ने के शौकीन लोग दिन भर मछली पकड़ सकते हैं, और स्वादिष्ट मछलियों के अलावा, आप 100 पाउंड की महसीर मछली पकड़ने का प्रयास भी कर सकते हैं।"
मुखर्जी की आँखें चौड़ी हो गईं, उनमें अविश्वास और उत्साह दोनों झलक रहे थे। उन्होंने अविश्वास से पूछा, "क्या सच में ऐसी मछलियाँ होती हैं?" खैर, इसके बाद तो हमें उन्हें साथ ले जाना ही पड़ा, और संयोगवश हमें उनकी कार में बैठने का न्योता मिल गया। मेरु, सैयद तुर्क, सांता मारिया, रॉबर्ट वाट्स, मुखर्जी और मैं पहली यात्रा पर गए और यह एक शानदार सफलता रही। हालाँकि पहली नज़र में मुखर्जी ने उस जगह को "तीस्ता जितनी बड़ी नहीं" कहकर तिरस्कारपूर्वक खारिज कर दिया, लेकिन उन्होंने पहले घंटे में ही लगभग चार छोटी कार्प मछलियाँ पकड़ लीं। बेचारे मुखर्जी! वह पूरी तरह से मछली पकड़ने के जाल में फँस गए थे। दरअसल, हम लोग तो सच में शैतान थे, उनकी

कुशलता की खूब तारीफ कर रहे थे, और इसी वजह से हमारे बंगाली बाबू के साथ कार उधार लेने की एक लंबी साझेदारी पक्की हो गई। वह एक व्यापारी थे और हमेशा हमारे साथ नहीं आ पाते थे, फिर भी उन्होंने हमें अपनी कार उधार देने की कृपा की। उनकी बस यही चिंता थी कि पेट्रोल उतना ही भरा हो जितना कार उधार लेते समय था।
मुझे मेरु और उनके परिवार, मुखर्जी, डॉ. अंसारी और उनके दो दोस्तों के साथ की एक यात्रा याद है। आमतौर पर, शिविर के तौर-तरीकों से अपरिचित नए लोग मज़ाक का शिकार बन जाते हैं और इस बार, ऊपर बताए गए दो सज्जनों को हमने निशाना बनाया। हमने मछली पकड़ने का अच्छा दिन बिताया और शाम को आराम करने के लिए बैठ गए। खाना बन रहा था, और मेरु और मैंने दिन भर इस बात का पर्याप्त संकेत दिया था कि हमारा सामना हाथियों से हो सकता है, क्योंकि यह बेलों का मौसम था। हमने उन दोनों सज्जनों और अपने ड्राइवर को यकीन दिलाया कि जब बेलों की बात आती है, तो हाथी किसी को भी अपने रास्ते में नहीं आने देते। जब बड़ा सुभान रसोई का काम संभाल रहा था, तो हमने छोटा सुभान और बोलाइया को इशारा किया, जिन्होंने तुरंत बताया कि उन्हें एक काम से जाना है और वे कुछ घंटों में वापस आएंगे। इस बार, हमने मुखर्जी या अंसारी को अपने मज़ाक के बारे में नहीं बताया, और यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी ने मुझे सुना, मैंने सुभान और बोलाइया को शिविर से जाते हुए "हाथियों से सावधान रहने" की चेतावनी दी। कुछ देर बाद, हमें पेड़ की डालियाँ टूटने की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। हाथी! मैंने अंसारी से दबी आवाज़ में बात की, जबकि मेरु मुखर्जी के पास गई। मैंने casually कहा, "मुझे लगता है हम मुश्किल में पड़ गए हैं।" “हाथियों ने हमारा शिविर खोज लिया है और इसे भोजन का स्रोत समझ रहे हैं। शायद उन्हें पर्याप्त बेलें नहीं मिलीं, वे बहुत भूखे होंगे। हमें सावधान रहना चाहिए, लेकिन नए आने वालों को डराना या परेशान नहीं करना चाहिए।” “हम समझते हैं,” दोनों ने धीरे से कहा, स्पष्ट रूप से खुश थे कि हमने उन पर भरोसा किया, शायद यह संकेत था कि वे भी जंगल के हम जैसे अनुभवी लोगों की तरह ही साहसी थे। मैं उन्हें हाथियों को ढूंढने की उम्मीद में अपनी आँखें गड़ाए देख सकता था। अगर वे उन्हें देख पाते तो वाकई मज़ा आता, क्योंकि सुभान और बोलाइया पेड़ की डालियाँ तोड़ रहे थे, जिनका काम बस सूखी डालियाँ इकट्ठा करना और उन्हें समय-समय पर तोड़ना था। हालांकि, शोर, हालांकि लगातार आ रहा था, कुछ दूरी पर था, और मुखर्जी, अंसारी और बाकी दोनों

अविचलित लग रहे थे। हालांकि इस पर इतनी विस्तार से चर्चा नहीं हुई, सुभान और उसके साथी को लगा कि शिविर में लोगों की प्रतिक्रिया उनके प्रयासों का अपमान थी, इसलिए उन्होंने चीजों को थोड़ा और दिलचस्प बनाने का फैसला किया। उनमें से एक ने गुस्से में हाथी जैसी आवाज निकाली, जिससे पूरा शिविर हिल गया। शिविर में दहशत फैल गई और डालियाँ तोड़ने वालों ने अपनी कोशिशें तेज कर दीं। अगर हमारे इस मज़ाक के शिकार हुए चारों लोग अनुभवहीन न होते, तो यह सब हास्यास्पद लगता। डालियाँ इतनी तेज़ी से तोड़ी जा रही थीं कि मानो पागलपन छा गया हो। कुछ और हाथी जैसी आवाजों ने स्थिति को और बिगाड़ दिया। एक आदमी ऐसे उछला जैसे उसे गोली लग गई हो और उन्हें लाने वाली वैन के नीचे जा गिरा। दूसरे आदमी ने मेरे मन में एक अमिट छाप छोड़ी, क्योंकि उसने मेरा बाइक हेलमेट ढूंढ लिया और व्हिस्की का गिलास पकड़े एक पेड़ पर चढ़ गया और तुरंत नीचे गिर गया। ड्राइवर घुटनों के बल गिर पड़ा और बार-बार "कावेरी अम्मा, कापाथिक्को" (देवी कावेरी, हमें बचाओ) चिल्लाने लगा। डॉ. अंसारी इतना डरा हुआ था कि कुछ कर नहीं पा रहा था, इसलिए वह बस कांपता हुआ वहीं बैठा रहा। लेकिन सबसे मज़ेदार था मुखर्जी का, जो मेरु की पत्नी से बार-बार कह रहा था, "यह खतरनाक हो सकता है, अपने बच्चों को संभाल कर रखो।" वह हाथियों और मेरु की पत्नी के बीच खड़ा हो गया, उसके पास टॉर्च के अलावा कुछ नहीं था, जिसे वह लगातार चारों दिशाओं में चमका रहा था। मेरु की पत्नी को अपना चेहरा ढकना पड़ा क्योंकि वह समझ गई थी कि क्या हो रहा है, और मुखर्जी की हरकतों से वह हंसते-हंसते लोटपोट हो रही थी।
“चिंता मत करो, अब हमें हिम्मत दिखानी होगी,” मुखर्जी ने उसे दिलासा देते हुए कहा, क्योंकि वह सिर गोद में रखकर कांप रही थी। मैंने सोचा कि हम थोड़ा और मज़ा कर सकते हैं। मैंने भीड़ में उम्मीद जगाई: “उन्हें डराने का एक ही तरीका है कि हम उन्हें दिखाएं कि हम एक बड़ा समूह हैं। मैंने यह तरकीब वहां के स्थानीय लोगों से सीखी है, सब लोग अपनी-अपनी स्टील की प्लेटें निकालो और चम्मचों से उन्हें बजाओ।” अगले कुछ मिनटों तक, पूरा शिविर हाथियों को डराने के लिए अपनी प्लेटों को जोर-जोर से बजाता रहा। सुभान और बोलाइया वापस आए और कहने लगे कि वे ज्यादा दूर नहीं जा सकते और पूरा शिविर हाथियों से घिरा हुआ लग रहा है, और उन्होंने भी उन्माद में प्लेटों को और जोर से बजाना शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद हमने उन्हें रुकने को कहा और मजाक समझाया, और सच में, हम सब खूब हंसे!

संगम में पर्यटकों की भीड़ बढ़ने लगी, और हमें अपनी योजना बदलनी पड़ी क्योंकि वे हमारी मौज-मस्ती में बाधा डाल रहे थे। जब भी संभव होता, हम गुरुवार को दोपहर के भोजन के बाद निकल जाते, रात वहीं बिताते और शुक्रवार को छुट्टी लेकर शनिवार को भीड़ आने से पहले अपना डेरा समेट लेते। फिर हमें पता चला कि हमारे जैसे ही चालाक और भी लोग थे, खासकर चन्नापटना का एक जुआरी गिरोह जो इसी तरीके का पालन करता था। हालांकि वे दखलंदाजी नहीं करते थे, फिर भी यह जानकर बेचैनी होती थी कि वे आसपास हैं, क्योंकि कभी-कभी उनकी संख्या तीस या उससे अधिक हो जाती थी। लगभग 1984 या 85 के आसपास, उन्होंने कनकपुरा में बीयर बेचना शुरू कर दिया और इससे हालात बेकाबू हो गए। गिरोह बेसुध होकर शराब पीते, हद से ज्यादा शोर मचाते, चट्टानों पर बोतलें तोड़ते, आपस में लड़ते और इलाके की शांति भंग करते। उन्हें मछली पकड़ने या वन्यजीवों की कोई परवाह नहीं थी; उन्हें शराब पीने और मौज-मस्ती करने के अलावा किसी और चीज में दिलचस्पी नहीं थी और मैं समझ गया कि अब संगम हमारे लिए स्वर्ग नहीं रह गया है।
यह अजीब बात है कि मेरे पिता की तरह, जिनका डाकू मुम्प्टीवयन से किसी न किसी तरह का संबंध था, मेरा वीरप्पन से भी एक अस्पष्ट और लगभग न के बराबर संबंध था। हालाँकि एस.टी.एफ (स्पेशल टास्क फोर्स) का गठन नब्बे के दशक की शुरुआत में ही हुआ था, लेकिन वह अस्सी के दशक के मध्य से ही इन जंगलों में उपद्रव मचा रहा था। एक बार मैं संगम में था, ओंटिगोंडु से लौट रहा था, तभी दो आदमी मेरे सामने आ गए। उनके पास बंदूकें थीं, जबकि मेरे पास मछली पकड़ने की छड़ी के अलावा कुछ नहीं था। उन्हें देखते ही मैं समझ गया कि ये लोग खतरनाक इरादे वाले हैं, नौसिखिए नहीं। "दोराई, क्या तुम जानते हो कि हम कौन हैं?"
यह एक बयान था, सवाल नहीं। मैंने सहमति जताई, हालांकि किसी का नाम नहीं लिया गया। बात बहुत तेज़ी से फैलती है और मैं जानता था कि भारतीय रॉबिन हुड की कहानी कोई मिथक नहीं थी। जिस तरह उसके मुखबिर उसे घटनाक्रमों की जानकारी देते रहते थे, उसी तरह संगम में मेरे गिरोह ने भी मुझे ऐसे गिरोह की मौजूदगी और उनकी करतूतों के बारे में आगाह किया था।
“हमें कुछ कच्चा माल चाहिए,” उन्होंने कहा। यह कोई धमकी नहीं थी, लेकिन मैं मोलभाव करने की स्थिति में नहीं था और वैसे भी वे ज़्यादा कुछ नहीं माँग रहे थे, इसलिए बड़ा सुभान और मैंने एक राज़ साझा किया जिसे हमने अपने साथ

कब्र तक ले जाने का वादा किया। मुझे नहीं पता कि उन्होंने मुझ पर भरोसा क्यों किया, लेकिन मुझसे कई बार तेल और मिर्च पाउडर जैसी छोटी-छोटी चीज़ों के लिए संपर्क किया गया, हालाँकि मैं उस डाकू से कभी नहीं मिला। उनकी निगरानी प्रणाली बहुत अच्छी थी, क्योंकि वे मुझसे तभी संपर्क करते थे जब मैं अकेला होता था। अपने कठोर व्यवहार के बावजूद, वे हमेशा पहले मुझसे संपर्क करते थे, और फिर मैं बड़ा सुभान को निर्देश देता था कि वे जो चाहें उन्हें दे दें। कोई सवाल नहीं, कोई पैसे का लेन-देन नहीं, कोई वादा नहीं, कुछ भी नहीं। मुझे उनसे कोई सहानुभूति नहीं थी, फिर भी मैं अधिकारियों को सूचित नहीं करना चाहता था। शायद वे हताश थे या शायद उन्होंने मुझ पर भरोसा कर लिया था, लेकिन 1989 के अंत में एक दिन, मैं अपने दोस्त मेरु और कुछ अन्य लोगों के साथ एक शिविर में था। भारी दोपहर के भोजन के बाद हम सभी थोड़ी देर झपकी लेने के लिए लेट गए थे, तभी मैंने शिविर में एक नंगे बदन वाले आदमी को देखा। ज़्यादातर लोग सो रहे थे, लेकिन मुझे दूर से उसकी आवाज़ सुनाई दी। मुझे पता था कि वह नदी तैरकर पार करके आया है, लेकिन शिविर में इस तरह आना दुस्साहस था, खासकर दिन के उस समय। वह ज़रूर मोसलाहल्ला के पीछे से तैरकर आया होगा और सीधे हमारे शिविर में घुस आया होगा। मैं उससे बात नहीं करना चाहता था, इसलिए मैंने उसे बस हल्का सा अभिवादन किया और जैसे ही मैंने नज़रें हटाईं, मैंने देखा कि मेरु उठकर सब कुछ देख रहा है। वह इतना समझदार था कि उसने बीच में दखल नहीं दिया, लेकिन मैं उसके मन में उठ रहे सवालों को सुन सकता था। वह आदमी बड़ा सुभान के पास गया और दाल, मिर्च पाउडर और कुछ अन्य सामान अपनी शॉल में बांधकर ले आया। मैंने अपना चेहरा टोपी से ढक लिया और सोने का नाटक किया, लेकिन मेरु पास आया और सुभान से पूछताछ करने लगा। वह बहुत बड़ा झूठा था और मैंने देखा कि वह मेरु के सवालों के विरोधाभासी जवाब दे रहा था, लेकिन सौभाग्य से बात वहीं खत्म हो गई।
एस.टी.एफ. बेवकूफ नहीं थे। उन्हें पता था कि मैं उन इलाकों से अच्छी तरह वाकिफ हूं, और उन्होंने कई मौकों पर ईजीपुरा स्थित मेरे घर पर पुलिस भेजी, और मुझसे कई विषयों पर राय मांगी। वे असल में वीरप्पन के गिरोह के सदस्यों के बारे में जानकारी जुटाना चाहते थे। सौभाग्य से, वे हमेशा ऐसे व्यक्ति को भेजते थे जो अंग्रेजी अच्छी तरह नहीं बोलता था, और मैं हमेशा भाषा की बाधा का बहाना बनाकर कोई जानकारी नहीं देता था। मुझे सच में वीरप्पन के ठिकाने के बारे में पता नहीं था, लेकिन मुझे लगता था कि मैं जो भी जानकारी

दूंगा, उससे और मुसीबत ही बढ़ेगी। वीरप्पन बहुत चालाक था और मेरी जानकारी से एस.टी.एफ. या पुलिस को कोई मदद नहीं मिलने वाली थी। वे न सिर्फ मुझे अपनी असफलता के लिए जिम्मेदार ठहराते, बल्कि जंगलों में यह अफवाह भी फैला देते कि मैं मुखबिर हूं। इसलिए, मैंने इसमें शामिल होने से इनकार कर दिया। मैं अपनी बातों को लेकर बेहद सतर्क रहता हूं, और उन दिनों मेरे एंग्लो-इंडियन दोस्तों के बीच यह मजाक चलता था कि "पत्थर से पानी तो निकाला जा सकता है, लेकिन डॉन एंडरसन से जानकारी नहीं निकाली जा सकती।"

बड़ी मछली

अध्याय आठ

केनेथ एंडरसन, मेरे पिताजी
मेरे पिता, केनेथ डगलस स्टीवर्ट एंडरसन, का जन्म 8 मार्च 1910 को हैदराबाद राज्य की रेलवे कॉलोनी बोलारम में हुआ था। उनका बपतिस्मा होली ट्रिनिटी चर्च में हुआ था और उन्हें कई नामों से जाना जाता था, जिनमें केडी, केडीएस और "स्नेक चार्मर एंडरसन" शामिल हैं, लेकिन उनके माता-पिता उन्हें "जॉक" कहकर पुकारते थे, जो जैक का स्कॉटिश रूप था। यह नाम उनके साथ जुड़ गया और उनके अधिकांश मित्र उन्हें इसी नाम से याद करते थे। यह कहना गलत नहीं होगा कि वे बड़ों के बीच पले-बढ़े, क्योंकि उनके कोई भाई-बहन नहीं थे। उनके चचेरे भाई-बहन दूर रहते थे और उनके एकमात्र मित्र सेना में उनके पिता के साथी अधिकारियों के कुछ बच्चे थे, जिनमें से किसी की भी रुचियां उनसे मिलती-जुलती नहीं थीं। उनके पिता, डगलस, का तबादला बैंगलोर में हो गया और जब पिताजी लगभग सात या आठ वर्ष के थे, तब परिवार बैंगलोर चला गया। इस प्रकार, जब वे उस शहर में आए जहाँ उन्होंने अपना शेष जीवन बिताया, तब तक उन्हें तेलुगु, उर्दू और हिंदी का अच्छा ज्ञान हो चुका था। पिछली शताब्दी के आरंभिक वर्षों में बैंगलोर में घरेलू नौकरानियाँ, जिनमें कई आयाएँ, छोकरे और माली शामिल थीं, अधिकतर मद्रास राज्य से थीं। इस प्रकार, वह बचपन से ही धाराप्रवाह तमिल बोलना सीख गए। उन्होंने बहुत कम उम्र से ही यूरोपीय और भारतीय दोनों परिवेशों में ढलना सीख लिया था, जो आने वाले वर्षों में उनके लिए उपयोगी साबित हुआ। उन्होंने बिशप कॉटन बॉयज़ स्कूल और बाद में सेंट जोसेफ यूरोपियन हाई स्कूल में पढ़ाई की, जो उन दिनों ब्रिटिश परिवारों के लिए दो प्रमुख शिक्षण संस्थान थे। तमिल उनकी पसंदीदा भाषा बनी रही और वे अपनी माँ की नाराज़गी के बावजूद कुछ बेहद अश्लील तमिल गाने गाते थे। हालाँकि वे कोई शरारती बच्चा नहीं थे, लेकिन पालतू जानवरों के प्रति उनके लगाव के कारण अक्सर घर में छोटी-मोटी कहा-सुनी हो जाती थी। उनके बचपन में, घर में पालतू जानवर केवल कुत्ते ही थे, लेकिन पिताजी का साँपों और अन्य रेंगने वाले जीवों के प्रति निरंतर आकर्षण सभी के लिए परेशानी का सबब बना रहता था। जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि जानवरों के प्रति उनका आकर्षण महज़ एक शौक नहीं था। जानवरों से उनका गहरा लगाव था, इसलिए पालतू जानवरों को लेकर उनकी अनोखी इच्छाएं अक्सर पूरी हो जाती थीं।

सरीसृप, खासकर सांप, उनके लिए बेहद आकर्षक थे और वे अपने माता-पिता को बिना बताए अपनी जेब खर्च का काफी हिस्सा सपेरों पर खर्च कर देते थे। पालतू सांप रखना तो नामुमकिन था, लेकिन थोड़े से पैसे देकर वे सपेरों द्वारा लाए गए सांपों के साथ घंटों खेल सकते थे, और उनकी मां की नजरों से दूर वे यही करते रहते थे। दरअसल, बचपन में जो उनका शौक था, वह 1950 और 1960 के दशक में उनके लिए एक फलते-फूलते व्यवसाय में बदल गया, जब उन्होंने बैंगलोर के कुछ अस्पतालों को सांप का जहर बेचना शुरू किया। मेरे पिताजी के विपरीत, मुझे सांप कभी पसंद नहीं थे, लेकिन मेरी मिन्नतें अनसुनी कर दी जाती थीं। "बहाने मत बनाओ, अनुभव का आनंद लेने की कोई जरूरत नहीं है, बस वही करो जो तुम्हें करने के लिए कहा गया है," यह एक आम प्रतिक्रिया थी।
आजकल सांपों को सरीसृपशालाओं में कांच के पिंजरों में रखा जाता है, लेकिन उन दिनों हम ज़मीन में गड्ढे खोदते थे, एक कोबरा के लिए और एक रसेल वाइपर के लिए। वह एक मुड़ी हुई धातु की छड़ी से सांप को बाहर निकालते, एक हाथ से उसका सिर पकड़ते और दूसरे हाथ में पकड़ी एक छोटी बोतल पर लगी झिल्ली को काटने के लिए मजबूर करते। उसके बाद वह सांप मुझे सौंप देते और मेरा काम उसे वापस गड्ढे में छोड़ना होता था। शायद आपको लगे कि इस काम में जोखिम कम था, लेकिन ये वे सांप थे जिन्हें उनकी नींद से जगाया गया था, कसकर पकड़ा गया था और झिल्ली को काटने के लिए मजबूर किया गया था, जिससे वे बेहद चिढ़ गए थे। यह काम पसीने से तर कर देने वाला था, जिससे मेरा आत्मविश्वास बिल्कुल भी नहीं बढ़ा। बाद के वर्षों में, मुझे जहर को बिचौलिए तक पहुंचाने की अतिरिक्त ज़िम्मेदारी भी मिली, जो बदले में इसे अस्पतालों और अन्य संगठनों को बेचता था।

पिताजी दिखावा कर रहे हैं

हालाँकि उन्हें बचपन में सांप ने काटा था, लेकिन मुझे याद है कि ऐसा सिर्फ़ दो बार हुआ था और पहली बार मैं घर पर था। उन्होंने एक बहुत ही गुस्सैल कोबरा को गड्ढे से बाहर निकाला था। वह बहुत फुर्तीला था और छड़ी पर रहते हुए बार-बार उन पर झपट्टा मार रहा था, इसलिए उन्होंने थंगावेलु जूनियर को सांप की पूंछ पकड़ने के लिए बुलाया। तब तक उसने सांप का सिर पकड़ लिया था, लेकिन पूंछ अभी भी ज़ोर से फड़फड़ा रही थी। लड़के के छूते ही सांप ने अपनी पूंछ उसकी बांह पर लपेट ली। वह चिल्लाया और पीछे खींचा और पिताजी के हाथ से अचानक सांप का सिर छूट गया, जिससे सांप ने उन्हें तुरंत काट लिया। हम थंगावेलु की चीखें सुनकर दौड़े और पिताजी को ज़मीन पर पीला पड़ा हुआ देखा। हमने काटने के निशान के आसपास चीरा लगाया और ज़हर निकालने की कोशिश की, और उन्हें विक्टोरिया अस्पताल ले जाने का फैसला किया, यह जाने बिना भी कि क्या उनके पास कोबरा के काटने के लिए एंटी-वेनम है। उन्होंने मना कर दिया और ज़ोर देकर कहा कि हम उनके एक दोस्त से संपर्क करें, जो हैदराबाद राज्य में कहीं रेलवे स्टेशन मास्टर है और जिसके पास कथित तौर पर उन्हें ठीक करने का एक विशेष मंत्र है। हमने टेलीफोन पर दिए गए निर्देशों का पालन

किया और जैसा उन्होंने कहा था, मेरे पिताजी बच गए, जबकि उन्हें काटने वाले कोबरा को पकड़कर टोकरी में उनके बिस्तर के पास रख दिया गया और वह मर गया! हमने शहर के अस्पतालों को लगातार जहर की आपूर्ति की और यह हमारे लिए आय का एक अच्छा स्रोत बन गया, लेकिन 1972 में वन्यजीव अधिनियम लागू होने के साथ ही सरकार ने कानूनों में बदलाव किया और व्यक्तियों द्वारा जंगली जानवरों को पालने पर प्रतिबंध लगा दिया, जिससे हमारा व्यवसाय लगभग समाप्त हो गया। साथ ही, सत्तर के दशक की शुरुआत तक, मेरे पिताजी की इस तरह का काम जारी रखने की ऊर्जा काफी कम हो गई थी।
प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जब मेरे दादाजी बैंगलोर चले गए, तो शिमोगा में शिकार करते समय उन्हें बाघ के दो शावक मिले। उनकी माँ कहीं नज़र नहीं आ रही थी और शावक बेफिक्र होकर खेल रहे थे, इसलिए उन्हें उठाकर बैंगलोर लाया गया। पिताजी को एक शावक मिल गया जबकि दूसरा मेरे दादाजी के एक साथी अधिकारी को दे दिया गया। पिताजी का पहला और इकलौता शावक ताकत और आकार में बड़ा हुआ और प्रॉस्पेक्ट हाउस में आकर्षण का केंद्र बन गया। बैंगलोर की यूरोपीय विचित्रताओं के लिए बदनामी के बावजूद, पालतू बाघ रखना उन दिनों के हिसाब से भी एक असाधारण बात थी और बहुत से लोग उसे देखने आते थे। "स्ट्राइप्स" बहुत ही स्नेही पालतू बाघ था, शायद इसलिए क्योंकि जब वह आया था तब वह बहुत छोटा था। दुर्भाग्य से, वह कुछ ही महीनों से अधिक जीवित नहीं रह सका, क्योंकि उसे कोई बीमारी हो गई और उन दिनों बैंगलोर के सबसे अच्छे पशु चिकित्सक भी बाघ का इलाज करने में सक्षम नहीं थे, निदान करना तो दूर की बात है। पिताजी बहुत दुखी थे और उनके पिता के अथक प्रयासों के बावजूद, दूसरा बाघ लाना उतना आसान नहीं था जितना उन्होंने सोचा था। अन्य पालतू जानवरों के अलावा, उन्होंने एक सपेरे से एक नेवला और एक कोबरा भी खरीदा था, जो इन दोनों को लेकर मनोरंजन का तमाशा करता था। यह एक क्रूर खेल था, क्योंकि नेवले के दांत घिस दिए गए थे और सांप के नुकीले दांत निकाल दिए गए थे। उन्हें अलग-अलग टोकरियों में लाया जाता था और छोड़े जाने पर उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति उन्हें एक-दूसरे पर हमला करने के लिए उकसाती थी। यह मालिक के लिए आय का स्रोत और दर्शकों के लिए मनोरंजन का साधन था। हालांकि, इस करतब की दीर्घकालिक संभावना सीमित थी, क्योंकि कुछ समय बाद, सांप और चूहा दोनों को एहसास हो गया कि वे एक-दूसरे को किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा सकते और अंततः एक-दूसरे को पूरी तरह से नजरअंदाज करने लगे। ऐसा ही

एक नीरस प्रदर्शन एंडरसन के घर पर हुआ और उन्होंने दोनों जीवों को बहुत कम कीमत पर खरीद लिया।

पिताजी का पहला बाघ। 1912

एक कुख्यात घटना जिसमें "साँप वश में करने वाले" एंडरसन शामिल थे, रेजिडेंसी रोड पर इंपीरियल होटल के सामने इंपीरियल सिनेमा में घटी थी। यह उनके स्कूल के दिनों की बात है, जब पिताजी और उनके दोस्त लेस्ली बार्टली ने सोचा कि चलो थोड़ा मज़ाक करते हैं। वे आधा दर्जन साँप लेकर आए और फिल्म शुरू होते ही उन्हें छोड़ दिया। दर्शकों को तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक कि उनमें से कुछ को अपने पैरों पर रेंगने का एहसास नहीं हुआ। शुरू में तो कुछ लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन भीड़ में कुछ दर्शक बेचैन होने लगे। तब हंगामा मच गया जब किसी ने अपना हाथ नीचे किया और एक बहुत ही डरे हुए साँप को छू लिया। एक चीख से अफरा-तफरी मच गई। कुछ लोगों ने अपनी कुर्सियाँ हटा दीं तो कुछ उन पर कूद पड़े, और माहौल किसी हॉरर फिल्म जैसा

हो गया। पिताजी भी एक कुर्सी पर खड़े होकर चीखे, लेकिन जब बत्तियाँ जलाई गईं और लोग उन्हें बचाने के लिए गाड़ी चला रहे थे, तब उन्होंने देखा कि जो सज्जन सबसे ज़ोर से चीख रहे थे, उनकी कमीज़ के अंदर से एक साँप झाँक रहा था! उन्हें तुरंत बाहर निकाल दिया गया और वहाँ से भगा दिया गया। स्कूल में वे शतरंज के माहिर खिलाड़ी थे, और खेल के क्षेत्र में उनका सबसे करीबी अनुभव यही था। हालांकि, वे लेख लिखने और थिएटर में अभिनय करने में बहुत कुशल थे। वे एक उत्साही पाठक भी थे, और उनका कमरा हर विषय और रुचि के क्षेत्र की किताबों से फर्श से छत तक भरा रहता था। स्कूल में असाधारण प्रदर्शन करने वाले उन्होंने 1926 में सीनियर कैम्ब्रिज की पढ़ाई पूरी की। उनके माता- पिता को उनसे बहुत उम्मीदें थीं और उन्होंने उन्हें बैरिस्टर बनने के लिए एडिनबर्ग भेज दिया। उनके इस निर्णय को इस तथ्य से बल मिला कि उनके चाचा फोर्ब्स उस समय स्कॉटलैंड में थे और पिताजी के अभिभावक बनने वाले थे। पूर्वी देशों, विशेष रूप से भारत से परिचित और सहज होने के बावजूद, फोर्ब्स दोनों देशों के बीच मौजूद विभाजन को लेकर स्पष्ट थे, और वे भारतीयों के साथ कोई पक्षपातपूर्ण व्यवहार या मित्रता नहीं रखना चाहते थे। पिताजी के अनुसार, यह पाखंड था, क्योंकि उनके चाचा का जन्म और पालन-पोषण भारत में हुआ था। उन्होंने अपने चाचा के दिखावे का पालन करने से इनकार कर दिया और अपना सारा समय एडिनबर्ग में रहने वाली छोटी भारतीय आबादी के साथ बिताया। हालांकि, असली समस्या यह थी कि उन्हें भारत, वहां की जलवायु, अपने पालतू जानवरों और निश्चित रूप से वहां के लोगों की बहुत याद आती थी। अपने लहजे के बावजूद, नीली आँखों और सुनहरे बालों के कारण वह एक ब्रिटिश लड़के जैसा दिखता था, लेकिन पिताजी को लगता था कि वहाँ सब लोग रूखे, स्वार्थी और एक-दूसरे की मदद नहीं करते थे। शायद यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत में रहने के दौरान उसके पास बहुत से लोग थे, इसलिए वह थोड़ा बिगड़ा हुआ भी था। स्कॉटलैंड में लगभग आठ महीने बिताने के बाद उसने घर लौटने का फैसला कर लिया, लेकिन उसने कभी किसी को इसके बारे में नहीं बताया। दरअसल, कंजूस स्वभाव के कारण उसने जहाज पर किसी को अपना फर्स्ट क्लास टिकट बेचकर नकद पैसे लेकर अपनी सीट कम करवा ली। 1928 में वापस आकर उसने अपने माता-पिता का दिल तोड़ दिया, लेकिन वह उनका इकलौता बच्चा था और उनके पास इसके अलावा कोई चारा नहीं था कि वे इस बात को स्वीकार कर लें कि उसे अपना पूरा जीवन भारत में ही बिताना होगा। मानो इतना ही काफी नहीं था, उसने उन्नीस साल की उम्र

में मेरी माँ के साथ भागकर शादी कर ली। उनकी मुलाकात बोवरिंग क्लब में हुई और दोनों के बीच एक तीव्र प्रेम प्रसंग शुरू हुआ, जिसका परिणाम अप्रैल 1929 में कुड्डालोर के सोरकलपेट में विवाह के रूप में सामने आया। उन्होंने अगला सप्ताह पांडिचेरी में बिताया, जहाँ माँ का परिवार रहता था। यह सब
एंडरसन परिवार में इसे ईशनिंदा माना गया और उसके बाद मेरे दादा और मेरे पिता के बीच संबंध खराब हो गए।

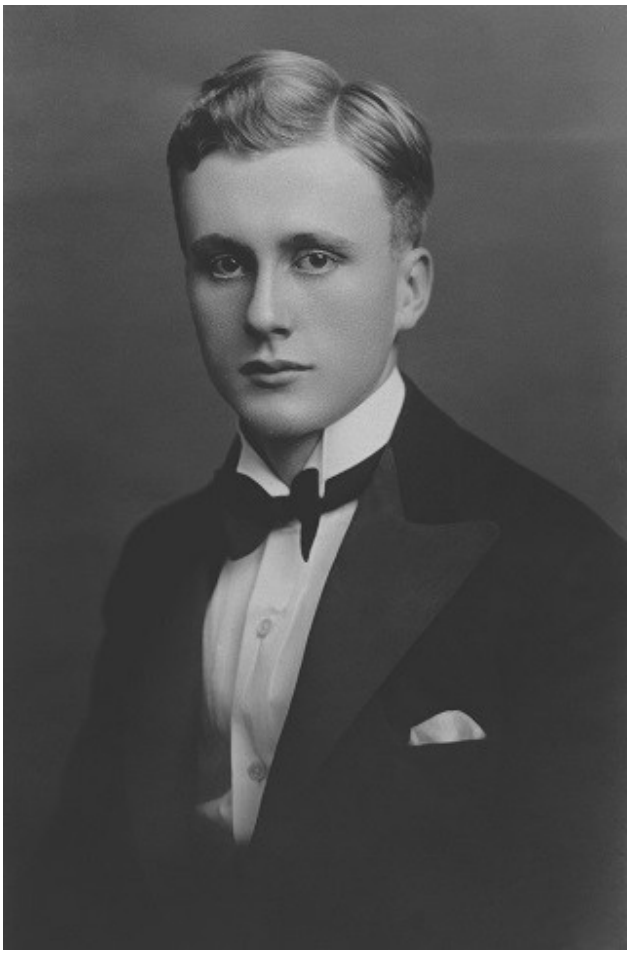

एडिनबर्ग में। 1928

मेरी बचपन की यादों से ही, मैंने उन्हें हर तरह के जानवरों से बात करते देखा है। उनके शब्द और लहजा बहुत अलग नहीं थे, लेकिन किसी तरह जानवर समझ जाते थे कि वे उन्हें समझ रहे हैं, और जानवर भी उन्हें समझ जाते थे। यह क्षमता उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रकट हुई, और वे हमेशा इसे अपनी "छठी इंद्रिय" कहते थे। आज के ज़माने में, ऐसी क्षमता के अस्तित्व पर लोग

हँसेंगे और अगर कोई ऐसी शक्ति का दावा करे तो लोग उसका मज़ाक उड़ाएँगे। मैं इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकता, लेकिन मैंने कई बार देखा है कि जब वे किसी के घर जाते थे, तो वहाँ के सभी पालतू जानवर उनके चारों ओर जमा हो जाते थे, और मालिकों की पुकार को पूरी तरह से अनसुना कर देते थे। जब वे टेलीग्राफ कार्यालय में काम करते थे, तो उन्होंने हैदराबाद, मैसूर और मद्रास राज्यों में ज़मीन खरीदना शुरू कर दिया था। वे इसे कभी भी ऐसा निवेश नहीं मानते थे जिसकी कीमत समय के साथ बढ़ेगी, बल्कि इसे केवल ज़मीन का एक टुकड़ा मानते थे जहाँ वे बैंगलोर से दूर रहने के लिए जा सकते थे। 1930 और 40 के दशक में, एक ब्रिटिश नागरिक के लिए ज़मीन खरीदना बहुत आसान था, और वैसे तो वह बाकी सब चीज़ों में कंजूस होता था, लेकिन जंगलों से सटी ज़मीन खरीदने में वह हद से ज़्यादा खर्च कर देता था। उसके पास पांडिचेरी, मामंदुर, पुलिबोनू, येलागिरी, जावलगिरी, होगेनिकल, संतावेरी, वोडापेट्टी, सेगुर और ऊटी समेत कई जगहों पर बीस से ज़्यादा संपत्तियां थीं। उत्तमलाई में भी उसकी ऐसी ही एक संपत्ति थी, जहाँ गाँव के बीचोंबीच उसका एक कमरे का घर था, जिसकी देखभाल कासिम नाम का एक बदमाश करता था। वह एक बेईमान आदमी था जो अपनी पत्नियों और उनके गुर्दे भी अलग-अलग सौदों में बेचने से नहीं हिचकिचाता था। वह इतना चालाक था कि उसने उस जगह को गाँव आने वाले यात्रियों के लिए सिर्फ सोने-खाने की सुविधा के तौर पर रखा हुआ था। समस्या यह थी कि वह इसे न केवल एक रात के लिए, बल्कि कुछ घंटों के लिए भी किराए पर देने के लिए तैयार था, और हालांकि मेरे पिताजी को अपने जीवनकाल में इसका एहसास नहीं हुआ, लेकिन संपत्ति कुख्यात हो गई।
जब पिताजी जंगलों में रहते थे, तो उनका जीवन अत्यंत सादा था। उन्हें बस धूप और बारिश से बचने के लिए एक छत चाहिए होती थी। वे लगभग हमेशा खुले आसमान के नीचे सोते थे, बहुत ही साधारण भोजन करते थे, और भाषाओं पर उनकी अच्छी पकड़ होने के कारण उनके हर जगह परिचित थे। इस प्रकार वे उन दिनों के आम लोगों के बिल्कुल विपरीत थे, जो उन्हें जानने वाले ग्रामीणों और जंगलवासियों के लिए एक अनोखा और अप्रत्याशित अनुभव था। उनके देहांत के बाद, उन्होंने अपनी सारी संपत्ति मुझे दे दी। हालाँकि, सत्तर के दशक के बाद हालात तेज़ी से बदल गए। भारत में विदेशियों द्वारा संपत्ति रखने पर सरकारी नियमों के कारण संपत्ति का मालिक होना एक बुरे सपने जैसा हो गया था। स्थानीय लोग अधिक आक्रामक होने लगे, अक्सर यह कहते हुए कि हम तय समय से अधिक समय तक यहाँ रहे

जुड़ी वस्तुएं एकत्र कीं और इसके लिए उनके पास एक कमरा था, जो किसी के लिए भी आश्चर्यजनक था। वह कमरा खोपड़ियों, क्रिस्टल गेंदों, चक्कियों, विचित्र आकृतियों, धार्मिक प्रतीकों, रंग-बिरंगे रत्नों और कागजों पर लिखे मंत्रों से भरा हुआ था। मैंने कभी भी इन सब पर विश्वास नहीं किया और इसका मेरा कारण यह था कि जब कोई अकेला होता है, तो उसका मन भटक सकता है और वह उन चीजों को देख सकता है जिन पर वह विश्वास करना चाहता है।
उनका मानना था कि रत्न चिकित्सा में सूर्य की रोशनी को विशिष्ट रत्नों से गुजारकर एक विशेष आवृत्ति संचारित की जाती है। रत्न धारण करने वाले व्यक्ति का शरीर इसे अवशोषित कर लेता है और समय के साथ, व्यक्ति का शरीर इस नई उत्तेजना के साथ तालमेल बिठा लेता है और उपचार प्रक्रिया शुरू हो जाती है। उनका दावा था कि यह उपचार साधारण बीमारियों से लेकर निर्वाण प्राप्ति तक विभिन्न समस्याओं के लिए हो सकता है। इसी से प्रेरित एक अन्य पद्धति थी क्रोमोथेरेपी, जिसमें व्यक्ति के ऊर्जा स्तर को बढ़ाने के लिए प्रकाश का उपयोग किया जाता था। उनकी अन्य रुचियों में प्राकृतिक चिकित्सा भी शामिल थी। लगभग दस वर्षों तक उन्होंने गुड़हल के फूलों से अपने गंजेपन का इलाज करने के लिए अपनी खुद की दवा बनाई। वे नियमित रूप से अपने सिर पर एक चिपचिपा मिश्रण मलते थे। दुर्भाग्य से, उनके द्वारा स्वयं सीखे गए अधिकांश शोधों की तरह, इसका परिणाम भी पूरी तरह से असफल रहा। उनके आविष्कार केवल बालों के झड़ने से लड़ने वाली दवाओं तक ही सीमित नहीं थे। उनका यह भी मानना था कि वे हर तरह के विकारों के इलाज के लिए अपनी खुद की दवाएँ बना सकते हैं। शायद इसकी वजह स्थानीय रहस्यवादियों और उनके जैसे अन्य लोगों से उनका संपर्क था, लेकिन उन्होंने इनमें से कई चीजों में सुधार किया और कई दवाइयां खुद ही ईजाद कीं। चुम्बकों से बीमारियों का इलाज करना कई सालों तक उनके काम का हिस्सा रहा। उस समय मुझे कमर में बहुत दर्द होता था, और डॉ. एंडरसन ने तुरंत मुझे ऐसा इलाज बताया जिसमें मुझे डॉक्टरों और दवाओं पर पैसे बर्बाद नहीं करने पड़ते थे, जो कि एक बहुत ही ठोस कारण था। वे मेरी पीठ पर एक बड़ा चुम्बक रखते और उसे एक दिन घड़ी की दिशा में और अगले दिन घड़ी की विपरीत दिशा में घुमाते। बेशक, कई बार ऐसा होता था कि हमें एक दिन का सेशन छोड़ना पड़ता था, और फिर हम दोनों भूल जाते थे कि अगले दिन चुम्बक को किस दिशा में घुमाना है। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि इससे मेरी कमर का दर्द ठीक नहीं हुआ। वे सिर्फ एक चिकित्सक ही नहीं थे,

बल्कि वे मनोवैज्ञानिक समस्याओं का भी इलाज करते थे जिनमें सम्मोहन की अहम भूमिका होती थी। वे एक आविष्कारक भी थे, लोगों की आभा देखने के लिए बनाया गया चश्मा उनके उल्लेखनीय आविष्कारों में से एक है। उनका मानना था कि यह तीसरी आंख या कुछ इसी तरह की शक्ति है, और जब इसे पूरी तरह से विकसित कर लिया जाए तो इसका उपयोग लोगों के ऊर्जा स्तरों की आभा देखने के लिए किया जा सकता है। सम्राट के नए कपड़ों की कहानी की तरह, बहुत से लोगों ने इन आभाओं को देखने की बात स्वीकार की, लेकिन मैंने कभी भी इस तरह के दबाव में आकर इन्हें नहीं माना। उनके अधिकांश सिद्धांतों, आविष्कारों और विचारों का घर में खूब मज़ाक उड़ाया जाता था, लेकिन वे हमेशा इसे सहजता से लेते थे। वे बाइबल की एक आयत उद्धृत करते थे: "कोई भी नबी अपने गृहनगर में स्वीकार नहीं किया जाता", जिसका अर्थ यह था कि कोई व्यक्ति कितना भी महान क्यों न हो, उसके करीबी लोग कभी उसकी सराहना नहीं करते और केवल एक निष्पक्ष व्यक्ति ही उसकी महानता को सही मायने में देख सकता है। ज़ाहिर है, इससे हमारे घर में और भी हंसी गूंज उठती थी। वे एक गंभीर व्यक्ति थे, फालतू की बातों में पड़ने वाले नहीं थे, और अजनबियों से भी बातचीत के दौरान सीधे मुद्दे पर आने में उन्हें कोई झिझक नहीं होती थी।
“बकवास दिमाग को चकरा देती है,” वह उनकी आंखों में आंखें डालकर कहता था! मेरी तरह, उन्हें भी उनके पिता ने बहुत कम उम्र में बंदूक चलाना सिखाया था और पिताजी जंगलों में निडर थे, भले ही उनके पास विनचेस्टर राइफल थी, जिसे मैं एक घटिया हथियार मानता हूँ। उन्होंने कई आदमखोर जानवरों का शिकार तब किया था जब मैं उनके साथ जंगलों में जाना शुरू भी नहीं किया था, लेकिन मेरे बड़े होने के बाद भी वे उनका शिकार करते रहे और कभी-कभी हम साथ में भी जाते थे। हालाँकि यह उनका पहला शिकार नहीं था, लेकिन जलाहल्ली पैंथर ही वह शिकार था जिसने उन्हें पहचान दिलाई, खासकर बैंगलोर से भौगोलिक निकटता के कारण। 1930 के दशक के उत्तरार्ध में, जलाहल्ली में घनी झाड़ियाँ थीं और मेरे पिताजी जैसे लोग वहाँ आते-जाते रहते थे जो कभी-कभी तीतर और बत्तख का शिकार करते थे। ह्यू प्लंकेट और उनके भाई मेरे पिताजी के अच्छे दोस्त थे और परिवार का जलाहल्ली के पास एक छोटा सा फार्महाउस था। ह्यू, जो पिताजी के साथ गए थे, ने पैंथर को गोली मारने के बाद उसके पास जाने की एक बड़ी गलती की
- एक ऐसा निर्णय जो उनकी जान ले गया। उनके पंजे और दांतों ने उन्हें इतनी बुरी तरह से घायल कर दिया था कि डॉक्टरों ने उन्हें बताया कि एकमात्र उपाय

अंग काटना है, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया। अंततः गैंग्रीन हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। वह होसुर रोड कब्रिस्तान में मेरे पिताजी की कब्र से पचास गज की दूरी पर दफन है। पिताजी ने किसी तरह उस जानवर को मार तो डाला, लेकिन उसके बाद उन्हें बहुत पछतावा हुआ, और यह कोई असामान्य बात नहीं थी। वे सभी जानवरों से प्यार करते थे और उनकी जान लेना हमेशा उन्हें किसी न किसी तरह का दुख देता था। इस घटना से वे विशेष रूप से आहत हुए और उन्होंने एक कविता लिखी, जिसका शीर्षक है...
“द पैंथर्स रेक्विम”।
हालांकि यह कविता पैंथर के दृष्टिकोण से लिखी गई है, मेरा मानना है कि इसका संदेश सार्वभौमिक है, जो परोक्ष रूप से उसके इस विलाप को प्रतिध्वनित करता है कि मनुष्य ही ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करने के लिए जिम्मेदार हैं जो जानवरों को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करती हैं।
मुझे देखने वाले सभी लोगों के लिए,
तुम इतिहास में अद्वितीय त्वचा को देख रहे हो,
जिसने एक ऐसे प्राणी को वस्त्र पहनाए जो उतना ही बहादुर और स्वतंत्र था। इस विशाल देश में रहने वाले किसी भी व्यक्ति की तरह।
मैंने अकेले ही पांच दर्जन डरे हुए आदमियों का सामना किया।
वे राइफल और भाले से लैस थे,
तलवारें, कुल्हाड़ियाँ, लाठियाँ और मानव बुद्धि का संयोजन
उन्हें इससे कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि वे भय से कांप रहे थे।
प्रकृति के एकमात्र बचाव, मेरे नुकीले दांतों और पंजों के साथ,
मैंने अपने दृढ़ निश्चय से तेरह को अपने मुंह में जकड़ लिया।
मेरे भयंकर आक्रमण का सामना करने की हिम्मत कोई नहीं करेगा।
लेकिन जमीन से उड़ने वाली धूल की तरह दूर-दूर तक बिखरा हुआ।
मेरे सुंदर शरीर से फटे हुए हिस्से से खून बह रहा था, निर्दयी पुरुषों के लालच के कारण वह चकनाचूर हो गया था।
क्योंकि वे मेरी कभी गौरवशाली रही चित्तीदार खाल को पाने की लालसा रखते थे।
हालांकि, खनन करने का उनका साहस नगण्य ही था।
वे मुझसे मेरा ही सब कुछ छीनना चाहते थे।
मेरी जिंदगी, ईश्वर का दिया हुआ उपहार, उन्हें यह बात पता होनी चाहिए थी।

उस व्यक्ति के लिए जिसे जीने, खाने और जीवन का आनंद लेने का अधिकार था उनकी तरह, किसने इस विरासत पर सवाल उठाने की हिम्मत की?
मुझे बुरा-भला मत कहो, क्योंकि मैं था
दो बहादुर इंसानों की जान लेने वाला;
यह मेरा था या उनका, जीतने वाला सबसे अच्छा होता।
उनका सबसे बड़ा जोखिम, जिसे केवल साहसी लोग ही उठाते हैं।
जबकि मेरे पीड़ितों को लाभ हुआ,
आधुनिक विज्ञान जितनी राहत प्रदान कर सकता था, उतनी ही राहत मिली।
मेरी भीषण पीड़ा या असहनीय दर्द में
मैंने अपनी सड़ती हुई हड्डियों से जीवित मांस को नोंचकर खाया।
मैं अकेला और भूखा ही शत्रु के सामने खड़ा हुआ।
बेहद कायर लोग जिन्होंने दूर से गोली चलाई।
बुखार की भीषण गर्मी तेजी से बढ़ने लगी,
मुझे असहनीय यातना देने के लिए।
मेरी प्यासी जीभ ने व्यर्थ ही उस खुले घाव को चाटा।
जिसमें क्रूर कीड़ों ने अपना घिनौना काम किया।
मेरे जीवन-रक्त को विषैला बना रहा था, जबकि लार अपनी उपचार शक्ति को नकार रही थी।
पानी की कमी के कारण, मैंने केवल एक ठंडा पेय ही मांगा।
अब सब खत्म हो गया है, मेरे सारे दुख समाप्त हो गए हैं।
मैं वैसे ही मरा जैसे मैं जिया था, उग्र और अकेला।
वीर, अजेय; किसी भी मानव शत्रु के लिए गर्व का विषय नहीं।
यह मुझे अपनी उपलब्धि के रूप में दावा कर सकता है।
किसी मचान, स्पॉटलाइट, बकरी या पीटने वाले से नहीं
क्या मैं नीचा साबित हुआ; कायरतापूर्ण चतुराई!
चार घावों के साथ मैं कहीं ज्यादा तेज था
उन लोगों की भीड़ की तुलना में जिनमें मेरी अदम्यता का अभाव था। शायद भाग्य की इच्छा हो कि मैं उनसे मिलूँ
मेरे दो शिकार, अगर ऐसा है तो मैं गर्व से ऐसा करूंगा
उनका सम्मान करो, जैसे वे मेरा सम्मान करेंगे, क्योंकि हम तीनों ही एकमात्र हैं।

सौ जीवित प्राणियों में से, जो डटे रहे और मर गए।
मेरे पिताजी की पसंदीदा शिकार कहानियों में से एक ह्यू के भाई आर्थर प्लंकेट के बारे में थी। आर्थर और उनके भाई जॉर्ज, जो मेरे पिताजी से बड़े थे, ह्यू के देहांत के बाद हमारी कई यात्राओं में लगातार साथी रहे और वे मेरे पिताजी को अपना आदर्श मानते थे। ह्यू आदमखोर जानवरों के शिकार में अपनी निडरता के लिए जाने जाते थे और वे अक्सर उन्हीं की तरह शिकार करने के लिए चारा लेकर बैठ जाते थे। लेकिन आखिरी क्षण में उनका साहस जवाब दे जाता था और अंततः चारा मालिक को भारी नुकसान पर वापस बेचना पड़ता था। आर्थर, जो दोनों भाइयों में अधिक साहसी थे, को लगता था कि चूंकि वे अक्सर बैंगलोर के पास स्थित एंचेटी जैसी जगहों पर जाते थे, इसलिए उनमें बाघ या तेंदुआ का शिकार करने का साहस नहीं था। इसलिए उन्होंने मेरे पिताजी से हैदराबाद राज्य में व्यवस्था करने का अनुरोध किया, जो घर से काफी दूर था, ताकि उन्हें शिकार करने के लिए आवश्यक साहस मिल सके। तो, पिताजी ने अपने मित्र, चामाला स्टेशन मास्टर से बात करके सारी व्यवस्था कर दी और आर्थर बहुत उत्साहित होकर वहाँ पहुँच गए। हालांकि, जैसे-जैसे शाम ढलती गई, उसे एहसास हुआ कि शायद उसे थोड़ी सी शराब पीकर अपना साहस थोड़ा सा बढ़ाना चाहिए। "बस एक छोटा चम्मच," उसने खुद को आगाह करते हुए कहा और जल्दी से उस तेज महुआ शराब को गटक लिया।
“शायद बस एक और, रास्ते के लिए,” उसने एक घंटे बाद कहा। जब वह और उसका चेंचू ट्रैकर मचान के लिए निकले, तब तक वह बहुत खुश था। जल्द ही अंधेरा होने लगा, लेकिन आर्थर का ध्यान केंद्रित था, उस शक्तिशाली मिश्रण ने उसके दृढ़ संकल्प को और भी मजबूत कर दिया था। लगभग पाँच मिनट में, उन्हें अपने पेड़ के ठीक नीचे सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी और आर्थर को अपनी किस्मत पर विश्वास नहीं हुआ। वह इतना आश्वस्त था कि उसे अपनी टॉर्च जलाने की भी ज़रूरत नहीं पड़ी; उसने आत्मविश्वास से गोली चलाई और वह काली आकृति बेजान होकर ढेर हो गई। आर्थर बहुत खुश था, और शराब और अपने पहले बाघ को मारने के नशे में वह इतना चूर था कि गहरी नींद में सो गया। वह अकेला नहीं था, क्योंकि उसका साथी, जो पूरी शाम संदिग्ध रूप से शांत था, वह भी गहरी नींद में सो गया। हालांकि, चेंचू सुबह होते ही उठ गया और अपने मालिक को जगाकर उसे वह बाघ दिखाया जिसे पिछली रात मारा गया था। आर्थर चौंककर उठा, और अपनी

दहशत और शर्मिंदगी के साथ यह महसूस किया कि उसने गलती से भैंस को गोली मार दी थी!
पिताजी की शादी महज उन्नीस साल की उम्र में हो गई थी, इसलिए माँ उनके ज्यादातर सफरों में हमेशा उनके साथ रहती थीं। फिर जून और मैं भी उनके साथ जुड़ गए, और यह एक पारिवारिक सफर बन गया। हम एक जगह तक कार या ट्रेन से जाते और फिर बैलगाड़ी से सफर करते। मुझे नहीं पता पिताजी उन दूरदराज और अनजान जगहों को कैसे ढूंढ लेते थे, लेकिन वे उन जगहों के बारे में बड़ी-बड़ी कहानियां सुनाते थे और हमारे लिए सफर को बेहद रोमांचक बना देते थे। ट्रेन या कार का सफर रात में होता था और भोर होते ही हम आखिरी पड़ाव दो बैलों द्वारा खींची जाने वाली एक ढकी हुई गाड़ी से तय करते थे। यह साधारण गाड़ी ऊंचे पहियों पर बने एक चौड़े चबूतरे से ज्यादा कुछ नहीं थी, जो पूरी तरह चटाइयों से ढकी होती थी। चबूतरे पर पुआल बिछाकर कंबल बिछाए जाते थे और बक्से किनारे पर बांधकर रखे जाते थे। बड़े लकड़ी के पहिये मजबूत तो थे, लेकिन एक छोटा सा पत्थर भी जोर का झटका देता था और सफर आरामदायक नहीं होता था। बैलगाड़ी चलाने वाला अपने बैलों के पिछले हिस्से के पास बैठता था, और मैं हमेशा उसके बगल में बैठने की जिद करती थी, क्योंकि इससे मुझे खास महसूस होता था। बैलों से बात करने के उसके तरीके में "होह-होह", "टॉक-टॉक" और जीभ से निकलने वाली अन्य अजीब आवाज़ों की एक जटिल प्रणाली शामिल थी, जिसमें चाबुक चलाना, थप्पड़ मारना, पूंछ मरोड़ना, पैर की उंगलियों में गुदगुदी करना और ज़ाहिर तौर पर गाली-गलौज करना शामिल था। ऐसा लगता था कि बैलों को समझ ही नहीं आता था कि क्या करें, जब तक कि उनके मालिक उन्हें किसी तरह की शारीरिक सज़ा न दे दें। ये बुद्धिहीन लेकिन मज़बूत जानवर आश्चर्यजनक रूप से सहनशक्तिवान होते हैं और लगभग तीन मील प्रति घंटे की अच्छी रफ़्तार से दौड़ सकते हैं, और बीच-बीच में रुक-रुक कर अच्छी दूरी तय कर सकते हैं।

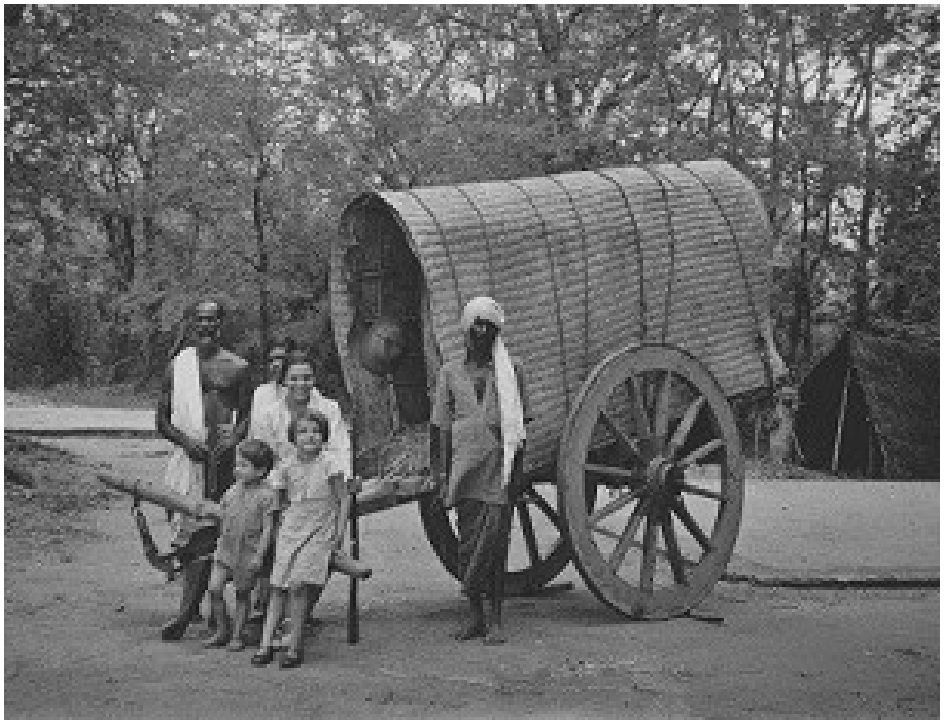

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ **1937**

□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□, □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□, □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□, □□□ 6:00 □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□, □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□, □□ □□□-□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□

□□□□□□□ □□□□-□□□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□-□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□, □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□

है, और मेरे मामले में भी ऐसा ही था। जंगलों में घूमना हमारा पसंदीदा काम था और इसी वजह से मैं उनके बहुत करीब आ गया। स्पाइडर वैली और देवराबेट्टा जंगल की सैर के लिए हमारी खास पसंदीदा जगहें थीं। कभी-कभी वे मुझे शुक्रवार शाम को स्कूल से लेने आते, हम तीन-चार घंटे गाड़ी चलाते, फिर दो- तीन घंटे पैदल चलते, अपना कैंप लगाते, वन्यजीवों को देखते, कभी-कभी थोड़ा- बहुत शिकार भी करते, और रविवार को यही सब दोहराते। फिर हम रविवार देर शाम को निकलते, सुबह जल्दी बेंगलुरु वापस आ जाते, और मैं तैयार होकर स्कूल चला जाता। यह बहुत मुश्किल था, खासकर जब मैं छोटा था। हालांकि वे शांत स्वभाव के व्यक्ति थे और लगभग कभी गुस्सा नहीं करते थे, लेकिन जब बात हमारी सैर की आती थी तो वे बहुत सख्त हो जाते थे। जब हमने जंगलों में चलना शुरू किया तब मैं लगभग आठ या नौ साल का था, और मुझसे भी उन्हीं की तरह कठिन परिस्थितियों का सामना करने की उम्मीद की जाती थी। मुझे अपना थैला खुद उठाना पड़ता था, और हालाँकि वह उसके थैले से काफी छोटा था, फिर भी थोड़ी देर बाद मेरी पीठ में दर्द होने लगता था। मैं कुछ नहीं कहती, बस उसे अपने सिर पर और फिर अलग-अलग हाथों पर रखती जाती, जब तक कि मैं उसे और उठा नहीं पाती। हम हाथियों से सामना कम करने के लिए सुबह होते ही चलना शुरू कर देते थे, लेकिन जल्द ही असहनीय गर्मी हो जाती और आखिरकार हमारा पानी खत्म हो जाता। शुरू में शिकायतें जल्द ही आँसुओं में बदल जातीं, लेकिन इन सब बातों से न तो उसे कोई फर्क पड़ता और न ही हमारी चलने की गति पर। मुझे याद नहीं कि उसने कभी ऐसे समय में अपना आपा खोया हो, लेकिन मेरे विरोध का जवाब वह तर्कसंगत सवालों से देता था।
“मैं अब और नहीं चल सकता, पिताजी। बस बहुत हो गया।”
“तुम्हारा मतलब क्या है कि तुम अब चल नहीं सकते? क्या तुम पूरा दिन यहीं बैठे रहोगे? मीलों दूर तक कोई नहीं है, और मैं तुम्हारे ठीक होने का इंतज़ार करते हुए यहाँ नहीं बैठूंगा। मुझे एक रोमांचक यात्रा पर जाना है, क्या तुम उसमें शामिल होना चाहोगे?”
वह चले जाते, और मेरे पास उनके पीछे-पीछे थके हुए कदमों से चलने के अलावा कोई चारा नहीं होता। और इस तरह, मैं लगभग एक घंटे तक चलता रहता, जब तक कि यह पूरी प्रक्रिया दोहराई नहीं जाती। न तो कोई दुलार होता, न ही कोई तारीफ। उन्होंने कभी मुझ पर आवाज़ नहीं उठाई या मुझे पीटा नहीं, लेकिन वे कई अन्य मामलों में बेहद सख्त थे।

□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□-□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□

सैद्धांतिक पाठ नहीं था। जंगल के बारे में हर छोटी से छोटी बात मुझे जंगल में ही सिखाई जाती थी और हम लगभग हमेशा पैदल ही चलते थे। उन्हें हर जानवर के व्यवहार और लगभग हर पक्षी के गीत की जानकारी थी। वे सभी जीवित प्राणियों से प्रेम करते थे, न केवल अकादमिक दृष्टिकोण से बल्कि वास्तव में।

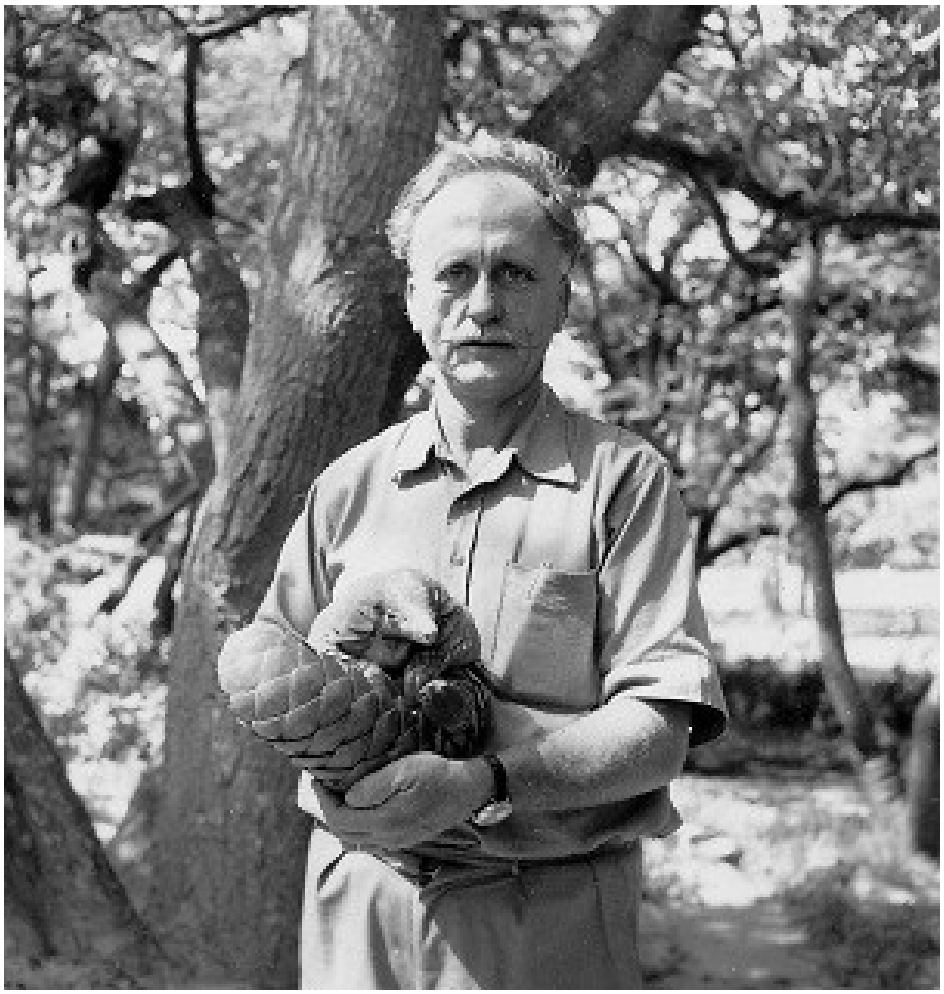

पालतू पैंगोलिन

पिताजी के लिए, रेंगने वाले जीव जितने अधिक डरावने होते थे, उन्हें उतनी ही खुशी मिलती थी, और वे मानो पशु जगत के कमजोरों के रक्षक थे। हालाँकि जून और मुझमें ठंडे खून वाले जीवों को पसंद करने का यह गुण कभी नहीं आया, फिर भी हमने छोटे मगरमच्छों, इगुआना और कई तरह के साँपों को छुआ और चार-पाँच साल की उम्र तक सरीसृपों का हमारा डर खत्म हो गया था।

वह लगभग सभी जनजातियों से बातचीत कर सकते थे और जंगल में उनका स्वभाव बेहद सहज होता था। उन्होंने पंद्रह साल टेलीग्राफ कार्यालय में बिताए और फिर अपनी मृत्यु तक एचएएल में काम किया। एंग्लो-इंडियन समुदाय के सभी लोग उन्हें अच्छी तरह जानते थे, खासकर व्हाइटफील्ड में रहने वाले लोग। हालांकि, उनकी सनक और इंसानों से ज़्यादा जानवरों के प्रति उनके लगाव के कारण वे उतने लोकप्रिय नहीं थे। फिर भी, वे बहुत दयालु और नेक दिल इंसान थे। हालांकि उन्हें गुस्सा आ जाता था, लेकिन मुझे याद नहीं कि उन्होंने कभी छड़ी का इस्तेमाल किया हो - यह काम तो माँ का था, क्योंकि वह बहुत गुस्सैल और सख्त थीं। बड़ों के लिए उनके पास समय नहीं था, लेकिन उन्हें जानवर और बच्चे बहुत प्यारे थे, खासकर जून और मेरे दोस्तों के। जब हम बहुत छोटे थे, तो हम उनकी इसी कमजोरी का फायदा उठाकर उन्हें फिल्में दिखाने ले जाते थे। हालांकि, वे इतने कंजूस थे कि वे हमें बताते थे कि हम अपनी पसंद के सिर्फ दो दोस्तों को ला सकते हैं और वे हम सबको दोपहर के शो में ले जाते थे। वह अपने पैसे बड़े ध्यान से गिनता, पूरा छुट्टा रखता और हमेशा तब अचंभित हो जाता जब अचानक तीन-चार बच्चे बिना किसी कारण के वहाँ आ जाते। अपनी बेशर्मी के चलते, वह हर किसी से अपने टिकट का भुगतान करने को कहता। और फिर बच्चे एक साथ चिल्लाने लगते।
“श्री एंडरसन, हमारे पास पैसे नहीं हैं।”
और आखिरकार उसे ही बिल चुकाना पड़ता था, लेकिन वह बार-बार जोर-जोर से कहता रहता था कि उसने सबके लिए बिल चुका दिया है। यह सिर्फ फिल्मों तक ही सीमित नहीं था, जब हम डोसा, आइसक्रीम और अन्य स्नैक्स खाने बाहर जाते थे तो वह कई बच्चों के लिए भी बिल चुका देता था।
एक मजेदार घटना से पता चलता है कि वह कितने कंजूस थे। एक बार जहर निकालते समय एक कोबरा ने पिताजी को काट लिया। मैं घर पर नहीं था, इसलिए उन्होंने पट्टी बांधी और मेरी माँ ने संक्रमित खून चूसकर थूक दिया। मानो इस सारी अफरा-तफरी और उत्तेजना के बीच, माँ भाग गईं, एक रिवाल्वर लेकर वापस आईं और किसी के कुछ समझ पाने से पहले ही कोबरा को गोली मार दी। मेरे पिताजी बहुत दुखी हुए, इसलिए नहीं कि उन्हें साँप से प्यार था, बल्कि इसलिए कि अगर हमने उसे नहीं मारा होता तो वह हमारे लिए आमदनी का जरिया बना रहता! उन्हें अस्पताल ले जाया गया जहाँ जहर रोधी दवा की एक खुराक से वे ठीक हो गए। डॉक्टर को पता नहीं था कि कितनी खुराक देनी है और पिताजी को बहुत तेज़

खुराक दे दी गई, जिससे उनकी जान तो बच गई, लेकिन वे लगभग एक हफ्ते तक बहुत बीमार रहे।
कई वर्षों तक, टेलीग्राफ विभाग में काम करते हुए, उनका वेतन 100 रुपये प्रति माह था। मुझे लगता है कि यह एक अच्छी रकम थी क्योंकि हमारा जीवन यापन आलीशान था। कई नौकर-चाकर, ढेरों पालतू जानवर, जिनमें से अधिकांश के लिए अलग-अलग खाने की थालियाँ थीं, और अन्य सभी घरेलू खर्चे उसी आय से पूरे होते थे। 1956 में उन्होंने नौकरी बदल ली और बैंगलोर स्थित ब्रिटिश एयरक्राफ्ट कंपनी में ड्राफ्टिंग विभाग में काम करना शुरू किया और बाद में योजना विभाग में फैक्ट्री मैनेजर बन गए। राष्ट्रीयकरण के बाद संगठन का नाम बदलकर हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड हो गया। उन्होंने 1974 की शुरुआत में कैंसर का पता चलने तक वहीं काम किया।

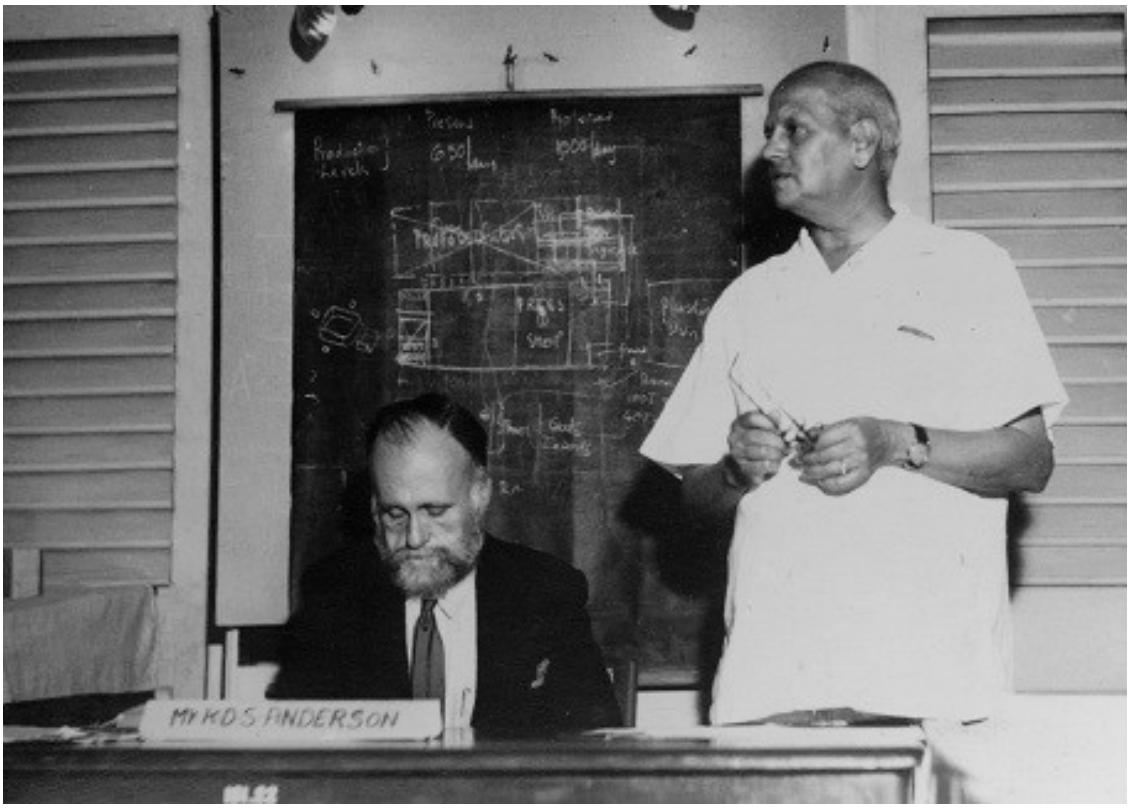

एच.ए.एल. दिन

भारत में रहने वाले अधिकांश ब्रिटिश पासपोर्ट धारकों की तरह, उन्हें भी 1947 में एक चुनाव करना पड़ा। जहाँ उनमें से अधिकांश को यह आशंका थी कि नई मिली आज़ादी के चलते उन्हें प्रतिशोध का सामना करना पड़ेगा या कम से कम

भारतीय जनता द्वारा बहिष्कृत कर दिया जाएगा, वहीं पिताजी को ऐसी कोई आशंका नहीं थी। यद्यपि वे दोराही थे, उनका दिल भारत और यहाँ की जनता से जुड़ा था और वे इस बारे में खुलकर बात करते थे। स्वतंत्रता दिवस पर, सभी श्वेत लोगों को घरों में बंद कर दिया गया और उन्हें बाहर न निकलने के सख्त निर्देश दिए गए। हमेशा कुछ शरारती तत्व होते हैं जो ऐसी स्थितियों का फायदा उठाते हैं और अधिकारी कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। आखिरकार, लगभग 200 वर्षों के बाद उन्हें आज़ादी मिली थी।
“मैं कायर की तरह अंदर क्यों बैठा रहूँ?” उन्होंने ऊँचे स्वर में कहा और हम सब को चौंकाते हुए बाहर चले गए। वे काफी देर तक बाहर रहे और मेरी माँ लगातार बाहर देखती रहीं, मानो उन्हें उम्मीद हो कि कोई उन्हें विधवा होने की खबर देगा। जब वे वापस आए, तो उनके सिर पर मालाएँ थीं। जाहिर है, लोगों के एक समूह ने उन्हें घेर लिया था और उनसे पूछा था कि भारत की स्वतंत्रता के बारे में उनका क्या विचार है। पिताजी ने शुद्ध तमिल में उत्तर दिया कि यह अंग्रेजों द्वारा लिया गया अब तक का सबसे अच्छा निर्णय था। भीड़ ने तालियाँ बजाईं, उनके सिर पर मालाएँ डालीं और उन्हें एमजी रोड पर अपने कंधों पर उठाकर घुमाया!
जहां अधिकांश यूरोपीय लोगों को प्रतिशोध के डर से देश छोड़ना बेहतर लगा, वहीं एंग्लो-इंडियन समुदाय दुविधा में था। यहां तक कि जो लोग देश छोड़ना चाहते थे, उनके लिए भी अपने वंश को साबित करने वाले सही दस्तावेज़ प्राप्त करना एक चुनौती थी और उनके पास रुकने के अलावा कोई वास्तविक विकल्प नहीं था। फिर मेरे पिताजी जैसे मामले भी थे, जिनके पास ब्रिटिश पासपोर्ट और विदेश जाने के लिए पर्याप्त धन होने के बावजूद, उन्होंने भारत में ही रहने का विकल्प चुना। हमने उत्तर भारत में कहीं मैक्लुस्कीगंज के बारे में सुना था, जो एंग्लो-इंडियनों के लिए स्वर्ग जैसा था, लेकिन मुझे लगता है कि यह कलकत्ता और उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के लिए ही था, इसलिए बैंगलोर में किसी ने भी इसे गंभीरता से नहीं लिया। वास्तव में, मेरे पिताजी किसी भी प्रकार के नस्लीय भेदभाव के घोर विरोधी थे।
मैं अलगाव का विरोधी था और हमेशा एक समरूप समाज में रहने में विश्वास रखता था, और मैं इसका श्रेय उस समय के बैंगलोर के उदारवादी रवैये को दूंगा।
हर पीढ़ी अपनी अगली पीढ़ी की आलोचना करती है, अक्सर अपने फैसलों को सही ठहराते हुए गर्व महसूस करती है और "पुराने अच्छे दिनों" के गायब होने का

बिताए गए समय या उन छोटे जीवों की कद्र नहीं करते जिन्हें वे बिना दूसरी नज़र डाले ही अनदेखा कर देते हैं। लोग भले ही अपनी भागदौड़ भरी जिंदगी और उन पर थोपे गए नियमों की शिकायत करें, लेकिन यह उनके व्यवहार का कोई बहाना नहीं है और अगर मेरे पिताजी जीवित होते, तो वे उन्हें खूब खरी-खोटी सुनाते। पिताजी के साथ जंगल की सैर करना बेहद रोमांचक होता था। अक्सर हम किसी बस्ती में पहुँच जाते, जहाँ हम पानी भरते और आस-पास के जानवरों की गतिविधियों के बारे में जानकारी जुटाते। वहाँ के निवासियों का जीवन रागी, जंगली साग, जड़ और जंगली फलों पर निर्भर था, जो उनके पास बांटने के लिए कभी पर्याप्त मात्रा में नहीं होते थे। हम जानते थे कि उनकी तंगहाली से बस्ती में रहने वाले कुछ परिवारों का पेट भरता था, इसलिए हमने कभी भोजन मांगने के बारे में नहीं सोचा। हमारे खाने के डिब्बे में विंदालू जैसी मांसाहारी करी, डिब्बाबंद मक्खन, रोटी, अचार, गाढ़ा दूध और चपातियाँ होती थीं। जब हम खाते थे, तो भरपेट खाते थे, हमेशा खुद को यही समझाते थे कि खाना बाहर खराब होने की बजाय शरीर के अंदर ही बेहतर है। इस सोच के साथ, यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि हमारा राशन जल्दी खत्म हो जाता था। तो, हम जंगली मुर्गे, खरगोश या चूहे जैसे हिरण जैसे छोटे जानवरों का शिकार करते थे या उन्हें फंसाते थे, जो संयोगवश स्वादिष्ट होते हैं और लगभग हिरण के मांस के बराबर होते हैं। अगर हमें किसी गाँव या बस्ती के लिए मांस की आपूर्ति करनी होती, तो हम बड़े जानवरों को निशाना बनाते, जिनमें जंगली सूअर और सांभर हमारी पहली पसंद होते। बेशक, अगर यात्रा की योजना बेहतर होती, तो हम पिता-पुत्र द्वारा बनाए गए विंदालू व्यंजन को बनाने की कोशिश करते। हमारा खाना पकाने का तरीका बिल्कुल वैसा ही था जैसा हम जंगलों में घूमते थे - सहज प्रवृत्ति से, और जीरा, धनिया और मिर्च पाउडर की सही मात्रा, अदरक, लहसुन और बोरी में जो कुछ भी होता था, उसे मिलाकर हमेशा एक लाजवाब व्यंजन बन जाता था, हालांकि शायद उतना स्वादिष्ट नहीं जितना हमने सोचा था।

घूमिंग

मेरे पिताजी की कुछ किताबों में जंगली पक्षियों को पकाने का ज़िक्र है। मेरी राय में, अच्छी तरह से पकाए गए नर लाल जंगली मुर्गे के स्वाद का कोई मुकाबला नहीं। यह एक शानदार पक्षी है जिसकी मधुर आवाज़ दिन की शुरुआत के लिए जोश भर देती है। यह बेहद चालाक होता है और किसी भी शिकारी के लिए इसे पकड़ना एक बड़ी चुनौती होती है। मेहनत ज़रूर रंग लाती है, क्योंकि घरेलू मुर्गे के मांस से ज़्यादा सख्त होने और लगभग न के बराबर चर्बी होने के बावजूद यह बेहद स्वादिष्ट होता है। एंडरसन परिवार का पसंदीदा व्यंजन स्मोक्ड पोर्क था। खून निकल जाने के बाद सूअर के मांस के टुकड़ों को मसालों से संरक्षित करके बंगले की रसोई से सटे पेंट्री में सुखाने के लिए लटका दिया जाता था। हिरण के मांस के लिए भी यही प्रक्रिया अपनाई जा सकती है। अगर आपके पास जंगल के गेस्ट हाउस में रहने की सुविधा नहीं है और आप खुले में हैं, तो भी आप ऐसा कर सकते हैं। एक बंद ढांचा बनाएं और बीच में आग जलाएं। चूंकि इसका उद्देश्य गर्मी से नहीं बल्कि धुएं से इसे संरक्षित करना है, इसलिए आग बहुत बड़ी होने की ज़रूरत नहीं है। लकड़ी का चुनाव सावधानी से करना चाहिए, और आदर्श रूप से थोड़ी हरी लकड़ी ठीक रहती है। मांस

मेरे कमरे में आज जो पापा की तस्वीर लगी है और जो मशहूर हो गई है, उसकी एक दिलचस्प कहानी है। सत्तर के दशक की शुरुआत में जब मैं बिन्नीज़ में काम करता था, तब कॉर्डेल एक प्रतिद्वंद्वी ब्रांड था। जब उन्होंने शर्ट की एक नई लाइन लॉन्च की, तो वे "सस्ते और हो सके तो मुफ्त" ब्रांड एंबेसडर की तलाश में थे, जो मॉडल बन सकें। उन दिनों अखबारों में नाम आना बहुत बड़ी बात होती थी और यही उनका सेल्स पिच था। उनके कपड़ों की नई लाइन उन पुरुषों के लिए थी जो आउटडोर एक्टिविटीज़ पसंद करते थे और उन्हें रफ एंड टफ लुक चाहिए था। बैंगलोर के योग्य पुरुषों में मैं स्वाभाविक पसंद था, लेकिन मैंने मना कर दिया क्योंकि कॉर्डेल बिन्नीज़ का प्रतिद्वंद्वी था। हालांकि, मैंने कॉर्डेल वालों को मना लिया कि मेरे पापा को मॉडल बना लें। ज़ाहिर है, उन्हें यह पसंद नहीं आया क्योंकि वे कभी भी किसी भी मौके पर सजने-संवरने वाले नहीं थे। दरअसल, उन्होंने जून की शादी में लुंगी पहनकर आने का लगभग फैसला कर लिया था, क्योंकि उनका मानना था कि किसी को भी यह तय करने का अधिकार नहीं है कि उन्हें किसी समारोह में क्या पहनना चाहिए, सामाजिक मर्यादा चाहे जो भी हो। जून ने अचानक आकर जितना आंसू बहाए, उससे उनका मन बदल गया और सबसे ज़रूरी बात, उनके कपड़े भी बदल गए। सौभाग्य से, मुझे वही तरकीबें नहीं अपनानी पड़ीं, और व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो यह असंभव ही था, लेकिन मैंने उनके अहंकार को सहलाया और उन्हें मिलने वाली प्रसिद्धि का ज़िक्र किया, और आखिरकार वे मान गए। हालांकि, जब हम वहाँ पहुँचे, तो पता चला कि वे चाहते थे कि वे सफेद कमीज़ पहनें और राइफल पकड़े रहें। घर से निकलते समय ही उनका मूड खराब था क्योंकि यह सर्वसम्मति से तय हो गया था कि उनकी.405 राइफल इस शिकार के लिए बहुत पुरानी हो चुकी है, और मेरी राइफल का इस्तेमाल किया जाएगा। "अरे बेवकूफों, क्या तुम्हें नहीं पता कि सफेद कपड़े पहनकर जंगल में जाने की हिम्मत सिर्फ एक पूरा बेवकूफ ही करेगा?" जब उन्हें दूसरी बुरी खबर मिली तो वे चिल्लाए। दुर्भाग्य से, उनकी सारी बातें अनसुनी रह गईं क्योंकि उन्होंने तय कर लिया था कि उन्हें कौन सी कमीज़ चाहिए, और बेचारे पिताजी को एक असली शिकारी की छवि को गलत तरीके से पेश करने की शर्मिंदगी झेलनी पड़ी। उनका गुस्से से भरा चेहरा उस दिन उनके मूड का सच्चा प्रतिबिंब था।

□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□

□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ 9:00 □□ □□□ □□, □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□, □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□, □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□□□□ □□

तीन को लगभग एक साथ खड़े देखना एक बहुत ही अनोखा नज़ारा था। हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी, और हालाँकि रात ज़्यादा अंधेरी नहीं थी, मुझे नहीं लगता कि उन्हें हमारी मौजूदगी का एहसास हुआ होगा। हम बिना हिले-डुले खड़े रहे, लेकिन कुछ मिनटों बाद वे बेचैन होने लगे। वे हल्की-हल्की फुफकार जैसी आवाज़ें निकाल रहे थे और अपने कान फड़फड़ा रहे थे। ये कोई खतरे के संकेत तो नहीं थे, लेकिन वे बेचैन हो रहे थे। फिर, लगभग एक साथ, उन्होंने अपनी सूंडें उठाना शुरू कर दिया, मानो अभिवादन कर रहे हों। यह सर्कस के हाथियों के अभिवादन जैसा नहीं था, बल्कि कान फड़फड़ाने और सूंड घुमाने वाला अभिवादन था, और उनमें से तीन को एक साथ खड़े होकर ऐसा करते देखना एक अद्भुत नज़ारा था। फिर वे मुड़कर झाड़ियों की छाया में गायब हो गए। मुझे बहुत खुशी हुई, लेकिन उन पर इसका उल्टा असर हुआ।
“मैं वापस जाना चाहता हूँ,” उसने दबे स्वर में कहा। मुझे जिज्ञासा हुई, लेकिन मैंने उस समय कुछ न बोलने का फैसला किया। हम धीरे-धीरे वापस चलने लगे, और वह झोपड़ी के फर्श पर बिछी अपनी चटाई पर लेट गया और ऊपर देखने लगा। “यह एक संकेत है डॉन, यहाँ तक कि हाथी भी जानते हैं कि मेरे दिन गिने-चुने हैं।” मैंने इस टिप्पणी पर उपहास किया, लेकिन उनके पास हमेशा से ये पूर्वाभास या “छठी इंद्री” होती थी, जैसा कि वे अपनी किताबों में लिखते हैं, और मुझे अपने भीतर एक भयानक आशंका महसूस हो रही थी।
साठ के दशक के उत्तरार्ध में, पिताजी को एहसास हुआ कि भारतीय जंगलों के उनके अद्भुत ज्ञान का उपयोग धन कमाने के लिए किया जा सकता है और संभवतः वे बैंगलोर में वन्यजीव पर्यटन के अग्रदूतों में से एक थे। वे अपने साथ ले जाने वाले लोगों के चयन में काफी सावधानी बरतते थे; वे आमतौर पर विदेशी, विशेषकर अमेरिकी होते थे, और इस तरह उन्होंने आय का एक छोटा-मोटा स्रोत बना लिया। यह कुछ वर्षों तक चलता रहा, और अचानक 1972 के अंत में एक दिन, वे एक यात्रा पर जाने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन जब वे उस सुबह उठे, तो उन्होंने कहा कि वे जाना नहीं चाहते। उन्होंने इसका कोई कारण नहीं बताया, लेकिन मैं जानती थी कि कुछ होने वाला है, कुछ ऐसा जिसे हममें से कोई भी, यहाँ तक कि वे भी, समझा नहीं सकते थे। फिर वे अचानक फूट-फूटकर रोने लगे। वे इतने दुखी थे कि उन्हें दिलासा देना मुश्किल था और यह देखते हुए कि वे कभी भी किसी बात पर नहीं रोते थे, हम भी परेशान हो गए। उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया, और मुझे उनसे पूछने का मौका भी नहीं मिला, लेकिन मुझे यकीन है कि जिस दिन

कैंसर कोशिकाएं फैलनी शुरू हुईं, उसी दिन उन्हें इसका एहसास हो गया था। वे लगभग एक सप्ताह तक अवसादग्रस्त रहे, और फिर लक्षण दिखने शुरू हो गए। उनके मल और मूत्र में खून आता था (उन दिनों हमारे यहाँ सूखे शौचालय हुआ करते थे) और बैंगलोर के सेंट मार्था अस्पताल में उन्हें कैंसर होने का पता चलना तय था। उनके डॉक्टर डॉ. जोसेफ एंटनी थे, जो बैंगलोर के प्रमुख मूत्र रोग विशेषज्ञों में से एक थे। कुछ आक्रामक उपचार के बाद ऐसा माना गया कि बीमारी नियंत्रण में आ गई है, लेकिन छह महीने बाद ही खून बहना और दर्द फिर से शुरू हो गया, और हमें उन्हें विकिरण चिकित्सा के लिए वेल्लोर ले जाने की सलाह दी गई, जहाँ हमें लगता था कि ऑन्कोलॉजी विभाग बेहतर है। मैं उस समय बिन्नी के साथ काम कर रहा था, और एक
पूरे हफ्ते वर्कशॉप में काम करने के बाद, मैं शुक्रवार शाम को निकल जाता, आधी रात को वेल्लोर पहुँचता और अपनी कार में सो जाता क्योंकि अस्पताल मुझे उस समय अंदर नहीं जाने देता था। फिर सुबह जल्दी उठकर मैं दवाइयाँ और टेस्ट के नतीजे लेता, डॉक्टरों से मिलता और ज़ाहिर है, उनके साथ समय बिताता। उन्हें हर वो खबर जाननी होती थी जो उन्हें नहीं मिल पा रही थी। वो लोगों के बारे में कम ही पूछते थे, उन्हें सिर्फ अपने पालतू जानवरों और जंगलों की खबरों में ही दिलचस्पी होती थी। सभी बूढ़े लोगों और ज़्यादातर मरीज़ों की तरह, वो मेरे लिए हर मुमकिन मुश्किल खड़ी करते थे। एक बार जब मैं वहाँ था, उन्हें बहुत तेज़ बुखार था और डॉक्टर ने मुझे हर तीन घंटे में उन्हें जगाकर ठंडी पट्टियाँ लगाने और दवाइयाँ देने के लिए कहा था। लगातार काम करने और गाड़ी चलाने के बाद मैं इतना थक जाता था कि कुछ मौकों पर मैं ये करना भूल जाता था। ज़ाहिर है, वो मौका नहीं छोड़ते थे। उनके पास दवाइयाँ और पट्टियाँ तैयार रहती थीं, लेकिन खुद लगाने के बजाय, वो मुझे जगाकर लगाने के लिए कहते थे।
वेल्लोर के विशेषज्ञों ने कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने के लिए मूत्राशय के उन हिस्सों पर कोबाल्ट विकिरण का प्रयोग शुरू किया, जहाँ कैंसर फैल चुका था। ज़ाहिर है, इससे कई समस्याएँ उत्पन्न हुईं और उन्हें हर रात अत्यधिक रक्तस्राव होने लगा। सुबह की किरणें जमे हुए खून पर पड़तीं - चादरों, गद्दों, कपड़ों और शरीर पर खून ही खून होता, जो एक भयावह दृश्य था। यह लगभग एक कविता जैसा था कि वे किसी आदमखोर के हमले से बचे पीड़ित की तरह दिखते थे, ठीक वैसे ही लोगों की रक्षा उन्होंने जीवन भर की थी। अस्पतालों

में कर्मचारियों का मरीजों के प्रति सहानुभूति दिखाना आम बात नहीं है और सीएमसी भी इसका अपवाद नहीं था। रेडियोलॉजिस्ट बेहद शत्रुतापूर्ण था और पिताजी द्वारा उसकी कार्यप्रणाली पर लगातार सवाल उठाने से उसका रवैया और भी बिगड़ गया। एंडरसन परिवार कमज़ोर नहीं है और कुछ घटनाओं के बाद जब समझदारी से काम लिया गया, तो एक दिन पिताजी एक मामूली बात पर नाराज़ होकर अस्पताल छोड़कर चले गए। वह टैक्सी में बैठकर अचानक घर आ गया, और वेल्लोर वापस जाने से ही नहीं, बल्कि किसी भी तरह का इलाज करवाने से भी इनकार कर दिया। हम सबको उसे यह समझाने में एक हफ्ते से ज़्यादा समय लग गया कि उसे चिकित्सीय सहायता की ज़रूरत है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हममें से किसी को भी दिल से यह यकीन था कि कोई भी इलाज स्थायी समाधान होगा। आखिरकार वह बैंगलोर के सेंट फिलोमेना अस्पताल जाने के लिए राज़ी हो गया, लेकिन तब तक उसे पूरा यकीन हो चुका था कि वह अपनी वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति से कैंसर का इलाज कर सकता है। यह एक मिश्रित चिकित्सा पद्धति थी जिसमें होम्योपैथी, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ और इनके बीच की हर चीज़ शामिल थी। उसने इलाज और मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में और भी ज़्यादा पढ़ना शुरू कर दिया। उसने मुझसे स्वामी और अन्य धार्मिक पुरुषों से आशीर्वाद लेने और बीमारी से लड़ने के लिए कहा, लेकिन स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। कैंसर बेहद आक्रामक था और डॉक्टरों का इलाज भी उतना ही आक्रामक था, जिसके कारण उसके मूत्राशय का बड़ा हिस्सा जल गया और बेकार हो गया। अस्पताल ने दो सुझाव दिए
- या तो छोटी आंत को एक नली के ज़रिए मूत्राशय से जोड़ दिया जाए या बाहर एक थैली लगा दी जाए, जिसे नियमित अंतराल पर खाली किया जा सके। सामाजिक शर्मिंदगी के बावजूद उन्होंने दूसरा विकल्प चुना। हालांकि, अंत में आंतरिक ट्यूब लगवाने का निर्णय लिया गया, और जैसा उन्होंने अनुमान लगाया था, संक्रमण फैल गया और जल्द ही उनके गुर्दे प्रभावित हो गए। तब उन्होंने हमसे उन्हें घर ले जाने की विनती की, और गुहार लगाई कि उन्हें अस्पताल में मरने न दें। कभी-कभी मुझे लगता है कि चार दीवारों के भीतर मरने का डर, मृत्यु के डर से भी बदतर था। उन्होंने कहा कि वे अपनी त्वचा पर सूरज की किरणें और चेहरे पर हवा महसूस करना चाहते थे, वे पक्षियों का गीत सुनना चाहते थे और अपने पालतू जानवरों को छूना चाहते थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे हम सभी से प्यार करते थे, लेकिन वे इसे कभी स्वीकार नहीं करते थे, ठीक वैसे ही जैसे वे प्रकृति के प्रति अपने प्रेम के बारे में बात करते थे।

उनका दिल टूट गया था कि जून उनसे मिलने नहीं आ सकी, और जब वे बेहोशी की हालत में थे, तो वे दर्द से कराहते हुए जून को पुकार रहे थे। दुर्भाग्य से, वह नहीं आ सकीं, और जून को उस हालत में देखे बिना ही उनका देहांत हो गया। कैंसर और विकिरण के कारण उन्हें जो पीड़ा सहनी पड़ी, उसे देखना असहनीय था, लेकिन सबसे ज़्यादा उन्हें घुटन का डर सताता था, और मैं जानती हूँ कि यह डर उन्होंने मुझमें भी भर दिया है। आखिरी ऑपरेशन के दौरान, जब उन्हें ऑपरेशन थिएटर में ले जाया जा रहा था, उनके चेहरे पर ऑक्सीजन मास्क लगा था, और वे बोल नहीं पा रहे थे, लेकिन उनकी आँखों में खौफ साफ झलक रहा था। उनकी आँखों में मानो विनती थी, मानो कह रहे हों, "मुझे अंदर घुटन मत होने देना", और मैं बस असहाय खड़ी रह गई। मेरी आँखों में आँसू भर आए और मुझे बस यही लगा कि अब उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं है। तभी उन्होंने उंगली से मुझे इशारा किया। मुझे पता था कि मैं बस टूटने ही वाली हूँ, तभी उन्होंने कहा, "तुम मेरे लिए एक मजबूत सहारा रहे हो, डॉन। तुम मेरे लिए सब कुछ हो" और फिर उन्हें व्हीलचेयर पर ले जाया गया।
पीछे मुड़कर देखने पर, मुझे याद आता है कि जब मुझे पता था कि वह अपनी मृत्युशय्या पर हैं, तब मुझे उनसे कितनी बातें करनी चाहिए थीं, लेकिन शब्द मेरे मुँह से नहीं निकल रहे थे। इसके बजाय, मैंने बाकी कामों पर ध्यान दिया
- इलाज, आर्थिक मामले और वे सौ अन्य काम जिनमें वह शामिल थे। मैं डरपोक था, मुझे पता था कि अगर मैंने उनकी या अपनी भावनात्मक स्थिति के बारे में बात की तो मैं टूट जाऊँगा, इसलिए मैंने हर कीमत पर इससे बचने की कोशिश की। मुझे नहीं लगता कि वह भी बात करना चाहते थे, लेकिन एक दिन दर्द के एक बेहद बुरे दौर के बाद, उन्होंने मुझे पास बुलाया और कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लिए दो काम करो। तुम्हें धूम्रपान से खुद को मारना बंद करना होगा और तुम्हें शिकार करना छोड़ना होगा।"
मैं दिन में लगभग दो पैकेट सिगरेट पीता था, लेकिन उसे छोड़ना मेरे लिए कोई मुश्किल नहीं था। लेकिन शिकार! मैं अपनी ज़िंदगी की सबसे अहम चीज़, वो चीज़ जिसके इर्द-गिर्द मेरी पूरी ज़िंदगी घूमती थी, जिसके लिए मैंने इतने सारे बलिदान दिए थे, उसे कैसे छोड़ सकता था?
मैंने फिर कभी किसी जीवित प्राणी पर गोली नहीं चलाई।
अंतिम कुछ दिनों में उनका दर्द इतना असहनीय हो गया था कि उन्हें राहत देने के लिए मॉर्फिन देनी पड़ी। यह सब सेंट मार्था अस्पताल में हुआ, जहाँ 14

अगस्त 1974 को उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके पार्थिव शरीर को पहले प्रॉस्पेक्ट हाउस लाया गया और फिर होसुर रोड कब्रिस्तान ले जाया गया। मुझे याद है कि अंतिम दिनों में हमारी इस बात पर बहुत बहस हुई थी कि उनकी समाधि पर क्या लिखा जाए। वे अपनी बात पर अड़े रहे और कुछ ऐसा लिखवाना चाहते थे, "यहाँ केनेथ एंडरसन लेटे हैं, जो वेल्लोर के अयोग्य डॉक्टरों की वजह से विकिरण से जलकर मर गए।" लेकिन हमने उनकी बात अनसुनी कर दी और कुछ ऐसा लिखवाया जो कहीं कम भड़काऊ था! ईश्वर में कभी विश्वास न करने वाले व्यक्ति के लिए, वे अपने अंतिम दिनों में अत्यंत धार्मिक हो गए थे। वे हमेशा आत्माओं और अज्ञात ऊर्जा में विश्वास करते थे, लेकिन वे कभी भी इसे ईश्वर से जोड़ने के लिए खुद को राजी नहीं कर पाए। दरअसल, बचपन के समय को छोड़कर, वह कभी चर्च नहीं गए, लेकिन अपने जीवन के अंतिम कुछ महीनों में उन्होंने ईश्वर को हर चीज़ के लिए ज़िम्मेदार मान लिया, यहाँ तक कि उन चीज़ों के लिए भी जिन्हें वे समझा नहीं सकते थे। उनकी समाधि के लिए मैंने उनकी गुप्त नदी से एक विशाल लाल पत्थर प्राप्त किया, जो लगभग आयताकार था, हज़ारों वर्षों में घिसकर चिकना हो गया था और इससे कब्र भव्य दिखती थी, लेकिन 1980 के दशक के अंत में वह चोरी हो गया।
पिताजी घर की सारी ज़िम्मेदारियाँ संभालते थे, और उनके निधन से मुझे गहरा सदमा लगा क्योंकि अचानक मुझ पर इतना बोझ आ गया था। जून ऑस्ट्रेलिया चली गई थी और मैं बीस साल से ज़्यादा समय से लगभग इकलौती संतान थी। तभी, माता-पिता को खोने वाले सभी बच्चों की तरह, मुझे एहसास हुआ कि उन्होंने बिना किसी शिकायत के कितना कुछ किया था। वे पूर्णकालिक नौकरी करते थे, घर के सारे छोटे-मोटे काम करते थे, और घर का सारा काम, खासकर आर्थिक मामलों को, बहुत ही सुचारू रूप से चलाते थे। उनके जाने के बाद ही मुझे यह सब समझ आया। हालाँकि मैं कभी भी परलोक में विश्वास नहीं करती थी, लेकिन कहीं न कहीं मुझे लगता था कि परलोक जाने के बाद वे किसी न किसी रूप में मुझसे मिलेंगे, लेकिन दुख की बात है कि ऐसा नहीं हुआ। काश मैं उनके साथ और समय बिता पाती। हालाँकि, मैं इतनी स्वार्थी थी कि जब भी काम नहीं होता था, मैं अपने दोस्तों के साथ जंगल घूमने चली जाती थी। मुझे उन स्वार्थ भरे दिनों पर कितना पछतावा है।

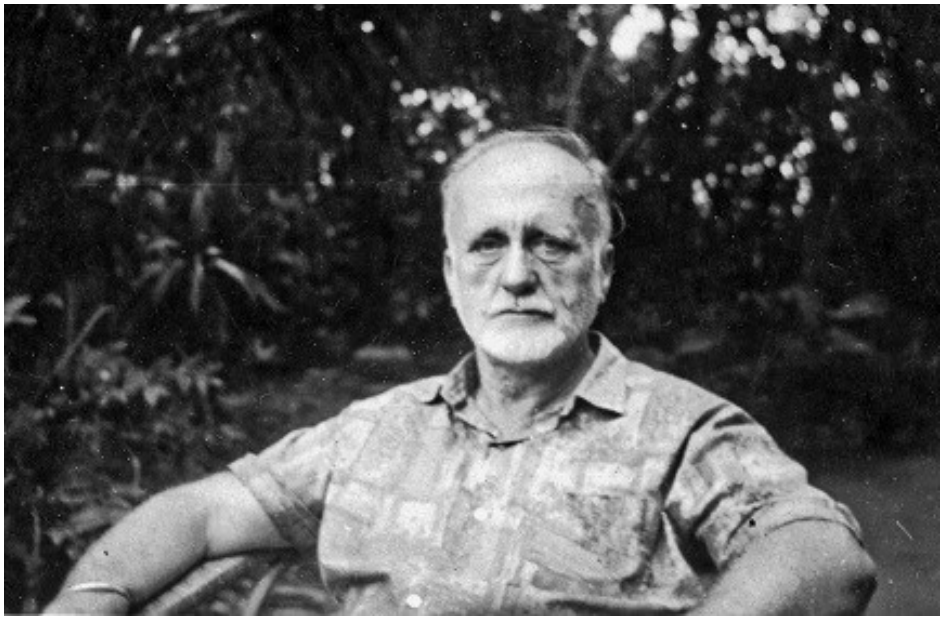

शायद मेरे पिताजी की आखिरी तस्वीर

मेरी माँ का निधन 11 मार्च 1987 को सेंट मार्था अस्पताल में 77 वर्ष की आयु में फेफड़ों में सूजन (पल्मोनरी एडिमा) के कारण हुआ, उसी अस्पताल में जहाँ मेरे पिता ने अपने अंतिम दिन बिताए थे। मेरे पिता की तरह ही, मैं भी दिन भर बिन्नीज़ में काम करता, फिर अस्पताल में उनसे मिलने जाता, रात कार में बिताता, सुबह व्हाइटफील्ड जाता, कपड़े बदलता और फिर काम के लिए हेब्बल चला जाता। मैं वाईएमसीए में खाना खाता और कुछ समय के लिए यही मेरी दिनचर्या बन गई थी। तब तक हमने प्रॉस्पेक्ट हाउस बेच दिया था और व्हाइटफील्ड में रह रहे थे जहाँ बहुत सारे एंग्लो-इंडियन परिवार रहते थे और मेरी माँ को वहाँ घर जैसा महसूस होता था, हालाँकि आलीशान प्रॉस्पेक्ट हाउस में रहने के बाद अपने साधारण दो कमरों वाले घर में रहना उनके लिए एक बड़ा झटका था। उन्हें मेरे पिता जितना कष्ट नहीं हुआ, लेकिन उन्हें खोने के बाद, मैंने अवसाद से जूझना शुरू कर दिया, जो मेरे जीवन भर का संघर्ष बन गया। जब कोई अपने पहले माता-पिता को खो देता है, तो यह विचार इतना अपरिचित होता है कि व्यक्ति का मनोबल टूट जाता है। फिर जब अगला दिन बीतता है, तो एहसास होता है कि मैं अनाथ हूँ, कोई सहारा नहीं, कोई सलाह नहीं, और यह सच्चाई जल्दी ही समझ में आ जाती है कि मैं सचमुच दुनिया में अकेला हूँ। शायद अगर मेरी शादी हो गई होती और बच्चे भी होते, तो शायद मैं इस सदमे से उबर पाता, लेकिन जवानी में की गई गलतियों का मुझे गहरा सदमा लगा। मेरे

पिताजी इकलौते बच्चे थे, इसलिए उनके परिवार में कोई रिश्तेदार नहीं था। माँ का परिवार ऑस्ट्रेलिया चला गया था और मैं उनसे कभी बहुत करीब नहीं रहा। जून भी ऑस्ट्रेलिया चली गई थी, और मैं बहुत अकेला महसूस कर रहा था। मेरे पास दोस्तों और सहेलियों की कमी नहीं थी, लेकिन न तो वह, और न ही, मुझे आश्चर्य हुआ, जंगलों का आकर्षण मुझे इस उदासी से जगा सका। मैं बहुत दुखी था, और हफ्तों तक मैंने किसी से बात नहीं की और न ही किसी से मिला। मैं घर से सिर्फ कब्र पर जाने के लिए निकलता था और अपने साथ सफेद लिली के फूल ले जाता था जो उन्हें बहुत पसंद थे। मेरे माता-पिता अलग-अलग रहते थे, जो किसी भी बच्चे को अच्छा नहीं लगता। शायद मेरे दिमाग के किसी अतार्किक हिस्से ने सोचा कि उन्हें एक साथ देखने का एकमात्र तरीका यही है कि वे एक ही कब्र में दफन हों, और मैंने वही किया। मैं वहाँ बैठ जाता और लगभग एक तरह की तंद्रा में चला जाता - मैं अतीत के सपने देखता रहता, छूटे हुए अवसरों, खोए हुए मौकों, उन प्राणियों के बारे में सोचता जिनकी जान मैंने ले ली थी, और अपनी सारी गलतियों के बारे में... गलतियाँ बहुत थीं। कभी-कभी बहुत ज्यादा आत्मनिरीक्षण करना हानिकारक हो सकता है, और मेरे मामले में, इसका एक परिणाम यह हुआ कि मैं फिर कभी किसी से इतना लगाव नहीं रख पाऊंगा।
उसके बाद मैं कई सालों तक व्हाइटफील्ड में रहा; मैं छावनी क्षेत्र में वापस जाने और उस जगह से गुजरने की कल्पना भी नहीं कर सकता था जहाँ कभी मेरा घर हुआ करता था। उसे गिरा दिया गया था और उसकी जगह कंक्रीट की एक बदसूरत इमारत खड़ी हो गई थी। हालाँकि आजकल ऐसा आम नहीं है, और शायद मैं उन आखिरी लोगों में से एक हूँ जिन्होंने इसे अनुभव किया है, लेकिन पहले के समय में बच्चे घर में ही पैदा होते थे, अपना बचपन बिताते थे और अंत में उसी घर में मरते थे। मैंने भी यही उम्मीद की थी, लेकिन चीजें कभी भी योजना के अनुसार नहीं होतीं। मैंने व्हाइटफील्ड में कुछ जगहों पर किराए पर रहा, और हालाँकि मैंने कभी अपने मकान मालिक को कोई परेशानी नहीं दी, लेकिन हर बार जब मुझे घर खाली करने के लिए कहा जाता था, तो मैं जमकर झगड़ा करता था और यह सुनिश्चित करता था कि मैं बिना लड़ाई के न जाऊँ। जल्द ही मेरे इस कुख्यात स्वभाव का असर दिखने लगा और व्हाइटफील्ड में कोई भी मुझे अपना घर किराए पर नहीं देना चाहता था, और मुझे वापस शहर लौटना पड़ा। सौभाग्य से मुझे ईजीपुरा में, जो कि एक सुनसान इलाका था, एक जगह मिल गई और मैं वहाँ कुछ साल रहा। कुछ साल बाद मकान मालिक मुझे निकालना चाहते थे, और इस बार मैं दोबारा

जगह बदलने के लिए मुआवज़ा पाने पर अड़ा हुआ था। मैं समय पर किराया दे रहा था और मैंने कोई परेशानी नहीं खड़ी की थी, और मुझे पता था कि मुझे निकालने के पीछे उनका सरासर लालच था, इसलिए मुझे लगा कि मुझे उचित मुआवज़ा मिलना चाहिए। निष्पक्ष दृष्टिकोण से देखें तो शायद ऐसा लग सकता था कि मैं बहुत ज़्यादा माँग रहा हूँ, लेकिन प्रॉस्पेक्ट हाउस से आखिरी किरायेदारों को निकालने का जो भयानक अनुभव मैंने झेला था, वह मेरे दिमाग में गहराई से बसा हुआ था और मैं दूसरों के साथ भी वैसा ही बर्ताव करना चाहता था जैसा मेरे साथ हुआ था। ईजीपुरा प्रॉपर्टी के मालिकों के साथ मेरी तीखी बहस के दौरान मैं रहने के लिए जगह की तलाश में था और तभी मुझे पता चला कि श्रीमती नॉरिस, एक एंग्लो-इंडियन महिला, अपना मकान किराए पर देना चाहती हैं।
रिचमंड रोड पर स्थित उनके घर का एक हिस्सा मुझे किराए पर दिया गया था। मैं उन्हें अच्छी तरह जानती थी, हालांकि वे मुझसे लगभग दस साल बड़ी थीं, और वह जगह मुझे बहुत पसंद आई। उन्होंने खुशी-खुशी मुझे अपने घर का एक हिस्सा किराए पर दे दिया। दरअसल, उन्होंने कई आवेदकों को मना कर दिया था और शायद मन ही मन वे किसी एंग्लो-इंडियन परिवार के आने का इंतजार कर रही थीं। वे शांत स्वभाव की बुजुर्ग महिला थीं और ज्यादातर अपने आप में ही रहती थीं। उन्होंने मुझे परेशान नहीं किया और न ही मुझसे कोई सवाल पूछा, और मैं भी अपने आप में ही रहती थी। ऑस्ट्रेलिया में अपनी बेटी से मिलने गई थीं, तभी उनका निधन हो गया और जल्द ही उनकी उत्तराधिकारी, उनकी भतीजी, आ गईं। मैं उनके इरादों को समझ सकती थी, लेकिन उन्होंने शालीनता से व्यवहार किया और कहा कि मुझे किराएदार के रूप में पाकर उन्हें खुशी है। जाते समय उन्होंने इशारा किया कि वे एक दिन संपत्ति बेचना चाहेंगी, और मैं देख सकती थी कि उनके दिमाग में हिसाब-किताब चल रहा था। उन्हें उम्मीद थी कि बाजार में कीमत बढ़ेगी, और वे कुछ समय इंतजार करने को तैयार थीं। न तो उन्हें और न ही मुझे इस बात का अंदाजा था कि यह इंतजार कितना लंबा होगा। मेरी तमाम बीमारियों को देखते हुए, मुझे पूरा यकीन था कि मैं इसी घर में मरना पसंद करूँगा, न कि ज़मीन से सैकड़ों फीट ऊपर किसी अपार्टमेंट में। सोचिए, घास पर न चल पाना या बारिश के बाद गीली मिट्टी की खुशबू न सूंघ पाना। सोचिए, पके आम के गिरने की आवाज़ न सुन पाना या बारिश की आखिरी बूंदों के पोखर में टपकने की आवाज़ न सुन पाना। मैं मरने को बेहतर समझता, बजाय इसके कि एक दिन भी यह जानते हुए न जी पाऊँ कि मैं इन चीज़ों का अनुभव फिर कभी नहीं कर

पाऊँगा। 1999 में सर्पेंटाइन स्ट्रीट नंबर 10 मेरा पता बना और मैंने आखिरी बार गेट पर लगा छोटा सा पोस्टबॉक्स अपने हाथों से बनाया, जिस पर DMSA (डोनाल्ड मैल्कम स्टीवर्ट एंडरसन) लिखा था। मेरी मकान मालकिन हर साल बैंगलोर आती थीं और हर बार उनकी मंशा और भी मुखर होती जाती थी। ज़ाहिर है, मैं अकेला किरायेदार नहीं था जिससे उन्हें निपटना पड़ता था। परिसर में चार इमारतें थीं। बीच का हिस्सा मुख्य घर था, जिसके दाहिनी ओर एक विभाजन था, और मैं उसी में रहता था। फिर एकदम दाहिनी ओर नौकरों के दो छोटे कमरे थे और परिसर में प्रवेश करते ही बाईं ओर के पहले हिस्से में एक बूढ़ी कूर्ग महिला रहती थी। श्रीमती नॉरिस और मैं बीच वाले हिस्से में रहते थे, उन्हें लगभग 80% हिस्सा मिला और मुझे बाकी का हिस्सा, पीछे की तरफ एक छोटा सा कमरा और एक बाथरूम। बाहर कुछ जर्जर इमारतें थीं क्योंकि कई सालों से उनकी कोई देखभाल नहीं हुई थी। मकान मालकिन का लालच हद से ज्यादा बढ़ गया था और वह संपत्ति बेचना चाहती थी। मैं हमेशा समय पर किराया देता था, वास्तव में मैं हमेशा कम से कम छह महीने का किराया अग्रिम देता था और उन्हें मुझे घर खाली करने के लिए कहने का कोई कारण नहीं मिला, इसलिए एक दिन अपनी एक मुलाकात के दौरान उन्होंने सुरक्षा का मुद्दा उठाया। मेरी भलाई के लिए अत्यधिक चिंतित होकर उन्होंने कहा, "मैं नहीं चाहती कि तुम इस भयानक पुरानी इमारत में रहो।"
"कौन जाने क्या होगा अगर यह एक दिन गिर जाए।" वह यह कारनामा किसी और के साथ तो कर सकती थी, लेकिन डोनाल्ड एंडरसन के साथ नहीं।
मैंने पलटकर जवाब दिया, "चिंता मत करो, मैं जोखिम उठाऊंगा।"
उसके बाद हमारे रिश्ते में दरार आ गई। उसकी बात सही थी, इमारत की हालत बहुत खराब थी, और उसने मुझे यह समझाने की कोशिश की कि उसकी मंशा नेक थी - ज़ाहिर है, वह मुझे परिसर से बाहर नहीं निकालना चाहती थी, बस मुख्य घर से बाहर निकालना चाहती थी। इसलिए, समझौते के तौर पर मैं वहाँ से निकलकर दशकों पहले नौकरों के लिए बने एक छोटे से कमरे में रहने लगा। मैंने दो शेडों में से बड़े वाले में रहना शुरू किया, जबकि छोटे वाले में मैंने अपने कई बक्से और सालों से इकट्ठा किया हुआ दूसरा सामान रखा। कितना बुरा हाल! प्रॉस्पेक्ट हाउस, जहाँ मैं कई कमरों और नौकरों के साथ पला-बढ़ा था, से एक कमरे, बाथरूम और रसोई तक, जो सब प्रॉस्पेक्ट हाउस के एक छोटे से कमरे के कोने में समा जाते। मुझे सच्चाई का एहसास तब हुआ जब मैंने अपना सारा सामान अंदर रख

लिया। जब मैं अपने बिस्तर पर लेटा, तो मैं लगभग हाथ बढ़ाकर सारी दीवारों को छू सकता था। वहाँ बस एक बड़े बिस्तर, दो अलमारियों और एक टेलीविजन के लिए ही जगह थी, सब एक-दूसरे से सटे हुए। छत से पानी टपक रहा था, दीवारें टूट रही थीं, और छत जगह-जगह से फटी हुई थी। दशकों से मकड़ी के जाले और गंदगी जमा हो गई थी, कमरा सीलन भरा और दुर्गंधयुक्त था, वर्षों की धूल और मैल ने अपना असर दिखाया था, और मैं जानता था कि एक दिन यहीं मेरी मृत्यु होगी।

उपसंहार : जोशुआ मैथ्यू द्वारा

आखिरी दिनों के दौरान
डोनाल्ड मैल्कम स्टुअर्ट एंडरसन का निधन हो गया।
12 जुलाई 2014 को उनका निधन हो गया। वे अस्सी वर्ष के थे। उधार के समय पर जी रहा उनका जीवन समाप्त हो गया, जो एक विशिष्ट युग के अंत का संकेत था। अस्सी वर्ष एक अच्छी-खासी उम्र है, लेकिन उनके जीवन के दोनों छोरों पर दुनिया जैसी थी, उसे देखते हुए यह उम्र अद्वितीय बन जाती है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वे गुलेल और वायु तोपों के साथ सक्रिय थे, और भारत को स्वतंत्रता मिलने के समय वे किशोर थे। अंत में, वे एक ऐसे अनूठे व्यक्तित्व थे जिन्होंने न केवल निरंतर बदलते, निरंतर बिखरते संसार में जीवित रहना सीखा, बल्कि गरीबी, अकेलेपन, अवसाद, अनेक कष्टों और निश्चित रूप से मित्रों और परिवार के दर्दनाक बिछड़ने के दर्द से लड़ते हुए अविश्वसनीय रूप से अच्छी तरह से अनुकूलन करना भी सीखा। यह अध्याय उनके जीवन के एक बहुत छोटे से हिस्से, उन वर्षों को समेटने का प्रयास है, जिन्हें मैं 2008 से 2014 तक देख सका।
मैं कोचीन में पला-बढ़ा और बचपन में मेरी अलमारियाँ एनिड ब्लिटन, रिचमल क्रॉम्पटन और विलार्ड प्राइस की किताबों से भरी रहती थीं। जब मैं दस साल का था, तब मेरी नज़र केनेथ एंडरसन की लिखी आठ किताबों के एक सेट पर पड़ी, जिसे मेरे पिताजी ने कुछ साल पहले खरीदा था। मैं उस समय बहुत संवेदनशील था और कवर पर छपी तस्वीरों और आकर्षक शीर्षकों ने मुझे आकर्षित किया। मैंने इस तरह की कोई किताब नहीं पढ़ी थी, यहाँ तक कि कॉर्बेट की भी नहीं, इसलिए मैं सचमुच मंत्रमुग्ध हो गया। कहानियाँ दक्षिण भारत में आधारित थीं, इसलिए किताबों में वर्णित कुछ क्षेत्रों और स्थानों से मैं जुड़ाव महसूस करने लगा और देखते ही देखते मैं किताबों का दीवाना हो गया। किशोरावस्था में मैं एक उत्साही पाठक था और मैंने केनेथ एंडरसन की किताबें कई बार पढ़ीं। मुझे पता था कि केनेथ एंडरसन का निधन हो चुका है, लेकिन मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि डॉन जीवित होंगे, और उस छोटी उम्र में तो मैं उनसे मिलने की कल्पना भी नहीं कर सकता था।
मैंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की और बैंगलोर से इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की। फिर से, शहर में अपने चार साल के दौरान, मैंने कभी डोनाल्ड को खोजने के बारे में नहीं सोचा, हालाँकि मैं अपनी सभी किताबें साथ लाया था और उन्हें नियमित रूप से पढ़ता था। 2002 में पोस्ट-ग्रेजुएशन के बाद, नौकरी

मिलने पर मैं बैंगलोर वापस आया और एंडरसन द्वारा वर्णित स्थानों पर दोबारा जाने के तरीकों के बारे में सोचने लगा, जिसके लिए मैंने ऑनलाइन काफी समय बिताया। मैं "द जॉली रॉजर" नामक एक ऑनलाइन खोज मंच में शामिल हुआ, जहाँ कोई केनेथ एंडरसन पर चर्चा कर रहा था, और मैंने अपनी टिप्पणियाँ जोड़ीं। एक महीने के भीतर, लगभग छह या सात इच्छुक लोग जुड़ गए, सभी एंडरसन के कट्टर प्रशंसक थे, जो एक-दूसरे से लिख रहे थे या बात कर रहे थे। इसलिए, मैंने केनेथ एंडरसन प्रशंसकों के लिए एक याहू ई-ग्रुप बनाया और इसने केवल किताबी प्रशंसकों से कहीं अधिक लोगों को एक साथ लाने में मदद की। प्रवीण और रवि सहित हममें से कुछ लोगों ने, जो इस नए बने प्रशंसक क्लब से थे, संगम, एंचेटी और शिवानीपल्ली जैसी जगहों का दौरा किया, ताकि किताबों की कहानियों को फिर से जी सकें। हमें उस समय बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिला जब हमारी मूल सदस्यों में से एक संध्या ने जून से संपर्क करके उसे समूह में शामिल होने के लिए मना लिया। किसी ने बताया कि डॉन अभी भी जीवित है और ज्यादा दूर भी नहीं है, इसलिए हमने उससे मिलने का फैसला किया।
मेरी पहली मुलाकात डॉन से 2003 में हुई थी। मैंने कई स्रोतों से सुना था कि वह एकांतप्रिय व्यक्ति थे, लोगों से दूर रहते थे और अजनबियों पर हमेशा शक करते थे। उनके अकेले रहने और संपर्क न करने की तमाम अफवाहों के बावजूद, उनका नाम टेलीफोन डायरेक्टरी में दर्ज था। पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए, मैंने उन्हें फोन किया।
“क्या मैं सर्पेन्टाइन स्ट्रीट नंबर 10 पर डोनाल्ड एंडरसन से बात कर रहा हूँ?” दूसरी तरफ से आवाज़ आई, “हाँ।” बस इतना ही सुनना था, इसलिए मैंने उसे और सवाल पूछने का मौका दिए बिना ही कॉल काट दिया। अगले दिन मैं रिचमंड रोड पहुँचा और उस पते पर गया जिसकी मैंने पुष्टि की थी। वाकई, गेट पर लगे पोस्ट बॉक्स ने इसकी पुष्टि कर दी, और जब मैं वहाँ खड़ा होकर अपनी उस शानदार मुलाकात के बारे में सोच रहा था जिससे वह प्रभावित हो जाएगा, मुझे अंदर बुलाएगा और मुझे बंदूकें, ट्राफियाँ और तस्वीरें दिखाएगा, तभी मेरी सोच टूट गई।
“बेटे, क्या मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ?”
फोन पर जो आवाज थी, वह वैसी नहीं लग रही थी, और फूलों वाली नाइटड्रेस पहने वह महिला उन किताबों में देखी गई महिला की तुलना में कहीं अधिक स्त्रीत्वपूर्ण दिख रही थी, जिन्हें मैं बचपन से पढ़ती आ रही थी।

मैंने अचानक कहा, "मैं डोनाल्ड एंडरसन को ढूंढ रहा हूँ।"
“ओह, मैं उसे आपके लिए बुलाती हूँ,” बूढ़ी औरत ने चुटकी लेते हुए कहा। “डॉन, आपसे मिलने कोई आया है।”
और फिर, डॉन एंडरसन मेरी ओर आते हुए दिखाई दिए। किताबों में पढ़ी तस्वीरों में उनका जाना-पहचाना चेहरा, जो थोड़ा धूप से झुलसा हुआ था, धीरे-धीरे गेट तक आया, उनके साथ एक चिड़चिड़ा सा भूरा वीमरानर कुत्ता भी था।
विनम्र, लेकिन शंकालु। "जी?"
मुझे इस प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी, क्योंकि मैंने केनेथ एंडरसन के बारे में कुछ बुदबुदाया था, उन्हें प्रभावित करने के लिए कुछ कहने की सोच रही थी, लेकिन मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था। उन्होंने मेरे लिए इसे आसान बना दिया। "मुझे माफ़ करना, लेकिन मैं बहुत बीमार हूँ, और मैं किसी से बात नहीं करना चाहता," उन्होंने कहा। यह एक अच्छी तरह से तैयार की गई पंक्ति की तरह लग रहा था, मेरी कमज़ोर कोशिश के विपरीत। मैं बहुत शर्मिंदा होकर जल्दी से वहाँ से चली गई, और पूरे एक साल बाद मैंने हिम्मत जुटाई और दोबारा कोशिश करने से पहले अपनी पंक्तियों का अभ्यास किया। मैंने दो बार और कोशिश की, और हर बार मुझे वही प्रतिक्रिया मिली। आखिरी बार उनकी आँखों में पहचान की एक हल्की सी झलक दिखी - एक परिचित परेशानी की हल्की सी स्वीकृति - लेकिन मैं कोई प्रगति नहीं कर पाई।

नंबर 10, सर्पेन्टाइन स्ट्रीट

नवीन, जो संस्थापक सदस्यों में से एक थे, और मैं, डॉन के दोस्तों से मिले और हमें बार-बार उनकी निजी जिंदगी जीने और किसी की दखलंदाजी न करने की प्रवृत्ति याद दिलाई गई। 2008 में सब कुछ बदल गया। सदस्यों में से एक, काकरला जयरामन को पता चला कि डॉन की सर्जरी हुई है और वे संतोष नर्सिंग होम पहुँच गए। अस्पताल का अधिकांश खर्च पहले ही चुका दिया गया था, लेकिन जयरामन ने बाकी का भुगतान कर दिया। डॉन ने ज्यादा विरोध नहीं किया और इस दयालुतापूर्ण कार्य ने डॉन के रवैये को हमेशा के लिए बदल दिया। शुरुआत में, एक नेक इंसान होने के नाते, जयरामन को डॉन से बात करने का एकमात्र सौभाग्य प्राप्त हुआ और हम सभी को उनसे ईर्ष्या हुई। हम पहली मुलाकात के खत्म होने और सारी बातें सुनने के लिए बेताब थे, और जयरामन की अद्भुत याददाश्त ने हमें निराश नहीं किया। हालांकि, यह काफी नहीं था; हम एक भी शब्द नहीं छोड़ना चाहते थे, इसलिए हमने जयरामन को अपनी जेब में एक वॉयस रिकॉर्डर छिपाने के लिए मना लिया और उन्हें उन सवालों से तैयार कर दिया जिनके जवाब हमें चाहिए थे। इस तरह, हमारे पहले स्टिंग ऑपरेशन की शुरुआत हुई... वाकई रोमांचक समय था। वह छोटा सा रिकॉर्डर अपनी जेब में रखता और हमारे सवालों की लंबी-चौड़ी सूची को बड़ी बारीकी से पढ़ता रहता, और जब वह वापस आता, तो हम सब अपने गुप्त कारनामों की सफलता पर खूब खुश होते। फिर एक दिन जयरामन ने हमें एक सरप्राइज दिया। जब हम तीनों, नवीन और वह आखिरी रिकॉर्डेड सेशन सुन चुके थे, तभी उसने बड़े शांत भाव से हमसे पूछा, "क्या तुम लोग डॉन के साथ जंगल जाना चाहोगे?"
“बेशक, हम करेंगे,” हम सबने एक स्वर में कहा। क्या पूछने की कोई ज़रूरत थी? "ठीक है, तो चलिए दो हफ्ते बाद चलते हैं।"
मैं दंग रह गया। मैंने सोचा था कि यह दूर भविष्य की कोई बात होगी, लेकिन यहाँ जय, कान से कान तक मुस्कुराता हुआ, मानो हमें बताने के लिए बेताब हो, और बड़े ही जोश से बता रहा था। अगले कुछ सप्ताह धुंधले से बीत गए और अक्टूबर 2008 की एक सुबह हम डॉन से मिलने के लिए निकल पड़े, वीडियो कैमरे, किताबें, सैकड़ों सवाल और ज़ाहिर तौर पर हमारा गुप्त रिकॉर्डर लेकर। हमने एक गाड़ी किराए पर ली (कोई भी ड्राइव नहीं करना चाहता था और बातचीत से चूकना नहीं चाहता था), डॉन के पीछे की सीटों पर बैठने के लिए हम एक-दूसरे को धक्का-मुक्की करते रहे (वह आगे बैठा था), और बेचारे जयरामन को एहसास हुआ कि

यह एक ऐसा अवसर था जहाँ उसकी उम्र का कोई लिहाज़ नहीं था। डॉन के पास चुटकुलों का विशाल भंडार था, जो थोड़े भद्दे और शायद उसके दोस्तों के बीच आम थे, लेकिन उसने हमें शुरू से ही खूब हंसाया। वह टेलीफोन डायरेक्टरी भी पढ़ देता तो भी हमें हंसी आ जाती, क्योंकि उसने ऐसा माहौल बना दिया था। हालाँकि पहले तो वह थोड़ा झिझका, लेकिन हमने उस पर सवालों की बौछार कर दी, और उसने धैर्यपूर्वक और कुशलता से केवल उन्हीं सवालों के जवाब दिए जिनका वह जवाब देना चाहता था। हमारे ज़्यादातर सवाल किताबों में वर्णित स्थानों और लोगों के बारे में थे, और कुछ देर बाद उन्होंने स्वीकार किया कि वे कहानियों से परिचित थे, लेकिन उनमें हमारे जैसी लगन और जुनून नहीं था। उन्होंने बताया कि उनके पिता की शिकार की ज़्यादातर कहानियाँ 1930 के दशक के अंत से 1950 के दशक के अंत तक की थीं, इसलिए वे उनमें से कुछ ही रोमांचक घटनाओं के गवाह थे। हालाँकि, उन्होंने हमें जंगलों में घटित अपने अनुभवों की एक बिलकुल अलग तरह की रोमांचक कहानियाँ सुनाईं, और हम सब मंत्रमुग्ध होकर बैठे रहे। डॉन एक बेहतरीन कहानीकार थे, हमेशा बढ़ा-चढ़ाकर बातें करते थे, और जब वे तमिल बोलते थे, तो यह समझना लगभग असंभव था कि कौन सी भाषा है, लेकिन फिर भी उनकी कहानियाँ मनोरंजक तो थीं ही। डॉन के पास बांदीपुर जाते समय रास्ते में आने वाले स्थानों के बारे में अनगिनत कहानियाँ थीं। ये कहानियाँ हमेशा शिकार के बारे में नहीं होती थीं; मछली पकड़ने, प्रेमिकाओं, झगड़ों, जंगलों में रास्ता भटकने, स्थानीय लोगों से परेशानी में पड़ने की कहानियाँ भी थीं - उनके पास कहानियों का इतना विशाल भंडार था कि हम सभी इस रंगीन और असाधारण जीवन को जीने वाले व्यक्ति को ईर्ष्या से देखते रहे।
जब हम बांदीपुर पहुँचे तब तक दोपहर का खाना काफी देर से बीत चुका था। डॉन ने हमारे लिए उस रात अपने दोस्त सुनीता के यहाँ रुकने का इंतज़ाम किया था, जो उसे देखकर बहुत खुश हुई। जब हम दोपहर की नींद के लिए लेट रहे थे, डॉन ने कहा, “बच्चों, यह मत सोचो कि मैं शेखी मार रहा हूँ, लेकिन जो भी मेरे साथ जंगल में जाता है, उसके लिए मैं सौभाग्य लेकर आता हूँ। अगर सब ठीक रहा, तो हमें कुछ बड़े जानवर देखने को मिल सकते हैं।” मैंने आधी नींद में ही सिर हिलाया, लेकिन मन ही मन मुस्कुराया। सौभाग्य? मैं बचपन से इन जंगलों में आता रहा था और मैंने कभी बाघ या तेंदुआ नहीं देखा था। “बेचारा बूढ़ा आदमी,” मैंने मन ही मन कहा।

हम सफारी पर जाने के लिए उत्सुक थे, लेकिन डॉन हिचकिचा रहा था। उसका कहना था कि वह विदेशी नागरिक है और सरकारी जीप में नहीं जाना चाहता, कहीं उससे नागरिकता का प्रमाण न मांगा जाए। यह एक बेतुकी सोच थी, पर डॉन को ऐसा ही लगा। यह उसके मन की एक झलक थी जो अंतर्निहित संदेह, अतार्किक भय और सबसे बढ़कर एक जिद्दी रवैये से भरा था, जिसमें किसी और के दृष्टिकोण को सुनने की कोई गुंजाइश नहीं थी। सफारी हमेशा की तरह ही थी, कोई बड़ी बिल्ली नहीं दिखी और जीप से उतरते ही मुझे पहली बार बेहद गर्व महसूस हुआ। हम अपनी कार में बैठे और मंगला में सुनीता के घर की ओर चल पड़े, तभी एक छोटा सा पैंथर सड़क पार करके एक पेड़ पर चढ़ गया। हम बहुत उत्साहित थे, लेकिन यह इतनी जल्दी हुआ कि हममें से कोई भी उसकी तस्वीर नहीं ले पाया। हम डॉन को यह खबर बताने के लिए तुरंत वापस भागे।
“मैंने तुमसे क्या कहा था?” यह उसका बेपरवाह जवाब था। मैं यह बताना चाहता था कि हमने बिल्ली को तब देखा था जब उसकी अनुपस्थिति साफ तौर पर महसूस हो रही थी, लेकिन मैं माहौल खराब नहीं करना चाहता था इसलिए मैंने उसकी बात को अनसुना कर दिया।
"क्या आप यह कह रहे हैं कि आपने वह पेड़ देखा जिस पर वह चढ़ा था, लेकिन उसके बाद आपने कुछ नहीं किया?" डॉन ने पूछा।
यह एक अजीब सवाल था, वह हमसे क्या उम्मीद कर रहा था? गाड़ी से उतरकर पेड़ तक चलकर ऊपर देखना? उसके हावभाव से तो यही लग रहा था। हमने कुछ दूरी पर स्थित मासिनागुडी लॉग हट में रात का खाना खाने जाने का फैसला किया। यह रात में वाहनों के आवागमन पर प्रतिबंध लगने से पहले की बात थी, इसलिए घूमने-फिरने में कोई पाबंदी नहीं थी। शाम 7:00 बजे तेज बारिश के कारण मंगला से हमारी यात्रा में देरी हो गई, और चूंकि रात के खाने पर जाना वन्यजीवों को देखने का एक बहाना था, इसलिए हमने बारिश रुकने का इंतजार करने का फैसला किया। 7:40 तक बारिश लगभग रुक चुकी थी, और हमने अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया। हमें भूख लगी थी और हम अपने साथ टॉर्च और कैमरे जैसे आम सामान नहीं लाए थे। मुझे याद है कि मैंने अपना वीडियो कैमरा एक तरफ रख दिया था, यह सोचकर कि घोर अंधेरे में, और बारिश की संभावना को देखते हुए, यह किसी काम का नहीं होगा। ऊटी रोड तक का सफर शांतिपूर्ण रहा। जैसे ही हमने सड़क के दाहिनी ओर वन अधिकारियों की झोपड़ियों की बत्तियाँ देखीं, तभी हमने पाया कि हमारी ओर आ रही एक जीप रुक गई और अपनी हेडलाइट्स को बाईं ओर की झाड़ियों

अपवाद नहीं था। हालांकि, हमने कुछ नहीं किया; हम एक भयानक अंत के मूक दर्शक बने रहे। सौभाग्य से, टॉर्च होने के बावजूद, अंधेरे में डॉन के लिए इलाका बहुत कठिन साबित हुआ, और अपनी निराशा के बावजूद, उसे उस झाड़ी तक पहुँचने से पहले ही वापस लौटना पड़ा। "वह भाग गया," डॉन ने कार में वापस बैठते हुए स्पष्ट घृणा से बुदबुदाया।
“दोस्तों, अगर मैं पांच साल छोटा होता…”
"डॉन, क्या तुम पागल हो गए थे!" हम सब होश में आकर चिल्ला उठे।
“छी,” डॉन ने जवाब दिया, “मैं तो बस आप लोगों को दिखाना चाहता था कि ये चीज़ें तो बिल्ली के बच्चों जैसी होती हैं। मैं तो पैंथर को जानता हूँ, और जैसे ही उसे मेरी आहट सुनाई देती, वो भाग जाता।” डॉन ने आँखों में शरारत भरी चमक के साथ कहा, “किसी और दिन, किसी और समय, शायद मैं आपको दिखा पाता कि मैं लाश को कैसे घसीटकर बाहर निकालता।” ऐसा लग रहा था जैसे उसने ये पहले भी किया हो। अगले तीस मिनट तक कार में बैठे हर व्यक्ति ने बताया कि उस दौरान उन्हें कैसा महसूस हुआ; एक तरह का भावनात्मक उथल-पुथल। डॉन चुपचाप कार में बैठा रहा। इस बेहद साहसी, लेकिन बेहद नासमझी भरे काम पर उसे ज़रा भी गर्व नहीं था।
उस शाम हमें और कुछ नहीं दिखा, इसलिए हम लगभग ग्यारह बजे सो गए। अगर हम चैन की नींद की उम्मीद कर रहे थे, तो हमें ज़बरदस्त झटका लगा। चारों तरफ़ घना अंधेरा था जब मैंने एक आवाज़ सुनी, "उठो लड़कों!" आवाज़ डॉन की लग रही थी, लेकिन मुझे लगा कि यह मेरा वहम है, कुछ सेकंड बाद जब मेरी आँखों पर टॉर्च की तेज़ रोशनी पड़ी तो मुझे एहसास हुआ। जागने का यह कोई अच्छा तरीका नहीं था, लेकिन यह डॉन था और मैं कुछ कह भी नहीं सकता था। कमरे से कई कराहने की आवाज़ें आईं क्योंकि डॉन हर बिस्तर पर जाकर उसके चेहरे को जलाकर उसे जगा रहा था।
“डॉन, अभी तो सिर्फ 4:30 बजे हैं, चलो थोड़ी देर और सो लेते हैं।”
“अरे बेवकूफों, अगर सोना ही है तो इस यात्रा पर आना ही नहीं चाहिए था। अभी उठो!” वह गरजते हुए बोला।
हमें सुबह जल्दी उठकर गाड़ी चलाने और वन्यजीवों को देखने की आदत थी, लेकिन सुबह 4:30 बजे उठना थोड़ा मुश्किल था। यह डॉन का स्वभाव था; अगर वह कुछ करना चाहता था, तो समूह में सभी को उसका अनुसरण करना पड़ता था, व्यक्तिगत विचार के लिए कोई जगह नहीं थी। हम बस समूह के नेता का अनुसरण करते थे, जो

आने वाले वर्षों में हमारी सभी यात्राओं का स्थायी आधार बन गया। मासिनागुडी लॉग हाउस में नाश्ते के बाद, हमें सुबह के बाकी समय में करने के लिए कुछ खास नहीं मिला। नवीन को एक विचार आया। "क्यों न हम मार्क डेविडर से मिलने जाएं?" उसने पूछा, क्योंकि मार्क के पिता रेगी डॉन के पिता के पड़ोसी और मित्र थे।
डॉन के चेहरे पर एक अजीब सा भाव आया, लेकिन उसने धैर्य दिखाया और कहा,
"ठीक है, चलो ऐसा करते हैं, मैं लगभग तीस साल से उस जगह पर नहीं गया हूँ।" तो, हम ऊटी राजमार्ग पर गाड़ी चलाते हुए चाडापत्ती पर बाईं ओर मुड़ गए। डॉन ने नवीन के कान में कुछ फुसफुसाया और दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए। हम मार्क के घर पहुँचे और वहाँ हमें एक जाना-पहचाना नज़ारा देखने को मिला। मार्क अपने बरामदे में सिगरेट पी रहे थे और बीच-बीच में दूरबीन से जंगल को देख रहे थे। नवीन सबसे पहले गाड़ी से उतरे; मार्क का मिजाज हमेशा बदलता रहता है। सौभाग्य से, उन्होंने नवीन को पहचान लिया और दोनों ने कुछ मिनट आपस में बातचीत की। फिर नवीन ने गाड़ी की ओर इशारा किया, जो हमारे लिए संकेत था। हम गाड़ी से उतरे और डॉन धीरे-धीरे दोनों की ओर बढ़े। मुझे मार्क के चेहरे पर उलझन साफ दिखाई दी; जाहिर तौर पर उन्होंने डॉन को पहचाना नहीं था, लेकिन उन्हें एहसास हो गया था कि यह कोई आम मेहमान नहीं है। डॉन मार्क के बगल वाली कुर्सी पर बैठ गए और कुछ हल्की-फुल्की बातें करने लगे। मैं देख सकता था कि मार्क उत्सुक थे और परिचय लेना चाहते थे, लेकिन उन्होंने पहल नहीं की।
“अरे मार्क, क्या तुम मुझे पहचान नहीं रहे? तुम इन लड़कों को बता रहे हो कि तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो, यकीनन मैं इतना बदला तो नहीं हूँगा,” डॉन हँसते हुए बोला। काफी हिचकिचाहट और स्पष्ट असहजता के साथ, जो मार्क के लिए असामान्य था, उसने स्वीकार किया कि वह अपने बगल वाली कुर्सी पर बैठे व्यक्ति को नहीं जानता।
"हमारा रिश्ता बहुत पुराना है मार्क, दरअसल हमारे माता-पिता एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह जानते थे।"
बेचारा मार्क, वह डॉन को घूरता रहा लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। तभी नवीन बीच में बोला, "मार्क, ये डॉन एंडरसन हैं, केनेथ एंडरसन के बेटे।"
मार्क अपनी कुर्सी से ऐसे उछल पड़ा जैसे उसे किसी ने डंक मार दिया हो। “ओह, डॉन एंडरसन,” वह बार-बार यही दोहराता रहा।

[illegible]

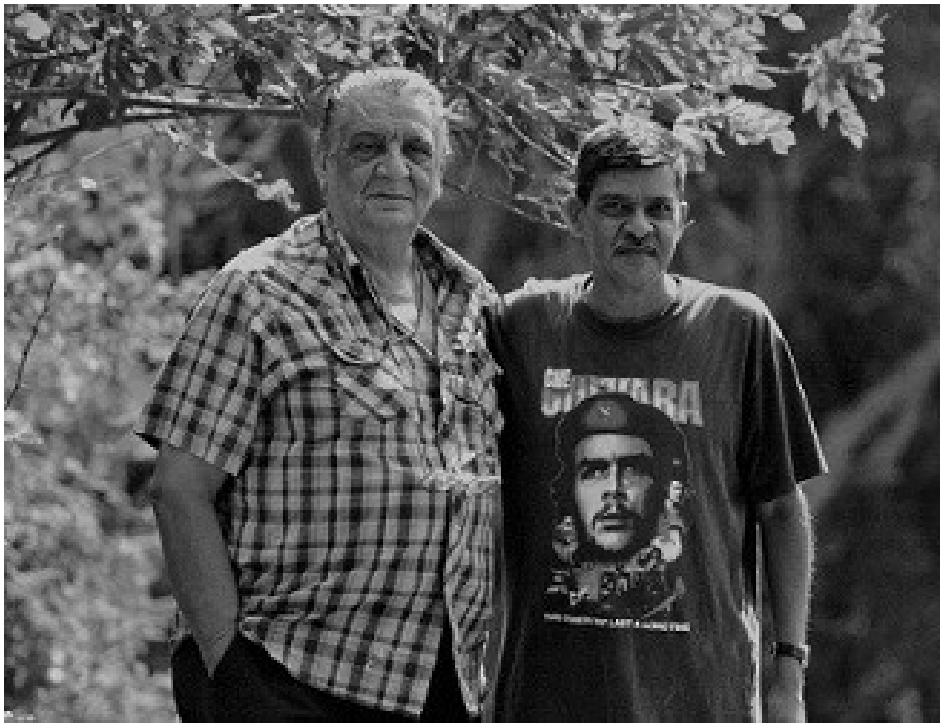

[illegible]

ही हमने गाड़ी रोकी, कुछ लोग आगे आए और हमसे पूछा कि हम क्या ढूंढ रहे हैं। उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि यह वास्तव में मुनियप्पा का घर था, लेकिन अब वह जीवित नहीं थे।
“वेंकट स्वामी का क्या हुआ?” डॉन ने मुनियप्पा के बेटे का जिक्र करते हुए पूछा। “ओह महोदय, वह भी अब इस दुनिया में नहीं हैं,” एक महिला ने विलाप करते हुए कहा। वेंकट स्वामी की मां की आंखें आंसुओं से भर आईं जब उन्होंने बताया कि उनके बेटे का निधन कुछ ही महीने पहले हुआ था। अपने आंसुओं को ज़ोर से पोंछते हुए, उन्होंने डॉन की ओर इशारा किया और कहा, “मुझे वह दोराई याद है।”
डॉन ने चुपचाप सहमति में सिर हिलाया और बताया कि कैसे वह मुनियप्पा के घर पर कुछ घंटे बिताया करता था और कैसे वह महिला उसे खाना खिलाया करती थी। डॉन ने अचानक बीच में ही टोकते हुए पूछा, "मैंने जो पेड़ लगाए थे उनका क्या हुआ?"
उन्होंने सहमति में सिर हिलाया, और हालांकि वे इतनी बीमार थीं कि हमें रास्ता नहीं दिखा सकती थीं, उन्होंने एक दूसरी महिला से ऐसा करने को कहा। वह हमें दो बड़े आम के पेड़ों के पास ले गईं, और हमने उनके नीचे दो कब्रें देखीं। एक मुनियप्पा की थी और दूसरी उनके बेटे की। जाहिर है, उन्हें वहाँ किसी कारण से दफनाया गया था, और हालांकि हमने यह पूछने की हिम्मत नहीं की कि क्यों, हमें लगा कि यह उचित ही था कि उन्हें उसी पेड़ के नीचे दफनाया गया जिसे उन्होंने साठ के दशक में डॉन के दौरों के दौरान लगाने में मदद की थी। डॉन ने हमें बताया कि वह अपने एक दौरे के दौरान लालबाग से पौधे लाए थे, और उन सुंदर पेड़ों को देखकर और यह जानकर कि उनके शिकारी मार्गदर्शक और उनके बेटे दोनों अब इस दुनिया में नहीं हैं, उनकी आँखें भर आईं। यह स्पष्ट था कि उन्होंने साथ में कुछ अच्छे पल बिताए थे।

(□□) □□□□ □□□□ □□ □□

□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□, □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□-□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□-□□□ □□□ □□□ □□, □□□□□ □□□□□□□□□ □□, □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□, □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□

□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□? □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□, □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□!

…और मैंने अपना गुस्सा निकाल दिया। डॉन को जावलगिरी फॉरेस्ट बंगलो में हुई एक घटना याद आती है। जयरामन और मैं उस पल का आनंद लेते हैं।

डॉन ने फिर दो जलकुंडों का ज़िक्र किया जो जावलगिरी की उनकी पसंदीदा जगहें थीं। एक मुख्य सड़क से दो फर्लांग दूर था, एक कीचड़ भरा तालाब जिसे दस्सरचेट्टीचेरुवु कहा जाता था। अब दोपहर हो चुकी थी, इसलिए हमें कोई वन्यजीव देखने का मौका नहीं था। चारों ओर खोजबीन करते हुए हमें कोई पदचिह्न या जानवरों के पैरों के निशान नहीं मिले, जो काफी अजीब था। बाद में हमें बताया गया कि घनी हरियाली के बावजूद इन इलाकों में लगभग कोई वन्यजीव नहीं बचा था क्योंकि शिकार के कारण वे लगभग खत्म हो चुके थे, सिवाय कभी- कभार दिखने वाले हिरण या जंगली सूअर के। यह सुनकर डॉन बहुत निराश हुए क्योंकि उन्हें याद था कि 1950 के दशक की शुरुआत में भी यह इलाका बाघों समेत कई तरह के जानवरों से भरा रहता था।
कई महीने बीत गए और हममें से कुछ लोग डॉन को उन जगहों पर ले जाने लगे जहाँ वह बचपन में अक्सर जाया करता था। यात्रा के दौरान उससे कहानियाँ सुनना अपने आप में एक अद्भुत अनुभव था, लेकिन शायद सबसे मार्मिक क्षण वह था जब नवीन उसे बीआर हिल्स ले गया। पहले तो वह थोड़ा हिचकिचाया, लेकिन फिर साथ चलने को तैयार हो गया। पूरे रास्ते वह हमेशा की तरह उत्साहित था, लेकिन जैसे ही हम मुडियानूर में दाखिल हुए, वह चुप हो गया और जैसे ही हम मोयार वैली रेंच के रास्ते में पहुँचे, उसकी आँखों में आँसू भर आए। डॉन के लिए यह

वे किसी विशेष क्रम में नहीं थे। मुझे नहीं लगता कि उसने कभी फाइलों के उस ढेर को देखा होगा, लेकिन इस बात से उसे कुछ राहत मिलती थी कि वे फाइलें मौजूद हैं। जब मौसम गर्म होता था तो खांसी के दौरे सबसे ज़्यादा बढ़ जाते थे, और हमने जाले साफ करने से लेकर, घर की धूल झाड़ने और धुआं करने तक, यहाँ तक कि फर्श बदलने तक सब कुछ आजमाया, लेकिन कुछ भी काम नहीं आया। हमेशा की तरह, डॉन ने खुद ही इसका उपाय ढूंढ लिया - उसने अपना बिस्तर घर के बाहर रख दिया, उस पर एक बड़ी प्लास्टिक की चादर बाँध दी और खुले में सोने लगा। जल्द ही, दूसरे लक्षण भी उभरने लगे, और सबसे पहला था सांस फूलना। वह हमेशा शिकायत करता था कि उसे पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल रही है, और हम उसकी पीठ पीछे मुस्कुराते हुए, एक-दूसरे को देखते रहते थे; यह एक ऐसा बीमार व्यक्ति था जिसे न केवल अपने लक्षणों का सटीक निदान पता था, बल्कि उनका समाधान भी पता था। इसलिए, रात में, उसके बिस्तर के ठीक बगल में एक टेबल फैन रखा जाता था, और अगर उससे भी काम नहीं चलता था, तो उसे लगता था कि उसे बैकअप के तौर पर एक CPAP मशीन और एक ऑक्सीजन टैंक की ज़रूरत है। मैं उसे दोष नहीं देती, ज़्यादातर डॉक्टरों ने गलत निदान किया, ऐसी दवाएँ दीं जिनसे उसकी तकलीफ में कभी सुधार नहीं हुआ, लेकिन कहीं न कहीं हम भाग्यशाली रहे और आगे की जाँच में पता चला कि उसे महाधमनी वाल्व स्टेनोसिस था, जिसके कारण उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। उनकी हालत लगातार बिगड़ती गई और जीवन के अंतिम कुछ महीनों में वे कुछ कदम चलने से पहले ही सांस लेने के लिए रुकने लगते थे। उनके डॉक्टर उन्हें जितना हो सके चलने की सलाह देते थे, लेकिन उनमें चलने की प्रेरणा खत्म हो चुकी थी। यहां तक कि जब हम उन्हें जंगलों में ले जाते थे, तब भी वे कार में बैठे-बैठे ही संतुष्ट रहते थे, जो उन दिनों से बिल्कुल अलग था जब वे जमीन पर पैर रखकर घूमने-फिरने के लिए उत्सुक रहते थे। अजीत सेंट जॉन, प्रशांत सेठी, अशोक तेंडोलकर, डैरिल रॉस और डॉन की बहन जैसे लोगों की उदारता के कारण, उनकी चिकित्सा देखभाल के लिए हमेशा आर्थिक सहायता मिलती रहती थी।
अगर इन सब बातों से उनकी जिंदगी मुश्किल नहीं होती, तो ऑस्ट्रेलिया में रहने वाली मकान मालकिन से उनका लगातार झगड़ा भी चलता रहता था। वह हर साल संपत्ति की कीमत का जायजा लेने और सही कीमत मिलने पर खरीदार ढूंढने के इरादे से आती थीं। बैंगलोर में संपत्ति की कीमतें बढ़ रही थीं और उन्हें लगता था कि अगर वह थोड़ा और इंतजार करें तो उन्हें बेहतर कीमत मिल जाएगी,

लेकिन सबसे बड़ी चुनौती डॉन को घर खाली करने के लिए राजी करना था ताकि वह संपत्ति बेच सकें। हर बार आने पर टकराव और भी बदतर होता जाता था। 2009 में, मैं एक ऐसे ही मामले का गवाह बना। उस समय मैं टीएनटी एक्सप्रेस में काम करता था, जो डॉन के घर से पांच मिनट की पैदल दूरी पर था, और उन वर्षों में मैंने उनके साथ काफी समय बिताया, लगभग हर दिन काम के बाद उनसे मिलने जाता था, और उनकी कहानियां, शिकायतें और परेशानियां सुनता था, जरूरी नहीं कि इसी क्रम में। एक सुबह उन्होंने मुझे बुलाया और कहा, "जोश, मैं चाहता हूं कि तुम मेरे घर के अंदर ही रहो। मेरे इशारे पर बाहर आना और एकदम गंभीर दिखना, एक शब्द भी मत बोलना।"
मैंने वैसा ही किया जैसा मुझे कहा गया था। जब मैं उसके घर में बैठा था, वह आगंतुकों से बात करने के लिए चला गया और देखते ही देखते शोर बढ़ने लगा। मैं वहाँ पहुँचा और डॉन ने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, “क्या तुम जानते हो कि यह कौन है? यह एक बहुत ही प्रसिद्ध वकील है जिसे मैंने एक बूढ़े व्यक्ति को हुई परेशानी के लिए तुम पर मुकदमा करने के लिए नियुक्त किया है। वह इस तरह के मामलों में माहिर है और मेरे जैसे उन किरायेदारों का प्रतिनिधित्व कर चुका है जिन्हें अन्यायपूर्ण तरीके से निशाना बनाया जा रहा है।”
मुझे लगता है कि वे मेरी टाई और हाथ में पकड़े कागज़ों को देखकर चौंक गए थे, इसलिए उन्होंने ध्यान नहीं दिया कि मेरे घुटने कांप रहे थे। मैंने आंखें सिकोड़कर उन्हें ठंडी नज़र से देखा और डॉन को सिर हिलाकर उसकी बात की पुष्टि की। यह एक कारगर चाल थी क्योंकि पल भर में बातचीत की आवाज़ धीमी हो गई। वे मुझे परखने की कोशिश कर रहे थे, और मैंने भी उन्हें वैसी ही तीखी नज़र से देखा जैसी मैं उम्मीद कर रहा था।
“तुम भले ही एक नामी वकील हो, लेकिन मेरे पास इस स्थिति से निपटने के दूसरे तरीके हैं,” उसने पलटवार किया। उसका गुस्सा और दुर्भावना गायब हो गई थी और उसकी जगह झूठी धमकियों ने ले ली थी।
डॉन के इतने लंबे समय तक टिके रहने का एक कारण संभावित आपदाओं को पहले से भांपने और उनसे निपटने की उनकी क्षमता थी, और वे इसमें माहिर थे। एक बार, मकान मालकिन ने उन्हें घर से निकलवाने के लिए गुंडों को भेजने की धमकी दी। डॉन ने अशोक नगर पुलिस स्टेशन जाकर धमकी मिलने की रिपोर्ट दर्ज करवाकर स्थिति को पहले ही संभाल लिया। हालांकि उन्हें पुलिसकर्मी को बुलाने के लिए रिश्वत देनी पड़ी, लेकिन जब यह बात फैल गई कि हर शाम एक पुलिसकर्मी

उनके घर आता है, तो यह रणनीति कारगर साबित हुई। सच कहें तो, डॉन को सर्पेंटाइन स्ट्रीट नंबर 10 में रहने का कोई अधिकार नहीं था। उन्हें पहले भी ईजीपुरा स्थित अपने घर से बेदखल किया जा चुका था और यहां भी उन्हें उसी स्थिति का सामना करना पड़ा। हालांकि, वे धमकियों के आगे न झुकने पर अड़े रहे और दूसरे इलाके में जाने के हमारे सुझाव को भी मानने से इनकार कर दिया। यह उनका स्वाभिमान था, यह उनकी मूर्खता थी, यह उनकी ज़िद थी, यह दिल दहला देने वाला साहस था, लेकिन यही उनका आखिरी संघर्ष था।
उसके घर के बगल में एक छोटी इमारत थी, और यही डॉन का कबाड़खाना था। जब मुझे पहली बार उस परिसर में बुलाया गया था, तभी से मेरी नज़र उस जगह पर टिकी थी, और मैं कल्पना करता रहता था कि अंदर क्या-क्या रखा होगा। एक दिन मैंने उससे पूछा कि क्या मैं उसके जमा किए हुए सामान में से कुछ देख सकता हूँ, और उसे कोई आपत्ति नहीं हुई। दशकों से उसने उस कमरे को अनगिनत चीज़ों से भर रखा था; ऐसी चीज़ें जिन्हें कोई छूना भी नहीं चाहता था, चाहे कोई उन्हें पैसे भी दे दे। आज़ादी से पहले के ज़माने के टूटे रबर बैंड और नारियल के खोल से लेकर फटे हुए रबर के जूते और आपातकाल के दौरान भरे गए टेलीफोन बिलों की रसीदें। फफूंद से ढके कागज़ के टुकड़ों से जुड़े बटुए, जिन्हें ध्यान से देखने पर पता चलता था कि वे उन दुकानों की किराने की सूची थीं जो अब मौजूद ही नहीं थीं। टूटे हुए प्लास्टिक के गमले, खराब कलम, जंग लगी पिनों से जुड़े कागज़ के पन्ने जो छूने पर चूर-चूर हो जाते थे, पानी और धूल से सने कपड़ों से भरे संदूक, और लाखों मरी हुई सिल्वरफ़िश और तिलचट्टे। मैंने इसे इतिहास को छूने, महसूस करने और आत्मसात करने के अवसर के रूप में देखा, और मुझे पता था कि जिस गुप्त खजाने की मैं तलाश कर रहा था, वह बस धूल से भरे एक और संदूक के नीचे ही था। मुझे पता था कि मुझे बंदूकें या ट्राफियां नहीं मिलेंगी, लेकिन मैं लगातार खोजता रहा, धूल और जंग लगे नुकीले धातु के पुर्जों का सामना करते हुए गहराई तक खोदता रहा। उस भीड़ भरे कमरे में हिलने-डुलने की बिल्कुल जगह नहीं थी, इसलिए मुझे भारी बक्से उठाने, मुड़ने-घुमड़ने और बार-बार धूल से एलर्जी होने के कारण अपने हाथों और पैरों पर खरोंच लगवानी पड़ती थी। जब भी मैं संदूक बाहर लाता, वह हमेशा मेरा हौसला बढ़ाता था। मेरे पास सही चाबी ढूंढने का धैर्य नहीं था, इसलिए मैं हथौड़ा या रिंच लेकर संदूकों पर ज़ोर लगाता, और हर बार उसमें ढेर सारा कचरा ही मिलता। "डॉन, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आप इसका क्या करने वाले हैं?"

मैंने खराब हो चुके मोटरसाइकिल के टायर ट्यूब, जमे हुए सीमेंट के मिश्रण, शौचालय के फ्लश सिस्टम के पुर्जों, ब्रायलक्रीम के सैंतीस खाली डिब्बों और तीन अंडे के छिलकों के एक बेमेल मिश्रण को देखकर अपनी आँखें घुमाईं, जिनका सारा सामान डॉन के किंडरगार्टन पास करने के बाद खत्म हो चुका था। “तुम्हें कभी पता नहीं चलता कि कब इनकी ज़रूरत पड़ जाए,” तुरंत जवाब आया। “तुम नौजवान लोग नहीं समझोगे। मेरे ज़माने में, जब कोई चीज़ टूट जाती थी तो हम उसे फेंकते नहीं थे, उसे ठीक करने की कोशिश करते थे, और अगर ठीक नहीं होती थी तो उसे संभाल कर रख लेते थे, क्योंकि कभी-कभी पता नहीं चलता कि कब किसी और चीज़ को ठीक करने के लिए उसके पुर्ज़ों की ज़रूरत पड़ जाए।” "क्या यह बात अंडे के छिलके पर भी लागू होती है, डॉन?"
उसने बनावटी खांसी का नाटक किया, मानो उस बातचीत में अपनी बात खत्म करना चाहता हो। और कभी-कभी मुझे ऐसी चीज़ें मिल जाती थीं जो वाकई अनमोल होती थीं। 1800 के दशक के उत्तरार्ध में स्कॉटलैंड में रहने वाले उसके रिश्तेदारों की तस्वीरें, उसके पिता की जंगल यात्राओं से ली गई सैकड़ों फिल्म नेगेटिव, इन सब की मदद से मैंने धीरे-धीरे उस परिवार के जीवन और समय को समेटना शुरू किया जो लगभग लुप्त हो चुका था। और एक सदी से भी अधिक पुरानी तस्वीरों को देखकर मेरा इरादा और भी पक्का हो गया कि मैं इस कहानी को एक दिन जरूर जीवंत करूँगी।
2010 से डॉन की सेहत में अचानक से बहुत तेज़ी से गिरावट आने लगी और अपनी आँखों के सामने इतनी जल्दी यह बदलाव देखना बहुत दर्दनाक था। 2008 में जब हम उनसे पहली बार मिले थे, तब वे संतोष नर्सिंग होम में पित्ताशय की थैली निकलवाने और हर्निया के ऑपरेशन के बाद ठीक हो रहे थे। लेकिन किसी कारणवश हर्निया का ऑपरेशन सफल नहीं हुआ था और वे अपने शरीर को सहारा देने के लिए एक बड़ी बेल्ट पहनकर चलते थे। इससे कुछ महीने पहले, डॉन ने अपने दोस्त नोएल पीकॉक को फोन किया और सीने में दर्द की शिकायत की। नोएल तुरंत अपने ऑटो रिक्शा से वहाँ पहुँचे और उन्हें फिर से संतोष अस्पताल ले गए, जहाँ डॉक्टरों ने पाया कि उनका शरीर बेजान था और उनकी नब्ज़ नहीं चल रही थी; उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। जब वे अस्पताल पहुँचे, तो पुरुषों के वार्ड में जगह नहीं थी, इसलिए उन्हें अस्थायी रूप से महिलाओं के वार्ड में ले जाना पड़ा। उनके दोस्तों के बीच यह मज़ाक चलता था कि यह योजना के तहत तो नहीं हुआ था, लेकिन इसी वजह से डॉन के दिल ने फिर से धड़कना शुरू कर दिया!

2010 तक, उनकी हर्निया की स्थिति और बिगड़ गई थी, और उनकी चलने-फिरने की क्षमता बेहद सीमित हो गई थी। उनके पास ऑपरेशन करवाने के अलावा कोई चारा नहीं था। डॉन को एनेस्थीसिया दिए जाने से बहुत डर लगता था, क्योंकि उन्हें लगता था कि सांस लेने में तकलीफ के कारण वे कभी ठीक नहीं हो पाएंगे। स्थिति और भी बिगड़ गई क्योंकि उनके दो दोस्तों की ऑपरेशन के दौरान मौत हो गई थी, इसलिए उन्होंने ऑपरेशन करवाने के फैसले का तब तक विरोध किया जब तक कि उन्हें असहनीय दर्द नहीं होने लगा और वे बिस्तर से उठ भी नहीं पा रहे थे। नवंबर में, फिलोमेना अस्पताल में डॉ. केनेथ डी'क्रूज़ ने उनका ऑपरेशन किया, यह वही अस्पताल था जहाँ डॉन भर्ती नहीं होना चाहते थे क्योंकि उनकी माँ की मृत्यु वहीं हुई थी। लैप्रोस्कोपी की गई, और सभी का मानना था कि ऑपरेशन सफल रहा। डॉक्टरों ने उन्हें खान-पान के प्रति बेहद सावधान रहने की चेतावनी दी, लेकिन डॉन, जिन्होंने जीवन भर किसी की बात नहीं सुनी थी, के लिए यह एक ऐसी बात थी जिसे नज़रअंदाज़ किया जाना ही था। एक हफ्ते से भी कम समय में उन्हें पेट में तेज दर्द होने लगा, और डॉक्टर का अनुमान सही निकला कि यह पहले जैसा नहीं था; दर्द असहनीय हो गया और दर्द निवारक दवाइयों से भी कोई आराम नहीं मिला। उन्हें फिलोमेना के पास वापस ले जाया गया, जहाँ पता चला कि उनकी आंत में मरोड़ या घुमाव हो गया है। इस बार सर्जरी के अलावा कोई चारा नहीं था और एक बार फिर डॉक्टर डी'क्रूज़ ने आगे बढ़कर मदद की, और पहले की तरह ही उन्होंने डॉन की आर्थिक स्थिति को जानते हुए पैसे लेने से इनकार कर दिया। ऑपरेशन सफल रहा और आंत को जोड़ने के लिए जाली लगाई गई। इससे डॉन को आराम मिला और उन्हें अपने खान-पान पर ध्यान देने और नियमित रूप से टहलने की सलाह दी गई, लेकिन सभी जानते थे कि यह सलाह बेकार जाएगी। कुछ महीनों बाद, उस जगह पर फिर से समस्या शुरू हो गई। इस बार जाली के आसपास तरल पदार्थ जमा हो गया था, जिससे उनके पेट का एक हिस्सा बाहर की ओर फूल गया था। पहले की तरह दर्द तो नहीं था, लेकिन चिंता की बात जरूर थी, और हमने डॉन को वापस जाकर इसे ठीक करवाने के लिए मना लिया। डॉन का एक और ऑपरेशन हुआ, और डॉ. केनेथ, जिन्होंने डॉन को इस तरह की घटना के बारे में स्पष्ट रूप से चेतावनी दी थी, ने पूरी तरह से द्रव को निकालकर उसे ठीक कर दिया। एक और जाली लगाई गई, और किसी कारणवश, डॉन के पूरी तरह से संयम न बरतने के बावजूद, स्थिति एक सीमा से आगे नहीं बढ़ी।

इनमें से एक सर्जरी के दौरान, डॉन जनरल वार्ड में भर्ती थे और उनके शरीर में IV ट्यूब लगी हुई थी। आधी रात को, एक नर्स उनकी देखभाल करने और IV की बोतल बदलने आई। काम खत्म होने के बाद, डॉन ने कहा कि कुछ गड़बड़ है और IV ठीक से नहीं लगी है। अपने काम में माहिर होने के कारण, नर्स ने सिर हिलाकर कहा कि वह वापस आकर इसे ठीक कर देगी, और अपनी आदत के अनुसार उदासीनता दिखाते हुए चली गई, डॉन को अधर में छोड़कर। एक बार जब वह किसी बात पर ठान लेते थे, तो उसे पूरा किए बिना नहीं छोड़ते थे, इसलिए वह उठ बैठे और ठान लिया कि जब तक IV ठीक से नहीं लग जाती, तब तक सोएंगे नहीं। हालांकि, दवाइयों के कारण उन्हें नींद आ रही थी और कुछ घंटों बाद, वह अचानक जाग गए। उनकी पैंट और चादर गीली थी, इसलिए उन्होंने टॉर्च निकालकर देखा और यह देखकर दंग रह गए कि पूरा बिस्तर खून से सना हुआ था। IV की सुई निकल गई थी और वह काफी देर से खून बहते हुए वहीं पड़े थे। उसने नर्स को पुकारा और जब उसने बत्ती जलाई तो वह सदमे से पीछे हट गई, क्योंकि हर जगह खून ही खून था - उसके शरीर पर, कपड़ों पर, चादरों पर, यहाँ तक कि मेज पर खून से सना हाथ का निशान भी था। हालाँकि उसे कई अस्पतालों में ले जाया गया, लेकिन नारायण हृदयलय में जाँच के दौरान पता चला कि वह एट्रियल फिब्रिलेशन से पीड़ित है और किसी भी समय उसे स्ट्रोक आने की पूरी संभावना है। उसकी अनिद्रा की समस्या और भी बदतर हो गई और वह कमजोर दिखने लगा। उसे जीने की प्रेरणा केवल जंगलों की सैर से मिलती थी। वह जंगल में ले जाने का मौका पाने के बदले में किसी से भी मिलने और बात करने को तैयार रहता था। वह बस गाड़ी में बैठा रहता था, वह मुश्किल से चल पाता था, लेकिन वह बस ताज़ी हवा में सांस लेना चाहता था, नज़ारों और आवाज़ों को महसूस करना चाहता था। यह कितना दुखद बदलाव था; एकांतप्रिय व्यक्ति से, जो अपनी निजता की अत्यंत रक्षा करता था, एक भावुक बूढ़े व्यक्ति में बदल गया, जो लोगों को समय और ध्यान देने को तैयार रहता था, उन्हें कहानियाँ और चुटकुले सुनाता था जिन्हें वह पहले भी कई बार दोहरा चुका था, केवल इसलिए कि उसे जंगल में घूमने का निमंत्रण मिल जाए। इसके भी परिणाम हुए - वह अक्सर सांस फूलने, मतली और उल्टी से बुरी तरह बीमार पड़ जाता था, और हमें डर था कि जंगल में मरने की उसकी आशंका सच हो जाएगी।

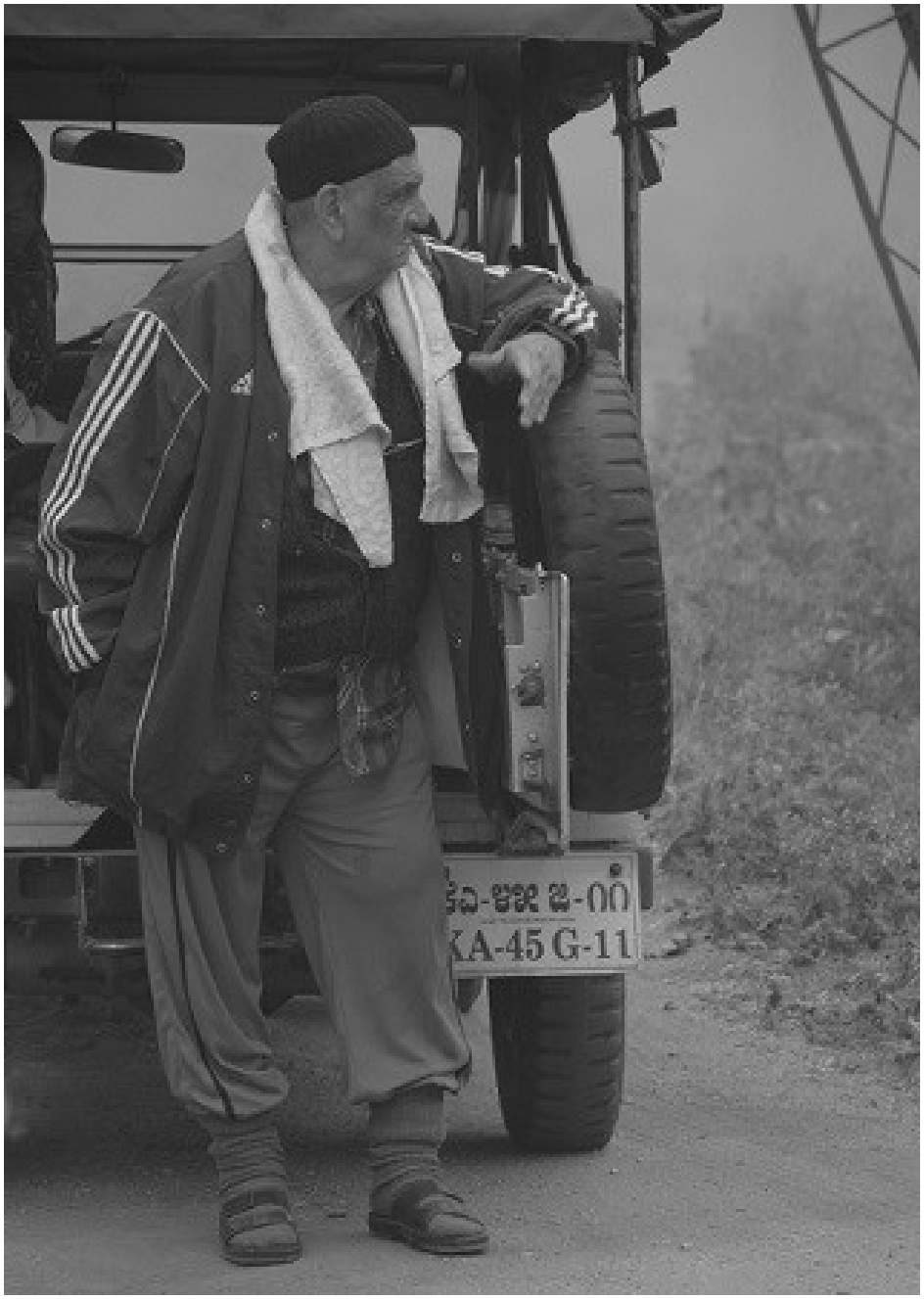

क्या यह आखिरी मुलाकात होगी?

एक जांच के दौरान, एक्स-रे में कुछ चौंकाने वाली बात सामने आई, और इससे उन सभी डॉक्टरों की मेहनत का पता चलता है जो इतने सालों से डॉन के फेफड़ों की जांच कर रहे थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि डॉन की कॉलरबोन कभी टूट गई थी, और बाद में जुड़ तो गई थी, लेकिन ठीक होने की प्रक्रिया के दौरान सही तरीके से न जुड़ने के कारण एक अजीब कोण पर। डॉन उस डॉक्टर की तरह ही हैरान था जिसने यह

बात बताई, लेकिन उसे याद नहीं आ रहा था कि ऐसा कब हुआ था! उसकी प्रोस्टेट ग्रंथि उसे लगातार परेशान कर रही थी, और कुछ ही समय बाद, उसके गुर्दे खराब होने लगे, जिससे उसके पैर बहुत ज्यादा सूज गए। कंजूस स्वभाव के डॉन को इस बात की बेहद खुशी थी कि उसे दो समस्याओं के इलाज के लिए नेफ्रोलॉजिस्ट को सिर्फ एक ही परामर्श शुल्क देना पड़ा।
दिसंबर 2013 में, उनके फेफड़ों में बलगम जमा होने लगा और बाद में उन्हें निमोनिया हो गया। उनकी हृदय संबंधी समस्या और बढ़ गई और एक बार फिर ऐसी स्थिति आ गई जहाँ डॉन को अपनी बिगड़ती हृदय स्थिति के लिए सर्जरी करानी पड़ी। पहले, डॉन सर्जरी से पहले उन कागज़ों पर हस्ताक्षर कर देते थे जो उनकी उम्र और स्वास्थ्य को देखते हुए अस्पताल को ज़िम्मेदारी से मुक्त कर देते थे, लेकिन माल्या अस्पताल में, जहाँ उन्हें आखिरी बार भर्ती कराया गया था, डॉक्टरों ने पहली बार कहा कि सर्जरी संभव नहीं है, क्योंकि डॉन बच नहीं पाएंगे। मैं समझ भी नहीं सकता कि किसी के मन में क्या चल रहा होगा जब डॉक्टर यह पुष्टि कर दे कि कोई इलाज नहीं है, यहाँ तक कि ऑपरेशन भी नहीं। यह अधिकांश लोगों का मनोबल तोड़ देता है, लेकिन डॉन अलग थे। उन्होंने इस खबर को असाधारण धैर्य के साथ स्वीकार किया और ऐसे समय में उनका साहस अक्सर हमें अभिभूत कर देता था।

फिर से अस्पताल में

दूसरी ओर, उन्होंने बार-बार यह साबित किया कि वे केवल एक रोगग्रस्त व्यक्ति ही नहीं थे, बल्कि हर बात को लेकर बेहद चिंतित रहते थे। उन्हें इलाज, ऑपरेशन के खर्च, ऑपरेशन के बाद की देखभाल, दवाइयों के असर को लेकर चिंता रहती थी, लेकिन उनका सबसे बड़ा डर यह था कि क्या उन्हें होसुर रोड प्रोटेस्टेंट कब्रिस्तान में दफनाने की अनुमति मिलेगी। ईश्वर के अस्तित्व और चर्च की भूमिका पर उनके तमाम तर्क-वितर्क के बावजूद, अंत में उनके लिए यही मायने रखता था कि उनकी अंतिम विश्राम स्थली कहाँ होगी, और वे इस बात पर अड़े थे कि वे अपने माता-पिता के साथ ही दफनाए जाना चाहते हैं। ऊपर वाले को डॉन पर पूरा भरोसा था, क्योंकि जब भी वह किसी मुश्किल में फंसता, कोई न कोई उसकी मदद के लिए हाज़िर हो जाता, और अक्सर ये लोग उसे जानते भी नहीं थे। जैसे कि के.एम. श्रीनिवास मूर्ति, जो केनेथ एंडरसन के कट्टर प्रशंसक थे, और यह जानकर दंग रह गए कि उनके हीरो का बेटा अभी ज़िंदा है। डॉन से उनकी जान-पहचान के थोड़े समय में ही सही, श्री मूर्ति ने डॉन के ज़्यादातर खर्चों को उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।
मैं डॉन को सिर्फ छह साल से जानता था, और उस दौरान डॉन की सेहत का सारा श्रेय किसी एक व्यक्ति को देना मुश्किल है, लेकिन नवीन सत्यानंद ने निस्वार्थता और समर्पण का ऐसा उदाहरण पेश किया कि डॉन के अधिकांश मित्र और शुभचिंतक शर्मिंदा हो जाते। डॉन से हमारी पहली मुलाकात से लेकर उनके अंतिम संस्कार तक और बीच के हर पल में, नवीन ही डॉन के जीवन में एकमात्र सहारा थे; वह बेटा जो डॉन के पास कभी नहीं था। डॉन के हर अस्पताल दौरे पर, चाहे ऑपरेशन कितना भी छोटा क्यों न हो, नवीन उनके साथ थे। डॉन जब भी जंगल जाते, नवीन लगभग हर बार उनके साथ रहने की कोशिश करते, उनके लगभग सभी छोटे- मोटे काम करते, और सबसे महत्वपूर्ण बात, डॉन के डर, जिद्दीपन और दूसरों की भावनाओं की परवाह न करने को सहन करते। डॉन के लिए हर चीज आपातकालीन होती थी, और समय का कोई महत्व नहीं होता था। और तो और, वह तब तक अपनी बात दोहराते रहते थे जब तक कि काम उनके मन मुताबिक पूरा न हो जाए।
अगर मैं उन सभी लोगों की सूची बनाऊं जिनके प्रयासों से डॉन के जीवन में फर्क पड़ा, तो वह कई पन्नों में भर जाएगी। हालांकि, दो महिलाओं का ज़िक्र न करना अनुचित होगा, जो सुख-दुख में उनके साथ खड़ी रहीं। प्रथम महिला को पुस्तक में अपना नाम शामिल करने में झिझक थी, लेकिन अगर मैं उनका ज़िक्र न

करूं तो यह घोर अन्याय होगा, इसलिए मैं उन्हें खुशी के नाम से संबोधित करूंगी। वह हमेशा डॉन के साथ रहीं; वास्तव में, उनतीस वर्षों के दौरान, जब वे एक-दूसरे को जानते थे, वह उनकी एकमात्र स्थिर साथी थीं। उन्होंने समय के साथ कई भूमिकाएँ निभाईं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक साथी और एक नर्स की थी, और डॉन उनके बिना असहाय थे। बदले में, वह डॉन के प्रति पूरी तरह समर्पित थीं, लेकिन उनकी पीड़ा के लिए, डॉन ने इतने वर्षों तक उनके लिए इतना कुछ करने के बावजूद कभी उनसे शादी नहीं की। दूसरी हैं उनकी बहन, जून, जो उन्हें जन्म से जानती हैं। हालांकि वह साठ साल पहले घर छोड़ चुकी थीं, लेकिन बहनों की तरह उन्होंने बिना शर्त उनकी देखभाल की। पचास और साठ के दशक में, वह लगातार डॉन को विदेश जाने के लिए मनाने की कोशिश करती रही, लेकिन डॉन भारत के जंगलों से दूर रहने के विचार को सहन नहीं कर सका। अपनी तमाम परेशानियों के बावजूद, वह हमेशा डॉन की आर्थिक रूप से देखभाल करती रही और अपनी बचत से उसे पैसे भेजती रही।

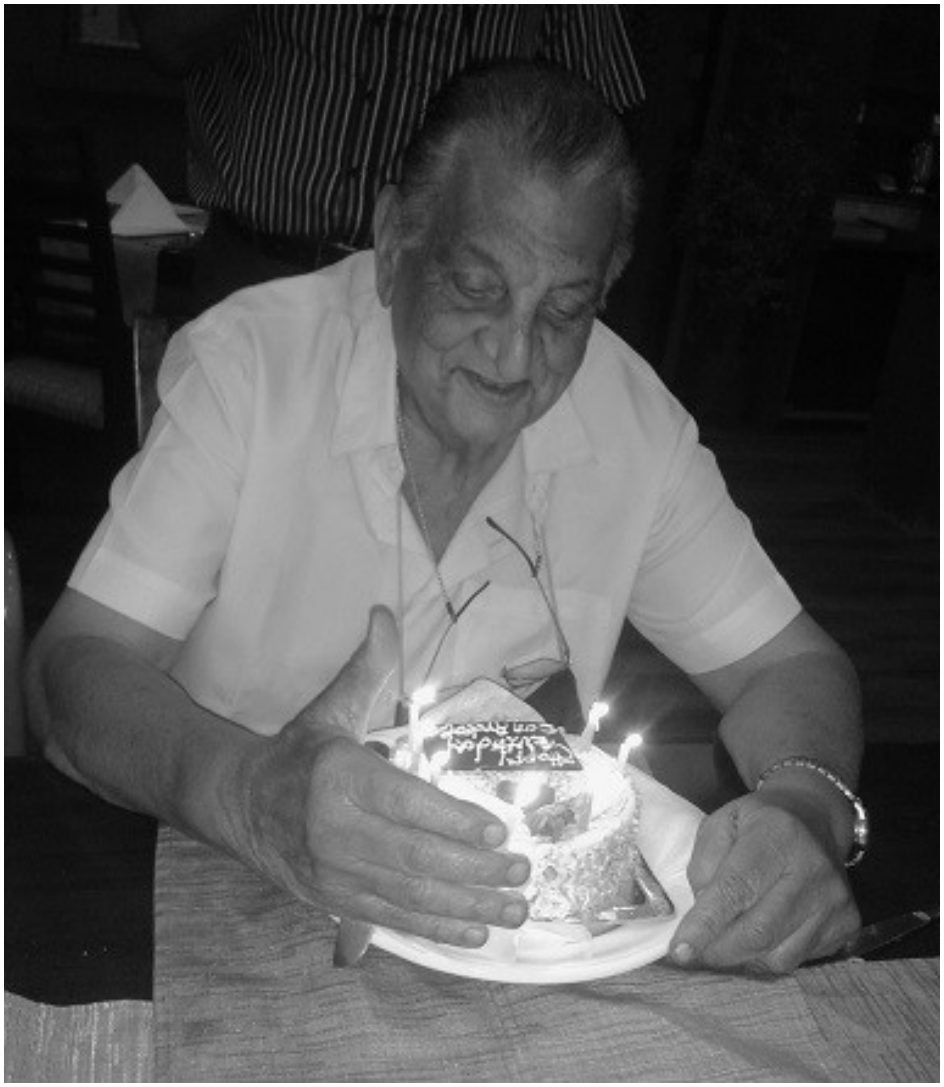

□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□

□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□, □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□, □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□, □□ □□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□, □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□, □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□, □□□□□, □□□□□□, □□□□, □□□, □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□

□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□

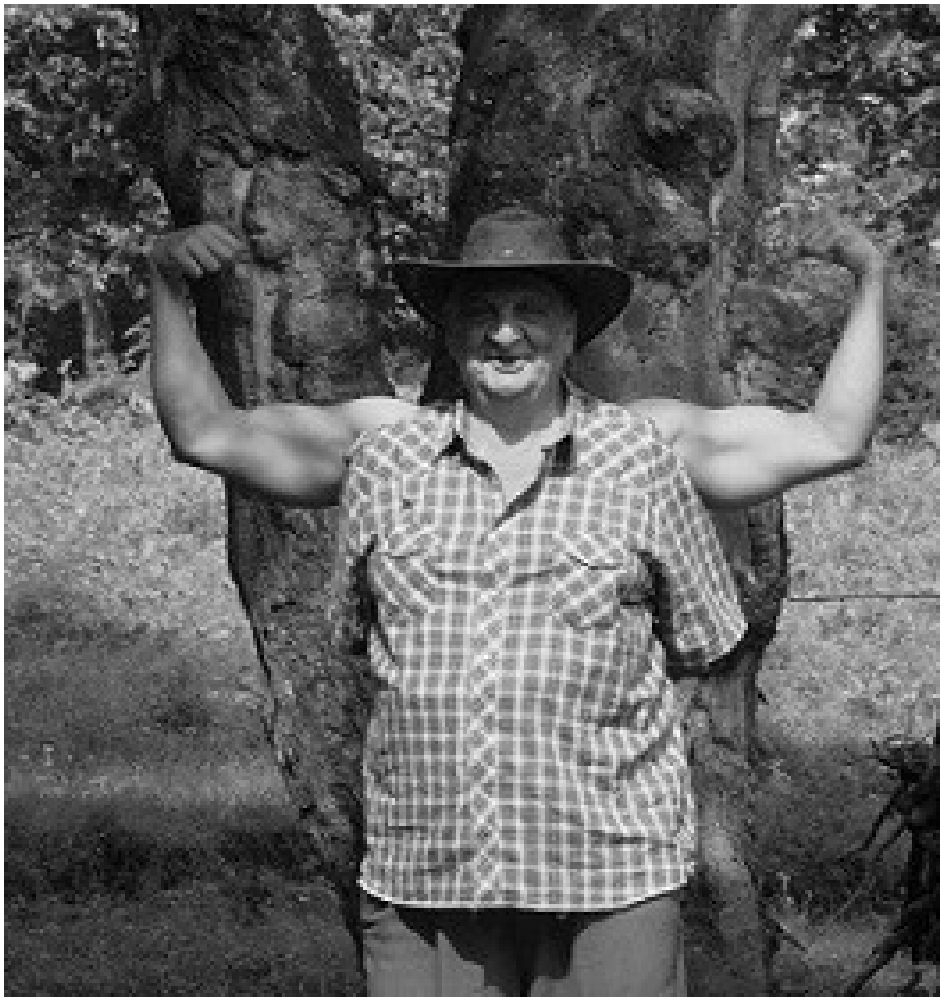

□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □ □□□ □□□□□ □□□□ □□ (□□ □□ □□ □□□)□

□□ □□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□, □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□, □□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□, □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□, □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□,

खासकर गूगल, को समझने में वह बेहद होशियार था, लेकिन फिर भी उसका मानना था कि रेस्टोरेंट में एक रुपये की टिप काफ़ी है। वह जानता था कि बिल ऑनलाइन कैसे चुकाए जा सकते हैं, लेकिन शिकायत करने के दस मिनट के अंदर ही वह टेलीफ़ोन या बिजली विभाग से किसी के आने की उम्मीद करता था। उन्हें एमआरआई स्कैन और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की समझ थी, लेकिन वे दवा का पूरा कोर्स कभी नहीं करते थे, क्योंकि एक-दो दिन बाद भी परिणाम न मिलने पर वे बहुत परेशान हो जाते थे। वे हमसे उम्मीद करते थे कि हम उनका फोन उठाएं, चाहे वह दिन के बीच में ऑफिस में हों या आधी रात को घर पर। वे शाकाहारियों के बीच भी मांस खाते थे, लैंगिक भेदभाव और नस्लवाद पर चुटकुले सुनाते थे, और कुल मिलाकर इस बात से बेखबर थे कि दुनिया बदल चुकी है।
डॉन, जो हमारे लिए एक बिचौलिए का काम करता था, ने हमें उत्साहित होकर फोन किया और बताया कि उसकी नीलगिरी में एक विशाल संपत्ति के मालिक एक सज्जन से दोस्ती हो गई है, और उसने हम सभी को उस जगह का दौरा करने की अनुमति प्राप्त कर ली है।
“खूनी खिड़की से बाघों और तेंदुओं की आवाज़ें सुनाई देती हैं,” डॉन ने शेखी बघारी। हालाँकि हम जानते थे कि वह ऐसी बातों को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहता, फिर भी यह बात सच होने से ज़्यादा अच्छी लग रही थी। हमने अपना अविश्वास जताया, क्योंकि हम सालों से उन इलाकों में आते-जाते रहे थे। तब डॉन ने बताया कि हम अनाइकाडु नाम की जगह जा रहे हैं, जो मासिनागुडी में सिंगारा चेक पोस्ट के आगे है। हमने इस जगह के बारे में सुना तो था, लेकिन जानते थे कि राज्य बिजली बोर्ड द्वारा नियंत्रित चेक पोस्ट को पार करना नामुमकिन है। डॉन के मददगार, डैरिल रॉस, मालिकों को जानते थे और उन्होंने डॉन और उसके कुछ दोस्तों के लिए मुफ्त पास का इंतज़ाम कर लिया था, क्योंकि यह कोई व्यावसायिक रिसॉर्ट नहीं था और यहाँ सिर्फ़ चुनिंदा लोगों को ही जाने की अनुमति थी। हम अपनी खुशी को मुश्किल से रोक पाए और हममें से हर किसी ने ऑफिस और घर पर संबंधित लोगों को मना लिया और यह सुनिश्चित किया कि हम इस यात्रा को न चूकें। दुर्भाग्य से, मेरे कुछ और काम थे, इसलिए मुझे पीछे हटना पड़ा। नवीन, डॉन और कुछ अन्य लोगों ने इस अनोखी जगह पर अविस्मरणीय समय बिताया। कुछ महीनों बाद, मुझे डॉन के साथ अनाइकाडु जाने का मौका मिला। तब तक डॉन वहाँ काम करने वाले सभी लोगों से, खासकर संपत्ति के अधीक्षक राजू से, दोस्ती कर चुका था। यह एक विशाल जागीर है जो जंगल से घिरी

हुई है और बीच में एक बेहद खूबसूरत घर है, जो केरल की विशिष्ट शैली में बना है, लेकिन विशाल खंभों पर टिका हुआ है। पहली शाम हम दो जीपों में निकले, राजू एक जीप चला रहा था और हमारा दोस्त रवि दूसरी जीप चला रहा था। हमने तीस मिनट तक गाड़ी चलाई, लेकिन हमें ज़्यादा वन्यजीव नहीं दिखे, इसलिए हम थोड़ी देर के लिए रुके और डॉन शौच के लिए बाहर निकला। तभी, झाड़ियों के पीछे से एक गहरी कराह सुनाई दी। हम सब स्तब्ध रह गए, जो हमने सुना उस पर विश्वास करना मुश्किल था। "बाघ, बाघ," डॉन ने आँखों में चमक के साथ फुसफुसाया।
मैं डॉन का इंतज़ार करने के लिए बहुत उत्साहित था। मैंने राजू को बाघ की आवाज़ का पीछा करने को कहा और हम तेज़ी से आगे बढ़ गए। बाघ की गुर्राहट तेज़ होती जा रही थी, लेकिन घना जंगल होने के कारण बाघ दिखाई नहीं दे रहा था। थोड़ी देर में डॉन के साथ दूसरी कार आ गई और उसने हमें ध्यान से देखते हुए देख लिया।
“लड़कों, मुझे कुछ करने दो,” गाड़ी से उतरते हुए उसने धीरे से कहा। मुझे उम्मीद थी कि वह ताली बजाएगा या कुछ शोर मचाएगा, लेकिन इसके बजाय वह जीप के पास आया और नवीन से उसका कैमरा मांगा। नवीन अभी फायदे और नुकसान पर विचार ही कर रहा था कि कब क्या करना है, तभी उसने उसके हाथों से कैमरा छीन लिया। उन्होंने सुझाव दिया, "आगे बढ़ो और आग की लपटों के बीच इंतजार करो।"
मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है, लेकिन मैंने राजू को आगे बढ़ने का इशारा किया। जैसे ही मैं मुड़ा, मैंने देखा कि डॉन झाड़ियों में गायब हो गया था, एक हाथ में छड़ी और दूसरे हाथ में कैमरा लिए लंगड़ाता हुआ। हमें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, सिवाय टहनियों के टूटने की आवाज़ और कभी-कभार डॉन की कर्कश खांसी की साफ आवाज़ के, जिससे हमें तसल्ली मिली कि वह अभी भी जीवित है। अगर हम डॉन की आवाज़ सुन सकते थे, तो बाघ भी सुन सकता था, और अचानक, मुझे ऐसा लगा जैसे यह सब पहले भी हो चुका है। मेरे पेट में एक अजीब सी बेचैनी होने लगी, यह जानते हुए कि इस बार अंजाम बुरा ही होगा। तभी, ठीक हमारे सामने, झाड़ियों से बाहर निकलता हुआ बाघ खड़ा था, लगभग शरमाते हुए, जिसे डॉन ने बाहर खींच लिया था। नवीन, जिसे डॉन के इस नाटक से कोई उम्मीद नहीं थी, नीचे उतर गया था और जीप की सुरक्षा और बाघ के बीच फंस गया था, और बाघ को पैदल देखने का उसका जीवन भर का सपना पूरा हो गया था, हालांकि बाघ के इतने करीब होने के बावजूद वह बहुत खुश नहीं दिख रहा था। यह क्षण कुछ

ही सेकंडों तक चला और बाघ झाड़ियों में गायब हो गया। हम इतने प्रसन्न थे कि डॉन के बारे में भूल ही गए। हाँफते-हाँफते वह हमारी जीप की ओर बढ़ा। “उम्मीद है कि आप लोगों को बाघ का अच्छा नज़ारा देखने को मिला होगा क्योंकि मैं कोई तस्वीर नहीं ले पाया।” ज़ाहिर है, झाड़ियों में बाघ का पीछा करते समय, बाघ ने दो-तीन बार पीछे मुड़कर डॉन की ओर देखा, लेकिन जब तक डॉन तस्वीर खींचने के लिए कैमरा तैयार कर पाता, तब तक बाघ भाग चुका था। “ये चीज़ें तो हानिरहित हैं,” डॉन ने साँस लेने की कोशिश करते हुए बुदबुदाया। “दस में से नौ बार, वे आपसे ज़्यादा डरते हैं जितना आप उनसे डरते हैं। यहाँ इतना सुरक्षित माहौल है कि आप उनमें से किसी का भी पीछा कर सकते हैं।”
अनाइकाडु वापस आकर, डॉन द्वारा बाघ का पीछा करने के रोमांच ने हमारे अंदर इतना उत्साह भर दिया था कि हम शाम को यूं ही बैठकर आनंद लेने के बजाय जल्दी से खाना खाकर फिर से अपनी किस्मत आजमाने के लिए बेताब हो गए। हम अपनी गाड़ियों में सवार हुए और अगले एक घंटे तक इधर-उधर घूमते रहे। रास्ते में डॉन ने अचानक पूछा, "आप में से कितने लोगों ने नाइटजार पकड़ी हैं?" यह तो बचकाना सवाल था; वह तो यह भी पूछ सकता था कि हममें से कितने लोगों ने बाघों को गुदगुदी की है!
उन्होंने आगे कहा, "चलिए मैं आपको दिखाता हूं कि यह कैसे किया जाता है।" पूरी ज़मीन पर कांटेदार तार की बाड़ लगी हुई थी और अक्सर गाड़ी चलाते समय टॉर्च की रोशनी चमकाते हुए हमें इन पक्षियों की चमकती हुई आँखें दिखाई देती थीं। "वहीं रुक जाओ," उसने कहा। मेरी टॉर्च की तेज़ रोशनी एक खंभे पर बैठे नाइटजार पक्षी की आँखों पर पड़ी और वह पक्षी मंत्रमुग्ध होकर वहीं खड़ा रह गया।
“बिल्कुल मत हिलना,” उसने चेतावनी दी और कार से उतरते हुए ध्यान रखा कि कहीं उसकी वजह से रोशनी का रास्ता न रुके। वह संभलकर चला और झट से उस पक्षी को पकड़ लिया, जो अभी भी हेडलाइट्स की रोशनी में सम्मोहित बैठा था।

हाथ में एक नाइटजार...

डॉन के साथ कभी भी उबाऊ पल नहीं होता था। हालांकि, जंगल की यात्रा का मतलब था कि पूरी यात्रा का सारा नियंत्रण उन्हीं के हाथ में होता था - हर गतिविधि का समय, घूमने की जगहें, साथ ले जाने वाला सामान, सब कुछ आखिरी बात तक तय होता था। वह मौसम के पूर्वानुमान से पूरी तरह वाकिफ रहते थे और यहां तक कि पूर्णिमा के दिन ही यात्रा तय करने की कोशिश करते थे।
हर शिकारी के अपने अंधविश्वास और मान्यताएं होती हैं, और डॉन भी इससे अलग नहीं था। हालांकि अब उसे पांच कारतूस ले जाने की ज़रूरत नहीं थी, फिर भी वह कई अजीबोगरीब चीजें करके दिखाता था। उसकी सबसे कीमती चीज़ एक शुभ चिन्ह था, जो बांस का एक छोटा टुकड़ा था जिसके दोनों सिरों पर मोम लगा हुआ था, और उसके अंदर एक जंगली जानवर की आत्मा कैद थी जिसकी आवाज़ या कंपन किसी भी बड़े जानवर को उसके छिपने की जगह से बाहर आने के लिए आकर्षित कर सकती थी। हालांकि, उससे भी ज़्यादा दिलचस्प उसका मंत्र था। इस जादुई मंत्र के बारे में कहा जाता था कि जंगल में घूमने पर हमें बाघ ज़रूर दिखाई देगा। यह मंत्र उसे एक शोलागा ने सिखाया था और बार-बार विनती करने के बावजूद, वह इसे हमारे सामने दोहराने या मुझे इसे रिकॉर्ड करने की अनुमति देने से इनकार करता था।

हालांकि, वह इतना उदार था कि किसी भी मानव निर्मित वस्तु पर मंत्र जप कर उसे आशीर्वाद दे देता था, जिससे यह सुनिश्चित हो जाता था कि अगले कुछ दिनों में बाघ उसकी नज़र में आ जाएगा। उन्होंने मुझे पूरी गंभीरता से आश्वस्त किया कि यह कैमरों पर भी उतना ही असरदार है जितना कि बंदूकों पर, और मेरी इस शिकायत को सुनने के बाद कि मैंने कभी जंगल में बाघ नहीं देखे थे, उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि मंत्र जाप के बाद स्थिति बदल जाएगी।
“जोश, तुम्हें यात्रा की तारीख के आस-पास अपना कैमरा मेरे पास लाना होगा, क्योंकि मेरे प्रीपेड मोबाइल रिचार्ज की तरह इसकी भी एक वैधता है,” उसने मुझे एक उदाहरण देते हुए कहा, जो मुझे समझ में आ गया। मैंने गंभीरता से सिर हिलाया और हालांकि मैं उपहास से भरा हुआ था, मैंने उसकी बात मान ली। उसके जादू में कुण्डुमणि के नाम से जाने जाने वाले मूंगा वृक्ष के बीज, बाघ का मल, कपूर, आधी जली मोमबत्ती, बंदूक/कैमरा और वह मंत्र शामिल था जिसका वह जाप करता था। पहली बार जब हम डॉन को नीलगिरी ले गए, तो उसने मार्क डेविडर के नौकर मुथु को जंगल में कुछ सामग्री लाने के लिए भेजा, और वह हर मौके पर यही करता था। यह डॉन की एक और जानी-मानी चाल थी। यह दिखावा नहीं था, वह सचमुच मानता था कि मंत्र में जादू है, और वह बदले में कुछ पाने की उम्मीद में, अपने अगले मिलने वाले व्यक्ति के कैमरे पर इसकी शक्तियाँ देने के लिए उत्सुक था!
जब हम दूसरी बार मार्क के घर पर थे, तो मुथु बहुत जल्दी वापस आ गया, जिससे डॉन हैरान रह गया।
“मुझे उम्मीद है कि तुम मेरे लिए गलत जानवर का मल नहीं लाए हो,” उसने मुथु को चेतावनी देते हुए कहा। “मार्क को कैमरे के सामने लाने का कोई फायदा नहीं है, है ना?” उसने आँख मारते हुए कहा।
हममें से किसी ने भी मंत्रोच्चार के दौरान डॉन की बात नहीं सुनी। उसने कभी भी मंत्र साझा नहीं किया क्योंकि उसने शपथ ली थी कि वह इसे कभी साझा नहीं करेगा, और शपथ तोड़ने की सजा मृत्यु थी।
"तो, आप देख सकते हैं, आत्मरक्षा के हित में, उस रहस्य को किसी अन्य जीवित प्राणी को कभी नहीं बताया जा सकता।"
कभी-कभी, जब वह अपने अंत के निकट होने पर विलाप करते थे, तो मैं बेईमानी से चुपके से उनसे मंत्र सिखाने का अनुरोध कर लेता था, यह सोचकर कि उनकी मृत्यु

तो होनी ही थी, लेकिन वह इस मामले में पुराने ख्यालों के थे और इस रहस्य को अपने साथ कब्र में ले गए।
तो, क्या यह काम कर गया?
मेरे वीडियो कैमरे को आशीर्वाद मिलने के तुरंत बाद मैं ताडोबा गया और उस यात्रा में मैंने छह बाघ देखे। फिर मैंने बांदीपुर में दो बाघ देखे, डॉन के साथ सेगुर में कुछ और बाघ देखे, और हालांकि मुझे कभी इस बात पर पूरी तरह यकीन नहीं हुआ, लेकिन मैं इस एहसास को भुला नहीं पाया कि किसी न किसी तरह इससे फर्क पड़ा था। कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन पर मंत्र का कोई असर नहीं हुआ, और जब कोई मंत्र को बकवास कहकर खारिज कर देता तो डॉन का चेहरा गुस्से से भर उठता था।
“तुम्हें इस पर विश्वास करना चाहिए,” वह मुझसे कहते थे। “मंत्र उन लोगों पर काम नहीं करेगा जो इसकी शक्ति पर विश्वास नहीं करते।”
“बिल्कुल, डॉन।” मैंने नज़रें हटाते हुए कहा, उम्मीद कर रही थी कि उसने मेरे चेहरे पर दिख रहे अपराधबोध को न देखा हो।
अलौकिक चीज़ों के प्रति उनकी स्पष्ट अवहेलना के बावजूद, कुछ ऐसे उदाहरण थे जिनसे हमें यह विश्वास हुआ कि शायद वे भीतर ही भीतर, अवचेतन रूप से, उनमें विश्वास करते थे, और यह बात उनके जीवन के अंतिम वर्ष में और भी स्पष्ट हो गई। एक समय ऐसा आया जब उनकी सांसें इतनी तकलीफदेह हो गईं कि बेहतर नींद के लिए उन्होंने घर के बाहर एक पलंग लगवा लिया। रात में वे घर के अंदर ही रहते और मुश्किल से सो पाते, लेकिन दिन में वे बाहर अपने पलंग पर लेटते थे। एक शाम देर से, मैं उनके साथ घर के अंदर बातें कर रहा था, तभी अचानक उन्होंने बात काटते हुए कहा, "अभी मत देखो, लेकिन बाहर मेरे पलंग पर कोई बैठा है।" मैं तुरंत पीछे मुड़ा क्योंकि मुझे लगा कि शायद कोई आवारा गलती से घर में आ गया हो, लेकिन मुझे कोई दिखाई नहीं दिया।
मैंने जवाब दिया, "अच्छा मजाक था, डॉन," लेकिन डॉन का चेहरा स्थिर था, वह बाहर बिस्तर को टकटकी लगाए देख रहा था।
मुझे एहसास हुआ कि यह कोई मज़ाक नहीं था, और मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं इसे समझा नहीं पा रहा था। एक मिनट बाद, वह अपनी तंद्रा से जागा और बातचीत फिर से शुरू कर दी जैसे कुछ हुआ ही न हो। जब मैं एक हफ्ते बाद उससे मिलने गया, तो मैंने उसमें बदलाव देखा। उसके पास एक भारी छड़ी थी जिसे वह सुरक्षा के लिए अपने बिस्तर के पास रखता था, और उसके पास दो टॉर्च भी थीं। जब मैंने

उससे इसके बारे में पूछा, तो उसने कुछ लोगों के आने-जाने का ज़िक्र किया। पहले तो मुझे लगा कि शायद मकान मालकिन ने उसे घर से निकालने के लिए भेजा होगा, लेकिन वह अभी भी ऑस्ट्रेलिया में थी। अगर ये लोग उसे लूटने आए होते, तो वे खुद को दिखाते नहीं। मैंने निष्कर्ष निकाला कि यह सब उसकी कल्पना थी और मैंने उसे यही बताया।
“जोश, क्या तुम्हें लगता है कि मैं भूतों पर विश्वास करता हूँ? तुम्हारी यह धारणा गलत है कि भूत कराहते हुए प्रेत होते हैं, ये तो आम लोग हैं, जो बिल्कुल तुम्हारे और मेरे जैसे दिखते हैं।”
मुझे लगता है कि उसने भूत/गैर-भूत के इस सिद्धांत से काफी देर तक जूझने के बाद आखिरकार अपना निष्कर्ष निकाला।
“मुझे लगता है मेरा अंत निकट है,” उसने मुझसे कहा। “यह दूसरी दुनिया का संकेत है।” शायद नींद की कमी इसका कारण थी, लेकिन कारण जो भी हो, इसका असर दिखने लगा था। उसका वजन घटने लगा और वह दुबला-पतला दिखने लगा। कई बार नवीन ने उसे अपने कमरे में अंधेरे में देखते हुए अस्पष्ट गालियां बकते हुए सुना।
फिर सबसे अजीब घटना घटी। एक दिन सुबह-सुबह मुझे डॉन का फोन आया, “बहुत ज़रूरी है, जल्दी आओ।” संक्षिप्त और सटीक; यही उनका अंदाज़ था। इस बूढ़े आदमी की कई बार झूठी चेतावनी सुनने के बाद, मुझे पता था कि शायद कुछ नहीं होगा, इसलिए मैंने थोड़ा समय लिया। जब मैं उनके कमरे में दाखिल हुआ तो मुझे कुछ भी अजीब नहीं लगा। उनका चेहरा पीला पड़ गया था और वे साफ़ तौर पर परेशान दिख रहे थे। “बाहर जाकर देखो, मैंने उन्हें पकड़ लिया है।”
“क्या मतलब है डॉन?” मैंने अविश्वास से पूछा और देखने के लिए बाहर भागा। बाहर कोई मरा हुआ नहीं पड़ा था, लेकिन दीवार पर खून के छींटे देखकर मैं वहीं रुक गया। खून के छींटे मेरी ऊंचाई तक थे और ताज़े लग रहे थे। बात यहीं खत्म नहीं हुई। ज़मीन पर खून की बूँदें थीं, जो दरवाज़े से दूर पत्थर की पट्टियों पर जा रही थीं और उसके आगे जाकर अचानक रुक गईं। यह बहुत अजीब था, और मुझे इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं मिल रहा था और वह इसके बारे में और कुछ नहीं बोलना चाहता था। उसके बाद कई हफ़्तों तक डॉन अपने पास एक भारी डंडा और एक काली खिलौना पिस्तौल रखकर सोता रहा, जो तीन साल के बच्चे को भी बेवकूफ नहीं बना सकती थी। हालाँकि, इससे उसे कुछ हद तक सुकून मिलता था और भला मैं उसका मज़ाक कैसे उड़ा सकता था। अगर मैंने सोचा था कि यह आखिरी ऐसी घटना थी,

तो मैं गलत था। कुछ हफ़्ते बाद नवीन और डॉन सुबह-सुबह बांदीपुर जा रहे थे और डॉन के कमरे से निकलते समय अभी भी अँधेरा था। यह उस समय की बात है जब डॉन दिन में बाहर और रात में अपने कमरे में सोता था। अचानक डॉन जम गया और फिर बिना किसी चेतावनी के, बार-बार "हाजी बोको! हाजी बोको!" चिल्लाने लगा, साथ ही अपने हाथों से इशारे भी कर रहा था। फिर वह रुका और नवीन को चौंकाते हुए छोड़कर चला गया। जैसे ही वे कार में बैठे, नवीन अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं पाया।
"आखिर ये क्या था, डॉन?" उसने फुसफुसाते हुए कहा, वह अभी भी उस घटना से सदमे में था।
“मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहती थी, नवीन, लेकिन जब तुम मेरे घर में दाखिल हो रहे थे, तो मैंने बाहर अपने बिस्तर पर लंबे बालों वाली एक मानव आकृति को बैठे देखा। मैं यह नहीं बता सकी कि वह पुरुष था या स्त्री, लेकिन उसका एक निश्चित आकार था। जब मैंने तुम्हारी गाड़ी की आवाज़ सुनी, तो मैंने लाइट जला दी, और तभी वह व्यक्ति गायब हो गया। मैं उस आकृति को कुछ समय से देख रही हूँ, और इसका केवल एक ही अर्थ है; मेरा अंत निकट है। हालाँकि, मैं नहीं चाहती थी कि तुम उसकी नज़र में आओ, इसलिए मैंने तुम्हारी रक्षा के लिए मंत्र का उच्चारण किया। यह मंत्र मुझे एक शक्तिशाली शोलागा पुजारी ने सिखाया था, और मैं जानती हूँ कि यह अत्यंत शक्तिशाली है।”
उसके बाद नवीन कई दिनों तक चैन से सो नहीं पाया!
अपनी शिक्षा और ज्यादातर मौकों पर तर्क और सामान्य ज्ञान पर भरोसा करने की क्षमता के बावजूद, डॉन के विश्वास जंगल के उन लोगों की तरह ही गहरे अंधविश्वासों और रूढ़ियों में डूबे हुए थे जिनके साथ वह समय बिताता था। जो कभी अपने पिता के तंत्र-मंत्र में विश्वास का मज़ाक उड़ाता था, अपने अंतिम दिनों में उसका मन उन दबी हुई शक्तियों के वश में आ गया, जिन्होंने शायद उसके मन पर उसकी सोच से कहीं अधिक गहरा प्रभाव डाला था। डॉन वास्तव में एक महाकाव्य विरोधाभास था। जहाँ एक ओर उसे अपने शिकार के कारनामों पर गर्व था और उन्हें सुनाना उसे बहुत पसंद था, वहीं दूसरी ओर वह अक्सर अपराधबोध से ग्रस्त रहता था और अवसाद के दौर से गुजरता था, अपने द्वारा मारे गए जीवों पर विलाप करता था। हालाँकि उसे लोगों का साथ पसंद था और वह अपने श्रोताओं को बहुत मोहित कर सकता था, फिर भी वह अक्सर अकेला रहता था। उसके लिए उदासी से एकमात्र राहत जंगल की यात्राएँ थीं, जहाँ उसकी आँखें चमक उठती थीं और

□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ - □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□, □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□-□□□□ □□□□□□ □□□ □□, □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□, □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□ □□ □ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□, □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□

*****□□□□□□ *****

sjeet

शुभ शिकारगाह

□□□□□□□

□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□, □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ '□ □□□□□□ □□ □□□□' □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□

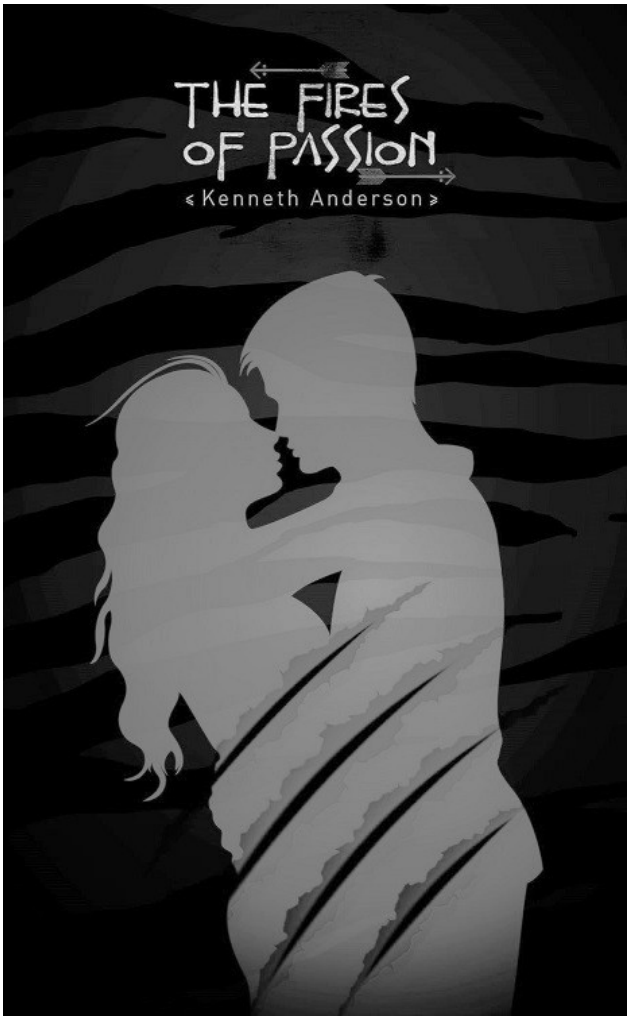
THE FIRES
OF PASSION
Kenneth Anderson

□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□

□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□, □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□

□□□□□□□□-□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□-□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□ □□□

यह शायद केनेथ एंडरसन की सबसे व्यक्तिगत पुस्तक है, हालांकि उनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण आदमखोर बाघों और हिंसक हाथियों के शिकार पर लिखी गई पुस्तकें थीं।